DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

जहाँ सेलेक्शन एक जिद है

INDIAN HISTORY EXPLORER

भारतीय इतिहास

For All One Day Exams

The Institute

गुणवत्ता, ईमानदारी और सफलता

By : **V.P. Singh**

THE INSTITUTE
जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इला0
0532-3266722, 9956971111, 9235581475

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

THE INSTITUTE

टीम को

यह Notes प्रस्तुत करते हुए बड़ी खुशी की अनुभूति हो रही है। यह Notes सभी One Day Exam के पैटर्न को ध्यान में रखकर बनाया गया है। आज बदलते हुए One Day पैटर्न को देखते हुए यह Notes, One Day Exam के अभ्यर्थियों के लिए मददगार साबित होगा। इसमें अनावश्यक भ्रमपूर्ण सामाग्रियों से परहेज किया गया है और हर एक शब्द को आपके लिए उपयोगी बनाने की कोशिश की गयी है।

इसमें मैप, चार्ट और ग्राफ के जरिए विषय को अति सरल बनाया गया है। यह Notes क्लास लेक्चर को Supplement करने के लिए बनाया गया है। यह संपादन कार्य क्लास लेक्चर के साथ मिलकर संपूर्ण होता है और यह क्लास लेक्चर को सुदृण करने के लिए बनाया गया है। बिना क्लास लेक्चर के यह Notes अधूरा है।

इसमें बाजारू सामाग्रियों के सभी त्रुटियों को दूर किया गया है और अन्य प्रकार की त्रुटियों को सुधारने की पूरी कोशिश की गयी है यदि इसके बाद भी कोई मानवीय या मशीनी गलती हुई हो तो संस्था क्षमाप्रार्थी है।

इसके अतिरिक्त यह Notes आप सभी के सहयोग से बना है और इसमें किसी भी प्रकार का सुझाव सदैव स्वीकार्य है। संस्था अपने छात्रों से यह उम्मीद करता है कि छात्र इस Notes का पूरा उपयोग करेगा और संस्था के उम्मीदों पर खरा उतरेगा क्योंकि आप वहाँ पढ़ते हैं 'जहाँ सेलेक्शन एक जिद है'।

धन्यवाद

C. Shekhar

(THE INSTITUTE)

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

By V.P. Singh

प्राचीन भारत

पाषाण काल

- पाषाण काल को तीन भागों में बाँटा गया है– **पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल** तथा **नवपाषाण काल**।
- पुरापाषाण काल में मनुष्य की जीविका का मुख्य आधार शिकार था। इस काल को आखेटक तथा खाद्य–संग्राहक काल भी कहा जाता है।
- लगभग 36,000 ई.पू. में आधुनिक मानव पहली बार अस्तित्व में आया। आधुनिक मानव को **'होमो–सेपियन्स'** भी कहा जाता है।
- मानव द्वारा प्रथम पालतू पशु कुत्ता था, जिसे मध्यपाषाण काल में पालतू बनाया गया।
- आग की जानकारी मानव को पुरापाषाण काल से ही थी, किन्तु इसका प्रयोग नवपाषाण काल से प्रारम्भ हुआ था।
- नवपाषाण काल से मानव ने कृषि–कार्य प्रारम्भ किया, जिससे उसमें स्थायी निवास की प्रवृत्ति विकसित हुई।
- भारत में पाषाणकालीन सभ्यता का अनुसन्धान सर्वप्रथम **रॉबर्ट ब्रूस फुट** ने1863 ई. में प्रारम्भ किया।
- भारत में व्यवस्थित कृषि का पहला साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त हुआ है।
- बिहार के चिरांद नामक नवपाषाण कालीन स्थल से हड्डी के औजार मिले हैं।
- पाषाण काल के तीनों चरणों का साक्ष्य–बेलन घाटी इलाहाबाद से प्राप्त हुआ है।
- औजारों में प्रयुक्त की जाने वाली पहली धातु **ताँबा** थी तथा इस धातु का ज्ञान मनुष्य को सर्वप्रथम हुआ।
- चावल की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य लोहार देवा या लहुरा देवा (सन्त कबीर नगर) से पाया गया है। (8000 ई. पू.)
- पहिये का आविष्कार नवपाषाणकाल में हुआ।

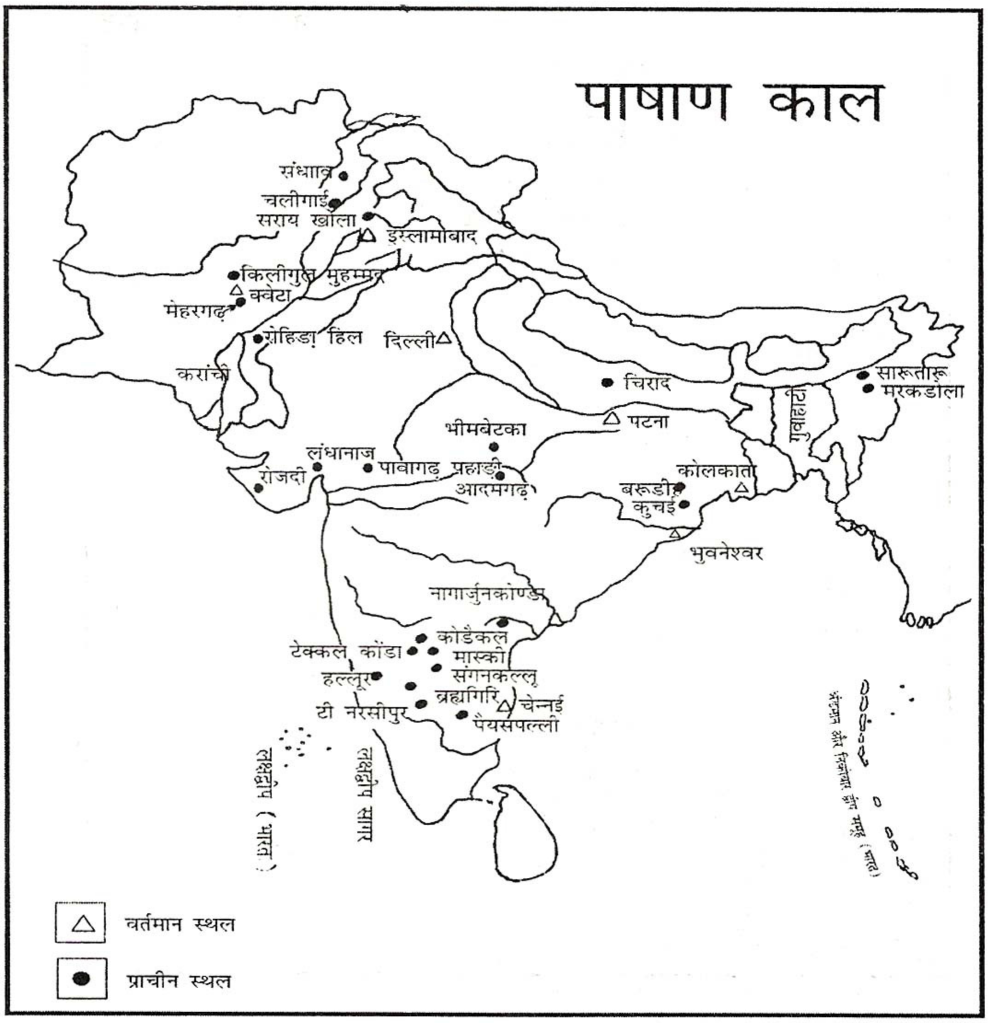

Daily Current Affairs Govt. Jobs SSC Bank Railway IAS-PCS GK eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्प सभ्यता)

सिन्धु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता के प्रमुख स्थल, उत्खननकर्त्ता, ई., नदी, वर्तमान स्थिति एवं प्राप्त महत्वपूर्ण साक्ष्य

क्र. सं.	प्रमुख स्थल	उत्खननकर्ता	ई.	नदी	वर्तमान स्थिति	प्राप्त महत्वपूर्ण साक्ष्य
1.	हड़प्पा	दयाराम साहनी एवं माधोस्वरूप वत्स	1921	रावी	पाकिस्तान का माण्टगोमरी जिला	ताँबे का पैमाना, ताँबे की इक्कागाड़ी, ताँबा गलाने की भट्टी, अन्नागार
2.	मोहनजोदड़ो	राखालदास बनर्जी	1922	सिन्धु	पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त का लरकाना जिला	स्नानागार, अन्नागार, पुरोहित आवास, सभा भवन, काँसे की नर्तकी की मूर्ति, पशुपति की मूर्ति, सूती धागा।
3.	चन्हूदड़ो	गोपाल मजूमदार	1934	सिन्धु	सिन्ध प्रान्त (पाकिस्तान)	मनका बनाने का कारखाना, दवात, काजल, कंघा
4.	रंगपुर	रंगनाथ राव	1953–54	मादर	गुजरात का काठियावाड़ जिला	चावल की भूसी
5.	रोपड़	यज्ञदत्त शर्मा	1953–55	सतलज	पंजाब का रोपड़ जिला	मानव के साथ कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य
6.	लोथल	रंगनाथ राव	1955–62	भोगवा	गुजरात का अहमदाबाद जिला	गोदीवाड़ा, युग्मित शवाधान, रँगाई के कुण्ड, हाथी दाँत का पैमाना
7.	कोटदीजी	फजल अहमद	1955	सिन्धु	सिन्धु प्रान्त का खैरपुर स्थान	पत्थर के वाणाग्र
8.	आलमगीरपुर	यज्ञदत्त शर्मा	1958	हिन्डन	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला	साँप तथा रीछ की मृण्मूर्ति
9.	कालीबंगा	बी. बी. लाल एवं बी. के. थापर	1961	घग्घर	राजस्थान का श्रीगंगानगर जिला	जुते खेत, अग्नि वेदियाँ, पकी ईटें, अलंकृत फर्श
10.	धौलावीरा	जे. पी. जोशी	1967–68		गुजरात का कच्छ जिला	पॉलिशदार श्वेत पाषाण खण्ड, स्टेडियम सैन्धव लिपि के दस बड़े अक्षर, लम्बा जलाशय
11.	बनावली	रवीन्द्र सिंह बिष्ट	1973–74	रंगोई	हरियाणा का हिसार जिला	मिट्टी का खिलौना, हल, जौ, मातृदेवी की मृण्मूर्ति

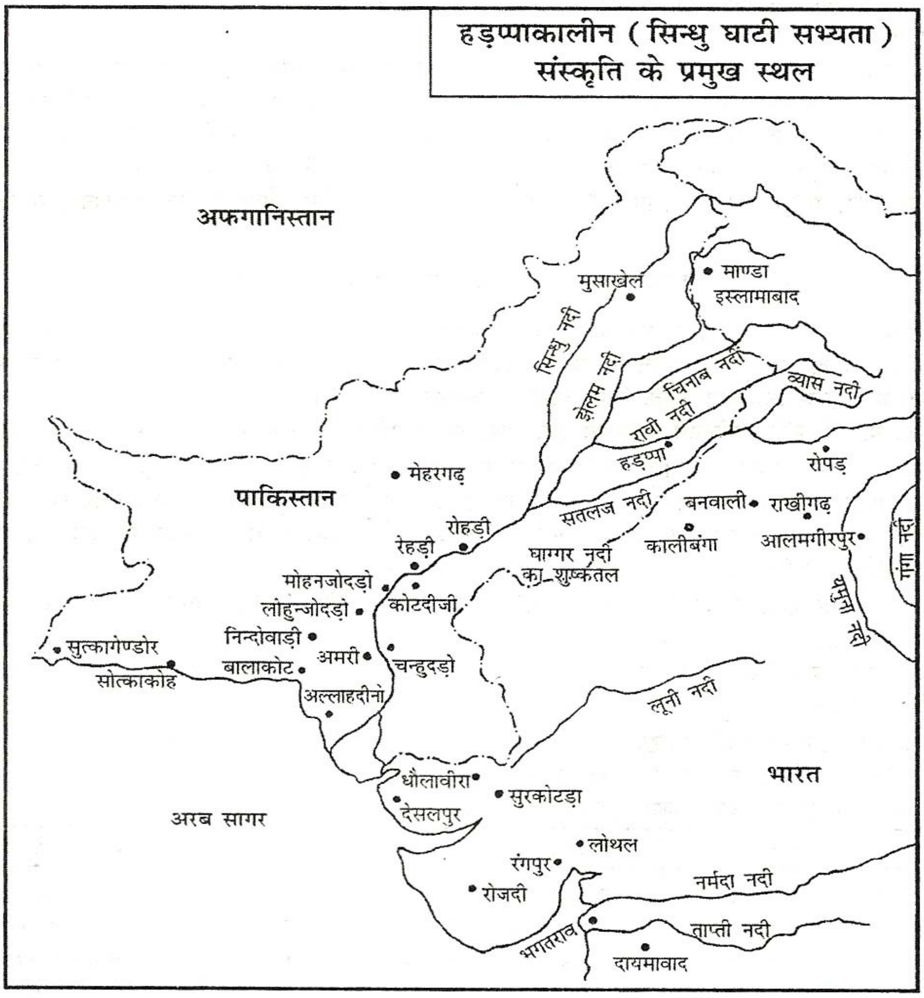

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- सर्वप्रथम 1921 ई. में **रायबहादुर दयाराम साहनी** ने तत्कालीन भारतीय पुरातत्व विभाग के निदेशक सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में हड़प्पा नामक स्थल की खुदाई कर इस सभ्यता की खोज की।
- हड़प्पा के पश्चात् 1922 ई. में **राखालदास बनर्जी** ने **मोहनजोदड़ो** नामक स्थल की खोज की।
- रेडियो कार्बन C^{14} विश्लेषण पद्धति के द्वारा सिन्धु सभ्यता की सर्वमान्य तिथि 2350 ई. पू. से 1750 ई. पू. मानी गई है।
- सिन्धु सभ्यता के अन्य नदी–घाटियों तक विस्तृत स्वरूप का पता चलने के कारण इसे 'हड़प्पा सभ्यता' के नाम से अधिक जाना जाता है। हड़प्पा को इस नगरीय सभ्यता का प्रथम उत्खनन स्थल होने के कारण नामकरण का यह सम्मान प्राप्त हुआ।
- भारत में सर्वाधिक सैन्धव स्थल गुजरात में पाए गए हैं।
- सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) कांस्ययुगीन सभ्यता थी।
- मोहनजोदड़ो को **'मृतकों का टीला'** भी कहा जाता है।
- कालीबंगा का अर्थ **'काले रंग की चूड़ियाँ'** होता है।
- सिन्धु घाटी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषता नगर–निर्माण योजना का होना था। एक सुव्यवस्थित जल निकास प्रणाली, इस सभ्यता के नगर–निर्माण योजना की प्रमुख विशेषता थी।

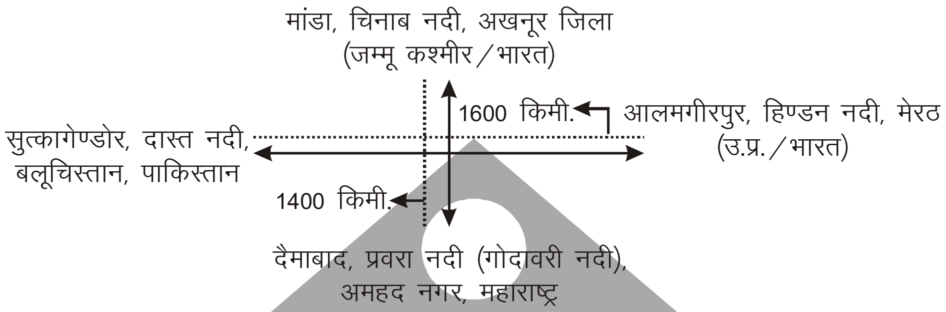

- हड़प्पा सभ्यता का समाज मातृसत्तात्मक था।
- कृषि तथा पशुपालन के साथ–साथ उद्योग एवं व्यापार भी अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार थे।
- हड़प्पा सभ्यता के आर्थिक जीवन का मुख्य आधार कृषि था।
- विश्व में सर्वप्रथम यहीं के निवासियों ने **कपास की खेती** प्रारम्भ की थी। मेसोपोटामिया में 'कपास' के लिए 'सिन्धु' शब्द का प्रयोग किया जाता था। यूनानियों ने इसे 'सिण्डन' कहा, जो सिन्धु का ही यूनानी रूपान्तरण है।
- हड़प्पा सभ्यता में आन्तरिक तथा विदेशी दोनों प्रकार का व्यापार होता था। व्यापार वस्तु–विनिमय के द्वारा होता था।
- माप–तौल की इकाई सम्भवतः 16 के अनुपात में थी।
- हड़प्पा सभ्यता में प्रशासन सम्भवतः वणिक् वर्ग द्वारा चलाया जाता था।
- इस सभ्यता में मातृदेवी की उपासना का प्रमुख स्थान था। साथ ही पशुपति, लिंग, योनि, वृक्षों एवं पशुओं की भी पूजा की जाती थी।
- पशुओं में कूबड़ वाला सांड सर्वाधिक महत्वपूर्ण पशु था और उसकी पूजा का प्रचलन था।
- इस काल में मन्दिर के अवशेष नहीं मिले हैं।
- इस सभ्यता के निवासी मिट्टी के बर्तन–निर्माण, मुहरों के निर्माण, मूर्ति–निर्माण आदि कलाओं में प्रवीण थे।
- मुहरें अधिकांशतः सेलखड़ी की बनी होती थीं।
- हड़प्पा की लिपि, भाव–चित्रात्मक है। यह लिपि प्रथम पंक्ति में दाएँ से बाएँ तथा दूसरी पंक्ति में बाएँ से दाएँ लिखी गई हैं। इस लेखन पद्धति को 'ब्रुस्त्रोफेदम' कहा गया है। इसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
- हड़प्पा सभ्यता में शवों को दफनाने एवं जलाने की प्रथा प्रचलित थी।
- मानवशास्त्रियों के अनुसार चार जाति समूहों; प्रोटो–ऑस्ट्रेलॉयड, भूमध्य सागरीय, मंगोलिया एवं अल्पाइन; द्वारा इस सभ्यता का निर्माण हुआ था।

प्रमुख स्थल :

1. **हड़प्पा** : पंजाब (पाकिस्तान) के मौन्टगोमरी जिले में स्थित है। हड़प्पा के टीले की सर्वप्रथम जानकारी चार्ल्स मैसन/मेसोन (Charles Mason) ने 1826 में दी। 1921 में दयाराम साहनी ने इसका सर्वेक्षण किया और 1923 से इसका नियमित उत्खनन आरम्भ हुआ। 1926 में माधोस्वरूप वत्स ने तथा 1946 में मार्टीमर ह्वीलर ने व्यापक स्तर पर उत्खनन कराया। यहाँ से हमें निम्नलिखित तथ्य मिले हैं–
   छः अन्नागार (15.25 मी. × 6.09 मी.) जिनका सम्मिलित क्षेत्रफल मोहनजोदड़ो से प्राप्त विशाल अन्नागार 838.1025 वर्ग मी. के बराबर है, श्रमिक आवास, ईटों के वृत्ताकार चबूतरे जिनका उपयोग फसल को दाबने के लिए होता था, गेहूँ तथा जौ के दाने।
2. **मोहनजोदड़ो** : सिंधी में इसका शाब्दिक अर्थ 'मृतकों का टीला' है। यह सिंध (पाकिस्तान) के लरकाना जिले में सिंधु तट पर स्थित हैं सर्वप्रथम इसकी खोज आर. डी. बनर्जी ने 1922 में की थी। 1922–30 तक सर जान मार्शल के नेतृत्व में विभिन्न पुराविदों ने उत्खनन किया। प्राप्त साक्ष्यों से पता चलता है कि यह शहर सात बार उजड़कर बसा था।
   यहाँ से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख हैं–
   विशाल स्नानागार (Great Bath), विशाल अन्नागार (Great Granary), महाविद्यालय भवन (Collegiate Building), सभा भवन (Assembly Hall), कांसे की नृत्यरत नारी की मूर्ति (Bronze Statue of Dancing Girl), पुजारी (योगी) की मूर्ति (Priest), मुद्रा पर अंकित पशुपतिनाथ (शिव) (Seal inscribed Pashupatnath), अंतिम स्तर पर बिखरे हुए एवं कुएं में प्राप्त नरकंकाल, सड़क के मध्य कुम्हार का आंवा, गीली मिट्टी पर कपड़े का साक्ष्य।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

3. **चन्हूदड़ो** : मोहनजोदड़ो से 80 मील दक्षिण में स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज एन. जी. मजूमदार (N. G. Majumdar) ने 1931 में की थी। 1935 में इसका उत्खनन मैके (Mackay) ने किया यहाँ सैंधव संस्कृति के अतिरिक्त प्राक्–हड़प्पा संस्कृति (Pre-Harappan Culture), जिसे 'झूकर संस्कृति' (Jhuker Culture) और 'झांगर संस्कृति' (Jhanger Culture) कहते हैं, के भी अवशेष मिले हैं। यहीं के निवासी मुख्यतः कुशल कारीगर थे। इसकी पुष्टि इस बात से हो जाती है कि यह मनके, सीप, अस्थि तथा मुद्रा (Sealmaking) बनाने का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख हैं– 1. अलंकृत हाथी, 2. खिलौना, 3. एक कुत्ते के बिल्ली का पीछा करते पद्–चिन्ह। यहाँ किसी दुर्ग का अस्तित्व नहीं मिला है।

4. **लोथल** : अहमदाबाद जिले (गुजरात) के सरागवाला ग्राम में स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज डा. एस. आर. राव (S. R. Rao) ने 1954 में की थी। सागर तट पर स्थित यह स्थल पश्चिमी–एशिया से व्यापार का प्रमुख बंदरगाह था। यहाँ से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख हैं– 1. बंदरगाह (Dockyard), 2. मनके बनाने का कारखाना (Beads factory), 3. धान (चावल) का साक्ष्य (Evidence of rice), 4. फारस की मोहर (Persian Seal), 5. घोड़े की लघु मृण्मूर्ति (Terracotta figurine of a Horse)।

5. **कलीबंगा (Kalibangan)** : राजस्थान के गंगानगर जिले में स्थित इस प्राक्–हड़प्पा पुरास्थल की खोज सर्वप्रथम ए. घोष (A. Ghose) ने 1953 में की। यहाँ से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख हैं–1. हल के निशान (जुते हुए खेत) (ploughed field), 2. ईटों से निर्मित चबूतरे (Brick platform), 3. हवनकुण्ड (Fire Altar), 4. अन्नागार (Granary), 5. घरों के निर्माण में कच्ची ईंटों का प्रयोग।
नोट : यहाँ दो सांस्कृतिक अवस्थाओं– हड़प्पा पूर्व और हड़प्पा कालीन के दर्शन होते हैं।

6. **बनवाली (Banawali)** : हरियाणा के हिस्सार जिले में स्थित इस पुरास्थल की खोज आर. एस. विष्ट (R.S. Bisht) ने 1973 में की। यहाँ प्राक्–हड़प्पा (Pre-Harappan) और हड़प्पा संस्कृति (Harappan Culture) दोनों के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं। मोहनजोदड़ो की ही भाँति यह भी एक कुशल–नियोजित शहर था, यहाँ पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया था। प्राप्त अवशेषों में प्रमुख हैं– 1. हल की आकृति (आकृति के रूप में), 2. जौ, तिल तथा सरसों का ढेर (Barley, Seasamum & Mustard), 3. सड़कों और जल–निकास के अवशेष (Remains of Streets and Drains)।

7. **सुत्कागेंडोर (Sutkagendor)** : सैंधव सभ्यता की पश्चिमी सीमा निर्धारित करता यह पुरास्थल पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित है। सर्वप्रथम इसकी खोज ए. स्टीन (A. Stain) ने 1927 में की। वैवीलोन के साथ व्यापार में इस बंदरगाह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। प्राप्त अवशेषों में प्रमुख हैं– 1. मानव अस्थराख से भरा बर्तन, 2. तांबे की कुल्हाड़ी (Axes of copper), 3. मिट्टी निर्मित चूड़ियां (Bangles of clay), 4. बर्तन (Pottery)।

8. **आलमगीरपुर (Alamgirpur)** : उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित इस परास्थल की खोज 1958 में की गई। सैंधव सभ्यता का पूर्वी छोर निर्धारित करता यह स्थल हड़प्पा संस्कृति की अंतिम अवस्था (Lastphase) से संबंधित है। उल्लेखनीय है, यहाँ से अभी एक भी मुहर प्राप्त नहीं हुई है।

9. **सुरकोटदा (Surkotada)** : गुजरात के कच्छ जिले में स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज जगतपति जोशी (jagat pati Joshi) ने 1964 में की। यह स्थल सैंधव संस्कृति के पतन काल को दृष्टिगत करता है। यहाँ के अवशेषों में प्रमुख है– 1. घोड़े की अस्थियाँ (Bones of Horse), 2. एक विशेष प्रकार का कब्रगाह (Special Cenetary)।

10. **रंगपुर (Rangpur)** : यह स्थल गुजरात के अहमदाबाद जिले में स्थित है। क्रमानुसार इसकी खोज 1931 में एम. एस. वत्स (M. S. Vatsa) तथा 1953 में एस. आर. राव (S.R. Rao) ने की। यहाँ सैंधव संस्कृति के उत्तरावस्था के दर्शन होते हैं। उल्लेखनीय है कि यहाँ से प्राप्त अवशेषों में न कोई मुद्रा और न ही मातृदेवी की मूर्ति प्राप्त हुई हैं धान की भूसी का ढेर मिला है।

11. **अली मुराद (Ali Murad)** : पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में स्थित यह स्थल बैल की लघु मृण्मूर्ति, कांसे की कुल्हाड़ी, इत्यादि के लिए जाना जाता है।

12. **कोटदिजी (KotDiji)** : सिंध (पाकिस्तान) के खैरपुर स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज घुर्ये (Ghurey) ने 1935 में की। 1955 से एफ. ए. खान (F. A. Khan) ने इसकी नियमित खुदाई कराई। यहाँ प्राक्–हड़प्पा (Pre-Harappan Culture)संस्कृति की अवस्था दृष्टिगोचर होती है जहाँ पत्थरों का इस्तेमाल होता है। सम्भवतः पाषाण युगीन सभ्यता का अंत तथा हड़प्पा सभ्यता का विकास यहाँ हुआ।

सिंधु सभ्यता संबंधी विचारधाराएं

विद्वान	विचारधारा
मार्टिमर व्हीलर, डी. एच. गार्डन, मार्शल, क्रेमर	सिंधु सभ्यता का उदय मेसोपोटामियाई संस्कृति से हुआ।
रखाल दास बनर्जी	सिंधु सभ्यता द्रविड़ सभ्यता का विस्तार था।
अमला नंद घोष, एलविंस	गुजरात, राजस्थान, सिंध पंजाब और बलूचिस्तान में पूर्व–हड़प्पा संस्कृति 'सोठी' से उदित हुई।
आर. पी. चंदा, पुलाक्कर	संस्थापक ऋग्वेद में उल्लिखित 'पाठी' थे।
राव, अग्रवाल, फेयरसर्विस	भारत कीधरती पर फलित ग्रामीण संस्कृतियों से
बनर्जी एवं शास्त्री	ऋग्वेद में वर्णित 'दास' अथवा 'दस्यु' सिंधु सभ्यता के विचारक थे।

सैंधव सभ्यता का अंत संबंधी विभिन्न मत

1. वाह्य आक्रमण (आर्य)	मार्टिमर व्हीलर, गार्डन चाइल्ड, मैके
2. भू–तात्विक परिवर्तन	लैम्ब्रिक, देल्स, साहनी, राइक्स
3. बाढ़	मार्शल, एस. आर. राव, मैके
4. जलवायु परिवर्तन	आरेल स्टाइन, मार्शल, गरदीप सिंह
5. महामारी	के. यू. आर. कैनेडी
6. विदेशी व्यापार में गतिरोध	मार्शल, व्हीलर
7. प्रशासनिक शिथिलता	मार्शल, व्हीलर
8. भौतिक–रासायनिक विस्फोट	एम. दिमित्रियेव

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

T.I. Highlights

- कालीबंगा के एक घर में नक्काशीदार ईंटों (Ornamental bricks) का प्रयोग किया गया था।
- विशाल स्नानागार (Great Bath) की खोज सर जॉन मार्शल (Sir John Marshal) ने की थी।
- मिट्टी के बर्तन के एक टुकड़े पर सूती वस्त्र की छाप कालीबंगा से मिली है।
- मुहरों पर सूती वस्त्रों की छाप–लोथल से।
- मिट्टी के एक नाद पर बुने हुए वस्त्र के निशान आलमगीरपुर से।
- पुरोहित की प्रस्तर मूर्ति अलंकारयुक्त शाल ओढ़े–मोहनजोदड़ो से।
- मनके बनाने वाले कारीगरों की कार्यशालायें–लोथल तथा चान्हूदड़ो से।
- मुहरों पर पक्षियों के चित्र अंकित नहीं है। डोब (Dove) की आकृति वाले बर्तन मिले हैं, जिनसे यह अनुमान लगता है कि सम्भवतः यह पक्षी धार्मिक महतव का था।
- प्राप्त साक्ष्यों से पता चलता है कि हड़प्पा में चार प्रजातियाँ पाई गई–
  1. प्रोटो–ऑस्ट्रोलायड (Proto-Austroloid)
  2. भूमध्यसागरीय (Mediterranean)
  3. मंगोलियन (Mongoloid)
  4. अल्पाइन (Alpine)

  इनमें से प्रथम दो प्रजातियाँ ही प्रमुख थीं।
- धर्म सम्भवतः सार्वजनिक कम, व्यक्तिगत अधिक था।
- 'स्वास्तिक' चिह्न संभवतः हड़प्पा सभ्यता की ही देन है।
- **'अग्नि कण्ड'** लोथल और कालीबंगा से प्राप्त हुए हैं।
- कृषि हड़प्पा अर्थव्यवस्था का मूल आधार था।
- हड़प्पा मुहरों पर सबसे अधिक एक श्रृंगी पशं का अंकन मिलता है।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरांत उत्खनन का कार्य मार्टीमर व्हीलर के नेतृत्व में किया गया।
- सिंधु सभ्यता में नीले (Blue) रंग का साक्ष्य नहीं मिला हैं
- 'R-37' कब्रगाह हड़प्पा में मिला हैं
- कपास (Cotton) की सर्वप्रथम खेती सैंधव लोगों ने की थी अतः यूनानियों ने उसे **सिन्डन** (Sindon) नाम दिया थां
- बनवाली तथा कालीबंगा में दो सांस्कृतिक अवस्थाओं–हड़प्पा–पूर्व (Pre-Harappa) और हड़प्पा–कालीन (Harappan) के दर्शन होते हैं।
- हड़प्पा सभ्यता का परवर्ती काल (Later phase) रंगपुर तथा रोजदी (Rojdi) में परिलक्षित होता है।
- घोड़े (Horse) की जानकारी मोहनजोदड़ों, लोथल तथा सुरकोटदा से प्राप्त हुई है।
- हड़प्पा सभ्यता कांस्य युगीन सभ्यता (Bronze Age Civilization) है।
- संभवतः 1800 ई. पू. में लोथल के लोगों ने **चावल** (Rice) का उपयोग किया।

वैदिक सभ्यता

- वैदिक काल का विभाजन दो भागों में किया गया है–
  (a) ऋग्वैदिक काल– इसे 1500 ई. पू.– 1000 ई. पू. माना गया है।
  (b) उत्तर वैदिक काल– इसे 1000 ई. पू.– 600 ई. पू. माना गया है।
- मैक्स मूलर ने आर्यों का मूल निवास स्थान मध्य एशिया को माना है।
- भारत में आर्य सर्वप्रथम 'सप्तसिन्धु' क्षेत्र में बसे। यह क्षेत्र आधुनिक पंजाब तथा उसके आस–पास का क्षेत्र था।

आर्यों का मूल निवास	विद्वान का नाम
1. मध्य एशिया (Central Asia)	प्रो. मैक्स मूलर
2. उत्तर ध्रुव (Arctic Region)	बाल गंगाधर तिलक
3. ऑस्ट्रो–हंगरी (Austro-Hangarian Region)	प्रो. मैकडोनाल्ड
4. सप्त सिन्धु प्रदेश (Sapta-Sindhu Region)	डॉ. अविनाश चन्द्र दास
5. जर्मनी के मैदानी भाग (German Plains)	प्रो. पेन्का
6. तिब्बत (Tibet)	दयानन्द सरस्वती
7. दक्षिण रूस (Southern Russia)	प्रो. गार्डन चाइल्ड

ऋग्वैदिक काल :

- ऋग्वैदिक आर्य कई छोटे–छोटे कबीलों में विभक्त थे। ऋग्वैदिक साहित्य में कबीले को **'जन'** कहा गया है।
- कबीले के सरदार को **'राजन'** कहा जाता था, जो शासक होते थे।
- सबसे छोटी राजनीतिक इकाई कुल या परिवार थी, कई कुल मिलकर ग्राम बनते थे जिसका प्रधान **'ग्रामणी'** होता था, कई ग्राम मिलाकर **'विश'** होता था, जिसका प्रधान **'विशपति'** होता था तथा कई **'विश'** मिलकर **'जन'** होता था जिसका प्रधान **'राजा'** होता था।
- ऋग्वेद में **'जन'** का 275 बार तथा 'विश' का 170 बार उल्लेख हुआ है।
- 'सभा', 'समिति' एवं 'विदथ' राजनीतिक संस्थाएँ थीं।
- परिवार पितृसत्तात्मक था।
- समाज में वर्ण–व्यवस्था कर्म पर आधारित थी। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 'पुरुष सूक्त' में चार वर्णों, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र; का उल्लेख है।
- **'सोम'** आर्यों का मुख्य पेय था तथा **'यव'** (जौ) मुख्य खाद्य पदार्थ।
- समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी। इस समय समाज में 'विधवा विवाह', 'नियोग प्रथा' तथा 'पुनर्विवाह' का प्रचलन था लेकिन 'पर्दा प्रथा', 'बाल–विवाह' तथा 'सती–प्रथा' प्रचलित नहीं थी।

ऋग्वैदिककालीन नदियाँ

क्र. सं.	प्राचीन नाम	आधुनिक नाम	
1.	कुभु	कुर्रम	अफगानिस्तान की नदियाँ
2.	सुवास्तु	स्वात्	
3.	कुभा	काबुल	
4.	गोमती	गोमल	
5.	वितस्ता	झेलम	
6.	परुषणी	रावी	
7.	विपाशा	व्यास	
8.	दृषद्वती	घग्घर	
9.	अस्किनी	चिनाव	
10.	शतुद्रि	सतलुज	
11.	सदानीरा	गण्डक	

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

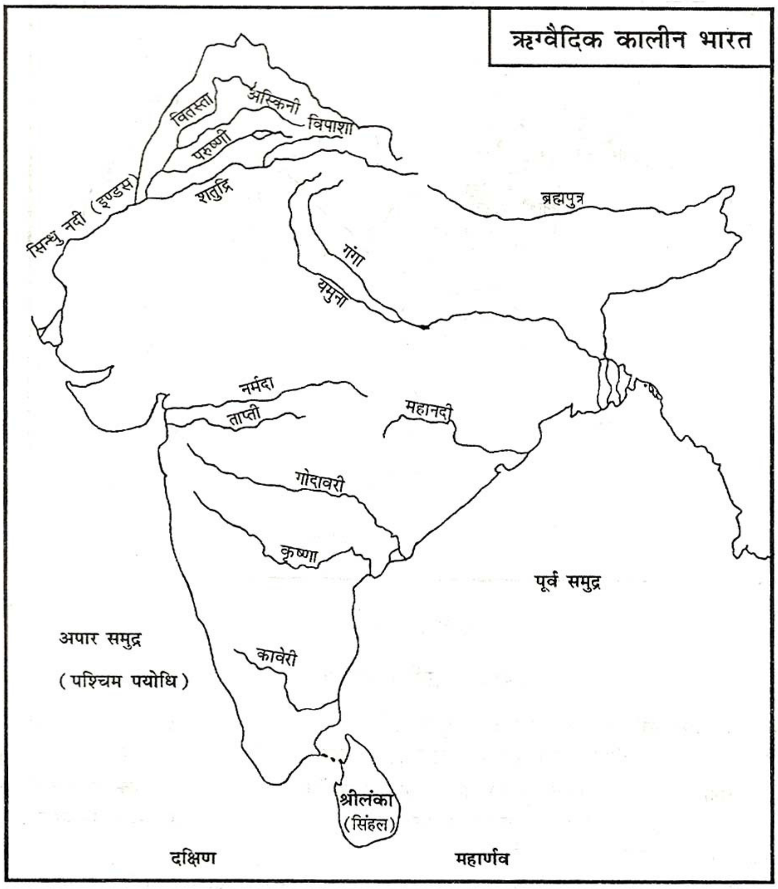

- ऋग्वैदिक काल के देवताओं में सर्वाधिक महत्व 'इन्द्र' को तथा उसके उपरान्त 'अग्नि' व 'वरुण' को महत्व प्रदान किया गया था।
- ऋग्वेद में इन्द्र को **'पुरन्दर'** अर्थात् 'किले को तोड़ने वाला' कहा गया है। ऋग्वेद में उसके लिए 250 सूक्त हैं।

उत्तर वैदिक काल :

- उत्तर वैदिक काल के राजनीतिक संगठन की मुख्य विशेषता बड़े राज्यों तथा जनपदों की स्थापना थी।
- राजत्व के 'दैवी उत्पत्ति के सिद्धान्त' का सर्वप्रथम उल्लेख 'ऐतरेय ब्राह्मण' में किया गया है।
- इस काल में राजा का महत्व बढ़ा। उसका पद वंशानुगत हो गया।
- उत्तर वैदिक काल में परिवार पितृसत्तात्मक होते थे। संयुक्त परिवार की प्रथा विद्यमान थी।
- समाज स्पष्ट रूप से चार वर्णों; ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र; में बँटा था। वर्ण व्यवस्था कर्म के बदले जाति पर आधारित थी।
- स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं थी। उन्हें धन सम्बन्धी तथा किसी प्रकार के राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे।
- 'जाबालोपनिषद्' में सर्वप्रथम चार आश्रमों; ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास; का विवरण मिलता है।
- धार्मिक एवं यज्ञीय कर्मकाण्डों में जटिलता आई।
- इस काल में सबसे प्रमुख देवता प्रजापति (ब्रह्मा), विष्णु एवं रुद्र (शिव) थे।
- लोहे के प्रयोग का सर्वप्रथम साक्ष्य 1000 ई. पू. उत्तर प्रदेश के **अतरन्जीखेड़ा** (उत्तर प्रदेश) से मिला है।

आश्रम : 'श्रम' धातु से व्युत्पन्न आश्रम शब्द का अर्थ परिश्रम अथवा उद्योग करने से है। इस प्रकार आश्रम में स्थान हैं जहाँ कुछ समय ठहरकर मनुष्य कुछ आवश्यक गुणों का विकास करता है और आगे की यात्रा के लिये तैयार होता है। डॉ. प्रभु ने आश्रमों को जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति की यात्रा में विश्राम स्थल बताया है। मनुष्य की आयु 100 वर्ष मानकर उसे 4 आश्रमों में विभाजित किया गया। प्रत्येक आश्रम की अवधि 25 वर्ष निर्धारित की गई। ये 4 आश्रम हैं– ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, संन्यास आश्रम।

ब्रह्मचर्य आश्रम : यह जीवन की तैयारी, प्रशिक्षण, अध्ययन एवं अनुशासन का काल है। इस अवस्था में युवक अपनी सारी शक्ति का संचय करते हुये, विषय–वासना से दूर रहकर श्रम एवं साधनामय जीवन व्यतीत करता था। इस आश्रम का मुख्य उद्देश्य बालक को स्वावलंबी बनाना और गृहस्थ जीवन के लिये प्रशिक्षित करना था।

गृहस्थ आश्रम : इस आश्रम में व्यक्ति धार्मिक एवं सामाजिक दायित्वों को पूरा करने की ओर अग्रसर होता है। इस आश्रम का प्रारम्भ विवाह के बाद होता है। इस आश्रम में मनुष्य संतानोत्पत्ति अतिथि यज्ञ का संपादन, अग्निहोत्र का संपादन, अर्थवृद्धि, याज्ञिक संस्कारों का संपादन आश्रम वासियों की सुरक्षा तथा दान पुण्य का कार्य करता था। इसी आश्रम में व्यक्ति तीन ऋण से मुक्ति और पंच महायज्ञ का संपादन करता था।

तीन ऋण

1. **देव ऋण :** विभिन्न धार्मिक और याज्ञिक अनुष्ठानों द्वारा मुक्ति
2. **ऋणि ऋण :** वेदों के विधिपूर्वक अध्ययन द्वारा मुक्ति
3. **पितृ ऋण :** धर्मानुसार सन्तानोत्पत्ति द्वारा मुक्ति

पंच महायज्ञ

1. **देव यज्ञ :** यज्ञ के दौरान अग्नि में आहूति देना
2. **पितृ यज्ञ :** पितरों का तर्पण, सम्मान
3. **नृ (अतिथि) यज्ञ :** अथितियों का समुचित सत्कार
4. **भूत यज्ञ :** जीवधारियों का पालन
5. **ब्रह्म यज्ञ :** वेदशास्त्रों का अध्ययन और स्वाध्याय

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

वानप्रस्थ आश्रम : 50 वर्ष की अवस्था में मनुष्य का प्रवेश वानप्रस्थ आश्रम में होता था। इस आश्रम के अंतर्गत व्यक्ति का उद्देश्य धर्म एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु प्रयास करना था। इस आश्रम में प्रवेश के बाद मनुष्य काम एवं अर्थ से मुक्ति पा लेता था।

संन्यास आश्रम : व्यक्ति के जीवन की 75 वर्ष से 100 वर्ष के बीच की अवधि संन्यास आश्रम के लिये थी। इस आश्रम में मनुष्य धर्म, अर्थ काम के बंधन से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होते थे और वन में रहते थे।

पुरुषार्थ :

पुरुषार्थ दो शब्दों पुरुष और अर्थ से मिलकर बना है जिसका अर्थ है विवेकशील प्राणी का लक्ष्य। पुरुषार्थ का एक अर्थ उद्योग अथवा प्रयत्न करने से भी है, अर्थात अपने अभीष्ट (मोक्ष) को प्राप्त करने के लिये उधम करना। पुरुषार्थ 4 हैं– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

धर्म : व्यक्ति को कर्त्तव्य मार्ग पर आगे बढ़ने और अपने दायित्वों का निर्वाह करने की प्रेरणा देता है। धर्म ही मनुष्य तथा समाज के अस्तित्व को अक्षुण्ण रखता है। प्रत्येक आश्रम में व्यक्ति को धर्म के अनुरूप कार्य करने को कहा गया है।

अर्थ : इसका प्रयोग व्यापक अर्थ में किया गया हैं अर्थ भौतिक सुखों की सभी आवश्यकताओं और साधनों का द्योतक है। इसके अंतर्गत वार्ता (कृषि, पशुपालन, वाणिज्य) तथा राजनीति को भी सम्मिलित किया गया है।

काम : इसका तात्पर्य उन सब इच्छाओं से है जिनकी पूर्ति करके मनुष्य सांसारिक सुख प्राप्त करता है। भारतीय धर्म दर्शन में काम का मुख्य उद्देश्य संतानोत्पत्ति द्वारा वंश वृद्धि करना माना गया है।

मोक्ष : इसका तात्पर्य हृदय की अज्ञानता का नाश करके जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त करना। इसका संबंध आत्मा से है। बौद्ध दर्शन में इसे निर्वाण और जैन दर्शशन में इसे कैवल्य कहा गया है।

संस्कार :

संस्कार का शाब्दिक अर्थ **'शुद्धता'** अथवा 'परिष्कार' से है। इनका मुख्य उद्देश्य अशुभ शक्तियों के प्रभाव से व्यक्ति को बचाना है। इसके भौतिक उद्देश्य में सांसारिक समृद्धि प्रापत करना प्रमुख है। यद्धपि वैदिक साहित्य में संस्कारों का विधिवत उल्लेख नहीं है, फिर–भी यह माना जाता है कि इसका उदय उत्तर वैदिक काल में हो चुका था। संस्कारों का शास्त्रीय विवेचन सर्वप्रथम **'वृहदारण्यकोपनिषद्'** से प्राप्त होता है। संस्कारों की संख्या भी अलग–अलग बताई गई है, परंतु अधिकांश विद्वान 16 संस्कारों को ही मान्यता देते हैं। ये 16 संस्कार हैं–

1. गर्भाधान	9. कर्णवेधन
2. पुसवन	10. विद्यारंभ
3. सीमन्तोन्नयन	11. उपनयन
4. जात कर्म	12. वेदारंभ
5. नामकरण	13. केशान्त
6. निष्क्रमण	14. समावर्तन
7. अन्नप्राशन	15. विवाह
8. चौलकर्म	16. अंत्येष्टि

(1) **गर्भाधान :** उत्तर वैदिक काल में प्रचलित हुये इस संस्कार में संतान प्राप्ति के उद्देश्य से स्त्री के गर्भ में पुरुष बीजारोपण करता था।

(2) **पुंसवन :** गर्भाधान से बाद तीसरे माह पुत्र संतान की प्राप्ति के लिय यह संस्कार किया जाता था।

(3) **सीमन्तोन्नयन :** गर्भवती स्त्री की रक्षा के तथा गर्भस्थ शिशु की दीर्घायु के लिये किया जाता था।

(4) **जातकर्म :** बालक के जन्म के तुरंत बाद पिता बालक को स्पर्श कर उसके कान में आशीवर्चन बोलता था। इसका उद्देश्य संतान पर पड़ने वाली अनिष्टकारी बाधाओं से बचाना था।

(5) **नामकरण :** जन्म के 11वें दिन शिशु का नाम रखा जाता था।

(6) **निष्क्रमण :** बालक के पहली बार घर से बाहर जाने पर इस संस्कार का आयोजन होता था।

(7) **अन्नप्राशन :** इस संस्कार के अंतर्गत पहली बार शिशु को अन्न खिलाया जाता था। यह संस्कार जन्म के 5वें अथवा 6वें माह में किया जाता था।

(8) **चौलकर्म (चूड़ाकरण) :** शिशु के 1 वर्ष या 3 वर्ष का होने पर इस संस्कार का संपादन होता था जिसमें पहली बार शिशु के बाल काटे जाते थे।

(9) **कर्ण वेधन :** शिशु के 3 वर्ष या 5 वर्ष का होने पर उसके कान को छेदा जाता था।

(10) **विद्यारंभ :** शिशु के 5 वर्ष का होने पर गुरू द्वारा अक्षर ज्ञान कराया जाता था।

(11) **उपनयन :** इस संस्कार के अंतर्गत बालक गुरू के पास रहकर गुरू, वेद, यम, नियम का व्रत और देवता के सामीप्य के लिये दीक्षित किया जाता था। उपनयन संस्कार ब्राह्मण का 8वें वर्ष में, क्षत्रिय का 11वें वर्ष में, वैश्य का 12वें वर्ष में, किया जाता था। इस संस्कार के बाद व्यक्ति का दूसरा जन्म माना जाता था, इसीलिये उसे द्विज कहा जाता था। शूद्रों एवं महिलाओं के लिये यह संस्कार वर्जित था।

(12) **वेदारंभ :** उपनयन संस्कार के 1 वर्ष के अंदर इस संस्कार का संपादन होता था जिसमें वेदों का अध्ययन प्रारंभ किया जाता था।

(13) **केशान्त :** गुरु के पास रहते हुए 16 वर्ष की आयु में पहली बार विद्यार्थी की दाढ़ी, मूछ बनवाने पर यह संस्कार संपन्न होता था।

(14) **समावर्तन :** शिक्षा की समाप्ति पर यह संस्कार संपन्न होता था। इसके बाद वह स्नातक कहलाता था। इस संस्कार की सर्वमान्य आयु 24 वर्ष मानी गई है।

(15) **विवाह :** इस आश्रम के बाद ही व्यक्ति गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। इसका उद्देश्य संतानोत्पत्ति था। इस संस्कार के लिये 25 वर्ष की आयु उपर्युक्त मानी गई है। अधिकांश धर्म सूत्रों में 8 प्रकार के विवाहों का उल्लेख मिलता है। ये इस प्रकार हैं–

1. **ब्राह्म :** माता–पिता द्वारा उपर्युक्त वर खोज कर उससे अपनी बेटी का विवाह करना।
2. **दैव :** यज्ञकर्त्ता पुरोहित के साथ कन्या का विवाह।
3. **आर्ष :** कन्या के पिता द्वारा वर से एक गाय और एक बैल या एक जोड़ा बैल लेकर अपनी कन्या का विवाह करना।
4. **प्रजापत्य :** बिना किसी दान–दहेज के वर को अपनी कन्या सौंपना।
5. **आसुर :** कन्या के पिता द्वारा वर से धन लेकर अपनी कन्या का विवाह करना।
6. **गांधर्व :** माता–पिता की इच्छा से विरुद्ध किया गया प्रेम विवाह।
7. **राक्षस :** कन्या का अपहरण अथवा बलपूर्वक किया गया विवाह।
8. **पैशाच :** सोती हुई नशे में अथवा पागल कन्या को काम–वासना की तृप्ति के लिये अपनाया जाना।

प्रशंसनीय विवाह

ब्राह्म, दैव, आर्ष और प्रजापत्य विवाह

निंदनीय विवाह

आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच विवाह में तलाक या संबंध विच्छेद संभव था।

(16) **अंत्येष्टि :** व्यक्ति की मृत्यु के उपरांत परलोक में उसके सुख एवं कल्याण के लिय किया जाने वाला संस्कार था।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

T.I. Highlights

- चतुर्वर्ण व्यवस्था का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद के 10वें मंडल में स्थित **'पुरुष सूक्त'** में मिलता है। इसमें चारो वर्णों की उत्पत्ति ब्रह्मा के विभिन्न अंगों से मानी गई है।
- प्रत्येक वर्ण का कार्य निश्चित होने से, कार्य विशेषीकरण (Specialisation) को प्रोत्साहन मिला।
- **छान्दोग्य उपनिषद्** में केवल ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रमों का ही उल्लेख है।
- पुरुषार्थ आश्रम व्यवस्था के मनोवैज्ञानिक–नैतिक आधार हैं।
- ब्रह्मचारी दो प्रकार के बताये गये हैं– (i) **उपकुर्वाण–** शिक्षा समाप्ति के उपरांत गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे, (ii) **अन्तेवासी या नेष्ठिक–** जीवन पर्यन्त गुरु के पास रहते थे।
- महाभारत तथा याज्ञवल्क्य स्मृति में गृहस्थों के 4 वर्ग बताये गये हैं– (i) कुसूल धान्य, (ii) कुंभ धान्य, (iii) अश्वस्तन, (iv) कपोतीमाश्रित।
- चारों आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।
- मनु ने व्यक्ति के चारों आश्रमों का पालन क्रम से करने को आवश्यक माना था जबकि याज्ञवल्क्य ने व्यक्ति के लिये ब्रह्मचर्य आश्रम से सीधे संन्यास आश्रम में जाने को गलत नहीं माना।
- ऋषियों ने चारों पुरुषार्थों की प्रप्ति के लिये ही चतुराश्रम व्यवस्था बनाई थी।
- मोक्ष प्राप्त करना सबके लिये संभव नहीं था। अतः कालांतर में केवल धर्म, अर्थ, काम को **त्रिवर्ग** कहा गया है।
- गौतम धर्मसूत्र में संस्कारों की संख्या 40, वैरवानस गृहसूत्र में 18, पारस्कर सूत्र में 13, मनु ने 13 और याज्ञवल्क्य ने यह संख्या 12 बताई है।
- **गौतम धर्मसूत्र** और गृहयसूत्रों में अंत्येष्टि संस्कार का उल्लेख नहीं है, क्योंकि इसे अशुभ माना जाता था।
- मनुस्मृति में 10 यमों का उल्लेख है– (i) ब्रह्मचर्य, (ii) दया, (iii) ध्यान, (iv) क्षमा, (v) सत्य, (vi) नम्रता, (vii) अहिंसा, (viii) अस्तेय, (ix) मधुर स्वभाव, (x) इंद्रिय दमन।
- संस्कार व्यक्ति को चरित्रगत दृढ़ता, सामाजिक मूल्यों और आदर्शों का ज्ञान देते थे।

षड्दर्शन एवं उनके रचयिता

दर्शन	रचयिता
सांख्य	कपिल
योग	पतंजलि
न्याय	गौतम
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा	बादरायण
वैशेषिक	कणाद या उलूक

वैदिक साहित्य

ऋग्वेद :

- वेद का अर्थ ज्ञान से है। इनसे आर्यों के आगमन व बसने का पता चलता है।
- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 श्लोक (1017 सूक्त तथा 11 वलाखिल्य) तथा लगभग 10,600 मन्त्र हैं।
- ऋग्वेद में अग्नि, सूर्य, इन्द्र, वरुण आदि देवताओं की स्मृति में रची गई प्रार्थनाओं का संकलन है।
- 10वें मण्डल में पुरुषसूक्त का जिक्र आता है जिसमें 4 वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) का उल्लेख है।
- गायत्री मंत्र का उल्लेख ऋग्वेद में है। यह मंत्र सूर्य की स्तुति में है।

यजुर्वेद :

- यजुर्वेद कर्मकाण्ड प्रधान ग्रन्थ है। इसका पाठ करने वाले ब्राह्मणों को **'अध्वर्यु'** कहा गया है।
- यजुर्वेद दो भागों में विभक्त है–
  कृष्ण यजुर्वेद (गद्य) शुक्ल यजुर्वेद (पद्य)
- यजुर्वेद एक मात्र ऐसा वेद है **जो गद्य और पद्य दोनों में रचा गया है।**

सामवेद :

- साम का अर्थ **'गान'** से है।
- वेदों में सामवेद को **''भारतीय संगीत का जनक''** माना जाता है।

अथर्ववेद :

- 'अथर्व' शब्द का तात्पर्य है–पवित्र जादू। अथर्ववेद में रोग–निवारण, राजभक्ति, विवाह, प्रणय गीत, अंधविश्वासों का वर्णन है।

उपवेद :

- **ऋग्वेद–आयुर्वेद** (चिकित्सा शास्त्र से सम्बन्धित)
- **यजुर्वेद–धनुर्वेद** (युद्ध कला से सम्बन्धित)
- **सामवेद–गांधर्ववेद** (कला एवं संगीत से सम्बन्धित)
- **अथर्ववेद–शिल्पवेद** (भवन निर्माण कला से सम्बन्धित)

ब्राह्मण :

- प्रत्येक वेद की गद्य रचना ही ब्राह्मण ग्रन्थ है।
- हर वेद के साथ कुछ ब्राह्मण जुड़े हुए हैं–

वेद		ब्राह्मण
ऋग्वेद	:	कौशितकी और ऐतरेय
यजुर्वेद	:	तैतिरीय और शतपथ
सामवेद	:	पंचविश और जैमिनीय
अथर्ववेद	:	गोपथ

आरण्यक :

- आरण्यक श्याब्द ''अरण्य'' से बना है जिसका अर्थ है **जंगल**।
- आरण्यक दार्शनिक ग्रन्थ है जिनके विषय– आत्मा, परमात्मा, जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म आदि हैं।
- ये ग्रन्थ जंगल के शान्त वातावरण में लिखे जाते थे एवं इनका अध्ययन भी जंगल में किया जाता था।
- आरण्यक ज्ञानमार्ग एवं कर्ममार्ग के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं।

उपनिषद :

- इनका शाब्दिक अर्थ उस विद्या से है जो गुरु के समीप बैठकर, एकान्त में सीखी जाती है।
- इसमें आत्मा और ब्रह्मा के सम्बन्ध में दार्शनिक चिन्तन है। ये भारतीय दार्शनिकता के मुख्य स्रोत हैं।
- उपनिषद 108 हैं।
- इन्हें वेदांत भी कहते हैं क्योंकि ये वैदिक साहित्य का अन्तिम भाग हैं और ये वेदों का सर्वोच्च व अन्तिम उद्देश्य बतलाते हैं।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

वेदांग :

- वेदों का अर्थ समझने व सूक्तियों के सही उच्चारण के लिए वेदांग की रचना की गयी।
- ये 6 हैं– शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष।

षड्दर्शन :

- इनमें आत्मा, परमात्मा, जीवन–मृत्यु आदि से सम्बन्धित बातें हैं–

दर्शन	प्रवर्तक
सांख्य	कपिल
योग	पतंजलि
वैशेषिक	कणाद
न्याय	गौतम
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा	बादरायण (व्यास)

पुराण :

- कुल पुराणों की संख्या 18 है।
- इनमें मुख्य हैं–मत्स्य, विष्णु, वामन आदि।
- सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रमाणिक मत्स्य पुराण है जिसमें विष्णु के 10 अवतारों का उल्लेख है।

रामायण :

- रामायण की रचना महर्षि वाल्मिकी ने की थी।
- इसे **चतुर्विंशति सहस्री संहिता** भी कहा जाता है।

महाभारत :

- इसकी रचना महर्षि व्यास ने की थी।
- महाभारत को **जयसंहिता** और **सतसहस्री संहिता** के नाम से भी जाना जाता है।

स्मृतियाँ :

- इनमें सामाजिक नियम बताये गये हैं। कुछ मुख्य स्मृतियाँ निम्न हैं–

मनुस्मृति, गौतम स्मृति, विष्णु स्मृति, नारद स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, वशिष्ठ स्मृति

वैदिक, शब्दावलीक

गविष्टि : गायों की गवेषणा।
रयि : वैदिक युग में सम्पत्ति के लिए प्रयुक्त।
अदेवयु : देवताओं में श्रद्धा न रखने वाले।
अब्रह्मन : वेदों को न मानने वाले।
अयज्वन : यज्ञ न करने वाले।
अनास : कटु वाणी वाले इसका प्रयोग आर्यों के शत्रु पणियों के लिए भी किया गया।
व्राजपति : चारागाह का अधिकारी।
कुलप : परिवार का मुखिया।
ग्रामणी : लड़ाकू दलों का प्रधान।
व्राजपति : गाँव का प्रधान।
जन या विश : वैदिक कबीले (प्रजाजन)
नप्तृ : भतीजे, प्रपौत्र, चचेरे भाई–बहिन इत्यादि के लिए प्रयुक्त शब्द।
संहिता : वैदिक सूक्तों या मंत्रों का संग्रह।
बलि : राजा को स्वेच्छा से दी गयी भेंट।
राष्ट्र : प्रदेश या राज्य क्षेत्र (वैदिक युग में पहली बार प्रयुक्त)
होतृ या होता : ऋग्वेद में उल्लिखित श्लोक उच्चारित करने वाले ऋषि।
अध्वर्यु : यज्ञ सम्बन्धी मंत्रों का उच्चारण करने वाले पुरोहित, यजुर्वेद में उल्लिखित।
उद्गाता : यज्ञ सम्बन्धी मंत्रों को गाने वाले पुरोहित, सामवेद में उल्लेख।

वैदिक साहित्य

वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
ब्राह्मण – ऐतरेय, कौषीतकि, शतपथ, पंचविश (ताण्ड्य), गोपथ
आरण्यक – ऐतरेय, तैत्तरेय, मैत्रायणी, शांखायन, बृहदारण्यक, माध्यंदिन, तल्वकार
उपनिषद् – ईश, केन, कठा, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरेय, श्वेताश्वतर, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, कौषीतकि, प्रश्न
वेदांग – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष
कल्पसूत्र – श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र
उपवेद – आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, शिल्पवेद

सैंधव सभ्यता और वैदिक सभ्यता की तुलना

	सिंधु सभ्यता	ऋग्वैदिक सभ्यता
समानता	कांस्ययुगीन	कांस्ययुगीन
काल	2300–1750 ई.पू.	1500–1000 ई.पू.
सभ्यता	नगरीय	ग्रामीण
लोहे से	अपरिचित	उत्तर वैदिक कालीन लोग परिचित
घोड़े से	परिचित	परिचित
व्याघ्र, हाथी से	परिचित	उत्तर वैदिक काल में परिचित
पवित्र पशु	बैल	गाय
मूर्ति पूजा	प्रचलित	प्रचलित नहीं
लिंग पूजन	करते थे	घृणा करते थे
देवमंडल	देवियों की प्रधानता	देवताओं की प्रधानता
लेखन से	परिचित	अपरिचित
रक्षा उपकरण	अपरिष्कृत एवं अल्प संख्या में प्राप्त	परिष्कृत एवं बहुतायत में प्राप्त
राजसत्ता	गणतंत्रात्मक होने का अनुमान	राजतंत्रात्मक

T.I. Highlights

- ऋग्वैदिक काल में राजा के दैविक पद अथवा दैवी अधिकार का कोई संकेत नहीं मिलता।
- ऋग्वैदिक राजनैतिक व्यवस्था मूलतः एक कबीलाई व्यवस्था वाला शासन था, जिसमें सैनिक भावना का प्राधान्य था। नागरिक व्यवस्था अथवा प्रादेशिक प्रशासन जैसी किसी चीज का अस्तित्व नहीं था, क्योंकि लोग निरंतर अपने स्थान बदलते हुए फैलते जा रहे थे।
- दो कबीलाई परिषदों, जिनमें स्त्रियां भाग ले सकती थी, 'सभा और 'विदथ' थे।
- अथर्ववेद में 'सभा' तथा 'समिति' को प्रजापति की दो पुत्रियों के समान माना गया है।
- ऋग्वेद में 'शर्ध', 'व्रात' तथा 'गण' सैनिक इकाइयां हैं।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- ऋग्वैदिक काल में धंधे पर आधारित विभाजन की शुरुआत हो चुकी थी। परंतु यह विभाजन अभी सुस्पष्ट नहीं था।
- ऋग्वेद में **मछली** का नाम नहीं है।
- **'अनस'** (Anas) शब्द का प्रयोग बैलगाड़ी के लिए किया गया है।
- 'पथी–कृत' (Pathi-krit) शब्द का प्रयोग अग्निदेव (Fire God) के लिए किया गया है।
- **'भीसज'** (Bhishaj) वैद्य को कहते थे।
- जब आर्य भारत में आये, तब वे तीन श्रेणियों में विभक्त थे : 'योद्धा' अथवा अभिजात, 'पुरोहित' और 'सामान्य जन'। शूद्रों के चौथे वर्ग का उद्‌भव ऋगवैदिक काल के अंतिम दौर में हुआ।
- गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित देवता अग्नि (इसके तीन रूप थे– सूर्य, विद्युत तथा भौतिक अग्नि), तथा सोम (अमृत का पेय) है।
- ऋग्वैदिक काल में अमूर्त देवता दो थे– **'श्रद्धा'** तथा **'मन्यु'**।
- ऋग्वैदिक काल में विवाह की उम्र सम्भवतः 16–17 वर्ष थी।
- ऋग्वैदिक काल में सामाजिक विभेद (Social division) का प्रमुख कारण आर्यों की स्थानीय निवासियों पर विजय थी।
- **अग्नि–पूजा** का न केवल भारत में, बल्कि ईरान में भी बड़ा महत्व था।
- उषाकाल का प्रतिनिधित्व करने वाली **'उषस्'** और **अदिति** जैसी देवियों का उल्लेख तो मिलता है, परन्तु इस काम में इन्हें विशेष महत्व नहीं दिया गया था।
- 'ऋग्वेद' में केवल एक ही धातु **अयस** (Ayas) का वर्णन है। 1200 ई. पू. में ईरान में कांसे (Bronze) के व्यापक प्रचलन के आधार पर यह मान लिया गया है कि अयमस् कांसा था।
- 'नदी–स्तुति' में **विपासा** का उल्लेख नहीं है। उसकी जगह **मरूतवृधा** (सम्भवतः कश्मीर का मरूवर्धन) का उल्लेख है।
- वैदिक लोगों ने सर्वप्रथम **'तांबे'** (Copper) की धातु का इस्तेमाल किया था।
- ऋग्वेद में **गंगा** का एक बार, **यमुना** का तीन बार तथा **सरयू** का एक बार उल्लेख है।

ऋग्वैदिक और उत्तरवैदिक काल – एक तुलना

	ऋग्वैदिक युग	**उत्तर वैदिक युग**
समय	1500–1000 ई.पू.	1000–600 ई.पू.
ग्रंथ	ऋग्वेद	यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक ग्रंथ एवं उपनिषद
भौगोलिक ज्ञान	अफगानिसतान, पंजाब, सिंध	संपूर्ण दोआब, पूर्वी बिहार, विंध्य क्षेत्र
पर्वत	मूजवंत (हिमालय)	कैंज, त्रिककुद, मैनाक
सागर	संभवतः अरब सागर	अरब सागर, हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
समाज	पितृसत्तात्मक	पितृसत्तात्मक
वर्णव्यवस्था	अंतिम समय में प्रचलित	प्रचलित
गोत्र व्यवस्था	प्रचलित नहीं	प्रचलित हुई
आश्रम व्यवस्था	कोई साक्ष्य नहीं	विकास प्रारंभ हुआ
पर्दा प्रथा, बाल विवाह	प्रचलित नहीं	प्रचलित नहीं
विधवा विवाह	स्पष्ट साक्ष्य नहीं	प्रचलित
स्त्रियों की दशा	अच्छी	ह्रास हुआ
शासन	राजतंत्रात्मक	राजतंत्रात्मक
कबीलाई परिषद् (सभा, समिति, विदथ)	स्थिति मजबूत	स्थिति कमजोर हुई (विदथ समाप्त)
राजा	जनता चुनती थी	स्थिति मजबूत हुई
अर्थव्यवस्था	कृषि, पशुपालन	कृषि, विभिन्न उद्योग
फसल	यव (जौ)	गेहूँ, धान
लोहे से	अपरिचित	परिचित
मृद्‌भाण्ड	लाल एवं धूसर	चित्रित धूसर
कर	बलि (स्वेच्छा से)	कराधान का प्रचलन शुरू भागदुध अधिकार का उल्लेख
देवता	इंद्र, वरुण, अग्नि, सोम	विष्णु, शिव, प्रजापति (ब्रह्मा)
यज्ञ	बहुत महत्वपूर्ण नहीं	विष्णु, शिव, प्रजापति धर्म का प्रमुख अंग

T.I. Highlights

- उत्तर वैदिक काल में आर्य लोग पंजाब से गंगा–यमुना दोआब तक व्याप्त समूचे **पश्चिमी उत्तर प्रदेश** में फैल गये थे।
- **भरत** तथा **पुरू** नामक कबीलों के एकत्रित समूह से कुरू जन की व्युत्पत्ति हुई।
- दिल्ली और दोआब (गंगा–यमुना) के उत्तरी भाग को **कुरूदेश** कहते थे।
- महाभारत का युद्ध सम्भवतः 950 ई. पू. में लड़ा गया था।
- उत्तर वैदिक काल के लोग **पक्की ईंटों** का इस्तेमाल करना नहीं जानते थे।
- उत्तर–वैदिक कालीन लोगों की जीविका का मुख्य साधन कृषि था।
- शतपथ ब्राह्मण में हल की जुताई से संबंधित अनुष्ठानों के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है।
- ऋग्वैदिक **लोग जौ** (Barley) पैदा करते रहे, परन्तु इस काल (उत्तर वैदिक) में उनकी मुख्य पैदावार **धान** (rice) और **गेहूँ** (Wheat) बन गये।
- उत्तर वैदिक काल के लोग चार प्रकार के मिट्टी के बर्तनों से परिचित थे–

  (i) काले व लाल भांड (Black and red ware)
  (ii) काले रंग के भांड (Black-Slipped ware)
  (iii) चित्रित धूसर भांड (Painted-Grey-Ware) &
  (iv) लाल भांड (Red Ware)

  लाल भांड उन्हें सबसे अधिक प्रिय थे, परंतु **चित्रित धूसर भांड** इस युग का विशिष्ट भांड है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- उत्तर वैदिक काल के ग्रंथों में नगर शब्द का उल्लेख भले ही मिलता हो, परन्तु वास्तविक नगरों की शुरूआत का यत्किंचित आभास उत्तर वैदिक काल के अंतिम दौर में ही मिलता है।
- इस काल में जन परिषदों का महत्व घट गया था। विदथ (Vidaths) पूर्णतः नष्ट हो गये थे।
- अब स्त्रियां सभाओं में सम्मलित नहीं हो पाती थी।
- **पूर्व–पुरुषों** की पूजा इसी काल से प्रारम्भ हुई।
- इस काल में **गोत्र** (Gotra) व्यवस्था स्थापित हुई।
- वैदिक (ऋग्वैदिक) काल में **आश्रम व्यवस्था** (Ashramas) अभी ठीक से स्थापित नहीं हुई थी। उत्तर वैदिक काल के ग्रंथों में केवल **तीन आश्रमों** (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ) का विवरण है। आश्रम व्यवस्था, **वैदिकोत्तर काल** (Post-Vedic period) में ही पूरी तरह चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास) में स्थापित हुई।
- संपूर्ण वैदिक साहित्य का संकलन **कुरु–पांचाल** (पश्चिम उत्तर प्रदेश और दिल्ली) प्रदेश में हुआ।
- उत्तर वैदिक काल में मूर्तिपूजा का आरंभ हुआ। वैदिक काल में इसकी कोई सूचना नहीं मिलती। हड़प्पा सभ्यता के निवासी भी संभवतः मूर्ति पूजा में विश्वास रखते थे।
- ब्राह्मणा उन **सोलह** प्रकार के पुरोहितों में एक थे, जो यज्ञों का नियोजन करते थे।
- यज्ञों में दान के रूप में **गाय, सोना, कपड़ा** तथा **घोड़े** दिये जाते थे।
- उत्तर वैदिक काल में जनपद राज्यों का आरम्भ हुआ।
- **विश्व** (वैश्य) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **वाजसनेयि** संहिता में मिलता है।
- ऋग्वेद के **पुरुष सूक्त** में शूद्र शब्द का प्रथम उल्लेख मिलता है। **अथर्ववेद** में शूद्र वर्ण का उल्लेख अन्य वर्णों के साथ मिलता है।
- **ऋषि याज्ञवल्क्य** को शास्त्रार्थ में अपने सूक्ष्म प्रश्नों से परेशान कर देने वाली महिला **गार्गी वाचक्नवी** थी।
- यजुर्वेद में वर्णित धातुओं का नाम इस प्रकार हैं–

हिरण्य	सोना
अयस्	कांसा
श्याम अयस् (कृष्ण अयस्)	लोहा
लोह अयस्	ताँबा
सीस	सीसा
त्रपु	रांगा

- राजसूय यज्ञ करने वाले प्रधान पुरोहित को 2,40,000 गायें दक्षिणा के रूप में दी जाती थीं।
- **तीन आश्रमों** का सर्वप्रथम विवरण हमें **छांदोग्य उपनिषद्** (Chhandogya Upanishad) में मिलता है। चारों आश्रमों का सर्वप्रथम विवरण **जबालोपनिषद** (Jabalopanishad) में मिलता है।
- अश्वमेघ, वाजपेय, राजसूय आदि यज्ञों के विस्तृत आध्ययन से पता चलता है कि मूलतः इनका उद्देश्य **कृषि–उत्पादन** को बढ़ाना था।
- कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मण प्रायः कालक्रम में सबसे पहले रचे गए और उनके पश्चात तैत्तिरीय ब्राह्मण, ऐतरेय के मूल खंड और फिर कौषीतकि।
- **गंगा** को ऋग्वैदिक आर्यों के निवास स्थल की पूर्वी सीमा माना जा सकता है।
- उत्तर वैदिक कालीन साहित्य के आधार पर विन्ध्य प्रदेश को उत्तर वैदिक कालीन आर्यों के भौगोलिक विस्तार की दक्षिणी तथा विदेह, कोसल, अंग और मगध देशों को पूर्वी सीमा माना जा सकता है।
- ऋग्वेद के तिथिक्रम से मेल खाने वाली संस्कृतियों में काले एवं लाल मृदभांड (black and red ware), ताम्रपुंजों (copper hoards) एवं गेरूवर्णी मृदभांडों (ochre coloured pottery) की संस्कृतियाँ आती हैं। किंतु इनमें से किसी को भी निश्चित रूप से ऋग्वैदिक लोगों की कृति नहीं माना जा सकता है।
- गेरूवर्णी मृद्भांड (OCP) संस्कृति के अधिकांश स्थल सप्तसैन्धव क्षेत्र में नहीं, वरन् गंगा–यमुना दोआब में केन्द्रित हैं।
- अफगानिस्तान, पंजाब तथा उत्तरी राजस्थान से, जो कि ऋग्वैदिक लोगों की गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं, धूसर मृद्भांड (PGW) प्राप्त हुए हैं, किन्तु तिथिक्रम की दृष्टि से इन्हें अधिक से अधिक ऋग्वैदिक काल की अंतिम शताब्दी का माना जा सकता हैं
- भारत के प्राचीनतम सिक्के **आहत सिक्कों** (Punch mark coins) का चलन लगभग 600 ई. पू. से आरमी हुआ।
- **गवेषण, गोषु, गव्य, गम्य** आदि शब्द युद्ध के लिए प्रयुक्त होते थे।
- ऋग्वेद में कुल 10,462 श्लोक हैं जिनमें केवल 24 में ही कृषि का उल्लेख है।
- ऋग्वेद में एक ही अनाज **"यव"** (जौ) का उल्लेख है।
- ऋग्वैदिक समाज तथा परवर्ती कालीन वर्ण–सामाज के बीच मुख्य अंतर यह था कि **आधिशेष उत्पादन** के अभाव में ऋग्वैदिक (कबायली) समाज में वर्ग–भेद की परिस्थितियों का उदय नहीं हो सका था।
- नप्त ऋग्वेद में इस शब्द का प्रयोग चचेरे भाई–बहिन, भतीजे प्रपौत्र आदि के लिए किया गया है।
- उत्तर वैदिक काल के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक ढांचे की प्रमुख विशेषताएं थीं–
  1. कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था
  2. कबायली संरचना में दरार
  3. वर्ण–व्यवस्था का जन्म तथा
  4. क्षेत्रगत साम्राज्यों का उदय
- **मैत्रायणी संहिता** (उत्तर वैदिक काल) में नारी को पासा एवं सुरा के साथ–साथ **तीन प्रमुख बुराइयों** में गिनाया गया है।

जैन और बौद्ध धर्म

जैनधर्म :

- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर **ऋषभदेव** थे। इन्हें इस धर्म का संस्थापक भी माना जाता है।
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए। महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। इन्हें धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- जैन धर्म में कर्मफल से छुटकारा पाने के लिए त्रिरत्न का पालन आवश्यक माना गया है। ये **त्रिरत्न** हैं– सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् आचरण।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- महावीर ने पाँच महाव्रतों के पालन का उपदेश दिया। ये पाँच **महाव्रत** हैं– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य। इनमें से शुरू के चार महाव्रत जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के थे, अन्तिम महाव्रत **ब्रह्मचर्य** महावीर स्वामी ने जोड़ा।
- जैन धर्म अनीश्वरवादी है।

महावीर स्वामी : संक्षिप्त परिचय

जन्म	:	कुण्डग्राम (वैशाली)
जन्म का वर्ष	:	540 ई. पू.
पिता	:	सिद्धार्थ (ज्ञातृक क्षत्रिय कुल)
माता	:	त्रिशला (लिच्छवि शासक चेटक की बहन)
पत्नी	:	यशोदा
गृह त्याग	:	30 वर्ष की आयु में
तपस्थल	:	जृम्भिक ग्राम (ऋजुपालिका नदी के किनारे)
कैवल्य	:	ज्ञान की प्राप्ति 42 वर्ष की अवस्था में
निर्वाण	:	468 ई. पू. (पावापुरी में)

- कालान्तर में जैन धर्म दो सम्प्रदायों श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में बँट गया। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अनुयायी श्वेत वस्त्र धारण करते हैं जबकि दिगम्बर सम्प्रदाय के अनुयायी वस्त्रों का परित्याग करते हैं।

जैन महासंगीतियाँ

संगीति	समय	स्थल	अध्यक्ष	कार्य
प्रथम	322 ई. पू.– 298 ई. पू.	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	जैन धर्म दो भागों श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में विभाजित।
द्वितीय	512 ई.	वल्लभी	देव ऋद्धिगणि (क्षमाश्रमण)	धर्मग्रन्थों को लिपिबद्ध किया गया।

- महावीर स्वामी ने अपने उपदेश **प्राकृत** भाषा में दिये।

बौद्ध धर्म :

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे।

गौतम बुद्ध : संक्षिप्त परिचय

जन्म	:	लुम्बिनी ग्राम, कपिलवस्तु
जन्म का वर्ष	:	563 ई. पू.
पिता	:	शुद्धोधन (शाक्य गण के प्रधान)
माता	:	महामाया (कोलियगण की राजकुमारी)
पत्नी	:	यशोधरा
पुत्र	:	राहुल
गृह त्याग	:	29 वर्ष की आयु में (महाभिनिष्क्रमण)
तपस्थल	:	उरुवेला (निरंजना नदी के किनारे)
निर्वाण	:	ज्ञान की प्राप्ति 35 वर्ष की अवस्था में
महापरिनिर्वाण	:	483 ई. पू. (कुशीनगर में)

- गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ (ऋषिपतनम) में दिया।
- बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के बारे में **चार आर्य सतय** बताये हैं। ये हैं– दुःख, दुःख समुदय, दुःख निरोध तथा दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा।
- दुःखों से छुटकारा पाने के लिए बुद्ध ने **अष्टांगिक मार्ग** का उपदेश दिया। ये हैं– सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक, कर्मानत, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति तथा सम्यक् समाधि।
- **प्रतीत्यसमुत्पाद** को गौतम बुद्ध की शिक्षाओं का सार कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म **अनीश्वरवादी** तथा **अनात्मवादी** है।
- बुद्ध, संघ एवं धम्म– ये तीन बौद्ध धर्म के **त्रिरत्न हैं**।

बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित घटनाएँ एवं उनके प्रतीक चिह्न

घटना	प्रतीक चिह्न
जन्म	कमल एवं सांड
गृह त्याग	घोड़ा
ज्ञान	पीपल वृक्ष
निर्वाण	पद चिह्न
मृत्यु	स्तूप

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
THE INSTITUTE
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- जातक कथाओं में गौतम बुद्ध की जीवन सम्बन्धी कहानियाँ हैं।
- बौद्ध ग्रन्थों; सुत्त पिटक, विनय पिटक तथा अभिधम्म पिटक; को सामूहिक रूप से **'त्रिपिटक'** कहा गया है। त्रिपिटक की भाषा पालि है।
- महात्मा बुद्ध ने अपने उपदेश **पालि** भाषा में दिये।
- कालान्तर, कनिष्क के शासनकाल में बौद्ध धर्म का विभाजन हीनयान तथा महायान दो शाखाओं में हो गया।
- हीनयान शाखा का अनुयायियों ने गौतम बुद्ध के मूल उपदेशों को स्वीकार किया जबकि महायान शाखा के अनुयायियों ने बुद्ध की मूर्ति–पूजा का प्रचलन शुरू किया।

बौद्ध संगीतियाँ

संगीति	स्थान	शासनकाल	समय	अध्यक्ष
प्रथम बौद्ध संगीति	राजगृह	अजातशत्रु	483 ई. पू.	महाकस्सप
द्वितीय बौद्ध संगीति	वैशाली	कालाशोक	383 ई. पू.	सर्वकामी (सब्बकामी)
तृतीय बौद्ध संगीति	पाटलिपुत्र	अशोक	251 ई. पू.	मोग्गलिपुत्त तिस्स
चतुर्थ बौद्ध संगीति	कुण्डल वन	कनिष्क	ई. की प्रथम शताब्दी	वसुमित्र

प्राचीन भारत में प्रचलित सम्प्रदाय एवं संस्थापक

सम्प्रदाय	संस्थापक	सम्प्रदाय	संस्थापक
आजीवक	मक्खलिपुत्त गोशाल	घोर अक्रियावादी	पूरण कस्सप
यदृच्छावाद (अनिश्चयवादी)	आचार्य अजित केशकम्बलिन	भौतिकवादी (भौतिक दर्शन)	पकुध कच्चायन संजय वेट्ठलिपुत्त

छठी शताब्दी ई. पू. और सोलह महाजनपद

छठी शताब्दी ई. पू. में पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार लोहे के व्यापक स्तर पर प्रयोग होने से बड़े–बड़े प्रादेशिक एवं जनपद राज्यों के निर्माण की परिस्थितियाँ बन गईं। लोहे के हथियारों के कारण योद्धावर्ग महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगे। खेती के औजारों से किसान अधिक अनाज पैदा करने लगे। अधिशेष उत्पादन के कारण ही छोटे–छोटे जनों ने बड़े–बड़े जनपदों और फिर महाजनपदों का आविर्भाव भी होने लगा, जिनका उल्लेख बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय में मिलता है। इनमें मगध, अवन्ति, वत्स, कौशल, सबसे प्रमुख राज्य थे, जिनमें मगध ने कालान्तर में सोलह महाजनपदों में सर्वोच्च स्थान प्रापत करने में सफलता प्राप्त की थी, जिसका प्रथम राजवंश हर्यक वंश था, जिसकी स्थापना बिम्बिसार ने 544 ई. पू. में की थी तथा जिसकी मृत्यु 492 ई. पू. में होने पर अजातशत्रु 492 ई. पू. से 461 ई. पू. तक व फिर उदायिन 461–412 ई. पू. तक गद्दी पर बैठा। मगध साम्राज्य की राजधानी गिरिव्रज या राजगृह थी, परन्तु उदायिन ने इसे बदलकर पटना या पाटलिपुत्र कर दिया था और उदायिन के पश्चात् शिशुनाग वंश मगध की राजगद्दी पर बैठा तथा शिशुनाग वंश के पश्चात् नन्दवंश और उसके पश्चात् मौर्य वंश, गुप्त वंश जैसे कीर्तिपूर्ण राजवंशों ने प्राचीन भारतीय इतिहास में अमर नायकों की भूमिका निभाई।

महाजनपद	राजधानी
काशी	वाराणसी
कौशल	श्रावस्ती
अंग	चम्पा
मगध	गिरिव्रज, राजगृह, पाटलिपुत्र
वज्जि	वैशाली
मल्ल	कुशीनगर
चेदि	सुक्तिमती
वत्स	कौशाम्बी
कुरु	इन्द्रप्रस्थ
पांचाल	उत्तरी पांचाल की अहिच्छत्र दक्षिणी पांचाल की काम्पिल्य
मत्स्य	विराटनगर
शूरसेन	मथुरा
अश्मक	पोटली
गान्धार	तक्षशिला
कम्बोज	राजपुर
अवन्ति	उत्तरी अवन्ति की उज्जयिनी दक्षिणी अवन्ति की महिष्मती

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

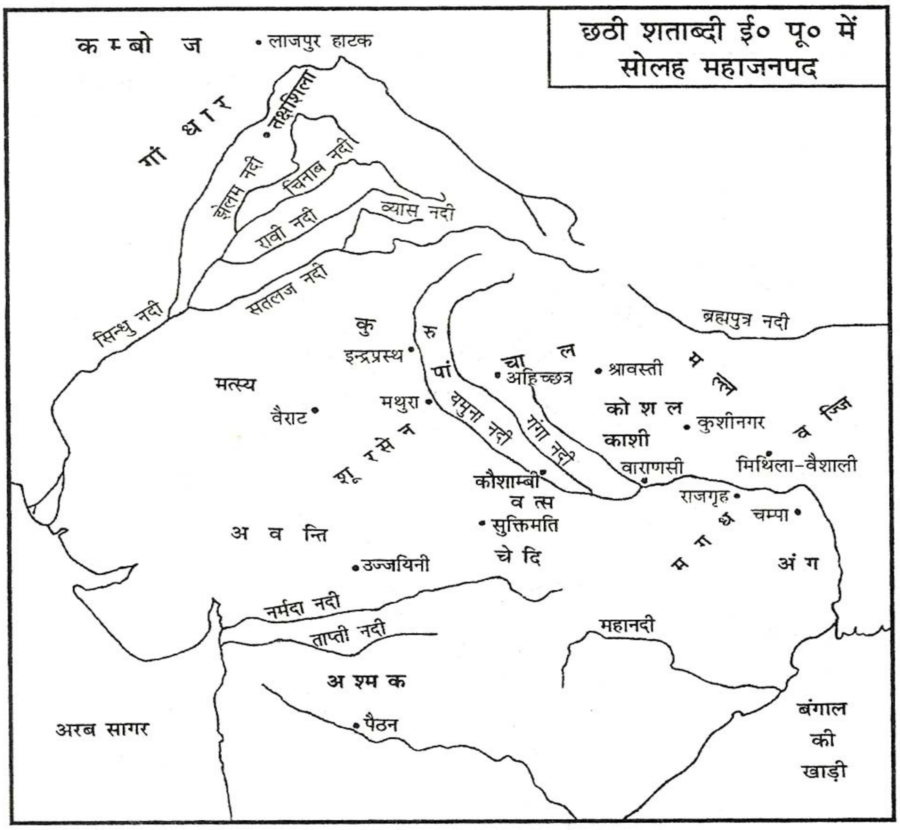

छठी शताब्दी ई० पू० में सोलह महाजनपद

मगध साम्राज्य

मौर्य वंश के इतिहास को जानने के साधन :

(a) यूनानी राजदूत मेगस्थनीज की पुस्तक इण्डिका
(b) कौटिल्य का अर्थशास्त्र
(c) अशोक के अभिलेख
(d) बौद्ध ग्रन्थ दीपवंश व महावंश
(e) विशाखदत्त का मुद्राराक्षस नाटक
(f) नेपाल एवं तिब्बती ग्रन्थ।

- ईसा पूर्व के सोलह महाजनपदों में मगध सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद था।
- प्राचीन भारत में साम्राज्यवाद की शुरूआत या विकास का श्रेय मगध को दिया जाता है।

मौर्य वंशावली (322 ई.पू. से 185 ई. पू.)

↓
चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू. से 298 ई.पू.)
↓
बिन्दुसार (248 ई.पू. से 273 ई.पू.)
↓
- सुसीम
- अशोक (273 ई.पू. से 232 ई.पू.)
  - कुणाल (232–224 से ई.पू.)
    - दशरथ (बंधुपालित) (224 ई.पू. से 216 ई.पू.)
    - सम्प्रति (दुपालित) (216 ई.पू. 207 ई.पू.)
      - → शालिनशुक (204 ई.पू. से 207 ई.पू.)
      - → देववर्मन (207 ई.पू. से 200 ई.पू.)
      - → शतधन्वर (200 ई.पू. से 191 ई.पू.)
      - → बृहद्रथ (191 ई.पू. से 184 ई.पू.)
  - जलौन (कश्मीर)
  - तीवर
- तिस्स
- अन्य पुत्र

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

हर्यक वंश (544 ई. पू.–412 ई.पू.) :

- मगध साम्राज्य की महत्ता का वास्तविक संस्थापक **बिम्बिसार (544 ई. पू.–492 ई. पू.)** था। उसकी राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) थी।
- बिम्बिसार ने वैवाहिक सम्बन्धों के आधार पर अपनी राजनीतिक स्थिति सुदृढ़ की।
- बिम्बिसार ने अपने राजकीय चिकित्सक 'जीवक' को पड़ोसी राज्य अवन्ति के शासक चण्डप्रद्योत महासेन की चिकित्सा के लिए भेजा था।
- बिम्बिसार को उसके पुत्र **अजातशत्रु (492 ई. पू.–460 ई. पू.)** ने बन्दी बनाकर सत्ता पर कब्जा जमाया। अजातशत्रु को 'कुणिक' के नाम से भी जाना जाता है।
- अजातशत्रु ने वज्जि संघ के लिच्छवियों को पराजित करने के लिए 'रथमूसल' एवं 'महाशिलाकण्टक' नामक नये हथियारों का प्रयोग किया।
- अजातशत्रु के शासनकाल में राजगृह के सप्तपर्णि गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था।
- **अजातशत्रु का पुत्र उदयिन (उदयभद्र) (460 ई. पू.–444 ई. पू.)** हर्यक वंश का तीसरा महत्वपूर्ण शासक था, उसने पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) की स्थापना की तथा उसे अपनी राजधानी बनाया।

शिशुनाग वंश (412 ई. पू. – 344 ई. पू.) :

- हर्यक वंश के सेनापति शिशुनाग ने मगध की सत्ता पर कब्जा कर शिशुनाग वंश की स्थापना की।
- इस वंश के शासक कालाशोक (काकवर्ण) के शासनकाल में मगध की राजधानी वैशाली थी, जहाँ **द्वितीय बौद्ध संगीति** का आयोजन हुआ।

नन्द वंश (344 ई. पू.–324 ई.पू.) :

- नन्द वंश का संस्थापक **महापद्मनन्द** था। उसे सर्वक्षत्रान्तक अर्थात् 'सभी क्षत्रियों का नाश करने वाला' कहा गया हैं
- महापद्मनन्द ने एकछत्र राज्य की स्थापना की तथा 'एकराट्' की उपाधि धारण की।
- नन्द वंश का अंतिम शासक **धननन्द** था। इसी के शासनकाल में सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया था।

सिकन्दर का भारत अभियान

- सिकन्दर मेसीडोनिया (मकदूनिया) के क्षत्रप फिलिप का पुत्र था।
- अपने विश्व विजय की योजना के अन्तर्गत सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया।
- झेलम तथा चिनाव के मध्यवर्ती प्रदेश के शासक पोरस (पुरु) ने सिकन्दर का प्रतिरोध किया। सिकन्दर एवं पोरस के बीच 326 ई. पू. में झेलम नदी के किनारे भीषण युद्ध हुआ, जिसमें पोरस की हार हुई। इस युद्ध को 'वितस्ता का युद्ध' या 'हाइडेस्पीज का युद्ध' के नाम से जाना जाता है।
- बाद में सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी के आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। अन्ततः सिकन्दर को वापस लौटना पड़ा।
- वापस लौटते समय 323 ई. पू. में बेबीलोन में सिकन्दर की मृत्यु हो गई।

सिकंदर : प्रमुख तथ्य

सिकंदर	मकदूनिया के शासक फिलिप का पुत्र
जन्म	356 ई. पू.
भारत पर आक्रमण	326 ई. पू.
पश्चिमोत्तर भारत की स्थिति	28 राज्यों में विभाजित (पुरू, अभिसार, पूर्वी व पश्चिमी गांधार, कठ, सौभूति, मालव, क्षुद्रक, अम्वष्ठ, भद्र ग्लौगनिकाय आदि।)
पोरस से युद्ध (वितस्ता या हाइडेस्पीज का युद्ध)	झेलम के किनारे, सिकंदर विजयी, पोरष की वीरता से प्रभावित हो राज्य वापस किया
यूनानी सेना का विद्रोह	व्यास नदी के आगे जाने से इंकार
मगध	नंद वंश के अधीन
सिकंदर की मृत्यु	323 ई. पू. (भारत से लौटते समय)

सिकंदर के आक्रमण का भारत पर प्रभाव

राजनीतिक एकता की स्थापना	पश्चिमोत्तर भारत के छोटे–छोटे राज्यों का विलय, 3 प्रांतों का गठन
भारतीय इतिहास के तिथिक्रम में सहायता	यूनानी इतिहासकारों ने सिकंदर के आक्रमण की सही तिथि दी
यूनानी राज्यों की स्थापना	पश्चिमी पंजाब, सिंध आदि सीमावर्ती प्रदेशों में
भारत, यूनान के बीच व्यापारिक मार्ग	आक्रमण से 1 जलमार्ग 3 स्थल मार्ग खुला
भौगोलिक ज्ञान	यूनानी इतिहासकारों द्वारा भारत का भौगोलिक विवरण
शासन व्यवस्था	क्षत्रप शासन प्रणाली
मुद्रा	यूनानी प्रभाव वाले उलूक शैली के सिक्कों का ज्ञान
भारतीय कला	यूनानी शैली की मूर्तियों का निर्माण
भाषा, साहित्य	यूनानी शब्द पुस्तक, कलम, फलक, सुरंग यवनिक आदि संस्कृत भाषा का शामिल
चिकित्सा	औषधि विज्ञान और चिकित्सा पद्धति पर
ज्योतिष	राशिचक्र, होरोस्कोप का ज्ञान, रोमक एवं पौलिस सिद्धान्तों का ज्ञान

मौर्य साम्राज्य

- **चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई. पू.– 298 ई. पू.)** ने चाणक्य की सहायता से नन्द वंश के शासक धननन्द को अपदस्थ कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
- सेल्यूकस ने मेगस्थनीज को अपने राजदूत के रूप में चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था।
- **सेन्ड्रोकोट्स** की पहचान चन्द्रगुप्त के रूप में सर्वप्रथम 'विलियम जोन्स' ने की।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने अन्तिम समय में जैन भिक्षु भद्रबाहु से दीक्षा लेकर श्रवणबेलगोला में कायाक्लेश (संलेखना पद्धति) के द्वारा प्राण त्याग दिया।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- **बिन्दुसार (298 ई. पू.–272 ई. पू.)** को 'अमित्रघात' के नाम से भी जाना जाता है। वह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- बिन्दुसार ने सीरिया के शासक एण्टियोकस से सूखी अंजीर, मदिरा तथा एक दार्शनिक की माँग की थी।
- **अशोक (273 ई. पू.–236 ई. पू.)** अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए प्रतिपादित 'धम्म' के लिए विश्व विख्यात है।
- अशोक ने अपने शासन के 8वें वर्ष (261 ई. पू.) में कलिंग पर आक्रमण किया तथा उसे जीत लिया।
- कलिंग के साथ हुए युद्ध में भारी रक्तपात को देख अशोक ने 'युद्ध नीति' को छोड़ **'धम्म नीति'** का पालन किया।
- अशोक ने अपने बड़े भाई सुमन के पुत्र 'निग्रोध' से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म को अपनाया। बाद में 'उपगुप्त' ने उसे बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।
- अशोक के धम्म की परिभाषा 'राहुलोवादसुत्त' से ली गई है।
- अशोक के कलिंग युद्ध तथा हृदय परिवर्तन की जानकारी उसके **13वें शिलालेख** से मिलती है।
- अशोक ने अपने शासकीय एवं राजकीय आदेशों को शिलालेखों पर खुदवाकर साम्राज्य के विभिन्न भागों में स्थापित किया।
- ये शिलालेख 'ब्राह्मी', 'खरोष्ठी', 'अरामाईक' तथा 'ग्रीक' लिपि में हैं।
- अशोक के शिलालेखों का पता सर्वप्रथम **टी. फैन्थेलर** ने लगाया तथा इसे पढ़ने में सर्वप्रथम सफलता **जेम्स प्रिंसेप** (1837 ई.) को मिली।
- मौर्य साम्राज्य में उच्च स्तर के अधिकारियों को **'तीर्थ'** कहा जाता था, जिनकी संख्या 18 बताई गई है।
- कौटिल्य (चाणक्य) के 'अर्थशास्त्र' तथा मेगास्थनीज के 'इण्डिका' से मौय साम्राज्य के बारे में विशेष जानकारी मिलती है।

मौर्य काल में राजकीय आय के स्रोत एवं कर

सीता	राजा की भूमि से होने वाली आय
भाग	कृषकों से लिया जाने वाला भूमिकर (उत्पादन का 1/6)
सेतु	फलफूल पर कर
वनकर	वन सामग्री पर कर
परिहीनक	राजकीय भूमि पर पशुओं द्वारा की गई हानि पर जुर्माना
विवीत	पशुओं की रक्षा के लिये कर
सेनाभक्तकर	सेना के प्रयाण से समय जनता से तेल और चावल के रूप में
कोष्ठेयक	राजकीय जलाशयों के नीचे की भूमि पर कर
रज्जु	भूमि की माप के समय लिया जाने वाला कर
पिण्डकर	राजा द्वारा वर्ष में एक बार पूरे गांव से लिया जाने वाला कर
औपायनिक	विशेष अवसरों पर राजा को भेंट स्वरूप दियाजाने वाला कर
प्रवेश्य	आयात कर (20%)
निष्क्राम्य	निर्यात कर
पार्श्व	अधिक लाभ होने पर व्यापारियों से लिया जाने वाला कर
प्रणय	संकटकालीन कर
समाहर्ता	राजस्व एकत्र करना, आय–व्यय का विवरण रखना
सन्निधाता	कोषाध्यक्ष
ध्रुवाधिकरण	भूमिकर का संग्रहकर्ता

मौर्योत्तर काल में विदेशी आक्रमण

यवन :

- मौर्योत्तर काल में भारत पर सबसे पहला विदेशी आक्रमण बैक्ट्रिया के ग्रीकों ने किया। इन्हें **'हिन्द–यवन'** या **'इण्डोग्रीक'** के नाम से भी जाना जाता है।
- हिन्द–यवन शासकों में **मिनाण्डर** सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उसकी राजधानी साकल थी।
- प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक नागसेन के साथ मिनाण्डर (मिलिन्द) के द्वारा किये गए वाद–विवाद का विस्तृत वर्णन 'मिलिन्दपन्हो' नामक ग्रन्थ में है।
- इण्डो–ग्रीक शासकों ने भारत में सर्वप्रथम **'सोने के सिक्के'** तथा 'लेखयुक्त सिक्के' **जारी किये।**
- विभिन्न ग्रहों के नाम, नक्षत्रों के आधार पर भविष्य बताने की कला, सम्वत् तथा सप्ताह के सात दिनों का विभाजन यूनानियों ने भारत को सिखलाया।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

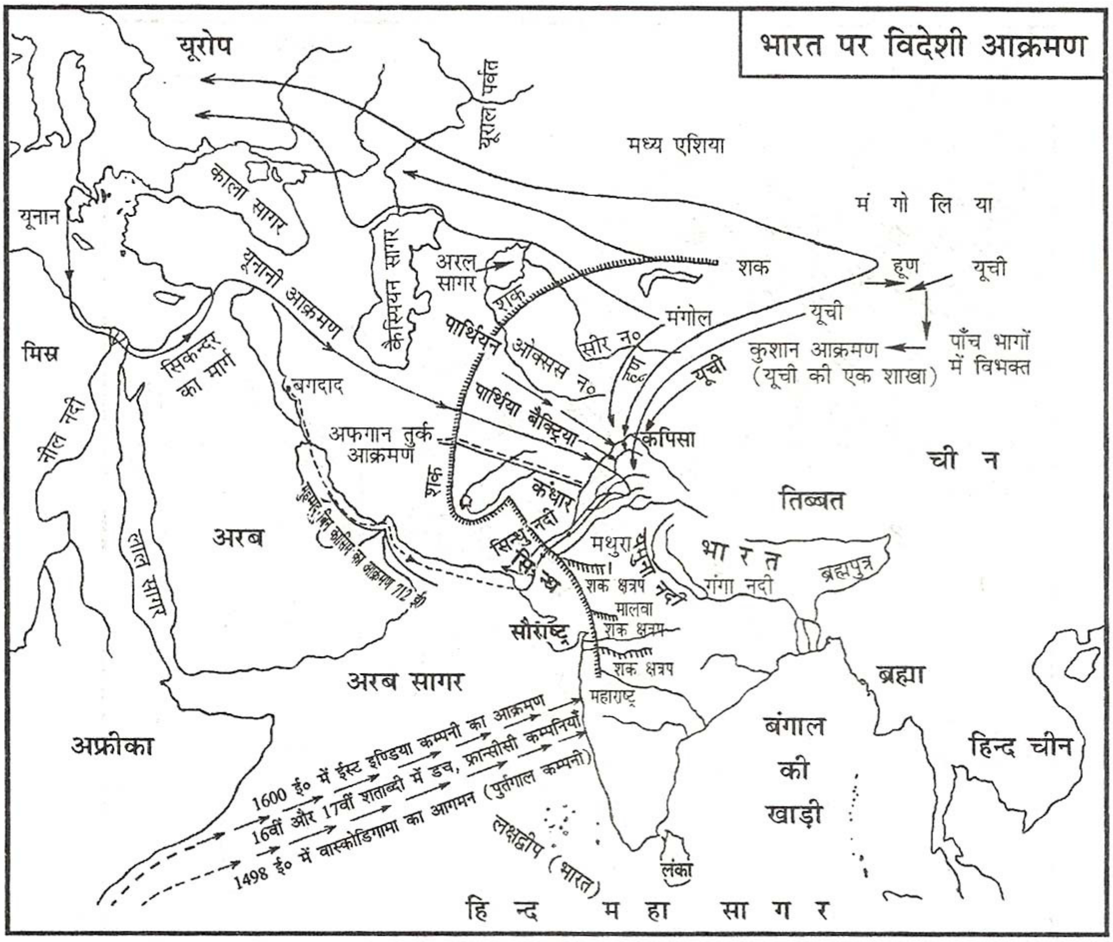

शक :

- शक मूलतः मध्य एशिया के निवासी थे।
- शक शासकों में **रुद्रदामन प्रथम** प्रमुख था। जूनागढ़ से प्राप्त उसका अभिलेख संस्कृत भाषा का पहला अभिलेख है।
- रुद्रदामन प्रथम ने चन्द्रगुप्त मौर्य के समय निर्मित सुदर्शन झील का पुनरुद्धार करवाया था।

पहलव (पार्थियन) :

- पहलव मूलतः पार्थिया के निवासी थे।
- पहलवों का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक गोन्दोफर्निस था। उसके शासनकाल में ईसाई धर्म–प्रचारक सेण्ट टॉमस भारत आया था।

कुषाण :

- कुषाण यू–ची जनजाति से सम्बन्धित थे। वे पश्चिमी चीन से भारत आये थे।
- **कनिष्क** कुषाण वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था। कनिष्क ने 78 ई. में शक सम्वत् को प्रचलित किया।
- कनिष्क ने पुरुषपुर (पेशावर) को अपनी राजधानी बनाया। मथुरा कनिष्क की द्वितीय राजधानी थी।
- कश्मीर में कनिष्क ने **'कनिष्कपुर'** नामक नगर की स्थापना की।
- कनिष्क बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसके शासनकाल में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन कुण्डल वन (कश्मीर) में हुआ था।

गुप्त साम्राज्य

गुप्त वंशावली

श्री गुप्त एवं घटोत्कच	275–319 ई.
चन्द्रगुप्त प्रथम	319–335 ई.
समुद्रगुप्त	335–375 ई.
चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य'	375–413 ई.
कुमारगुप्त प्रथम	415–455 ई.
स्कन्दगुप्त	455–467 ई.
पुरुगुप्त	467–473 ई.
कुमारगुप्त द्वितीय	473–477 ई.
बुधगुप्त	477–495 ई.
नरसिंह गुपत बालादित्य	495–530 ई.
भानुगुप्त	
वैन्यगुप्त	
कुमारगुप्त तृतीय	530–543 ई.
विष्णुगुप्त	543–550 ई.

- गुप्त वंश का प्रथम महत्वपूर्ण शासक चन्द्रगुप्त प्रथम था, लेकिन इसके पहले श्रीगुप्त (240–285 ई.) तथा घटोत्कच (280–320 ई.) का शासक के रूप में उल्लेख मिलता है।
- **चन्द्रगुप्त प्रथम (319–350 ई.)** ने 320 ई. में गुप्त सम्वत् की शुरूआत की। उसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया था, जो उस समय की महत्वपूर्ण घटना थी।
- **समुद्रगुप्त** (350–375 ई.) चन्द्रगुप्त प्रथम का पुत्र था। विभिन्न अभियानों के कारण इतिहासकार वी. ए. स्मिथ ने उसे 'भारत का नेपोलियन' कहा है।

समुद्रगुप्त के सिक्के

समुद्रगुप्त ने 6 प्रकार के सोने के सिक्के जारी किये–

1. गरूड़ध्वज आकृति वाले (ध्वजाधारी प्रकार) (Garudhvaja Type)
2. धनुर्धारी आकृति वाले (Archer Type)
3. युद्धक कुल्हाड़ी आकृति वाले (परशुधारी प्रकार) (Battle Axe Type)
4. शेर संहारक आकृति वाले (व्याध्र निहन्ता प्रकार) (Tiger slayer Type)
5. अश्वमेघ आकृति वाले (Asvamedha Type)
6. वीणावादक आकृति वाले (Lutanist Type)

नोट : चन्द्रगुप्त प्रथम के राजा–रानी प्रकार/विवाह प्रकार/चन्द्रगुप्त कुमार देवी चित्रित सिक्के (Chandra Gupta kumar devi Type)

- समुद्रगुप्त की विजयों और उसके बारे में जानकारी के स्रोत उसके दरबारी कवि **हरिषेण** द्वारा रचित **प्रयाग प्रशस्ति** या **इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख** है।
- समुद्रगुप्त की अनुमति से सिंहल (श्रीलंका) के राजा मेघवर्मन ने बोधगया में एक बौद्ध मठ स्थापित किया था।
- समुद्रगुप्त के सिक्कों पर उसे वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।
- **चन्द्रगुप्त द्वितीय** (375–415 ई.) का काल गुप्तकाल में साहित्य और कला का **स्वर्ण–काल** कहा जाता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों को पराजित कर 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की तथा चाँदी के सिक्के चलाये।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में चीनी यात्री **फाह्यान** (399–412 ई.) भारत आया था।
- उसके दरबार में नौ विद्वानों की मण्डली थी जिसे 'नवरत्न' कहा जाता था। इस नवरत्न में कालिदास अमर सिंह आदि शामिल थे।

T.I. Highlights

- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमार गुप्त प्रथम (414–455 ई.) ने की थी।
- इस विश्वविद्यालय को ऑक्सफोर्ड ऑफ महायान बौद्ध कहा जाता है।
- इस विश्वविद्यालय में शिक्षा तो मुफ्त थी ही, छात्रों को आवासीय सुविधा भी मुफ्त उपलब्ध थी।
- 12वीं सदी में इसे मोहम्मद गोरी के एक जनरल बख्तियार खिलजी ने नष्ट कर दिया।
- विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना पाल शासक धर्मपाल ने 780–815 ई. के मध्य की थी।

- **कुमार गुप्त प्रथम** (415–455 ई.) के समय में नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी।
- **स्कन्दगुप्त** (455–467 ई.) गुप्त वंश का अन्तिम प्रतापी शासक था। उसने हूणों के आक्रमण को विफल किया था।
- स्कन्दगुप्त ने भी चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा के समय निर्मित सुदर्शन झील का पुनरुद्धार करवाया था।
- गुप्तकालीन प्रशासन की सबसे छोटी इकाई **'ग्राम'** थी, जिसका प्रशासन ग्रामिक के हाथ में होता था।
- कई गाँवों को मिलाकर **पेठ** बनते थे।

T.I. Highlights

- गुप्त प्रशासन का स्तरीय विभाजन तथा उनके सर्वोच्च अधिकारी का विवरण निम्न प्रकार से था–

प्रशासनिक इकाई	**अधिकारी**
देश	गोप्रा (गोयत्री)
भुक्ति	उपरिक (उपरिक महाराज)
विषय	विषयपति
पेठ	पेठपति
ग्राम	ग्रामपति, महत्तर

- भारत में मन्दिरों का निर्माण गुप्तकाल से शुरू हुआ। देवगढ़ का दशावतार मन्दिर गुप्तकाल का सबसे उत्कृष्ट मन्दिर है।
- गुप्तकालीन बौद्ध गुफा मन्दिरों में अजन्ता एवं बाघ की गुफाएँ प्रमुख हैं।
- गुप्त शासकों की राजकीय या आधिकारिक भाषा संस्कृत थी।
- हूणों के भारत पर आक्रमण का खतरा कुमारगुप्त के समय से प्रारंभ हुआ, जब उन्होंने बैक्ट्रिया पर विजय प्राप्त कर ली।
- हूणों का भारत पर आक्रमण कुमार गुप्त के पुत्र स्कंदगुप्त के सिंहासनारूढ़ होने के तुरंत बाद हुआ, परन्तु उन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा।
- तोरमाण (508–599 ई. सन्) हूणों का प्रथम शासक था, जिसने भारत के मध्यवर्ती भाग (मालवा) तक शासन स्थापित कर लिया था।
- तोरमाण के उपरांत उसके पुत्र मिहिरकुल ने भारत पर आक्रमण किये।
- मिहिलकुल को पराजित करने का श्रेय यशोधर्मन तथा मगध शासक नरसिंह गुप्त बालादित्य को है।
- मंदसौर (पश्चिम मालवा) के शासक यशोधर्मन द्वारा पराजित किये जाने के बाद हूण साम्राज्य का अंत (533–534 ई. सन् में) हो गया।

- गुप्तकाल में 'भाग' एवं 'भोग' राजस्व कर था, 'भाग' उपज का छठा हिस्सा होता था जबकि भोग सब्जी तथा फलों के रूप में दी जाती थी।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

गुप्तकालीन साहित्यिक कृतियाँ

कृति का नाम	रचयिता	शैली
1. ऋतुसंहार	कालिदास	काव्य
2. मेघदूत	कालिदास	काव्य
3. कुमारसंभव	कालिदास	काव्य
4. रघुवंश	कालिदास	काव्य
5. मालविकाग्निमित्रम	कालिदास	नाटक
6. विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	नाटक
7. अभिज्ञान शाकुन्तलम	कालिदास	नाटक
8. मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	नाटक
9. देवीचन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त	ऐतिहासिक नाटक
10. काव्यदर्शन	दण्डिन	काव्य
11. दशकुमारचरित	दण्डिन	गद्यात्मक प्रेम कथा
12. किरातर्जुनियम्	भारवि	महाकाव्य
13. रावण वध	वत्सभट्टि	काव्य
14. स्वप्रवासवदत्ता	भास	नाटक
15. चारूदत्ता	भास	नाटक
16. अरूभंग	भास	नाटक
17. प्रतिज्ञायौन्धरायण	भास	नाटक
18. हर्षचरित	वाणभट्ट	काव्य
19. कादम्बरी	बाणभट्ट	काव्य
20. अमरकोश	अमरसिंह	शब्दकोश
21. चन्द्र व्याकरण	चंद्रागोमी	व्याकरण
22. विसुद्धिमग्ग	बुद्धघोष	बौद्ध ग्रंथ
23. न्यायावतार	सिद्धसेन	जैन दार्शिनिक ग्रंथ
24. वृहत्संहिता	वराहमिहिर	विश्वकोश
25. पंचसिद्धांतिक	वराहमिहिर	वैज्ञानिक कृति
26. ब्रह्मसिद्धांत	ब्रह्मगुपत	गणितीयकृति
27. आर्यभटिया	आर्यभट्ट	गणितीयज्योतिष
28. सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट	ज्योतिष
29. पंचतंत्र	विष्णु शर्मा	उपदशात्मक लघुकथा संग्रह
30. नीतिशास्त्र	कामन्दक	नीति
31. काव्यालंकार	भामह	काव्य
32. कामसूत्र	वात्स्यायन	कलात्मक कृति
33. अष्टांग हृदय	वाग्भट्ट	औषधिशास्त्र
34. हस्तयायुर्वेद	पाल्काप्य	औषधिशास्त्र
35. चरक संहिता	चरक	औषधिशास्त्र
36. मृच्छकटिकम्	शूद्रक	नाटक

T.I. Highlights

- मंदिर निर्माण की कला का जन्म गुप्त काल में हुआ था।
- देवगढ़ का दशावतार मंदिर (वैष्णव मंदिर) भारतीय मंदिर–निम्रण में शिखर का संभवतः पहला उदाहरण है।
- गंगा और यमुना का मूर्ति रूप गुप्त काल की ही देन है।
- सारनाथ का धामेख स्तूप गुप्तकाल की देन है। इसका आधार अन्य गुप्तकालीन स्तूपों के समान चबूतरा न होकर गोलाकार है। इसमें अन्य स्तूपों के समान चबूतरा नहीं है, बल्कि यह धरातल पर निर्मित है।
- गुप्त कालीन मूर्तियों में कुषाण कालीन मूर्तियों की नग्नता के स्थान पर मोटे उत्तरीय वस्त्रों का प्रदर्शन किया गया है।

वर्द्धन वंशावली

↓

पुष्यभूति → नरवर्द्धन → राज्यवर्द्धन → आदित्यवर्द्धन → प्रभाकरवर्द्धन (600–606 ई.)

प्रभाकरवर्द्धन ↓

- पुत्र
  - राज्यवर्द्धन (606 ई.)
  - हर्षवर्द्धन (606–647 ई.)
- पुत्री
  - ↓ राज्य श्री

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

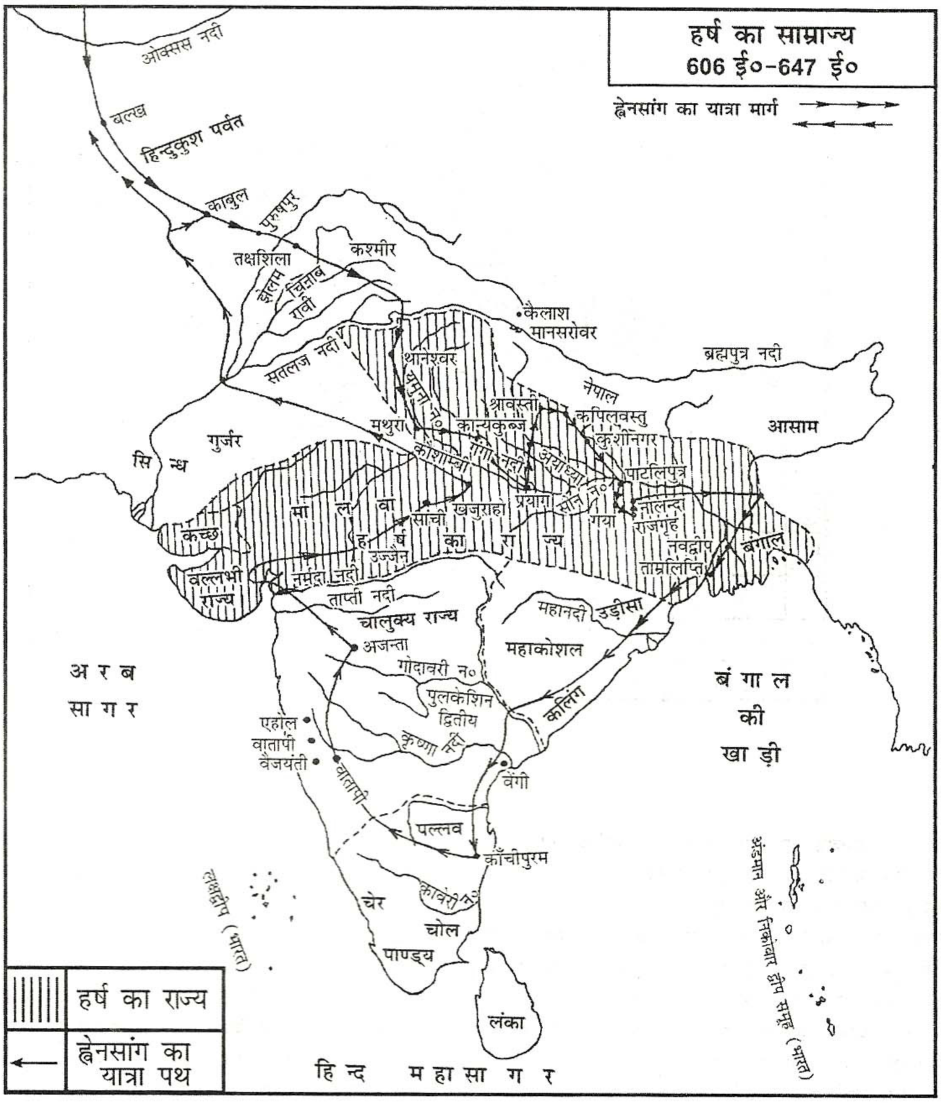

पुष्यभूति वंश

- पुष्यभूति वंश की स्थापना थानेश्वर में हुई थी। इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक प्रभाकरवर्द्धन था।
- **हर्षवर्द्धन (606–647 ई.)** इस वंश का महान् शासक था। उसने अपनी राधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानान्तरित की।
- बाणभट्ट हर्ष का दरबारी कवि था। उसने **'हर्षचरित'** की रचना की। हर्ष ने स्वयं **'नागानन्द', 'रत्नावली'** एवं **'प्रियदर्शिका'** नामक नाटकों की रचना की थी।
- हर्ष का चालुक्य शासक **पुलकेशिन द्वितीय** से नर्मदा नदी तट पर युद्ध हुआ था, जिसमें हर्ष की पराजय हुई थी।
- हर्षवर्द्धन के शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था। उसका यात्रा–वृत्तांत 'सी–यू–की' के नाम से जाना जाता है।

गुप्तोत्तर वंश

पाल वंश :

- पाल वंश की स्थापना बौद्ध धर्म के अनुयायी गोपाल (750–770 ई.) ने की थी।
- धर्मपाल (गोपाल के पुत्र) ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की तथा नालन्दा विश्वविद्यालय का जीर्णोद्धार कराया।
- देवपाल (810–850 ई.) इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था।
- देवपाल ने उड़ीसा व असम को जीता तथा प्रतिहार राजा भोज व राष्ट्रकूट राजा अमोधवर्ष को हराया।
- इसके बाद बने शासक महीपाल को राजेन्द्र चोल ने आक्रमण कर पराजित किया।

बादामी के चालुक्य :

- इस वंश का संस्थापक पुलकेशिन प्रथम (535–566 ई.) था।
- इस वंश की राजधानी वातापी (आधुनिक बादामी) थी।
- पुलकेशिन द्वितीय, वातापी के चालुक्य राजवंश का सर्वाधिक योग्य व साहसी शासक था। उसने हर्षवर्धन को नर्मदा तट पर पराजित किया।
- पुलकेशिन द्वितीय ने पर्शिया के राजा खुसरो द्वितीय के दरबार में अपना दूत भेजा।
- ह्वेनसांग पुलकेशिन द्वितीय के शासनकाल में चालुक्य साम्राज्य की यात्रा पर आया।
- चालुक्य उस समय की जलसैन्य शक्ति के रूप में प्रसिद्ध थे।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

राष्ट्रकूट वंश :

- प्रारम्भ में राष्ट्रकूट बादामी के चालुक्यों के सामन्त थे।
- इस वंश का संस्थापक दन्तिदुर्ग था।
- इस वंश का प्रसिद्ध शासक कृष्ण प्रथम एक महान् निर्माता भी था। उसने एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण करवाया।
- अमोघवर्ष (814 ई. – 876 ई.) धर्म और साहित्य में विशेष रुचि रखता था। वह विद्वानों एवं कलाकारों का आश्रयदाता था। उसने पहली कन्नड़ कविता 'कविराज मार्ग' तथा 'प्रश्नोत्तर मल्लिका' लिखी।
- इस वंश के शासक कृष्ण तृतीय ने एक विजय स्तम्भ तथा रामेश्वरम् में एक मन्दिर का निर्माण करवाया।

पल्लव वंश :

- पल्लव वंश का वास्तविक संस्थापक सिंहविष्णु (574 ई. –600 ई.) को माना जाता है।
- इसस वंश की राजधानी कांची थी।
- नरसिंहवर्मन (630 ई.–668 ई.) पल्लव वंश सर्वाधिक यशस्वी शासक था।
- नरसिंहवर्मन ने महाबलीपुरम नगर की स्थापना की तथा महाबलीपुरम के प्रसिद्ध एकात्मक रथो (सात पैगोड़ा) का निर्माण भी उसी ने करवाया।
- नरसिंहवर्मन के ही शासनकाल में ह्वेनसांग ने कांची की यात्रा की थी।

गंग वंश :

- गंग शासक नरसिंह देव ने कोणार्क का प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर बनवाया।
- गंग वंश के ही शासक अनन्तवर्मन ने पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथपुरी मन्दिर का निर्माण करवाया।
- गंग वंश से पहले उड़ीसा में शासन करने वाले केसरी शासकों ने भुवनेश्वर के प्रसिद्ध लिंगराज मन्दिर का निर्माण करवाया था।

चोल वंश :

- इस वंश का संस्थापक विजयालय (846 ई.–871 ई.) था।
- यद्यपि चोलों का प्रारम्भिक इतिहास संगम युग (तीसरी शताब्दी ई. पू.) से आरम्भ होता है परन्तु इस वंश का राजनीतिक उत्कर्ष नवीं शताब्दी ई. में हुआ।
- इनकी राजधानी तंजौर (आधुनिक थंजावुर) थी।
- राजराज प्रमि को इस वंश का वासतविक संस्थापक माना जाता है। उसने सम्पूर्ण दक्षिण भारत में अपना विजय परचम लहराया।
- उसने उत्तरी श्रीलंका को विजित कर इसका नाम 'मामुण्डी चोलमण्डलम्' रखा
- उसने तंजौर में प्रसिद्ध 'राजराजेश्वर मन्दिर' (बृहदेश्वर शिव मन्दिर) का निर्माण करवाया।
- भगवान शिव की नृत्य दर्शाती कलाकृति 'नटराज' इसी काल से सम्बन्धित है।
- चोलों के शासनकाल में ही कला की 'गोपुरम' शैली का जन्म हुआ।
- इस शासनकाल में स्थानीय सरकार हुआ करती थी (वर्तमान के पंचायती राज का सिद्धान्त यहीं से लिया गया है)।
- राजराज प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम (1014 ई.–1044 ई.) शासक बना।
- राजेन्द्र प्रथम ने 1017 ई. में सम्पूर्ण श्रीलंका को विजित कर वहाँ के शासक महेन्द्र पंचम को बन्दी बनाकर रखा उसने पांड्यो और चेरों के राज्यों को भी विजित किया था।
- राजेन्द्र प्रथम ने बंगाल के पाल शासक महीपाल को भी पराजित किया। इस विजय के उपरांत उसने 'गंगईकोण्ड' की उपाधि ग्रहण की।

गुप्तोत्तर कालीन राजवंश

राजवंश	स्थान	प्रमुख शासक	उपलब्धि
1. मैत्रक	वल्लभी		1. गुप्तोत्तर काल के नवोदित राज्यों में सबसे लंबे समय तक शासन किया (लगभग 300 वर्ष)। 2. अरबों द्वारा परास्त किये गये।
2. मौखरी	कन्नौज	हरिवरमन इसान वरमन सर्ववरमन	1. इन्होंने हुणों को पराजित कर पूर्वी भारत को उनके आक्रमण से बचाया। 2. हर्ष ने इनको अपने राज्य में विलीन कर लिया।
3. चंद्र (गौड़)	बंगाल	शशांक	1. थानेश्वर और कन्नौज शासकों से इसकी शत्रुता रही।
4. परवर्ती गुप्त	मगध	महासेन गुप्त	1. मौखरियों से राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता रही।
5. पुष्यमित्र	थानेश्वर	पुश्यमित्र आदित्य वर्मन प्रभाकर वर्धन राज्य वर्धन हर्ष वर्धन	1. गुप्तों के उपरांत उत्तर भारत में सबसे विशाल राज्य स्थापित किया।

T.I. Highlights

- हर्ष ने 606 ई. सन् में शासन की बागडोर संभाली।
- हर्ष 612 ई. में पूर्ण राजकीय उपाधि (Full regal title) महाराजाधिराज ग्रहण की।
- हर्ष ने 641 ई. में परम भट्टारक मगध नरेश (king of Magadha) की उपाधि ग्रहण की।
- हर्ष का दूसरा नाम शिलादित्य (Shiladitiya) था।
- हर्ष के दक्षिण की ओर साम्राज्य विस्तार को चालुक्य शासक **पुलकेशिन् द्वितीय** (Pulekesin II) ने रोका।
- हर्ष ने महायान बौद्ध धर्म का संरक्षण प्रदान किया।
- बाण, मयूर, दिवाकर और ह्वेंनसांग आदि विद्वान उसके संरक्षण में थे।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- हर्ष ने 624 ई. में कन्नौज तथा प्रयाग में दो विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया।
- हर्ष के साम्राज्य में पंच प्रदेश (Five indies) (पंजाब, कन्नौज, गौड़ (बंगाल), मिथिला, उड़ीसा), वल्भी तथा मालवा भी शामिल थे।
- हर्ष ने 641 ई. में अपने दूत चीन भेजे तथा 643 ई. और 646 इ. में दो चीनी दूत उसके यहां आये।
- हर्ष ने तीन नाटक– नागानंद (Nagananda) रत्नावली (Ratnavali) तथा प्रियदर्शिका (Priyadarshika) लिखे।
- हर्ष अपने राजस्व का 1/4 शिक्षा पर 1/4 अपने ऊपर, 1/4 धार्मिक कार्यों पर तथा 1/4 अधिकारियों तथा जनसेवकों के भरण–पोषण पर खर्च करता था।
- हर्ष ने कश्मीर शासक से बुद्ध के दंत अवशेष (Tooth rilic) बलपूर्वक प्राप्त किये।
- हर्ष को बांसखेरा तथा मधुबन अभिलेखों में परम महेश्वर कहा गया है।
- हर्ष अपने सैनिक अभियान पर निकलने से पूर्व रूद्र शिव (Rudra-Siva) की आराधना करता था।
- हर्ष की मृत्यु 647 ई. में हुई।
- हर्ष की शासन व्यवस्था महान गुप्त शासकों के शासन व्यवस्था के समान थी।
- हर्ष ने अपने साम्राज्य को प्रशासनिक सुविधा के लिए निम्नलिखित स्तरों में खंडित किया–

स्तरीय खंडन	**प्रधान**
भुक्ति	उपरिक
विषय	विषयपति
ग्राम	ग्रामिक

- हर्ष के प्रशासन में **'अंवति'** युद्ध और शांति का अधिकारी था।

सिंघनाद	सेनापति था।
कुन्तल	अश्वसेना का प्रधान था।
स्कंदगुप्त	हस्तिसेना का प्रधान था, तथा
सामंत–महाराज	नागरिक प्रशासन का प्रमुख था।

- हर्ष के काल में उच्च अधिकारियों को वेतन के रूप में जागीरें (भूमि अनुदान) दी जाती थी।
- हर्ष के आय का प्रधान स्रोत भाग था, जो एक प्रकार का भूमि कर था और उत्पादन का 1/6 भाग था।
- हर्ष के समय नालंदा विश्वविद्यालय महाग्रहारा कहा जाता था, जो शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।
- हर्ष के शासन काल में जाति प्रथा जटिल थी, सती प्रथा का प्रचलन था, परन्तु पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं थी।
- हर्ष ने अपना कोई उत्तराधिकारी नहीं छोड़ा था, अतः उसके उपरांत वर्धन वंश (पुष्पभूति वंश) का अंत हो गया।
- हर्ष को हिन्दू काल का अकबर भी कहा जाता है।

- **पल्लव वंश** की स्थापना **सिंहविष्णु** ने की थी। इसकी राजधानी काँची (काँचीपुरम्) थी।
- 'मत्तविलास प्रहसन' की रचना पल्लव नरेश महेन्द्र वर्मन ने की।
- महाबलीपुरम् के रथ मन्दिर का निर्माण पल्लव नरेश **नरसिंहवर्मन प्रथम** के समय हुआ था। उसने वातापीकोंड की उपाधि ग्रहण की।
- **राष्ट्रकूट वंश** की स्थापना दन्तिदुर्ग ने की थी। इसकी राजधानी मान्यखेट थी।
- **ध्रुव** प्रथम राष्ट्रकूट (दक्षिण भारत) शासक था, जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया।
- **अमोघवर्ष** जैन धर्म का अनुयायी था, इसने कन्नड़ में **'कविराजमार्ग'** की रचना की।
- एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण **कृष्ण प्रथम** ने करवाया था।
- एलोरा एवं एलिफेंटा गुहा मन्दिरों का निर्माण राष्ट्रकूट शासकों के द्वारा हुआ।
- **चोल** वंश की स्थापना **विजयालय** ने की थी। इसकी राजधानी तंजोर थी।
- चोल शासक **राजराज प्रथम** ने श्रीलंका पर आक्रमण करके विजित प्रदेशों को चोल साम्राज्य का नया प्रान्त बनाया।
- राजराज प्रथम ने तंजौर में **'राजराजेश्वर का शिव मन्दिर'** (वृहदेश्वर मन्दिर) बनवाया।
- राजराज प्रथम ने शैलेन्द्र शासक को नागपट्टनम् में बौद्ध मठ स्थापित करने की अनुमति दी थी।
- **राजेन्द्र प्रथम** ने गंगाघाटी के सफल अभियान के क्रम में पाल वंश के शासक महिपाल को पराजित किया। इस विजय की स्मृति में उसने 'गंगैकोण्डचोलपुरम्' नगर का निर्माण किया।
- **स्थानीय स्वशासन** चोल साम्राज्य की प्रमुख विशेषता थी।
- पाल वंश का संस्थापक **गोपाल** था। उसने औदन्तपुरी (बिहार शरीफ) में बौद्ध विहार की स्थापना की थी।
- धर्मपाल ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया।
- कन्नौज के लिए हुए **त्रिपक्षीय संघर्ष** की शुरुआत प्रतिहार नरेश वत्सराज ने की थी तथा त्रिपक्षीय संघर्ष का अन्त गुर्जर–प्रतिहारों की अन्तिम विजय से हुआ था।
- कश्मीर के कार्कोट वंश के शासक **ललितादित्य मुक्तापीड** ने प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर 'मार्तण्ड' का निर्माण करवाया।
- 'राजतरंगिणी' का रचयिता **कल्हण** कश्मीर के लौहार वंश के शासक हर्ष के दरबार में रहता था।
- कल्हण ने **'राजतरंगिणी'** की रचना लौहार वंश के अन्तिम शासक जयसिंह के काल में की।
- उड़ीसा के गंग वंश के शासक **नरसिंह प्रथम** ने भी **कोणार्क** में **सूर्य मन्दिर** का निर्माण करवाया।
- **चन्देल वंश** का संस्थापक नन्नुक था। इसकी राजधानी खजुराहो थी। खजुराहो के मन्दिरों का निर्माण चन्देलों ने करवाया था।
- परमारों की राजधानी उज्जैन थी, बाद में चलकर धारा उनकी राजधानी बनी।
- परमारवंशी शासक **भोज** एक महान् कवि था, उसने कविराज की उपाधि धारण की थी।
- भोज की कुछ रचनाओं में– 'समरांग सूत्रधार', 'सरस्वती–कण्ठाभरण', 'विद्याविनोद', 'राजमार्तण्ड' आदि प्रमुख हैं।
- भोज ने धार में एक सरस्वती मन्दिर की स्थापना की।
- चौहान शासक अजयपाल ने **अजमेर** नगर की स्थापना की।
- **पृथ्वीराज चौहान** को 'रायपिथौरा' भी कहा जाता है। उसके राजकवि **चन्दबरदाई** ने 'पृथ्वीराज रासो' नामक महाकाव्य लिखा।
- पृथ्वीराज चौहान ने तराईन के प्रथम युद्ध (1911 ई.) में मुहम्मद गोरी को पराजित किया, किन्तु **तराईन** के द्वितीय युद्ध (1192 ई.) में गोरी से पराजित हो गया।
- **अनंगपाल तोमर** ने दिल्ली शहर की नींव डाली थी।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

कुछ प्रमुख प्राचीन भारतीय कृतियाँ

कृति	लेखक
अष्टाध्यायी	पाणिनी
सत्सहसरिकासूत्र	नागार्जुन
अर्थशास्त्र	कौटिल्य
महाभाष्य	पतंजलि
पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
वृहत्कथा	गुणाद्य
हितोपदेश	नारायण भट्ट
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
देवीचंद्रगुप्तम्	विशाखदत्त
सौंदर्यनंद काव्य	अश्वघोष
वृहत्कथा मंजरी	क्षेमेन्द्र
दशावतर चरित्	क्षेमेन्द्र
कल्पसूत्र	भद्रबाहु
बुद्धचरित्	अश्वघोष
भद्रबाहु चरित्	रत्ननंदी
योगसूत्र	पतंजलि
रामचरित्	संध्याकर नंदी
ब्रह्मसूत्र	वाद्रायण
कुमारसंभव	कालीदास
अभिज्ञान शकुंतलम्	कालीदास
रघुवंश	कालीदास
मेघदूत	कालीदास
माल्विकाग्निमित्रम्	कालीदास
ऋतुसंहार	कालीदास
विक्रमोर्वशीय	कालीदास
स्वप्रवासवदत्तम्	भास
नागनंद	हर्षवर्द्धन
रत्नावली	हर्षवर्द्धन
प्रियदर्शिका	हर्षवर्द्धन
तिरूवांशगम्	मणिक वास्गर
वैधक ग्रंथ	चक्रपाणि
अभिधान चिंतामणि	हेमचंद्र
सारिपुत्र प्रकरण	अश्वघोष
हर्षचरित्	बाणभट्ट
कादंबरी	बाणभट्ट
गीतगोविंद	जयदेव
चंद्रालोक	जयदेव
अमरकोश	अमर सिंह
कथासरित्सागर	सोमदेव भट्ट
नीतिसार	कामंदक
मृच्छकटिकम्	शूद्रक
किरातार्जुनियम्	भारवि
सूर्य सिद्धान्त	भास्कराचार्य
वासवदत्ता	सुबन्धु
मालतिमाधव	भवभूति
दशकुमार चरित्	दाण्डी
शिशुपाल वध	माघ
शुक्रनीतिसार	माघ
रावणवध	भट्टी
साख्यकारिका	ईश्वरकृष्ण
नाट्य शास्त्र	भरत
कामसूत्र	वात्सायन
चरक संहिता	चरक
सुश्रुत संहिता	सुश्रुत
मिलिन्दपन्हों	नागसेन
दायभाग	जीमूतवाहन
मिताश्ररा	विज्ञानेश्वर
दशरूपक	धनंजय
नैषधचरित	श्रीहर्ष
खण्डनखण्ड खाध	श्रीहर्ष
आर्यभटियम्	आर्यभट्ट
परमार्थसप्तशती	आर्यभट्ट
वृहत् संहिता	वराहमिहिर
पंच सिद्धान्तिका	वराहमिहिर
नारदस्मृति	वात्सायन
कर्पूरमंजरी	राजशेखर
काव्यमीमांसा	राजशेखर
नवसहसांकचरित्	परिमल पद्मगुप्त
नीतिशतक	भर्तृहरि
गौडवहो	वाग्पतिराज
प्रबंध चिंतामणि	मेरुतुंग
भोजचरित्	मेरुतुंग
विक्रमांकदेवचरित्	विल्हण
वेणिसंहार	भट्टनारायण
तिलक मंजरी	धनपाल
यश तिलक	धनपाल
कीर्तिकौमुदी	सोमेश्वर
कुवलयमाला	उद्योगमांसुरी
रसरत्नकर	नागार्जुन
लीलावती	भास्कराचार्य
सिद्धान्त शिरोमणि	भास्कराचार्य
पृथ्वीराज रासो	चंदबरदाई
ललित विग्रहराज	सोमदेव
प्रबोधचंद्रोदय	कृष्णमिश्र
दशरूपक	धनंजय
हम्मीरमदमर्दन	जयसिंह सूरी
राजतरंगिणी	कल्हण
पंचशिका	विल्हण
दानसागर	बल्लालसेन
तिलक मंजरी	धनपाल
पृथ्वीराज विजय	जयनक
उत्तर रामचरित्	भवभूति
संगीतराज	महाराणा कुंभा
रास पंचाध्यायी	नन्ददास
आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
सेतुबंध	प्रवरसेन– II
सुंदुरी कथा	दाण्डी
काव्यादर्श	दाण्डी
समयकात्रक	क्षेमेन्द्र
कुट्टनीमतम्	दामोदर गुप्त
नेचुरल हिस्ट्री	प्लिनी
इण्डिका	मेगस्थनीज

****

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

By V.P. Singh

मध्यकालीन भारत

प्रमुख राजवंश, संस्थापक तथा राजधानी
(मध्यकालीन भारत)

क्र. सं.	राजवंश	राजधानी	संस्थापक
1.	हर्यक वंश	राजगृह, पाटलिपुत्र	बिम्बिसार
2.	शिशुनाग वंश	राजगृह	शिशुनाग
3.	नन्द वंश	पाटलिपुत्र	महापद्मनन्द
4.	मौर्यवंश	पाटलिपुत्र	चन्द्रगुप्त मौर्य
5.	शुंग वंश	पाटलिपुत्र	पुष्यमित्र शुंग
6.	सातवाहन वंश	प्रतिष्ठान	सिमुक
7.	इक्ष्वाकु वंश	नागार्जुनी कोण्ड	वशिष्ठपुत्र श्री सान्तमूल
8.	कुषाण वंश	पुरूषपुर (पेशावर)	कडफिसस
9.	गुप्त वंश	पाटलिपुत्र	श्री गुप्त
10.	हूण वंश	शाकल (स्यालकोट)	तोरमाण
11.	पुष्यभूति वंश	थानेश्वर, कन्नौज	नंदीवर्द्धन
12.	पल्लव वंश	कांचीपुरम्	सिंहवर्मन चतुर्थ
13.	चालुक्य वंश	वातापी (वल्लभी)	जयसिंह प्रथम
14.	चालुक्य (कल्याणी)	मन्याखेत	विजयादित्य
15.	चालुक्य (वेंगी)	वेंगी	विष्णुवर्द्धन
16.	राष्ट्रकूट	मन्याखेत	दन्तिवर्मन्
17.	सोलंकी वंश	अन्हिलवाड़	मूलराज प्रथम
18.	परमार वंश	धार, उज्जैन (बाद में)	उपेन्द्र/कृष्णराज
19.	कलचुरी वंश	त्रिपुरी (तेवार, जबलपुर में)	कोक्कल्ल
20.	चंदेल वंश	खजुराहो	नन्नुक
21.	चौहान वंश	अजमेर	विग्रहराज
22.	गहढ़वाल वंश	कन्नौज	चन्द्रदारा
23.	सेन वंश	काशीपुर	सामंत सेन/हेमन्त सेन
24.	पाल वंश	मुंगेर	गोपाल
25.	चोल वंश	तन्जवुर	विजयालय
26.	गंगा वंश (पूर्वी)	पुरी	वज्रहस्त पंचम
27.	उत्पल वंश	कश्मीर	अवन्तिवर्मन
28.	ब्राह्मणशाही वंश	उण्ड (उदाभाण्डा)	कल्लर
29.	दास वंश	दिल्ली	कुतुबुद्दीन ऐबक
30.	खिलजी वंश	दिल्ली	जलालुद्दीन खिलजी
31.	तुगलक वंश	दिल्ली	गयासुद्दीन तुगलक
32.	सैय्यद वंश	दिल्ली	खिज्रखान
33.	लोदी वंश	दिल्ली	बहलोल लोदी
34.	होयसल वंश	द्वारसमुद्र	विष्णुवर्धन
35.	संगमा वंश	विजयनगर	हरिहर एवं बुक्का
36.	सालुव वंश	विजयनगर	सलवा नरसिंह
37.	तुलुवा वंश	विजयनगर	वीर नरसिंह
38.	अराविडु वंश	वेनुगोंडा (पैणुगोंडा)	तिरूमल्ल
39.	बहमनी वंश	गुलवर्गा, बीदर	बहमन शाह
40.	कुतुबुशाही वंश	गोलकोण्डा	कुली–कुतुब शाह
41.	आदिलशाही वंश	बीजापुर	आदिलशाल
42.	मुगल वंश	दिल्ली	जहीरउद्दीन बाबर

भारत पर मुस्लिम आक्रमण :

- भारत पर पहला सफल मुस्लिम आक्रमण **मुहम्मद बिन कासिम** ने 712 ई. में किया था। उसने सिन्ध एवं मुल्तान को जीत लिया था।
- **महमूद गजनवी** ने 1001 से 1027 ई. के बीच भारत पर 17 आक्रमण किये। इनमें 1025 ई. में सोमनाथ के शिव मन्दिर पर किया गया आक्रमण सबसे प्रसिद्ध था।
- **मुहम्मद गोरी** को भारत में तुर्क सत्ता का संस्थापक माना जाता है।
- 1178 ई. में चालुक्य सांलकी वंश के शासक **भीम द्वितीय** (मूलराज द्वितीय) ने आबू पर्वत के समीप मुहम्मद गोरी को पराजित किया था।
- 1191 ई. के तराईन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के हाथों पराजय के बाद 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध में उसने पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया।
- 1194 ई. में चन्दावर के युद्ध में कन्नौज के गहड़वाल राजा जयचन्द को मुहम्मद गोरी ने पराजित किया।
- 1206 ई. में मुहम्मद गोरी की हत्या गजनी लौटने के क्रम में हो गई।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत वंशावली

1. गुलाम वंश (1206 ई. से 1290 ई.)
2. खिलजी वंश (1290 ई. से 1320 ई.)
3. तुगलक वंश (1320 ई. से 1413 ई.)
4. सैयद वंश (1414 ई. से 1451 ई.)
5. लोदी वंश (1451 ई. से 1526 ई.)

गुलाम वंश की वंशावली

कुतुबुद्दीन एंबक (1206 ई. से 1210 ई.)
↓
आरामशाह (1210 ई. से 1211 ई.)
↓
इल्तुतमिश (1211 ई. से 1236 ई.)
↓
रुकनुद्दीन फिरोजशाह (1236 ई.)
↓
रजिया सुल्ताना (1236 ई. से 1240 ई.)
↓
मुइजुद्दीन बहरामशाह (1240 ई. से 1242 ई.)
↓
अलाउद्दीन मसूदशाह (1242 ई. से 1246 ई.)
↓
नासिरुद्दीन महमूद (1246 ई. से 1265 ई.)
↓
बलबन (नासिरुद्दीन गुलाम) (1265 ई. से 1286 ई.)
↓
मुहम्मद बुगरा खाँ (1286 ई.)
↓
कैखुशरो कैकबाद (1286 ई.)
↓
कैकुबाद (1286 ई. से 1290 ई.)
↓
कैमुर्स (1290 ई.)

गुलाम वंश (1206–1290 ई.) :

गुलाम वंश एवं कुतुबुद्दीन ऐबक

दिल्ली का पहला मुसलमान तुर्क शासक कुतुबुद्दीन ऐबक को माना जाता है तथा भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक भी वही था। कुतुबुद्दीन ऐबक तुर्क था तथा उसके माता–पिता तुर्किस्तान के निवासी थे। मुहम्मद गौरी के समय ऐबक ने एक योग्य सेनापति के रूप में कार्य करते हुए समस्त युद्धों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1206 ई. में गौरी की मृत्यु हो जाने पर लाहौर की जनता ने ऐबक को दिल्ली से लाहौर आकर शासन सत्ता सम्भालने के लिए आमन्त्रित किया था। ऐबक ने 25 जून, 1206 ई. को गौरी की मृत्यु के तीन माह पश्चात् अपना राज्याभिषेक करवाया था तथा सुल्तान की जगह मलिक एवं सिपहसालार की पदवियों से ही सन्तुष्ट रहा था।

परन्तु जब ऐबक गौरी द्वारा विजित प्रदेशों का शासक बना उसके सामने अनेकों कठिनाइयाँ थीं, जैसे राजपूत शासक पुनः स्वतन्त्र होने के लिए विद्रोह कर रहे थे। बंगाल में ऐबक का शासन खिलजी सरदार स्वीकार करने के लिए तैयार न था। गौरी के दो अन्य गुलाम गजनी का ताजुद्दीन यल्दौज व उच्छ का नासिरुद्दीन कुबाचा शासन कर रहे थे। ऐबक ने 1197 ई. में अन्हिलवाड़ के शासक भीम द्वितीय को पराजित कर गुजरात पर अपना शासन किया। 1202–03 ई. में कालिंजर के राजा परमर्दिदेव को पराजित किया। 1204–05 ई. में बंगाल, बिहार पर आक्रमण कर अधिकार किया। 1210 ई. में ऐबक के मरने से पूर्व उसका साम्राज्य सम्पूर्ण पंजाब, दिल्ली, कोल, बदायूँ, बंगाल, कालिंजर, गुजरात, मेरठ, कन्नौज, झाँसी, ग्वालियर, बनारस, मालवा एवं राजपूताना के अजमेर आदि प्रान्तों तक स्थापित था।

- गुलाम वंश का संस्थापक **कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210 ई.)** था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को उसकी उदारता के कारण 'लाखबक्श' (लाखों का दान करने वाला) कहा गया।
- ऐबक ने ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कुतुबमीनार का निर्माण प्रारम्भ करवाया।
- 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते समय ऐबक की मृत्यु हो गई।

दिल्ली सल्तनत और इल्तुतमिश (1211–1236 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली सल्तनत की बागडोर उसके गुलाम व दामाद इल्तुतमिश के हाथों में आई, जोकि दिल्ली का पहला सुल्तान था, जिसे सुल्तान के पद की स्वीकृति किसी गौर के शासक से नहीं बल्कि बगदाद के खलीफा से प्राप्त हुई थी। इस तरह वह कानूनी रूप से दिल्ली का प्रथम सुल्तान था, जिसने दिल्ली को राजधानी बनाया था।

जब इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत की बागडोर सम्भाली तब उसके समक्ष अनेकों आन्तरिक व बाहरी कठिनाइयाँ सिर उठाए खड़ी थीं। जैसे गौरी के प्रदेश के दो दावेदार गजनी में यल्दौज, उच्छ में कुबाचा अभी जीवित थे। बंगाल का सूबेदार अलीमर्दान खाँ स्वतन्त्र शासक की तरह कार्य कर रहा था। राजपूताने के कई शासक दिल्ली सल्तनत की प्रभुसत्ता को चुर्नाती दे रहे थे। 1211–1220 ई. तक सर्वप्रथम इल्तुतमिश ने अपने विरोधियों जिनमें कुबाचा, यल्दौज, बंगाल का अलीमर्दान व राजपूत शासकों की शक्ति को कुचला और 1220–1228 ई. तक मंगोल आक्रानता चंगेज खाँ के आक्रमण से दिल्ली सल्तनत को सुरक्षित व सुव्यवस्थित करता रहा और अपने बचे हुए समय में राजवंशीय संगठन को मजबूत करता रहा। इस समय उसके पास राजव्यवस्था में रणथम्भौर, मध्य भारत में ग्वालियर, भिलसा पूर्व में लखनौती, उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर गंगा की तलहटी तक उसका राज्य विस्तृत था। इल्तुतमिश ने तुर्कान–ए–चहलगानी नामक अपने वफादार सरदारों के संगठन का निर्माण किया था तथा दिल्ली सल्तनत में 'इक्ता प्रणाली' का आरम्भ किया था और केन्द्र में एक बड़ी सेना रखी थी। दो सिक्के चाँदी का टंका एवं ताँबे का जीतल चलाया था। निसन्देह कहा जा सकता है कि दिल्ली सल्तनत की मुस्लिम सम्प्रभुता का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश था।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- **इल्तुतमिश (1210–1236 ई.)** ने अपने विरोधियों से निबटने के लिए चालीस दासों का एक दल बनाया जिसे चालीसा 'तुर्कान–ए–चहलगानी' कहा गया।
- इल्तुतमिश ने अपने साम्राज्य को छोटे–छोटे क्षेत्रों में बाँट दिया जिसे **इक्ता** कहा गया, इसका प्रशासक इक्तादार होता था।
- इल्तुतमिश ने कुतुबमीनार के निर्माण को पूरा करवाया।
- इसने अपनी राजधानी लाहौर से दिल्ली स्थानान्तरित की।
- **रजिया सुल्तान (1236–1240 ई.)** भारत की प्रथम महिला मुस्लिम शासिका थी।
- रजिया ने पहनावे में पर्दे को त्याग कर कुबा (कोट) तथा कुलाह (टोपी) धारण की। उसने भटिण्डा के प्रशासक अल्तूनिया से निकाह किया।
- **बलबन (1265–87 ई.)** दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था, जिसने सुल्तान की प्रतिष्ठा की पुर्नस्थापना के उद्देश्य से राजत्व सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किया।

दिल्ली सल्तनत और बलबन का साम्राज्य (1266–1290 ई.)

सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु 1265 ई. में होने के पश्चात् इसका नायब–ए–मामलिकात बलबन 1266 ई. में 'बलबनी वंश' के नाम से दिल्ली सल्तनत के तख्तोताज का सुल्तान बना। बलबन ने सुल्तान बनते ही तुर्क–ए–चहलगानी (चालीस तुर्क सरदार) का अन्त कर दिया। इस समय चालीस गुलाम सरदारों का संगठन जीवित अवस्था में था जो बलबन की सत्ता का विरोध कर सकते थे क्योंकि बलबन स्वयं इस संगठन का एक सदस्य रहा था तथा वहीं से अपनी योग्यता के बल पर सर्वोच्च पद नायब–ए–मामलिकात के पद तक पहुँचा था। अतः अब वह सल्तनत का सुलतान बन चुका था। इसलिए ईष्यावश वे कभी भी बलबन की सत्ता को चुनौती दे सकते थे, जो एक बहुत बड़ी समस्या थी। दिल्ली के आस–पास मेवाती लोग आतंक फैला रहे थे तथा दिल्ली के नागरिक दिल्ली की सत्ता के भय से मुक्त हो चुके थे। सुल्तान के पद, प्रतिष्ठा, सम्मान का उनके मन में कोई भय नहीं रहा था। इन सब समस्याओं से निपटने के लिए बलबन ने 'राजत्व का सिद्धान्त' दिया, जिसके अनुसार ईश्वर के पश्चात् सुल्तान का स्थान होता है तथा सुल्तान पूर्णतः निरंकुश होता है। उसने अपने दरबार में सिजदा (भूमि पर लेटकर प्रणाम करना), पैबोस (सुल्तान के चरणों को चूमना) जैसी प्रथाएँ व फारसी त्यौहार नवरोज (नौरोज) को प्रतिवर्ष अपने दरबार में मनाना आरम्भ किया तथा धीरे–धीरे समस्त तुर्की सरदारों का अन्त किया। सेना का संगठन खड़ा किया। एक नवीन प्रणाली गुप्तचर व्यवस्था (बरीद) का प्रारम्भ किया तथा उत्तर–पश्चिमी सीमा प्रान्त पर सुरक्षा हेतु कई मजबूत दुर्गों का निर्माण करवाया। इल्तुतमिश के समय विजित समस्त प्रदेशों को सुव्यवस्थित एवं संगठित किया। अतः बलबन का शासन पूर्व विजित प्रदेशों को नियन्त्रित करने, उन पर अपना मजबूत नियन्त्रण रखने तक सीमित था न कि साम्राज्य विस्तार का। 1279 ई. में अवश्य उसने बंगाल के शासक तुगरिल खाँ को परास्त करने हेतु युद्धाभियान किया था, जिसमें उसकी विजय हुई थी। इस तरह 1287 ई. में अपनी मृत्यु से पूर्व उसने अपना उत्तराधिकारी मुहम्मद के पुत्र कैखुशरो को चुना था। मगर दिल्ली के कोतवाल फखरुद्दीन को यह पसन्द न होने के कारण बुगरा खाँ के पुत्र कैकुबाद को दिल्ली का सुल्तान चुना था, जिसने 1290 ई. तक शासन किया।

- बलबन ने फारसी (ईरानी) परम्परा की तर्ज पर 'सिजदा' तथा 'पाबोस' की प्रथा चलाई।
- उसने फारसी परम्परा पर आधारित 'नवरोज' उत्सव की शुरूआत की।
- बलबन ने अपने विरोधियों से निबटने के लिए 'लौह एवं रक्त' की नीति का अनुसरण किया।

खिलजी वंश (1290–1320 ई.) :

खिलजी वंश
↓
जलालुद्दीन खिलजी (1290 ई. से 1296 ई.)
↓
अलाउद्दीन खिलजी (1296 ई. से 1316 ई.)
↓
कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316 ई. से 1320 ई.)
↓
नासिरुद्दीन खुसरूशाह (1320 ई.)

अलाउद्दीन खिलजी का विजय अभियान

मालवा	–	1292 ई. सुल्तान बनने से पूर्व
देवगिरी	–	1296 ई.
गुजरात	–	1297 ई.
रणथम्भौर	–	1301 ई.
चित्तौड़	–	1303 ई.
मालवा	–	1305 ई.
सिवाना	–	1308 ई.
जालौर	–	1311 ई.

सल्तनत कालीन भूमि निम्नलिखित व्यवस्था के अधीन थी–

(1) **इक्ता भूमि** : भूमि का वह टुकड़ा जो राजकीय अधिकारियों को उनके नगद वेतन के एवज में दिया जाता था। इस भूमि से होने वाली आय अधिकारी के वेतन के बराबर होती थी।

(2) **खलीसा भूमि** : इसे सुल्तान की भूमि (Crown Lands) कहा जाता था। इस भूमि की आय सुल्तान के लिए सुरक्षित रहती थी।

(3) **अमलाक भूमि** : लगान रहित भूमि जैसे– मिल्क, वक्फ और इनाम। धर्म संबंधी तथा अन्य दान कार्यों के लिये दी जाती थी।

(4) **इतलाक** : वह भूमि जिसका प्रबंध सुल्तान अपने द्वारा नियुक्त किये हुये कर्मचारियों से करवाता था।

- खिलजी वंश का संस्थापक **जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290–96 ई.)** था। उसने अपनी राजधानी दिल्ली के निकट किलोखरी में बनाई।
- जलालुद्दीन फिरोज दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था जिसने राजत्व का आधार प्रजा का समर्थन माना।
- **अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.)** का मूल नाम अली गुरशास्प था। उसने सिकन्दर द्वितीय सानी की उपाधि धारण की।
- अलाउद्दीन खिलजी प्रथम मुस्लिम सुल्तान था, जिसने दक्षिण भारत पर आक्रमण किया और उसे अपने अधीन किया।
- उसके सेनानायक मलिक काफूर को दक्षिण विजय का श्रेय दिया जाता है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

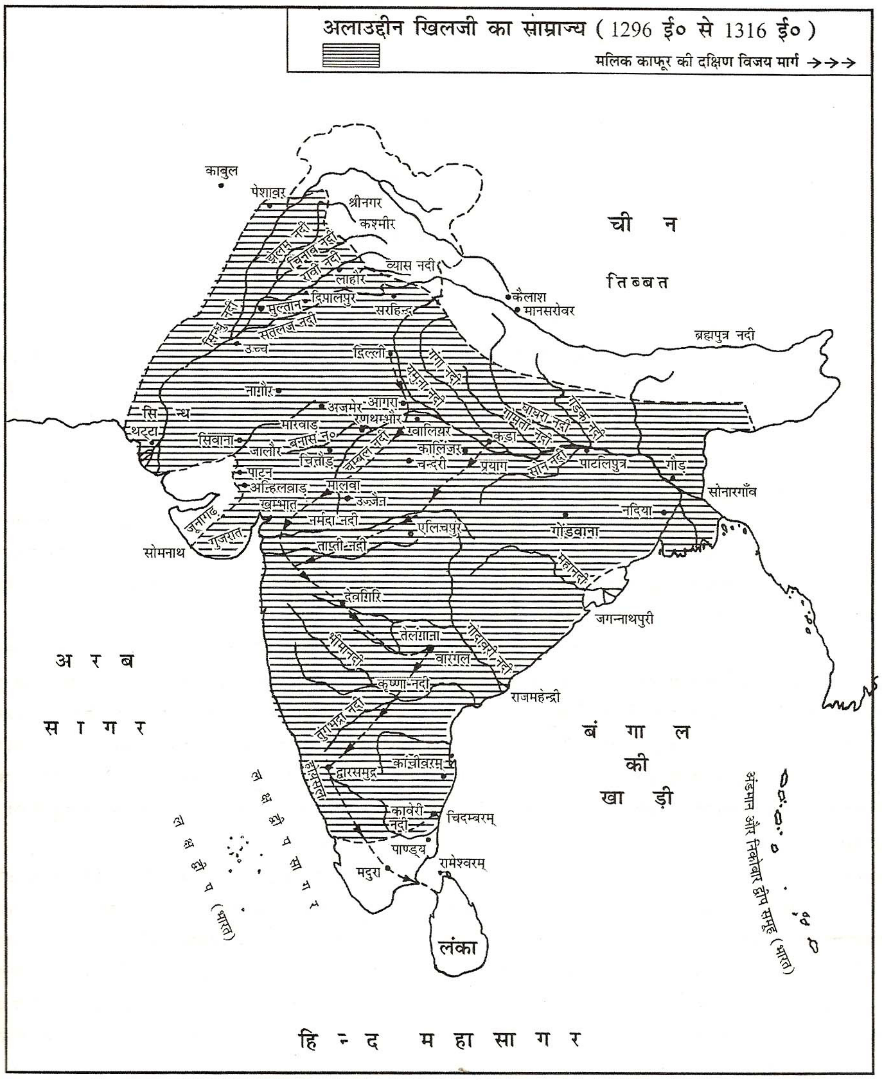

- अलाउद्दीन की नीतियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण **'बाजार नियन्त्रण नीति'** थी, जिसका उद्देश्य अपनी विशाल सेना की आवश्यकताओं को पूरा करना था।
- अलाउद्दीन ने **इनाम, मिल्क** तथा **वक्फ** भूमि को खालसा भूमि में परिवर्तित कर दिया।
- वह प्रथम सुल्तान था जिसने भूमि की माप के आधार पर लगान निर्धारित किया।
- अलाउद्दीन ने सैनिकों की सीधी भर्ती तथा नकद वेतन देने की प्रथा की शुरूआत की। उसने सैनिकों के लिए 'चेहरा' तथा उनके घोड़ों के लिए 'दाग' प्रथा की शुरूआत की।

तुगलक वंश (1320–1413 ई.) :

तुगलक राजवंश (1320–1414 ई.)
↓
ग्यासुद्दीन तुगलक (1320 ई. से 1325 ई.)
↓
मुहम्मद बिन तुगलक (1325 ई. से 1351 ई.)
↓
फिरोजशाह तुगलक (1351 ई. से 1388 ई.)
↓
ग्यासुद्दीन तुगलक द्वितीय (1388 ई. से 1389 ई.)
↓
नासिरुद्दीन महमूद शाह (1394 ई. से 1414 ई.)

- तुगलक वंश का संस्थापक **ग्यासुद्दीन तुगलक (1320–25 ई.)** था।
- ग्यासुद्दीन तुगलक ने नहरों तथा कुओं का निर्माण करवाया तथा डाक–व्यवस्था को संगठित किया।
- **मुहम्मद बिन तुगलक (1325–51 ई.)** का मूल नाम जौना खाँ था।
- कुछ इतिहासकारों ने मुहम्मद बिन तुगलक को 'पागल', 'रक्त–पिपासु' कहा है।
- मुहम्मद तुगलक द्वारा चार प्रयोग किये गये, ये राजधानी परिवर्तन, दोआब क्षेत्र में कर वृद्धि, सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन तथा कराचिल एवं खुरासान विजय की योजना थी।
- उसने अपनी राजधानी दिल्ली से **दौलताबाद (देवगिरि)** स्थानान्तरित की। पर बाद में पुनः दिल्ली ही राजधानी बनी।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

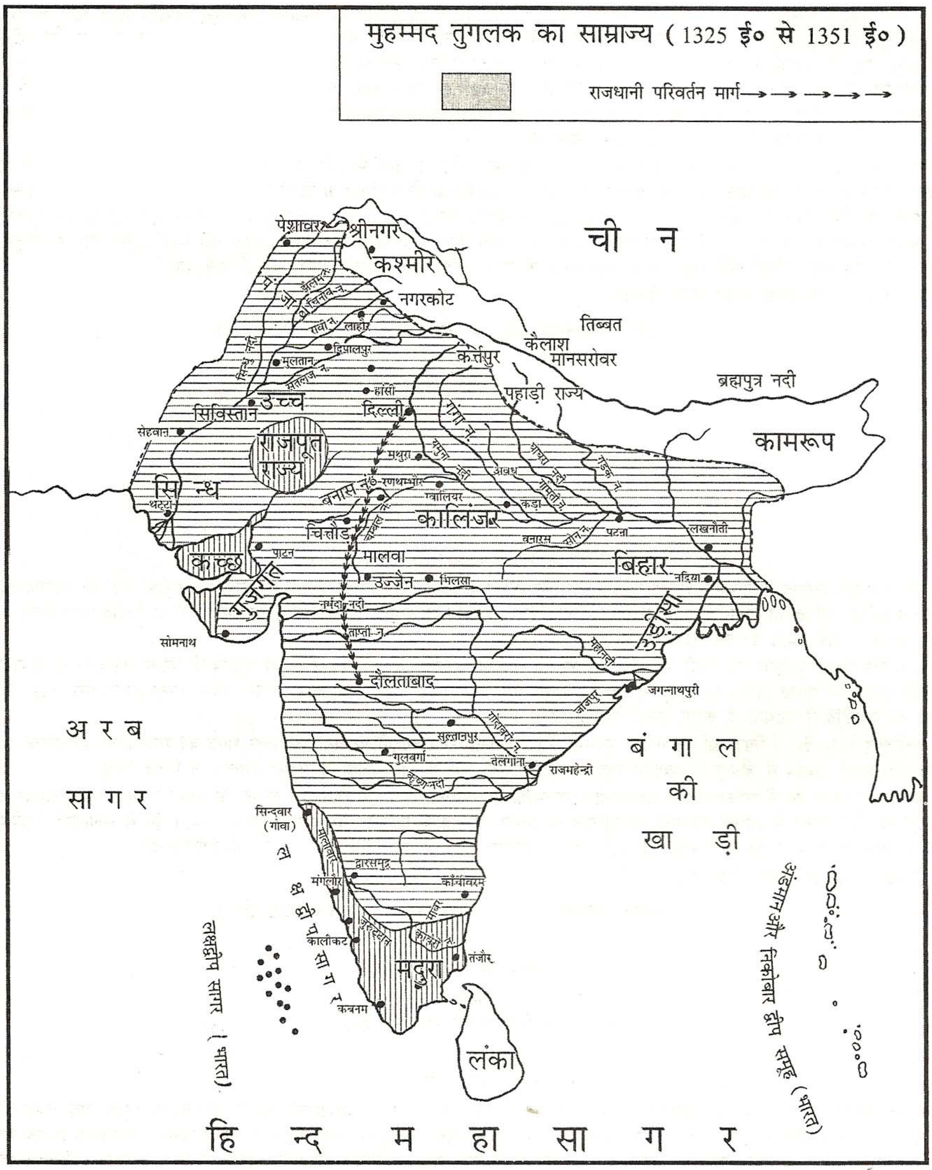

- सांकेतिक मुद्रा के प्रचलन के लिए उसने ताँबे तथा इससे मिश्रित काँसे के सिक्के चलाए थे। पर यह योजना भी कतिपय कारणों से असफल रही।
- 'रेहला' पुस्तक का रचयिता मोरक्को का यात्री **इब्नबतूता** था, जो मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में भारत आया था।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि के विकास के लिए एक नवीन कृषि विभाग 'दीवान–ए–अमीर कोही' की स्थापना की।
- **फिरोजशाह तुगलक (1351–88 ई.)** अपने कल्याणकारी कार्यों के लिए प्रसिद्ध है।
- फिरोजशाह ने सिंचाई की सुविधा के लिए कई नहरों का निर्माण करवाया। वह पहला सुल्तान था जिसने प्रजा से सिंचाई कर 'शर्ब' वसूला।
- फिरोजशाह ने एक दान विभाग 'दीवान–ए–खैरात' की स्थापना की। उसने एक दास विभाग 'दीवान–ए–बन्दगान' की भी स्थापना की थी।
- वह पहला सुल्तान था जिसने ब्राह्मणों पर भी 'जजिया कर' लगाया।
- फिरोजशाह तुगलक ने अपनी आत्मकथा 'फुतूहात–ए–फिरोजशाही' की रचना की।
- **नासिरुद्दीन महमूद** 'तुगलक वंश' का अन्तिम शासक था, जिसके शासनकाल में तैमूरलंग का दिल्ली पर आक्रमण (1398 ई.) हुआ।
- **सैयद वंश (1414–51 ई.)** का संस्थापक खिज्र खाँ था।

दिल्ली सल्तनत और सैयद वंश (1414–1451 ई.)

↓

खिज्र खाँ (1414 ई. से 1421 ई.)

↓

मुईज्जुद्दीन मुबारक शाह (1421 ई. से 1434 ई.)

↓

मुहम्मद शाह (1434 ई. से 1445 ई.)

↓

अलाउद्दीन आलमशाह (1445 ई. से 1451 ई.)

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

लोदी वंश (1451–1526 ई.) :

दिल्ली सल्तनत और लोदी वंश (1451–1526 ई.)
↓
बहलाल लोदी (1451 ई. से 1489 ई.)
↓
सिकन्दर लोदी (1489 ई. से 1517 ई.)
↓
इब्राहिम लोदी (1517 ई. से 1526 ई.)

- लोदी वंश का संस्थापक **बहलोल लोदी (1451–88 ई.)** था, उसने भारत में पहली बार अफगान राज्य की स्थापना की।
- **सिकन्दर लोदी (1489–1517 ई.)** ने भूमि की माप के लिए सिकन्दरी गज के इस्तेमाल की शुरूआत की।
- उसने 'गुलरुखी' के उपनाम से कविताएँ भी लिखीं।
- सिकन्दर लोदी ने 1504 ई. में आगरा नगर की स्थापना की तथा उसे अपनी राजधानी बनाया।
- **इब्राहिम लोदी (1517–26 ई.)** दिल्ली सल्तनत का अन्तिम सुल्तान था। पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई.) में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित कर दिल्ली सल्तनत का अन्त कर दिया।

राजस्व (कर) व्यवस्था :

सल्तनत काल में पाँच मुख्य कर थे–

(i) उश्र : मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर 5% से 10% तक।

(ii) खराज : गैर मुसलमानों पर भूमि कर, 1/3 से 1/2 तक।

(iii) खम्स : लूट, खानों अथवा भूमि में गड़े हुये खजानों से प्राप्त धन, जिसके 1/5 भाग पर सुल्तान का अधिकार था। शेष 4/5 भाग पर सैनिकों का अधिकार होता था। फिरोज तुगलक को छोड़कर शेष सभी ने 4/5 भाग अपने लिये रखा।

(iv) जकात : मुसलमानों पर धार्मिक कर, 2 से 2.5 होता था तथा उन्हीं की भलाई के लिए व्यय होता था।

(v) जजिया : गैर मुसलमानों पर धार्मिक कर था। स्त्रियाँ बच्चे, भिखारी, पुजारी, साधु आदि इस कर से मुक्त थे। फिरोज तुगलक ने ब्रह्मणों पर भी ये कर लगाया, जो पहले इस कर से मुक्त थे। यह लगान से पृथक कर था।

लगान व्यवस्था : उपर्युक्त करों के अतिरिक्त मुसलमानों से 2.5% तथा हिन्दुओं से 5% लिया जाता था। अलाउद्दीन खिलजी ने मकान कर (घराई) और चारागाह कर (चराई) भी लगाया था तथा फिरोज तुगलक ने सिंचाई कर लगाया था, जो 10% था। सुल्तान का मुख्य व्यय सेना, अपने और महल के खर्चों तथा अधिकारियों के वेतन पर होता था।

सल्तनत कालीन विभाग

क्र. सं.	नाम	विभाग	कार्य
1.	दीवान–ए–विजारत	वजीर का विभाग	मुख्यत: वित्त सम्बन्धी कार्य परन्तु लोक प्रशासन के प्रत्येक विभाग पर नियंत्रण
2.	दीवान–ए–रसालत	विदेश विभाग (रिसालत)	विदेशी संपर्क एवं कार्य। कुछ विद्वानों के अनुसार यह धार्मिक कार्यों से संबंधित था।
3.	दीवान–अर्ज	सैन्य विभाग	सैनिकों की भर्ती, सैनिक अभियानों का आयोजन, सैन्य निरीक्षण, सैनिक एवं घोड़ों का रिकार्ड, सैनिकों का वेतन निर्धारण एवं वितरण
4.	दीवान–ए–इंशा या दीवान–ए–अशरफ	पत्राचार विभाग	शाही घोषणाओं एवं पत्रों के मसविदे तैयार करना, शाही पत्राचार, प्रांतीय गवर्नरों का राजकीय पत्र भेजना।
5.	दीवान–ए–अमीरकोही	कृषि विभाग (मुहम्मद बिनतुगलक द्वारा स्थापित)	कृषि के तहत भूमि का विस्तार करना, मालगुजारी व्यवस्था को सुदृढ़ करना।
6.	दीवान–ए–मुस्तखराज	राजस्व विभाग (अलाउद्दीन खिलजी द्वारा स्थापित)	बकाया करों की वसूली करना, राजस्व एकत्र करने वाले अधिकारियों का हिसाब रखना।
7.	दीवान–ए–खैरात	दान विभाग (फिरोजशाह तुगलक द्वारा स्थापित)	गरीब मुस्लिम कन्याओं का विवाह कराना, विधवाओं तथा अनाथों की मदद करना।
8.	दीवान–ए–इश्तिकाक	पेंशन विभाग	अवकाश प्राप्त कर्मचारियों को वजीफा देना, सैन्य अभियानों में मृत सैनिकों के आश्रितों को मदद देना
9.	दीवान–ए–बंदगान	दास विभाग	दासों की संख्या में वृद्धि करना, उनकी समस्याओं का समाधान करना।
10.	दीवान–ए–वफूक	व्यय विभाग (जलालुद्दीन खिलजी द्वारा स्थापित)	व्यय के कागजात की देखभाल करना।
11.	दीवान–ए–कजाममालिक	न्याय विभाग	न्याय सम्बन्धी कार्य

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

सल्तनत काल में प्रमुख अधिकारी तथा उनके कार्य

क्र. सं.	अधिकारी का नाम	कार्य
1.	अरिज–ए–मुमालिक	वे सैन्य विभाग (दीवान –ए –अर्ज) के प्रधान थे। सैनिकों की भर्ती करना, प्रमुख कार्य था।
2.	इंशा–ए–मुमालिक	वह पत्राचार विभाग का प्रधान था।
3.	रसालत–ए–मुमालिक	वह विदेश विभाग का प्रधान था।
4.	वकील–ए–दर	शाही महल एवं सुल्तान की व्यक्तिगत सेनाओं का प्रबन्ध करता था।
5.	अमीर–ए–हाजिब	उसका कार्य सुल्तान से मिलने आने वालों की देखभाल करना था।
6.	सर–ए–जान्दार	वह सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रधान था।
7.	अमीर–ए–बेहर	वह आंतरिक नौकायन तथा जल मार्गों का नियंत्रण करता था।
8.	बरुशी–ए–फौज	उसका कार्य सैनिकों को वेतन देना था।
9.	अमीर–ए–मजलिस	शाही उत्सव तथा मेलों का प्रबन्ध करना था।
10.	अमीर–ए–शिकार	शाही शिकार का प्रबन्ध करना।
11.	मुस्तपौफी–ए–मुमालिक	(महालेखा परीक्षक) राज्य के खर्जों की जांच करना। (आडीटर जनरल)।
12.	मुश्रिफ–ए–मुमालिक	महालेखा कार (एकाउन्टेंट जनरल) राज्य की आय से संबंधित।
13.	दीवान–ए–रियासत	बाजार पर नियंत्रण रखना।
14.	शाहना–ए–मंडी	बाजार मूल्य नियंत्रण, बाट–माप की जांच करना।
15.	मजुम्दार	राजस्व के कागजात रखना।
16.	बारबक	दरबार के रस्मों की देखभाल करना।
17.	मुहतासिब	लोगों के आचरण पर नजर रखता था।
18.	अमीर–ए–आखुर	अश्वशालाध्यक्ष था।
19.	शाहना–ए–पील	हस्तिशाला प्रमुख था।
20.	मुतशर्रिफ	शाही कारखानें की देखभाल करता था।
21.	कोतवाल	शहरों में शांति–व्यवस्था के लिए उत्तरदायी था।
22.	खाजिन	वह राजकीय आय को संग्रहित करता था।
23.	बरीद–ए–मुमालिक	वह सूचना एवं गुप्तचर विभाग का प्रमुख था।
24.	सद्र–उस–सुदूर	वह धर्म संबंधी कार्यों का प्रमुख था।
25.	काजि–उल–काजत	न्याय विभाग का प्रमुख था।
26.	मुफ्ती	धर्म की व्याख्या करता था।
27.	अमीर–ए–दाद	वह बड़े नगरों का मजिस्ट्रेट था।

भक्ति एवं सूफी आन्दोलन :

- मध्यकाल में सर्वप्रथम दक्षिण के आलवार सन्तों द्वारा भक्ति आन्दोलन की शुरूआत हुई।
- उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन प्रारम्भ करने का श्रेय **रामानन्द** को है।
- रामानन्द का जन्म प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ था। उन्होंने विष्णु के अवतार के रूप में राम की भक्ति को लोकप्रिय बनाया।
- **कबीर** ने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर बल दिया। उनकी रचनाएँ 'बीजक' में संगृहीत हैं। वे निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख कवि थे।
- **गुरुनानक** का जन्म ननकाना साहब (तलवण्डी) में हुआ था। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर बल दिया।
- **चैतन्य** बंगाल में भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तक थे। उन्होंने संकीर्तन प्रथा को जन्म दिया।
- सूरदास कृष्ण भक्ति परम्परा से सम्बन्धित थे। उनहोंने अपने ग्रन्थ **'सूरसागर'** के राधा–कृष्ण के आदर्श प्रेम को लोकप्रिय बनाया।
- गुजरात के संत नरसिंह मेहता राधा–कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित थे।
- **शंकराचार्य** के अद्वैतदर्शन के विरोध में दक्षिण में वैष्णव सन्तों द्वारा चार मतों की स्थापना की गई थी, जो इस प्रकार है–

विभिन्न सम्प्रदाय एवं वाद

श्री सम्प्रदाय	रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैतवाद
ब्रह्म सम्प्रदाय	माधवाचार्य	द्वैतवाद
रुद्र सम्प्रदाय	विष्णुस्वामी	शुद्धा द्वैतवाद
सनकादि सम्प्रदाय	निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद

विभिन्न वाद एवं उसके प्रणेता

वाद	प्रणेता
अद्वैतवाद	शंकराचार्य
विशिष्टाद्वैत	रामनुजाचार्य
द्वैताद्वैत	निम्बकाचार्य
शुद्धाद्वैत	वल्लभाचार्य
द्वैतवाद	माधवाचार्य
भेदाभेदवाद	भास्कराचार्य
अविभागद्वैत	विज्ञान भिक्षु
शैव विशिष्टाद्वैत	श्री कंठ
वीर शैव विशिष्टाद्वैत	श्रीपति

- सूफियों का संगठन 'सिलसिला' काह जाता था। जो लोग सूफी संतों से शिष्यता ग्रहण करते थे, उन्हें 'मुरीद' कहा जाता था।

प्रमुख सूफी सिलसिले और उनके संस्थापक

सिलसिला	संस्थापक	भारत में प्रचारक
चिश्ती	ख्वाजा अबू अब्दाल चिश्ती	ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती
कादरी	शेख महीउद्दीन कादर	शाह नियामत उल्ला
सुहरावर्दी	शेख जियाउद्दीन अबुल जीव	शेख बहाउद्दीन जकारिया
नक्शबंदी	ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद	ख्वाजा बकी विल्लाह
शत्तारी		शेख अब्दुल्ला शत्तारी
कलंदरिया	सैयद खिज्र रूमी कलंदर	सैय्यद नइमुद्दून कलंदर

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- चिश्ती सम्प्रदाय के संस्थापक **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती** थे। उनका मकबरा अजमेर में स्थित है।
- बाबा फरीद की कुछ रचनाएँ **'गुरु ग्रन्थ साहिब'** में शामिल हैं।
- **हजरत निजामुद्दीन औलिया** ने अपने जीवनकाल में दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा था। 'अभी दिल्ली दूर है', ये वचन निजामुद्दीन औलिया ने ग्यासुद्दीन तुगलक को कहे थे।
- **शेख अब्दुल्ला सत्तारी** ने सत्तारी सिलसिले की स्थापना की थी। इसका मुख्य केन्द्र बिहार था।
- **रोशनिया सम्प्रदाय** के संस्थापक वायजीद अंसारी थे।
- सुहरावर्दी परम्परा की शाखा फिरदौसी पूर्वी भारत विशेषकर बिहार में विकसित हुई, जिसके महत्वपूर्ण सन्त शर्फुद्दीन याह्या मनेरी थे।

दक्षिण के राज्य

- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना संगम के पुत्रों **हरिहर** तथा **बुक्का** ने 1336 ई. में की। उस समय दिल्ली का सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक था।

विजय नगर साम्राज्य :

दक्षिण भारत और विजयनगर एवं बहमनी राज्य

1336 ई. में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना भारत के इतिहास की एक प्रमुख घटना है। दक्षिण भारत में तुगलक सत्ता के विरुद्ध होने वाले राजनीतिक तथा सांस्कृतिक आन्दोलन के परिणामस्वरूप इसकी स्थापना हुई। संगम के पाँच पुत्रों में से हरिहर एवं बुक्का ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की तथा अपने पिता के नाम पर ही इसका नाम 'संगम वंश' रखा था, जो कि 121 वर्ष तक 1336 ई. से 1485 ई. तक चला था। दूसरा वंश सालुब नरसिंह द्वारा स्थापित किया गया, जो कि 1485 ई. से 1505 ई. तक चला, जिसे सालुव वंश कहा जाता है तथा तुलुव वंश तृतीय वंश था, जिसने 1505–1570ई. तक शासन किया और चतुर्थ वंश का नाम अरविडु वंश था, जिसने सत्रहवीं शताब्दी तक विजयनगर पर शासन किया था।

बहमनी राजवंश की स्थापना का श्रेय अबुल हसन मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमनशाह को जाता है, जिसने 1347 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध विद्रोह कर बहमनी वंश की स्थापना की, जिसकी राजधानी गुलबर्गा को बनाया। इसके अतिरिक्त, बीदर, बरार, दौलताबाद इस वंश की प्रान्तीय राजधानियाँ थीं। 1538 ई. में बहमनी साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया। इस कारण उसके ध्वंसावशेषों पर पाँच राज्य स्थापित हुए।

बीजापुर का आदिलशाही
गोलकुण्डा का कुतुबशाही
अहमदनगर का निजामशाही
बीदर का बरीदशाही राज्य
बरार का इमादशाही राज्य

इस तरह बहमनी राज्य दक्षिण भारत की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक कला संस्कृति साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी भूमिका 200 वर्षों तक बड़े अच्छे तरीके से निभाता रहा।

राजवंश	शासनकाल	संस्थापक
संगम वंश	1336–1485 ई.	हरिहर एवं बुक्का
सलुव वंश	1485–1505 ई.	नरसिंह सलुव
तुलुव वंश	1505–1570 ई.	वीर नरसिंह
अरवीडु वंश	1570–1650 ई.	तिरूमल्ल

- विजयनगर का महान् शासक **कृष्णदेव राय (1509–29 ई.)** तुलुव वंश का था।
- कृष्णदेव राय के दरबार में आठ महान् कवि रहते थे, जिन्हें **'अष्ट दिग्गज'** कहा जाता था।
- कृष्णदेव राय ने तेलुगू भाषा में 'अमुक्तमाल्यद' ग्रन्थ की रचना की। उसने 'हजारा' तथा 'विट्ठल स्वामी मन्दिर' का निर्माण भी करवाया।
- **सदाशिव राय** के शासनकाल में 1565 ई. में 'तालिकोटा' या 'बननीहट्टी' की लड़ाई हुई, जिसमें विजयनगर की हार हुई तथा विजयनगर साम्राज्य का पतन हो गया।

T.I. Highlights

- विजयनगर राज्य अन्तिम हिन्दू साम्राज्य था, जिसमें राजा वर्णाश्रम धर्म की रक्षा तथा प्रगति के लिए कृतसंकल्प थे।
- विजयनगर राज्य में क्षत्रिय वर्ग नहीं था।
- विजयनगर समाज में महिलाओं को उच्च स्थान ही प्राप्त नहीं थी, वरन् वे उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर सकती थीं तथा युद्ध कौशल में भी पारंगत हो सकती थीं।
- विजयनगर समाज में दहेज प्रथा सती प्रथा, बहु–विवाह तथा वेश्यावृत्ति खूब प्रचलित थी।
- विजयनगर राज्य में पुलिस अधिकारियों को वेतन, वेश्यालयों से होने वाले आय से दिया जाता था।
- विजयनगर राज्य में गाय–बैल खाने पर प्रतिबंध था।
- विजयनगर राज्य में पशु–पक्षी (जिनके मांस खाये जाते हों) जीवित बेचे जाते थे।
- विजयनगर राज्य में शिक्षा की प्रगति के लिए ब्राह्मणों को कर–मुक्त भूमिदान में दी जाती थी तथा मठों का निर्माण करवाया जाता था।
- विजयनगर राज्य में कृषि लोगों का प्रमुख व्यवसाय था।
- विजयनगर राज्य में कृषि, सरकार की सुव्यस्थित सिंचाई नीतियों की वजह से उन्नत अवस्था में थी।
- विजयनगर राज्य में राजस्व विभाग को अथावन (Athavana) कहते थे।
- विजयनगर राज्य में भूमि कर को शिष्ट (Shist) कहते थे। यह उपज का 1/6 भाग था तथा राज्य के आय का प्रमुख स्रोत था।
- विजयनगर राज्य में वसल पानम (Vasal panam) गृह या गृहभूमि पर लगने वाला कर था।
- विजयनगर राज्य में नगद–भुगतान वाले करों को विद्धय (Siddhaya) कहते थे।
- विजयनगर राज्य में तट–कर से होने वाले आय को केवलगार (Kevalgar) कहते थे।
- विजयनगर सेना अनुशासित नहीं थी और यह इसकी सबसे बड़ी कमजोरी थी।
- विजयनगर राज्य में साम्प्रदायिक सौहार्द कायम रखने के लिए न्यायिक व्यवस्था में जातिगत–साम्प्रदायिक मामलों के निपटारे को वरीयता दी जाती थी तथा इन पर कोई न्यायिक कर (Judicial tax) नहीं लगता था।
- विजयनगर राज्य में सेना को मुख्यतः नकद वेतन दिया जाता था।
- विजयनगर राज्य में ब्रह्म विवाह (Brtahma marriage) सर्वाधिक प्रचलित था, इसे कन्यादान भी कहते थे।
- विजयनगर शासक विरूपक्ष (शिव के प्रतिनिधि के रूप में) शासन करते थे।
- विजय नगर शासक कृष्ण देव राय शतरंज के शौकीन था।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

विजयनगर आने वाले प्रमुख विदेशी यात्री

यात्री	देश	काल	शासक
निकोलो कोंटी	इटली	1420 ई.	देवराय–II
अब्दुर्रज्जाक	फारस	1442 ई.	देवराय– II
नूनिज	पुर्तगाल	1450 ई.	मल्लिकार्जुन
डोमिंग पायस	पुर्तगाल	1515 ई.	कृष्णदेव राय
बारबोसा	पुर्तगाल	1515–16 ई.	कृष्णदेव राय

विजयनगर साम्राज्य के प्रमुख पदाधिकारी तथा उनके कार्य

क्र.	अधिकारी	कार्य
1.	नायक (Nayak)	वह प्रांतीय गवर्नर था।
2.	पलायकर (Palaykar)	वे जागीर धारक सैनिक थे।
3.	आयागर (Ayagar)	वंशानुगत अधिकारियों को इस नाम से जाना जाता था।
4.	महानायकाचार्य (Mahanayakacharya)	ये ग्राम सभाओं के कार्यवाहियों के निरीक्षण करने वाले अधिकारी थे।
5.	दण्डानायक (Dandanayaka)	वह सैन्य विभाग (काण्डाचार) का प्रमुख तथा सेनापति था। कभी–कभी प्रधान राज्याधिकारी भी दण्डनायक की उपाधि ग्रहण करते थे।
6.	प्रधानी (Pradhani)	महत्वपूर्ण राज्याधिकारी इसी नाम से जाने जाते थे।
7.	रायसम (Rayasam)	वे सचिव थे।
8.	करानिकम (Karanikam)	वे लेखा–अधिकारी (Accountant) थे।
9.	अमारानायक (Amaranayaka)	सामंतों का वह वर्ग था, जो राजा को सैन्य मदद देने के लिए बंधित था।
10.	स्थानिक (Sthanike)	वे मंदिरों के प्रबन्धन से सम्बन्धित थे।
11.	मानेय प्रधानम (Maney Pradhanam)	वह गृहमंत्री था।
12.	मुद्रा कर्ता (Mudhrakartta)	शाही मुद्रा रखने वाला अधिकारी।
13.	सेनातोआ (Senateova)	वह ग्राम का लेखा अधिकारी (accountant) था।
14.	तलार (Talar)	वह ग्राम का रखवाला था।

बहमनी राज्य :

- मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में 1347 ई. में हसनगंगू ने बहमनी राज्य की स्थापना की। वह अलाउद्दीन बहमन शाह के नाम से सत्तासीन हुआ।
- मुहम्मद तृतीय के शासनकाल में 'ख्वाजा जहाँ' की उपाधि से **महमूद गवाँ** को प्रधानमन्त्री नियुक्त किया गया।
- महमूद गवाँ ने बीदर में एक महाविद्यालय की स्थापना की।
- ताजुद्दीन फिरोज के शासनकाल में रूसी यात्री **निकितन** बहमनी राज्य की यात्रा पर आया था।

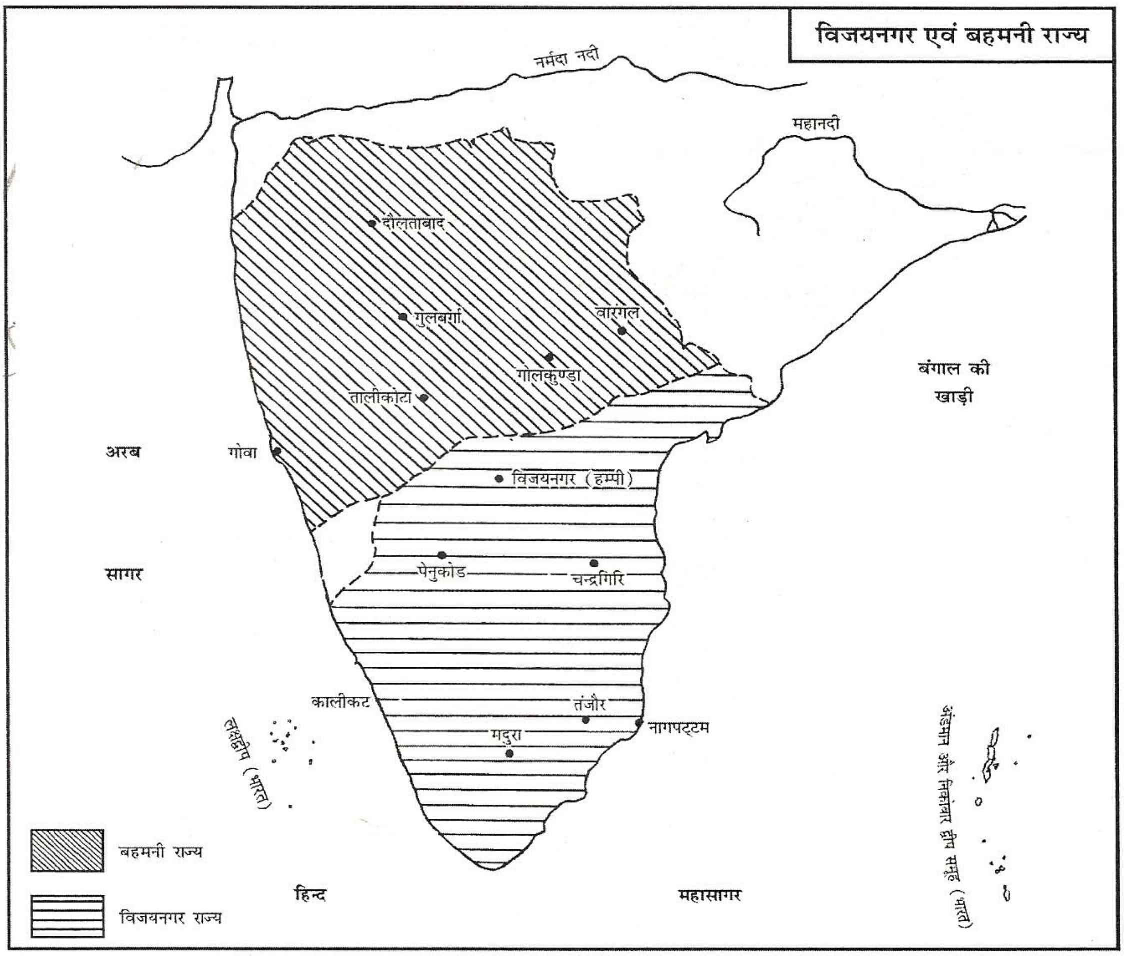

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- **कालीमउल्लाह** बहमनी वंश का अन्तिम शासक था। इसकी मृत्यु के समय बहमनी राज्य पाँच स्वतन्त्र राज्यों में बँट गया। इन स्वतन्त्र राज्यों से सम्बन्धित विवरण इस प्रकार है–

राज्य	वंश	संस्थापक	वर्ष
बीजापुर	आदिलशाही	युसुफ आदिल शाह	1489 ई.
अहमदनगर	निजामशाही	मलिक अहमद	1490 ई.
बरार	हिमादशाही	फतेहउल्लाह इमादशाह	1490 ई.
गोलकुण्डा	कुतुबशाही	कुलीकुतुबशाह	1512 ई.
बीदर	बरीदशाही	अमीर अली बरीद	1526 ई.

इस्लाम संस्कृति से संबंधित कुछ रचनाएँ

रचना	लेखक
लूबाब–उल–अल्वाव	नूरुद्दीन मुहम्मद
खजाये नुल फुतुह	
तुगलक नामा	अमीर खुसरो
तारीखे अलाई	अमीर खुसरो
किरन–ए–सदाये	अमीर खुसरो
तूतीनामा	जिया नक्शवी
फतह–उल–सलातीन	इसामी
ताजुल–मासिर	हसन निजामी
तबकाते नासिरी	मिनहाजुद्दीन सिराज
तारीखे फिरोजशाही	जियाउद्दीन बरनी
फतवा–ए–जहांदारी	बरनी
तारीखे फिरोजशाही	सम्स–ए–सिराज अफीफ
तारीखे मुबारक शाही	याहिया–बिन–अहमद सरहिंदी
सियर–उल–अरीफन	जमालीकंबू (सिकन्दर लोदी के दरबारी कवि)

मुगल राजवंश (1526 ई. से 1857 ई.)

- उमर शेख मिर्जा
  - जहीरुद्दीन बाबर (1526–1530 ई.)
    - हुमायूँ (1530–1540 ई.) (1555–1556 ई.)
      - जलालुद्दीन अकबर (1556–1605 ई.)
        - मुराद
        - दानियाल
        - जहाँगीर (सलीम) (1605–1627 ई.)
          - खुसरो
          - परवेज
          - शहरयार
          - खुर्रम (शाहजहाँ) (1627–1658 ई.)
            - दारा शिकोह
            - शुजा
            - मुराद
            - औरंगजेब (1658–1707 ई.)
              - मुअज्जम बहादुरशाह प्रथम (1707–1712 ई.)
                - मुइनुद्दीन जहाँदारशाह (1712–1713 ई.)
                - फर्रूखसियर (1713–1719 ई.)
                - नेकुसियर (1719 ई.)
                - रफीउद्दौला (शाहजहाँ द्वितीय) (1719 ई.)
                - रफीउद्दौला (1719 ई.)
                - मुहम्मद शाह (1720 ई.–1748 ई.)
                - आलमगीर द्वितीय (1754–1759 ई.)
                - शाहआलम द्वितीय (1759–1806 ई.)
                - अकबर द्वितीय (1806–1837 ई.)
                - बहादुर शाह द्वितीय (1837–1857 ई.)
              - आजम
              - अकबर
              - कामबख्श
    - कामरान
    - हिन्दाल
    - अस्करी

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

मुगल साम्राज्य

- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था। उसने पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई.) में इब्राहिम लोदी को पराजित कर भारत में मुगल वंश की स्थापना की।

बाबर :

- बाबर फरगना के शासक उमर शेख मिर्जा का बेटा था।
- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुलगमा पद्धति तथा तोपखाने का प्रयोग किया था।

बाबर के शासनकाल में लड़े गए प्रमुख युद्ध

युद्ध का नाम	वर्ष	प्रतिपक्षी शासक	परिणाम
पानीपत का प्रथम युद्ध	1526 ई.	इब्राहिम लोदी	बाबर विजयी
खानवा का युद्ध	1527 ई.	राणा साँगा	बाबर विजयी
चन्देरी का युद्ध	1528 ई.	मेदनी राय	बाबर विजयी
घाघरा का युद्ध	1529 ई.	अफगान की सम्मिलित सेना	बाबर विजयी

- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' की रचना **तुर्की भाषा** में की; जिसका अनुवाद बाद में फारसी भाषा में अब्दुल रहीम खानखाना ने किया।
- प्रारम्भ में बाबर के शव को आगरा के आरामबाग में दफनाया गया, बाद में काबुल में दफनाया गया।

हुमायूँ (1530–1556 ई.) :

- हुमायूँ ने अपने राज्य का बँटवारा अपने भाइयों में कर दिया।
- 1533 ई. में उसने 'दीनपनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- जून 1539 ई. में हुमायूँ तथा शेर खाँ के बीच **चौसा का युद्ध** हुआ, जिसमें हुमायूँ पराजित हुआ।
- 1540 ई. में हुमायूँ तथा शेर खाँ, के बीच **कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध** हुआ, जिसमें हुमायूँ पुनः पराजित हुआ तथा उसे भारत छोड़कर भागना पड़ा।
- हुमायूँ के निर्वासन काल में ही 1542 ई. में अमरकोट के हिन्दू शासक वीरसाल के महल में अकबर का जन्म हुआ।
- 1555 ई. में 'मच्छीवाड़ा एवं सरहिन्द के युद्ध' में हुमायूँ ने अपना खोया साम्राज्य वापस प्राप्त कर लिया।
- 1556 ई. में दीनपनाह भवन में स्थित पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर उसकी मृत्यु हो गई।

शेरशाह सूरी (1540–45 ई.) :

- शेरशाह का असली नाम फरीद खाँ था। उसके पिता हसन खाँ सासाराम के जमींदार थे।
- 1540 ई. में कन्नौज के युद्ध में विजयी होने के बाद उसने शेरशाह की उपाधि धारण की।
- उसने पुराने सिक्कों की जगह शुद्ध सोने–चाँदी के सिक्के जारी किये।
- उसने 'जब्ती' प्रणाली लागू की, जिसके अन्तर्गत लगान का निर्धारण भूमि की माप के आधार पर किया जाता था।
- शेरशाह ने रुपया का प्रचलन शुरू किया, जो 178 ग्रेन चाँदी का होता था।
- उसने दिल्ली में **पुराने किले का निर्माण** करवाया। उसके अन्दर 'किला–ए–कुहना मस्जिद' का निर्माण करवाया।
- उसके शासनकाल में मलिक मुहम्मद जायसी ने **'पद्मावत'** की रचना की।
- शेरशाह का मकबरा **सासाराम** में स्थित है।
- कालिंजर विजय अभियान के दौरान शेरशाह की तोप फटने से मृत्यु हो गई।
- शेरशाह ने 'सड़क–ए–आजम' (ग्राण्ड–ट्रंक रोड) का निर्माण करवाया, जो सोनारगाँव से पेशावर तक जाती थी।

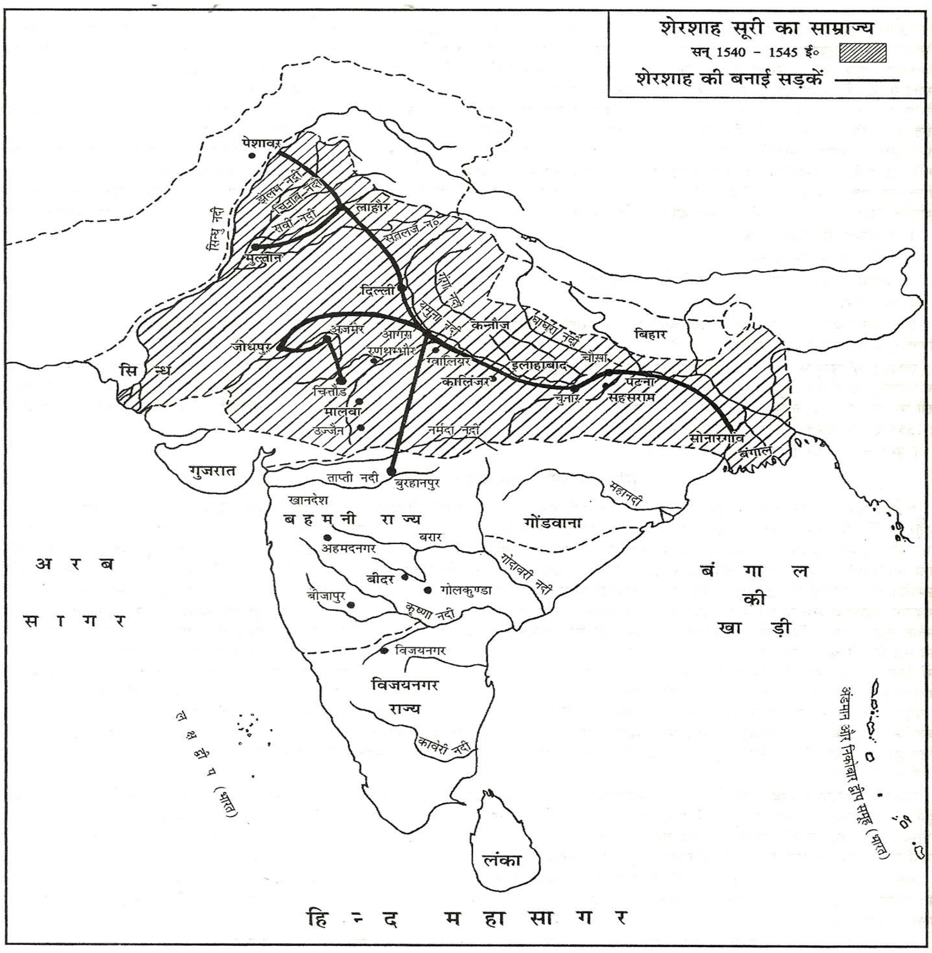

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

अकबर (1556–1605 ई.) :

- अकबर का राज्याभिषेक 14 वर्ष की आयु में पंजाब के कलानौर नामक स्थान पर हुआ था।
- बैरम खाँ अकबर का संरक्षक था।
- **पानीपत का द्वितीय युद्ध** नवम्बर, 1556 ई. में हुआ, जिसमें बैरम खाँ के नेतृत्व वाली मुगल सेना ने हेमू के नेतृत्व वाली अफगान सेना को पराजित किया।

अकबर के कुछ महत्वपूर्ण कार्य

क्र. सं.	वर्ष	कार्य
1.	1562 ई.	दास प्रथा का अन्त
2.	1562 ई.	अकबर को हरमदल से मुक्ति
3.	1562 ई.	तीर्थयात्रा का समाप्त
4.	1564 ई.	जजिया कर समाप्त
5.	1571 ई.	फतेहपुर सीकरी की स्थापना एवं राजधानी का आगरा से फतेहपुर सीकरी स्थानान्तरण
6.	1575 ई.	इबादतखाने की स्थापना
7.	1578 ई.	इबादतखाने में सभी धर्मों के लोगों के प्रवेश की अनुमति
8.	1579 ई.	मजहर की घोषणा
9.	1582 ई.	दीन–ए–इलाही की स्थापना
10.	1583 ई.	इलाही सम्वत् की शुरूआत

- अकबर के शासनकाल के दौरान 1576 ई. में मेवाड़ के शासक राणा प्रताप तथा मुगल सेना के बीच **'हल्दी–घाटी का युद्ध'** हुआ, जिसमें मानसिंह के नेतृत्व में मुगल सेना विजयी रही।
- अकबर के दीवान राजा टोडरमल ने 1580 ई. में 'दहसाला बन्दोबस्त' लागू किया।
- **दीन–ए–इलाही** स्वीकार करने वाला प्रथम एवं अन्तिम हिन्दू राजा बीरबल था। बीरबल का नाम महेश दास था।
- अबुल फजल ने **'आईन–ए–अकबरी'** तथा **'अकबरनामा'** नामक ग्रन्थ की रचना की।
- अकबर के दरबार में **'नवरत्न'** थे जिनमें तानसेन, बीरबल, टोडरमल आदि प्रमुख थे।
- 'मनसबदारी प्रथा' एक विशिष्ट सैन्य एवं प्रशासनिक व्यवस्था थी, जिसे भारत में अकबर ने प्रारम्भ किया था।
- अकबर के दरबार में अब्दुस्समद, दसवन्त एवं बसावन प्रमुख चित्रकार थे।
- अकबर का मकबरा **सिकन्दरा** में है।

अकबर द्वारा उठाये गये धार्मिक/सामाजिक सुधार (कालक्रम)

1562– दास प्रथा का अंत,
1563– तीर्थयात्रा कर समाप्त,
1564– जजिया कर समाप्त,
1571– फतेहपुर सीकरी की स्थापना,
1575– फतेहपुर सीकरी में इबादत खाने का निर्माण,
1578– इबादतखाने को सभी धर्मों के लिए खोला गया अर्थात अब यह धर्म संसद (Parliament of religions) के रूप में आ गया।
1579– महजर या तथाकथित अमोघत्व की घोषणा
1582– तौहीद–ए–इलाही या दीन–ए–इलाही की घोषणा
1583– कुछ निश्चित दिनों को कई जानवरों की हत्या का निषेध।

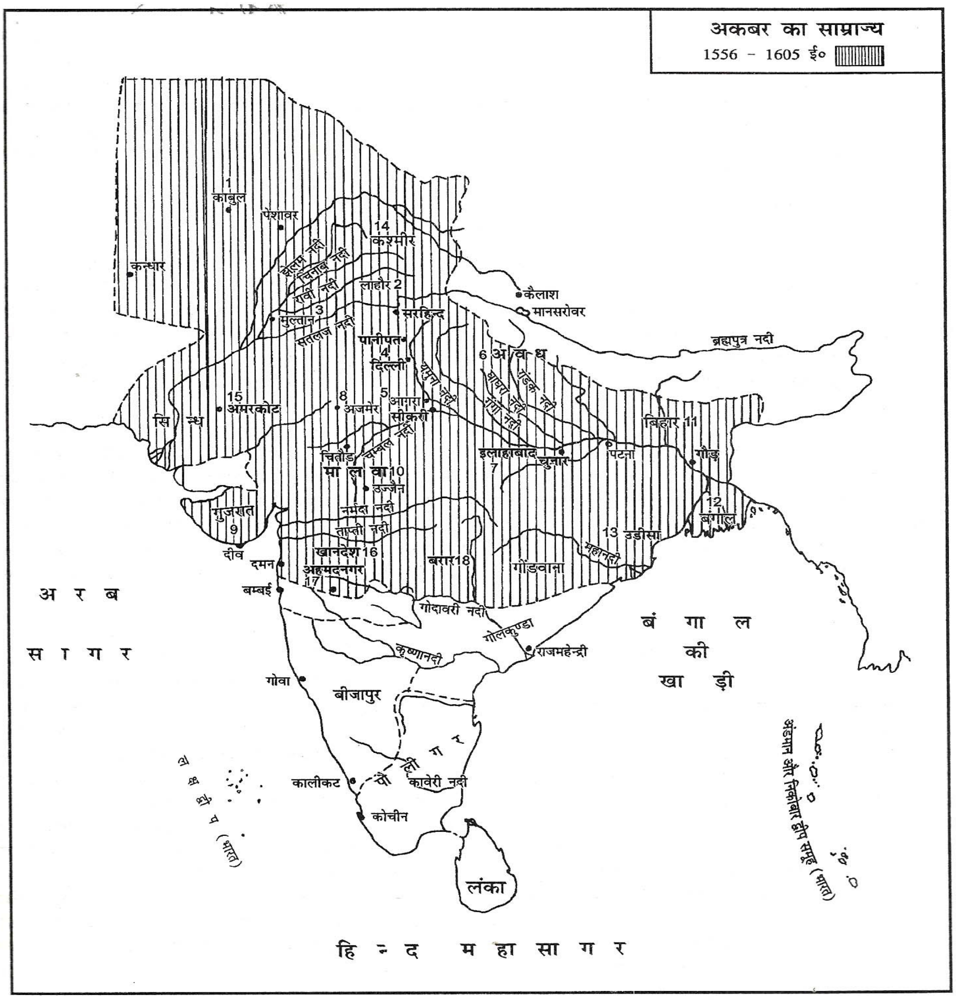

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

जहाँगीर (1605–27 ई.) :

- जहाँगीर के बचपन का नाम सलीम था। यह नाम अकबर ने सूफी सन्त शेख सलीम चिश्ती के नाम पर रखा था।
- जहाँगीर को 'न्याय की जंजीर' के लिए याद किया जाता है जो उसने आगरा के किले में लगवाई थी।
- अपने विद्रोही पुत्र खुसरो का साथ देने के आरोप में उसने सिखों के पाँचवें गुरु अर्जुन देव को फाँसी दे दी थी।
- जहाँगीर ने मेहरुन्निसा को शादी के बाद 'नूरमहल' एवं 'नूरजहाँ' की उपाधि दी।
- नूरजहाँ ईरान निवासी ग्यासबेग की पुत्री एवं अली कुली बेग (शेर अफगन) की विधवा थी।
- जहाँगीर के शासनकाल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत में अपनी पहली फैक्ट्री मसूलीपट्टम में स्थापित की।
- जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुके–जहाँगीरी' की रचना फारसी भाषा में की।
- जहाँगीर के समय मुगल चित्रकला चरमोत्कर्ष पर थी।
- जहाँगीर के दरबार में आगा रजा, अबुल हसन, उस्ताद मंसूर, विशनदास, मनोहर आदिप्रमुख चित्रकार थे।
- जहाँगीर की मृत्यु भीमवार नामक स्थान पर हुई। उसे शहादरा (लाहौर) में रावी नदी के किनारे दफनाया गया।

शाहजहाँ (1627–1657 ई.) :

- शाहजहाँ के शासनकाल को **'स्थापत्य कला का स्वर्ण युग'** कहा जाता है।
- उसने पुर्तगालियों के बढ़ते प्रभाव को समाप्त करने के उद्देश्य से 1632 ई. में पुर्तगालियों से युद्ध किया एवं हुगली पर अधिकार कर लिया।
- उसने दिल्ली में एक महाविद्यालय का निर्माण एवं दारुल बका नामक महाविद्यालय की मरम्मत करवाई।
- उसने दिल्ली में 'शाहजहाँनाबाद' नामक नया नगर बसाया तथा यहाँ नई राजधानी स्थापित की।
- **मयूर सिंहासन** का निर्माण शाहजहाँ ने ही करवाया था।
- अपनी बेगम मुमताजमहल की याद में शाहजहाँ ने आगरा में ताजमहल का निर्माण करवाया।
- शाहजहाँ द्वारा बनवाई गई प्रमुख इमारत **दिल्ली का लाल किला, दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरा की मोती मस्जिद** आदि।
- उत्तराधिकार के युद्ध में औरंगजेब ने शाहजहाँ को बन्दी बना कर आगरा के किले में डाल दिया जहाँ, 1666 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

औरंगजेब (1658–1707 ई.) :

- औरंगजेब को शासक बनने के लिए अपने भाइयों से युद्ध करना पड़ा था।
- दारा एवं औरंगजेब के बीच उत्तराधिकार का अन्तिम युद्ध देवराई की घाटी में 1659 ई. में हुआ। युद्ध में औरंगजेब विजयी रहा। उसके बाद उसने इस्लाम धर्म की अवहेलना के आरोप में दारा शिकोह की हत्या करवा दी।
- 1659 ई. में दिल्ली में शाहजहाँ के लाल किले में औरंगजेब का राज्याभिषेक हुआ।
- औरंगजेब के समय मुगल साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ था। उसके शासन काल में हिन्दू मनसबदारों की संख्या भी सबसे अधिक थी।

औरंगजेब से सम्बन्धित कुछ प्रमुख घटनायें

- औरंगजेब ने 1663 में सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाया।
- औरंगजेब ने 1669 में झरोखा दर्शन की प्रथा समाप्त की तथा अपने दरबार के संगीतकारों को बर्खास्त किया। ध्यान रहे कि औरंगजेब के काल में संगीत पर सर्वाधिक पुस्तकें लिखी गयी।
- उसने 1670 में बादशाह को सोने–चांदी में तौलने की प्रथा समाप्त की।
- उसने 1675 में गुरू तेगबहादूर को फांसी की सजा दी।
- उसके शासन काल में हिंदू अधिकारियों की संख्या सम्पूर्ण मुगल इतिहास में सर्वाधिक (एक तिहाई) रही।
- औरंगजेब ने 1679 में जजिया कर पुनः लागू किया। ध्यान रहे कि उसने अपने अभियान के दौरान (1705) इस कर को लम्बित रखा।
- औरंगजेब को शाही दरवेश तथा जिंदा पीर के रूप में भी जाना जाता है।
- उसने आलमगीर की उपाधि ली।
- उसने अपने सिक्कों पर कलमा (कुरान की आयतें) खुदवाना बन्द कर दिया। इसके पीछे उद्देश्य यह था कि सिक्के के गिरने व पैरों तले कुचले जाने से कुरान की अवमानना न हो।
- उसने नौरोज (फारसी नव वर्ष) का मनाना बन्द कर दिया।

- इस्लाम धर्म नहीं स्वीकार करने के कारण सिखों के नवें गुरु तेग बहादुर की हत्या औरंगजेब में करवा दी।
- उसके 'जिन्दा पीर' भी कहा जाता है।
- उसने 1679 ई. में हिन्दुओं पर **जजिया कर** लगाया।
- उसने 'झरोखा दर्शन' तथा 'तुलादान प्रथा' पर प्रातिबन्ध लगा दिया।
- औरंगजेब ने अपना अधिकतर समय दक्षिण भारत को जीतने में लगा दिया, जो उसके लिए नासूर साबित हुआ।
- औरंगजेब को मृत्यु के बाद दौलताबाद के निकट दफना दिया गया। उसका मकबरा **औरंगाबाद** में स्थित है।
- दिल्ली के लाल किला में 'मोती मस्जिद' का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

सिख परंपरा के गुरु एवं उनकी कार्य विशेषताएँ

क्र. सं.	सिख गुरु	काल	प्रमुख कार्य एवं विशेषतायें
1.	गुरुनानक	1469–1538 ई.	सिख सम्प्रदाय के संस्थापक। हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल, कर्मकाण्डों का विरोध।
2.	गुरूअंगद	1538–1552 ई. (लेहना)	गुरू नानक के विचारों का सरल भाषा में प्रचार। गुरूनानक के शिष्य थे।
3.	गुरू अमरदास	1552–1574 ई.	सिख सम्प्रदाय को संगठित किया तथा अपने शिष्यों को पारिवारिक संत होने का उपदेश दिया। वे गुरू अंगद के शिश्य थे। सती प्रथा का विरोध किया।
4.	गुरूरामदास	1574–1581 ई.	अकबर इनसे बहुत प्रभावित था। अब गुरू का पद पैतृक बन गया।
5.	गुरू अर्जुनदास	1581–1606 ई.	सभी गुरूओं के उपदेश का संकलन आदि ग्रंथ में किया, स्वर्ण मंदिर बनवाया जहाँगीर ने राजद्रोह के जुर्म में उन्हें फाँसी पर लटकवा दिया।
6.	गुरू हरगोविन्द	1606–1664 ई.	उन्होंने सिखों को सैनिक सम्प्रदाय बना दिया, शाहजहाँ के विरूद्ध विद्रोह किया।
7.	गुरू हरराय	1645–1661 ई.	दारा उनका सम्मान करता था।
8.	गुरू हरकिशन	1661–1664 ई.	उत्तराधिकार के लिये रामराय से विवाद।
9.	गुरू तेगबहादुर	1664–1675 ई.	औरंगजेब की नीतियों का विरोध किया, जिसके फलस्वरूप उनका वध कर दिया गया।
10.	गुरूगोविन्द सिंह	1675–1708 ई.	पटना में जन्म हुआ, पहुल नामक दीक्षा की प्रणाली कायम की। इस दीक्षा को स्वीकार करने वाले खालसा कहलाये, उनहें सिंह की उपाधि दी तथा प्रत्येक सिख को केश, कंघा, कृपाम, कच्छा और कड़ा रखने का आदेश दिया। इन्होंने पूरक ग्रन्थ (दसवें बादशाह का ग्रन्थ) का संकलन किया। वे अन्तिम सिख गुरू थे।

कला, स्थापत्य तथा संस्कृति

स्थापत्य कला :

बाबर : बाबर भारतीय शिल्पकारों के शिल्पि से प्रभावित हुआ था। परन्तु बाबर के समय के तीन भवन शेष बचे हैं (1) पानीपत के काबुली बाग की मस्जिद (1529 ई.) (2) रूहेल खंड में संभल की जामा मस्जिद। (3) आगरे के लोदी किले के अतिरिक्त अयोध्या में उसके सूबेदार ने एक मस्जिद बनवायी थी। बाबर को बागों का भी शौक था। कश्मीर का निशात बाग, लाहौर का शालीमार बाग तथा पिंजौर बाग (पंजाब)।

हुमायुँ : इसकी दो इमारतें (1) एक फतेहाबाद (हिसार में, 1540) तथा (2) आगरे के पास सुरक्षित बची है। हुमायुँ ने दिल्ली में एक नगर दीन–पनाह बसाया परन्तु उसका कोई अवशेष प्राप्त नहीं है।

अकबर : अकबर के समय में शिल्पकला के विकास का मानक स्थापित हुआ। अकबर के समय में अनेक इमारतों का निर्माण हुआ–

(1) **हुमायुँ का मकबरा** : यह अकबर के काल में बनी पहली इमारत है, जिसे हुमायुँ की पत्नी हाजी बेगम ने बनवाया (1569)।

(2) **आगरा, लाहौर तथा इलाहाबाद के किले** : इन सभी में लाल पत्थर का प्रयोग हुआ है।

(3) **आगरा के किले में जहाँगीरी महल** तथा अकबरी महल, इलाहाबाद के किले में **चालीस स्तम्भों का महल।**

(4) आगरा से 36 किलोमीटर पश्चिम में **फतेहपुर सीकरी** का निर्माण किया, जो कि अकबर की राजधानी थी। इसके अनेक इमारते हैं– दीवाने–आम, दीवाने–खास, पंचमहल, जोधाबाई का महल, खास महल, तुर्की सुल्ताना का महल, बीरबल महल, शेख सलीम चिश्ती का मकबरा, बुलन्ददरवाजा अकबर की गुजरात विजय के उपलक्ष्य में बनवाया गया था। यह 134 फीट ऊँा है (चबूतरे से) तथा जमीन से 176 फीट ऊँचा है।

जहाँगीर : जहाँगीर को स्थापत्य कला में कम रूचि थी, इसलिये इसके काल में कम इमारतें बनीं। प्रमुख इमारतें ये थी–

(1) अकबर का मकबरा, जो कि आगरा से छः मील दूर **सिकन्दरा में बना।**

(2) **एत्मादुद्दौला का मकबरा,** जिसे नूरजहाँ ने बनवाया था। यह संगमरमर का बना हुआ है तथा पहली तथा इस्लामिक भवनों में **पित्र–दुरा** (फूलों वाली आकृतियों में कीमती पत्थर की नक्काशी) का प्रयोग दिखता है। इस प्रणाली का प्रयोग उदयपुर के गोलमण्डल में पहले मिलता है (1600 ई.)।

(3) शाहदरा में नूरजहाँ द्वारा बनवाया गया जहाँगीर का मकबरा।

(4) जहाँगीर के राज्यकाल के अन्तिम समय में दिल्ली में बनवाया गया अब्दुर्रहीम खान–खाना का मकबरा, जो कि हुमायुँ के मकबरे से मिलता जुलता है।

शाहजहाँ : शाहजहाँ के काल में स्थापत्य कला अपने उत्कर्ष पर पहुंच गयी।

(1) उसने अपने पूर्वजों द्वारा बनवायी गयी इमारतों में फेर बदल किया। ऐसी इमारतों में–लाहौर किले में दीवाने–आम, मुसम्मन बुर्ज, ख्वाबगाह, शीशमहल आगरा के किले में दीवाने–आम, दीवाने–खास मोती मस्जिद, खास महल है।

(2) आगरा किले में ही मुसम्मन बुर्ज, अंगूरी बाग, मच्छी भवन आदि।

(3) आगरा की जामी मस्जिद,

(4) दिल्ली की जामा मस्जिद, लाल किला।

(5) दिल्ली के लाल किले में, दीवाने–आम, दीवाने–खास, मोती महल, हीरा महल, रंग महल, शीश महल आदि।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

(6) शाहजहाँ की श्रेष्ठतम इमारत आगरा में यमुना नदी के तट पर बना **ताजमहल** है, जिसके निर्माण में एक करोड़ रुपये और 22 वर्ष का समय लगा।

(7) 1638 ई. में शाहजहाँ ने दिल्ली में नयी राजधानी शाहजहाँबाद का निर्माण प्रारमी किया, जो 1648 ई. में पूरा हुआ।

शाहजहाँ के समय में स्थापत्य कला की विशेषता यह रही कि इनमें बहुत अधिक सजावट होती थी। साथ ही पित्रेदुरा और संगमरमर, जो कि मकराने की खान से लाया जाता था, का प्रयोग बहुत बढ़ा।

औरंगजेब : औरंगजेब की रूचि, स्थापत्य कला में बहुत कम थी। उसके काल में बनी प्रमुख इमारतें हैं–

(1) दिल्ली किले में बनी मोती मस्जिद

(2) 1674 में बनी लाहौर मस्जिद और बादशाही मस्जिद

(3) औरंगाबाद में औरंगजेब की पत्नी रबिया दुर्रानी की याद में बना बीबी का मकबरा जो ताजमहन की घटिया नकल है और जिसे आजम शाह ने बनवाया था।

मुगल कालीन साहित्यिक रचनायें

पुस्तक	लेखक
तुजुके बाबरी (बाबरनामा)	बाबर
दीवान (कविता संग्रह)	बाबर
तारीखे अल्फी	मुल्ला दाउद
आइने अकबरी	अबुल फजल
अकबर नामा	अबुल फजल
तबकाते अकबरी	निजामुद्दीन अहमद
अकबरनामा	फैजी सरहिन्दी
हुमायूँनामा	गुलकान बेगम
मुन्तखाबुल–तवारीख	बदायुँनी
तुजुके जहाँगीरी	जहाँगीर
मअस्सरे जहाँगीर	मुल्ला महबन्दी
पादशाहनामा	अब्दुल हमीद लाहौरी
शाहजहाँ–नामा	इनायत खाँ
नुस्के–दिलकुशा	मुहम्मद सकी
फुतुहते–आलमगिरी	ईश्वरदास नागौड़
मजमुं–बहरीन	दारा शिकोह
रामचरित मानस	तुलसीदास
विनय–पत्रिका	तुलसीदास
कवितरत्नाकर	सेनापति
कवि–प्रिया	केशवदास
रसिक–प्रिया	केशवदास
अकबरशाही–श्रृंगारदर्पण	परमसुन्दर
रसगंगाधर	पंडित जगन्नाथ
फतवा–ए–आलमगिरी	औरंगजेब

कुछ अनुवाद की गयी पुस्तकें

पुस्तक	अनुवाद	अनुवादकर्ता
महाभारत	संस्कृत से फारसी	नकीब खां, बदायूनी, फैजी
रामायण	संस्कृत से फारसी	बदायूँनी
अथर्ववेद	संस्कृत से फारसी	बदायूँनी
लीलावती	संस्कृत से फारसी	फैजी
कालिय दमन	संस्कृत से फारसी	अबुल फजल
नल दमयन्ती	संस्कृत से फारसी	फैजी
उपनिषद्	संस्कृत से फारसी	
भागवत्गीता	संस्कृत से फारसी	दारा शिकोह
योग वशिष्ठ	संस्कृत से फारसी	दारा शिकोह
हरिवंश	संस्कृत से फारसी	मौलाना शेरी
हयातुल हैवान	अरबी से फारसी	अबुल फजल, शेख मुबारक
बाबरनामा	तुर्की से फारसी	अब्दुर्रहीम खान–खाना

मराठा उत्कर्ष

मराठा एक नज़र में

- मराठा–शक्ति का उत्कर्ष शिवाजी के नेतृत्व में हुआ। उनका जन्म 1627 ई. में पूना के निकट स्थित शिवनेर किले में हुआ था।
- **शिवाजी (1627–1680 ई.)** के पिता का नाम शाहजी भोंसले तथा माता का नाम जीजाबाई था।
- शिवाजी के गुरु एवं संरक्षक दादाजी कोण्डदेव थे। उनके आध्यात्मिक गुरु स्वामी समर्थ रामदास थे।
- अपने सैन्य अभियान के अन्तर्गत शिवाजी ने सर्वप्रथम तोरण के किले को जीता।
- शिवाजी की राजधानी रायगढ़ थी।
- उन्होंने बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ को पराजित कर, उसकी हत्या कर दी।
- शिवाजी ने 'गुरिल्ला युद्ध' पद्धति को अपनाया था।
- शिवाजी और राजा जयसिंह के बीच 1665 ई. में **पुरन्दर की सन्धि** हुई।
- 1674 ई. में शिवाजी ने **रायगढ़** में अपना राज्याभिषेक कराया उनका राज्याभिषेक काशी के प्रसिद्ध विद्वान् श्री गंगा भट्ट से करवाया गया। उन्होंने 'छत्रपति' की उपाधि धारण की।
- शिवाजी का अन्तिम महत्वपूर्ण अभियान 1676 ई. में कर्नाटक का अभियान था। उनकी मृत्यु 1680 ई. में हो गई।
- शिवाजी ने शासन कार्यों में सहयोग के लिए आठ मन्त्रियों की एक परिषद गठित की, जिसे **'अष्ट प्रधान'** कहा जाता था।
- शिवाजी की कर व्यवस्था मलिक अम्बर की व्यवस्था पर आधारित थी।
- **बालाजी विश्वनाथ** मराठों के प्रथम पेशवा थे, उन्हें 'मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक' भी कहा जाता है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- बालाजी विश्वनाथ ने बालाजी विश्वनाथ ने 1719 ई. में मुगलों से एक सन्धि की, जिसे **'मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा'** कहा जाता है।
- **बाजीराव प्रथम** के समय मराठों की शक्ति चरमोत्कर्ष पर थी। उसे हिन्दू पर पादशाही का सिद्धान्त प्रतिपादित करने का भी श्रेय दिया जाता हैं
- **बालाजी बाजीराव** को 'नाना साहब' के नाम से भी जाना जाता है। इसने पेशवा के पद को पैतृक बनाया।
- बालाजी बाजीराव के समय ही पानीपत का तृतीय युद्ध (14 जनवरी, 1716 ई.) हुआ। इसमें अहमदशाह अब्दाली के नेतृत्व में अफगान सेना विजयी रही।
- **बाजीराव द्वितीय** मराठों का अन्तिम पेशवा था 1818 ई. में अंग्रेजों ने पेशवा पद को समाप्त करके बाजीराव द्वितीय को कानपुर के निकट बिठूर निर्वासित कर दिया, जहाँ 1853 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

मुगल काल के इतिहास को दर्शाने वाली पुस्तकें

कृति का नाम	लेखक	विषय
तुजुक–ए–बाबरी	बाबर	बाबर के शासनकाल के सैन्य कौशल तथा प्रशासनिक वर्णन है।
हुमायूँनामा	ख्वांद अमेर	इसमें हुमायूँ की प्रशासन कुशलता, आयोजनों तथा उस काल का विवरण है।
दानून–ए–हुमायूँ (हुमायूँनामा)	गुलबदन बेगम	
अकबरनामा	अबुल फजल	अकबर के शासनकाल का इतिहास।
तबकात–ए–अकबरी	ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद बख्श	– वही –
मुन्तखाबुत	अब्दुल कादिर	– वही –
तुजुक–ए–जहाँगीरी	जहाँगीर	उसके अपने शासनकाल के संस्मरण।
इकबालनामा–ए–जहाँगीरी	मुहम्मद खान	जहाँगीर के शासनकाल का इतिहास।
चहर चमन	चंद्र भान ब्राह्मण	शाहजहाँ के शासनकाल का इतिहास।
आलमगीर–नामा	मुंशी मिर्जा मुहम्मद कजिन	इसमें औरंगजेब के पहले 10 वर्षों के शासन का विवरण है।
मस्सिर–ए–आलमगीरी	साकी मुस्तैद खान	औरंगजेब के काल का प्रामाणिक इतिहास, जो उसकी मृत्यु लिखा गया।
आइन–ए–अकबरी	अबुल फजल	अकबर के शासन का इतिहास।
तवारीख–ए–अल्फी	मुल्ला दाउद	– वही –
नुर्रिया–ए–सुलतानिया	अब्दुल हक	मुगल काल में रिश्तेदारी 'किनशिप' का सिद्धांत।
वक्त–ए–हैदराबाद	निमत खान अली	औरंगजेब की गोलकुंडा फतह का विवरण।
फुतूहात–ए–आलमगीरी	ईश्वर दास	औरंगजेब का इतिहास
नुस्खा–ए–दिलकुशा	भीमसेन	औरंगजेब के शासन तथा चरित्र का विश्लेषण।
खुलासत–उल–तवारीख	सुजान राय खत्री	औरंगजेब के शासन का इतिहा।
पादशाह नामा	अब्दुल हमीद लाहौरी	शाहजहाँ के शासन का इतिहास।
पादशाह नामा	मुहम्मद वारिस	– वही –
शाहजहाँ नामा	मुहम्मद सलीह	– वही –
शाहजहाँ नामा	इनायत खान	– वही –
हमलै–हैदरी	मुहम्मद रफी खान	औरंगजेब के शासन का इतिहास।
नामा–ए–आलमगीरी	अकिल खाँ जफर	– वही –
सलीनात–उल–औलिया	दारा शिकोह	उपनिषदों का उर्दू अनुवाद।
सफीनात–उल–औलिया	– वही –	सूफी संतों की जीवनी।
नज़्मा–उल–बेहरेन	– वही –	दार्शनिक सिद्धांतों की चर्चा।
रक्कात–ए–आलमगीरी	औरंगजेब	उसके पत्रों का संकलन।
हसमत–उल–अरफीन	दारा शिकोह	धार्मिक विचारों की चर्चा।

मराठा राज्य एवं राज्य संघ

शिवाजी (1627–1680 ई.) :

20 अप्रैल, 1627 को शिवाजी का जन्म हुआ। शिवाजी के पिता **शाहजी भोसलें** थे। उनका पालन–पोषण उनकी **माँ जीजा बाई** ने किया, जो खुद दादा जी कोंडदेव के संरक्षण में थी। शिवाजी के अध्यात्मिक गुरू रामदास थे। शिवाजी के जीवन पर इनका अत्यधिक प्रभाव था।

शिवाजी ने 18 वर्ष की अवस्था में 1644 ई. में सर्वप्रथम बीजापुर राज्य के तोरण नामक पहाड़ी किले पर अधिकार किया। 1645–47 के बीच उन्होंने रायगढ़, कोण्डन, तोरण पर अधिकार कर लिया। 1656 तक शिवाजी ने चाकन, पुरन्दर, बारामती, सूपा, तिकोना, लोहगढ़ आदि विभिन्न किलों पर अधिकार कर लिया।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

1656 में शिवाजी की महत्वपूर्ण विजय जावली के विरुद्ध थी। 1656 में शिवाजी का पहली बार मुकाबला मुगलों से हुआ, जब बीजापुर की तरफ से वे मुगलों के विरुद्ध लड़े। परन्तु उसके बाद उनके बीजापुर से फिर संबंध खराब हो गये। बीजापुर ने अफजल खान को शिवाजी की हत्या के लिये भेजा, जिसे शिवाजी ने 1659 में मार दिया। 1660 में शाहस्ता खां को औरंगजेब द्वारा भेजा गया, परन्तु 15 अप्रैल, 1663 को शिवाजी ने पूना में उसकी छावनी पर आक्रमण कर दिया। 1664 में सूरत पर आक्रमण कर उसे लूटा। केवल डच और अंग्रेज फैक्ट्रियाँ उसके लूटे जाने से बच सकीं। 1665 में औरंगजेब ने राजा जयसिंह को शिवाजी को दण्ड देने के लिये भेजा, जिसने उन्हें हराकर पुरन्दर की संधि (22 जून, 1665) कर ली। 1666 में शिवाजी जयसिंह के आश्वासन पर औरंगजेब से मिलने आगरा आये, पर उचित सम्मान न मिलने पर दरबार से उठकर चले गये। औरंगजेब ने उन्हें कैद कर लिया, परन्तु बड़ी चतुराई से एवं बिमारी का बहाना बनाकर शिवाजी उसकी कैद से निकल भागे। 1668 में उन्होंने मुगलों से संधि कर ली।

1670 में फिर मराठा–मुगल युद्ध छिड़ गया। अक्टूबर, 1670 में शिवाजी ने सूरत पर दूसरी बार हमला किया, तथा 1672 में उससे चौथ की माँग की। पुरन्दर की संधि द्वारा खोये हुए सारे किले उन्होंने फिर प्राप्त कर लिये।

16 जून, 1674 को शिवाजी ने रायगढ़ में अपना राज्याभिषेक किया और **'छत्रपति'** की उपाधि धारण की।

राज्याभिषेक के दो ही वर्षों के बाद शिवाजी ने कर्नाटक में तंजौर तक अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। शिवाजी का संघर्ष जंजीरा टापू के सीदियों (Sidis) से भी हुआ, जिसके लिये उन्होंने नौ सेना का निर्माण किया, परन्तु उसमें उन्हें सफलता नहीं मिल सकी।

30 अप्रैल, 1680 को शिवाजी की मृत्यु हो गयी।

प्रशासन :

शिवाजी की प्रशासन व्यवस्था अधिकांशतः दक्कन की सल्तनतों से ली गयी थी, जिसके शीर्ष पर छत्रपति होता था।

छत्रपति : प्रभुत्व संपन्न निरंकुश शासक था, अंतिम कानून निर्माता, प्रशासकीय प्रधान, न्यायाधीश और सेनापति था।

शासन का वास्तविक संचालन **अष्टप्रधान** नामक आठ मंत्री करते थे, जिनका कार्य राजा को परामर्श देना मात्र था। प्रत्येक मंत्री राजा के प्रति उत्तरदायी था। वे आठ मंत्री थे–

(i) **पेशवा (प्रधानमंत्री)** : राज्य की भलाई व हितों को देखना। राजा की मुहर के नीचे उसकी मुहर लगती थी।

(ii) **अमात्य या मजुमदार** : वित्त मंत्री होता था।

(iii) **वाकिया–नतीस अथवा मंत्री** : राजा के कार्यों तथा दरबार की प्रतिदिन की कार्यवाइयों का विवरण रखता था (वर्तमान गृह मंत्री)।

(iv) **शुरु–नवीस अथवा सचिव** : राजा का पत्र–व्यवहार देखना।

(v) **सुमन्त अथवा दबीर** : यह विदेश मंत्री होता था।

(vi) **सेनापति अथवा सर–ए–नौबत** : सेना की भर्ती, संगठन, रसद आदि का प्रबन्ध करना उसके प्रमुख कार्य थे।

(vii) **पंडित राव** : धार्मिक दान तथा अन्य सभी धार्मिक मामले देखता था।

(viii) **न्यायाधीश** : वह प्रधान न्यायाधीश होता था (राजा के बाद)।

इन मंत्रियों में पंडित राव और न्यायाधीश के अतिरिक्त सभी मंत्रियों को अपने असैनिक कर्तव्यों के अतिरिक्त सैनिक कमान संभालनी पड़ती थी।

चिटनिस एवं मुंशी भी महत्वपूर्ण अधिकारी थे, जो एक प्रकार से सचिव का कार्य करते थे।

सेना :

शिवाजी ने एक नियमित तथा स्थायी सेना रखी। सेना का मुख्य भाग पैदल और घुड़सवार सेना थी। घुड़सवार दो प्रकार के होते थे। (i) बरगीर– ये घुड़सवार सैनिक थे। इन्हें राज्य की ओर से वेतन तथा अस्त्र–शस्त्र एवं घोड़े प्रदान किया जाता था। (ii) सिलेहदार– ये स्वतंत्र सैनिक थे, जो अपना अस्त्र–शस्त्र खुद रखते थे।

पच्चीस अश्वाराहियों की एक–एक इकाई होती थी।

25 घुड़सवार – एक हवलदार के तहत होते थे।

5 हवलदार – एक जुमलादार के तहत होते थे।

10 जुमलादार – एक हजारी के तहत होते थे।

एक हजारी के ऊपर **पंचहजारी** तथा **सर–ए–नौबत** के पद थे।

सर–ए–नौबत : घुड़सवारों का सर्वोच्च सेनापति होता था।

शिवाजी की सेना में मुसलमान सैनिक भी होते थे।

किला : किले में तीन अधिकारी होते थे– (i) हवलदार (ii) सर–ए–नौबत (iii) सबनीस। हवलदार और सर–ए–नौबत मराठा तथा सबनीस ब्राह्मण होते थे। सबनिस किले का असैनिक शासन देखता था। रसद और सैनिक सामग्री की देखभाल कारखाना–नवीरस करता था। विश्वासघात को रोकने के लिये शिवाजी ने प्रत्येक सेना में भिन्न–भिन्न जातियों के सैनिक रखे थे। सैनिकों को नकद वेतन दिया जाता था।

सेना में कठोर अनुशासन रखा जाता था। शिवाजी ने **कोलावा** में एक बड़ा जहाजी बेड़ा भी बनाया। यह दो कमान में बँटी हुयी थी। एक दरिया सारंग (मुसलमान) और दूसरी नायक (हिंदू) के अधीन रहती थी।

राजस्व व्यवस्था :

शिवाजी की राजस्व व्यवस्था मलिक अम्बर द्वारा अपनायी गयी रैयतवाड़ी प्रथा पर आधारित थी। शिवाजी ने भूमि को ठेके पर देने की प्रथा को त्याग दिया। भूमि की पैमाइश के आधार पर उत्पादन का अनुमान लगाया जाता था, तथा किसान से लगान निर्धारित किया जाता था। वह केन्द्रीय अधिकारी द्वारा एकत्र किया जाता था। प्रारम्भ में उपज का 33 प्रतिशत लगान के रूप में माँगा गया, परन्तु बाद में करों तथा चुंगियों को उठा देने के पश्चात् इसे बढ़ाकर 40 प्रतिशत (2/5 भाग) कर दिया गया। कृषकों को नकद अथवा अनाज किसी भी रूप में लगान देने की छूट थी और उन्हें कितना लगान देना है, यह स्पष्ट रूप से पता होता था।

राज्य कृषि को प्रोत्साहन देने के लिये तकावी ऋण देकर व बेकार भूमि पर खेती करने के लिये पहले कोई कर न लेकर प्रोत्साहित करते थे।

चौथ तथा सरदेशमुखी :

विदेशी राज्यों के क्षेत्रों से शिवाजी उपज का एक चौथाई चौथ के रूप में तथा 1/10 सरदेशमुखी के रूप में लेते थे। चौथ और सरदेशमुखी का 1/4 राजा के लिये होता था तथा शेष 3/4, जिसे **मोकासा** या **सरंजाम** कहते हैं, सेनानायकों को सेना के रख–रखाव के लिये दिया जाता था।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

मराठा साम्राज्य और पेशवाओं की भूमिका
पेशवा शासन काल

- * बालाजी विश्वनाथ (1713 ई. से 1720 ई.)
  - * बाजीराव प्रथम (1720 ई. से 1740 ई.)
    - बालाजी बाजीराव (1740 ई. से 1772 ई.)
      - विश्वास राव
      - * माधव राव (1761 ई. से 1772 ई.)
      - * नारायण राव (1772 ई. से 1774 ई.)
      - * माधव नारायण राव (1774 ई. से 1796 ई.)
    - रघुनाथ राव राघोबा (1773 ई.)
      - * अमृत राव (दत्तक पुत्र)–विनायक राव
      - * चिमना जी अप्पा (1796 ई.)
      - * बाजीराव (1796 ई. से 1818 ई.)
        - नाना साहेब (दत्तक पुत्र)
  - चिमना जी अप्पा

(* लगे पेशवा की गद्दी पर बैठे)

पेशवा बालाजी विश्वनाथ (1773–1720 ई.) : बालाजी विश्वनाथ ने शाहू को ताराबाई के विरुद्ध पूर्ण सहयोग दिया था और शाहू ने प्रसन्न होकर बालाजी को पेशवा बना दिया था। पेशवा ने मराठा सरदारों को संगठित किया। इस समय मुगल सम्राट फर्रूखसियर था, जो सैयद भाइयों को हटाना चाहता था। इस कारण सैयद भाइयों ने शाहू एवं पेशवा से सहायता माँगी। इस पर पेशवा ने 1719 ई. में एक सन्धि की, जिसके तहत शाहू को दक्षिण के 6 सूबों की चौथ व सरदेशमुखी प्राप्त हो गयी। इस तरह मराठा साम्राज्य को ठोस आधार प्रदान करने में पेशवा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

बाजीराव (1720–1740 ई.) : बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद शाहू ने उसके पुत्र बाजीराव को पेशवा बनाया। इस समय इसकी उम्र 17 वर्ष थी। 1724 ई. में पेशवा ने मालवा व गुजरात को जीत लिया। 1728 ई. में पेशवा ने हैदराबाद के निजाम से मुशीशिवगाँव की सन्धि की, जिसके अनुसार निजाम ने शाहू को सम्पूर्ण महाराष्ट्र का स्वामी बना दिया। 1737 ई. में पेशवा ने मुगलों पर आक्रमण कर उन्हें परास्त किया। 1739 ई. में पेशवा ने पुर्तगालियों को पराजित कर सालसट और बसीन के टापू जीते और जंजीरा के सिदियों को पराजित किया। 1740 ई. में पेशवा बाजीराव की मृत्यु हो गयी।

बालाजी बाजीराव (1740–1761 ई.) : मराठा छत्रपति शाहू ने पेशवा की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र बालाजी बाजीराव को पेशवा बनाया। इसने मालवा में मुगलों का नायब सूबेदार बनना स्वीकार कर लिया। 1741 ई. में कर्नाटक पर आक्रमण किया। 1759 ई. में अहमदनगर का दुर्ग जीता, 1752 ई. में मुगलों से सन्धि की। 1760 ई. में रघुनाथ राव व मल्हारराव होल्कर ने अहमदशाह अब्दाली की सूबेदारी छीन ली। इसलिए अहमदशाह ने भारत पर आक्रमण किया। 15 जनवरी, 1761 ई. को मराठा सरदार सदाशिवराव भाऊ व विश्वासराव व अहमदशाह अब्दाली के मध्य पानीपत नामक स्थान पर युद्ध हुआ, जिसमें मराठों की पराजय एवं अब्दाली की विजय हुई।

माधवराव प्रथम (1761–1772 ई.) : 1761 ई. में बालाजी बाजीराव की मृत्यु के पश्चात् उसका 16 वर्षीय पुत्र माधवराव पेशवा बना। इस पेशवा ने मराठों की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया। सबसे पहले 1762 ई. में निजाम को हराया व 1764, 1767, 1771 व 1772 ई. में मैसूर के हैदर अली को परास्त किया। उत्तर भारत में महादजी सिन्धिया ने 1772 ई. में मुगल सम्राट को दिल्ली की गद्दी पर बिठाया और बदले में 40 लाख रुपये, कड़ा और मानिकपुर की जागीर प्राप्त की।

नारायणराव (1772–73 ई.) : 1772 ई. में माधवराव की मृत्यु के पश्चात् माधवराव का भाई नारायण राव पेशवा बना, परन्तु नौ महीने के पश्चात् उसके चाचा रघुनाथराव द्वारा कत्ल किए जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

रघुनाथराव 'राघोवा' (1773 ई.) : मराठा सरदारों ने राघोवा का साथ नहीं दिया। सुखराम व नाना फड़नवीस ने मृत पेशवा नारायण राव के पुत्र को वास्तविक पेशवा घोषित किया। जिसके परिणामस्वरूप राघोवा ने अंग्रेजों (बम्बई सरकार) की मदद लेने हेतु 1775 ई. में सूरत की सन्धि की। पर नाना फड़नवीस ने ब्रिटिश गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स से 1776 ई. में पुरन्दर की सन्धि की और सूरत की सन्धि को रद्द करवा दिया।

माधवराव नारायण (1774–96 ई.) : माधवराव नारायण के समय नाना फड़नवीस प्रभावशाली रहा। 1796 ई. में माधव की मृत्यु हो गयी और बाजीराव द्वितीय पेशवा बना।

बाजीराव द्वितीय (1796–1818 ई.) : इस पेशवा का शासन काल मराठों के पतन का काल रहा। मार्च, 1800 ई. में नाना फड़नवीस की मृत्यु के पश्चात् होल्कर, सिन्धिया, भोंसले, गायकवाड़ में मनमुटाव हो गया। बाजीराव ने अंग्रेजों से 1802 ई. में बेसीन की सन्धि कर पूना में एक अंग्रेजी सेना रखना स्वीकार किया। इस सन्धि का सिन्धिया, होल्कर व भोंसले ने विरोध किया, परन्तु लॉर्ड वेलेजली ने समस्त मराठा संघ को सहायक सन्धि स्वीकार करने को विवश किया। बची मराठा शक्ति लॉर्ड हेस्टिंग्स ने तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध के पश्चात् समाप्त कर दी।

नानासाहब (1818–1857 ई.) : बाजीराव की मृत्यु पर नाना ने भारत के ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी से अपनी पेन्शन व पदवी हेतु अर्जी दी, जो डलहौजी ने नामंजूर कर दी। इस पर नाना ने नाराज होकर 1857 ई. के सैनिक विद्रोह में भाग लिया। क्रान्ति के पश्चात् पेशवा व मराठा वंश समाप्त हो गया और उस पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

भारत आये प्रमुख विदेशी यात्री

मेगस्थनीज (304–299 ई. पू.) : यूनानी सम्राट सेल्यूकस निकेटर के दूत के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया। इसने भारत में प्राप्त अनुभवों को **'इंडिका'** नामक ग्रंथ में लेखबद्ध किया।

पेरीप्लस ऑफ दि एरिथ्रियन सी (80 ई.) : भारतीय तटीय प्रदेशों की यात्रा करने वाला अज्ञात यूनानी लेखक की रचना। इसमें दक्षिण भारतीय राजवंशों के साथ रोमन व्यापार एवं यहां के बंदरगाहों आदि का वर्णन है।

टॉलमी (द्वितीय शताब्दी ई.) : यूनानी भूगोलवेत्ता जिसने 'जियोग्राफी' नामक ग्रंथ की रचना की।

फाह्यान (401–411 ई.) : सम्राट चंद्रगुप्त II के शासन काल में भारत की यात्रा पर आने वाला प्रथम चीनी बौद्ध भिक्षु।

कॉस्मस इंडिकोप्लेस्टेज (530–550 ई.) : यूनानी भिक्षु जिसके ग्रंथ 'क्रिश्चियन टोपोग्राफी' से भारतीय अर्थ व्यवस्था का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

ह्वेनसांग (629–44 ई.) : सम्राट हर्षवर्धन के शासन काल में भारत की यात्रा पर आने वाला चीनी बौद्ध भिक्षु। इसके भारत में प्राप्त अनुभव को **'सि–यू–की'** नामक ग्रंथ में प्रस्तुत किया है। इसे 'तीर्थयात्रियों का राजकुमार' भी कहा गया है।

इत्सिंग (671–95 ई.) : चीनी बौद्ध तीर्थयात्री जिसने 'बायोग्राफीज़ ऑफ इमिनेंट मांक्स' (प्रमुख बौद्ध भिक्षुओं की आत्मकथायें) नामक ग्रंथ में भारत की दशा का भी वर्णन किया है।

इब्न खुर्दादब (864 ई.) : अरब भूगोलवेत्ता जिसने अपने ग्रंथ 'किताबुल मसालिक वल ममालिक' में भारत की अंतर्संचार व्यवस्था का विवरण दिया है।

अलमसूदी (957 ई.) : अरब यात्री जिसका ग्रंथ 'महजुल जहाब' पश्चिमी भारत के इतिहास के लिए उपयोगी।

मुहम्मद इब्न अहमद अलबरुनी (1024–30 ई.) : महमूद गजनवी के साथ भारत आने वाला अरबी यात्री। अपनी पुस्तक **'किताबुल हिंद'** में भारत का विस्तृत वर्णन किया है।

चाऊ–जु–कुआ (1225–95 ई.) : चीनी व्यापारी जिसकी पुस्तक **'चु–फान–ची'** में दक्षिण भारत और चीन के व्यापारिक संबंध का उल्लेख है।

शिहाबुद्दीन अल उमरी (13वीं शताब्दी) : सीरिया से आये इस यात्री ने 'मसालिक– अल– अबसार– फी– ममालिक– उल– अमसार' नामक पुस्तक में भारत के साथ व्यापारिक संबंधों की चर्चा की है।

मार्कोपोलो (1292–94 ई.) : वेनिस (इटली) से आये इस यात्री ने **'सर मार्कोपोलो की पुस्तक'** में दक्षिण भारत की दशा काा स्वाभाविक वर्णन किया है। इसे मध्यकालीन यात्रियों का राजकुमार कहा गया है।

शेख फकह अबू अब्दुल्ला इब्नबतूता (1333–47 ई.) : सुल्तान मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में आने वाले मोरोक्को (अफ्रीका) निवासी इब्नबतूता ने **'रेहला'** नामक ग्रंथ में समकालीन भारत का वृहत वर्णन किया है।

निकोलो कोन्टी (1420–21 ई.) : विजयनगर साम्राज्य की यात्रा करने वाले प्रथम इतालवी यात्री देवराय प्रथम के शासनकाल में भारत पहुंचा। उसने विजयनगर की दशा का वास्तविक वर्णन किया है।

अब्दुर्रज्जाक (1443–44 ई.) : फारस के सम्राट शाहरूख के दूत के रूप में कालीकट के जमोरिन के दरबार में पहुंचा। 1443 में इसने विजयनगर सम्राट देवराय II के शासनकाल में वहां की यात्रा की। उसने विजयनगर शहर का अत्यंत सजीव चित्रण किया है तथा इसे विश्व का सबसे अद्भुत और बड़ा नगर बताया।

एथेनेसियस निकितिन (1470–74 ई.) : रूसी घोड़ों के सौदागर ने बहमनी के सुल्तान मुहम्मद III के शासनकाल में बीदर की यात्रा की और वहां की दशा का वर्णन किया।

दुआर्ते बारबोसा (1500–16 ई.) : पुर्तगाली अधिकारी जिसने कृष्णदेवराय के समय विजयनगर की यात्रा की। दो खंडों में लिखी अपनी पुस्तक 'दुआर्ते बारबोसा की पुस्तक' में विजयनगर तथा अन्य दक्षिणी राज्यों की स्थिति का वर्णन किया है। इसने पुर्तगाली गवर्नर फ्रांसिस अलबुकर्क के दुभाषिये का कार्य भी किया।

लुडोविको डि बार्थेमा (1502–08 ई.) : पुर्तगाल यात्री ने अपनी पुस्तक 'लुडोविको डि बार्थेमा का यात्रा वृतांत' में गोआ और कालीकट के पश्चिमी तट के साथ–साथ विजयनगर साम्राज्य का अतयंत रोचक वर्णन किया है।

डोमिंगो पायज (1520–22 ई.) : पुर्तगाली यात्री ने विजयनगर सम्राट कृष्णदेव राय के शासनकाल में वहाँ की यात्रा की। 'डोमिंगो पायज की कथा' नामक पुस्तक में इसने इस राज्य का विशद् वर्णन किया है। इसने विजयनगर शहर को रोम के समान वैभवशाली पाया।

फर्नाओ नूनिंज (1535–37 ई.) : पुर्तगाली घोड़ों के व्यापारी ने अच्युतराय के शासनकाल में विजयनगर की यात्रा की और अपने अनुभव **'क्रॉनकल ऑफ फर्नास (फर्नाओ) नूनिंज'** नामक पुस्तक में लेख बद्ध किये।

सीजर फ्रेडरिक (1567–68 ई.) : पुर्तगाली यात्री ने तालिकोट के युद्ध (1565 ई.) के बाद विजयनगर की यात्रा की और इसके विनिष्ट वैभव का उल्लेख किया।

राल्फ फिच (1583–91 ई.) : भारत आने वाले प्रथम अंग्रेज यात्री ने 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के व्यापारिक तथा नागर केन्द्रों का मुल्यवान विवरण प्रस्तुत किया।

विलयम हाकिंस (1608–11 ई.) : मुगल सम्राट के दरबार में ब्रिटिश शासक जेम्स I के दूत के रूप में आने वाले अंग्रेज यात्री ने समकालीन भारतीय दशा का उचित वर्णन किया है। इसे जहांगीर ने 400 घोड़ों का मनसब दिया।

सर टामस रो (1615–19 ई.) : जहांगीर के दरबार में आने वाला दूसरा अंग्रेज दूत जिसे मुगल सम्राट से व्यापार का फरमान प्राप्त हुआ। इसने अपने यात्रा विवरण 'पूर्वी द्वीपों की यात्रा' में मुगल दरबार का वास्तविक वर्णन किया है।

पीत्रो डेलावेली (1623–26 ई.) : इटली से आने वाले इस यात्री ने भारत के तटीय प्रदेशों की विस्तृत यात्रा की तथा कोंकण, मालाबार, कैम्बे (खंभात) के धार्मिक उत्सवों, पशु अस्पतालों आदि का वर्णन किया।

पीटर मुण्डी (1630–34 ई.) : मुगल सम्राट शाहजहां के काल में भारतआने वाले इस इतावली यात्री ने (1630–32 ई.) के बीच पड़े भीषण अकाल और राज्य द्वारा उठाये गये कदमों का उल्लेख किया।

जीन बैपटिस्ट ट्रैवनियर (1638–63 ई.) : फ्रांसीसी यात्री (1638–1663 ई.) के बीच 6 बार भारत की यात्रा की। अपने यात्रा विवरण **'ट्रैवल्स इन इंडिया'** में शाहजहां और औरंगजेब के शासनकाल का विवरण दिया है। हीरे का व्यापारी होने के कारण इसने हीरे के व्यापार और खनिजों का विस्तृत विवरण दिया है। इसने 'तख्ते ताउज' का उल्लेख किया है।

जान एल्बर्ट डि मान्डेस्टो (1638 ई.) : इस जर्मन यात्री ने सूरत की यात्रा की और इस प्रदेश की व्यापारिक गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया है।

निकोलाओ मनूजी (1653–1708 ई.) : इतालवी यात्री ने मुगल राजकुमार दारा शिकोह कीसेना में तोपची की नौकरी की और उसकी औरंगजेब के हाथों पराजय होने के बाद चिकित्सक का पेशा अपनाया। इसका संस्करण ग्रंथ 'स्टोरियो दो मागोर' में समकालीन भारत का अत्यंत वासतविक और सजीव चित्रण है।

फ्रांसिस बर्नियर (1656–1717 ई.) : पेशे से चिकित्सक यह फ्रांसीसी यात्री दारा शिकोह और औरंगजेब के बीच हुये उत्तराधिकार के युद्ध का साक्षी था। इसका वर्णन इसने अपनी पुस्तक **'हिस्ट्र ऑफ द लेट रेवेलियन इन द स्टेस्स ऑफ द ग्रेट मुगल'** में किया है। इसकी एक अन्य पुस्तक **'ट्रैवल्स इन द मुगल एंपायर'** में मुगल साम्राज्य के इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण वर्णन किया है।

जीन डि थेवेनार (1666 ई.) : फ्रांसीसी यात्री ने सूरत की यात्रा की तथा एलोरा का उल्लेख किया।

जान फ्रियर (1672–81 ई.) : इस अंग्रेज यात्री ने भारत की आर्थिक दशा का वर्णन किया।

गेमेली कैटेरी (1695 ई.) : इटली के इस यात्री ने बीजापुर की यात्रा की और वहां के अवशेषों का वर्णन किया।

****

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

By : वी.पी. सिंह

आधुनिक भारत का इतिहास

उत्तर मुगलकालीन शासक

औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बहादुर शाह प्रथम 1701–1712 ई. तक मुगल वंश का बादशाह रहा। इस बादशाह ने सभी शक्तियों के साथ उदार नीति का पालन किया। 26 फरवरी, 1712 ई. को बहादुर शाह की मृत्यु हो गई। बहादुर शाह के शव को औरंगजेब के मकबरे के आंगन में दफनाया गया। बहादुर शाह को 'शाह बेखबर' कहा जाता है। इसके पश्चात् (1712–13 ई.) तक बहादुर शाह प्रथम के चार पुत्र– (1) मुईजुद्दीन, (2) अजीम उस्सान, (3) रफी उस्सान, (4) जहाँनसान में मुगल वंश का बादशाह बनने के लिए उत्तराधिकार युद्ध शुरू हुआ, जिसमें मुईजुद्दीन विजयी हुआ और जहाँदारशाह के नाम से गद्दी पर बैठा। इसने अपने शासनकाल में लाल कुमारी नामक वेश्या को हस्तक्षेप करने का आदेश दे रखा था। जहाँदार शाह मुगल वंश का प्रथम अयोग्य शासक था। इसे 'लम्पट मूर्ख' कहा जाता था। इसके पश्चात् अजीम उस्सान का लड़का फर्रूखसियर (1713–1719 ई.) तक सैयद बन्धुओं (सैयद हुसैन अली खाँ एवं अब्दुल्ला खाँ) की सहायता से गद्दी पर बैठा। सैयद बन्धुओं को शासक निर्माता के नाम से जाना जाता है।

राजपूतों के साथ इस शासक की दमनकारी नीति रही। सिखों, जाटों केसाथ भी दमनात्मक नीति रही। फर्रूखसियर बहुत ही विलासी, अयोग्य, सुस्त, शक्की मिजाज शासक था, जिसे बाद में सैयद बन्धुओं ने कत्ल करके मार डाला और रफीउद्दरजात व रफीउद्दौला को मुगल शासक सैयद बन्धुओं ने बनाया मगर दोनों ही अल्पकाल में बीमारियों के कारण मर गए। इसके पश्चात् (1719–1748 ई.) मुगल राजवंश की बागडोर मुहम्मद शाह रंगीला ने सम्भाली, जिसके समय हैदराबाद के निजाम (चिनकिलिच खाँ) व अवध के नवाब (सआदत खाँ बुरहानुल मुल्क) तथा बिहार एवं बंगाल अलीवर्दी खाँ के नेतृत्व में स्वतंत्र हो गया। नादिरशाह का 1739 ई. में भारत पर आक्रमण हुआ, जिसमें नादिरशाह शाहजहाँ का तख्ते ताऊस (मयूर सिंहासन) उठा ले गया। इसके पश्चात् (1748–1754 ई.) में अहमदशाह मुगल गद्दी पर बैठा। इस शासक के समय अफगानिस्तान के शासक अहमदशाह अब्दाली ने 1752 ई. में भारत पर आक्रमण किया। इसके पश्चात् जहाँदारशाह का द्वितीय पुत्र अलीगौहर आलमगीर द्वितीय के नाम से (1754–1759 ई.) गद्दी पर बैठा। इसके समय अहमदशाह अब्दाली का दूसरा आक्रमण भारत पर हुआ।

बंगाल में प्लासी का युद्ध 23 जून, 1757 ई. को हुआ, जिसमें बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला पराजित होकर मारा गया। इसके पश्चात् शाहआलम द्वितीय ने (1759–1806 ई.) मुगल राजवंश की गद्दी सम्भाली, जिसके शासन काल में अहमदशाह अब्दाली व मराठों के मध्य पानीपत का तृतीय युद्ध 15 जनवरी, 1761 इ. को लड़ा गया जिसमें मराठा सरदारसदाशिव भाऊ की हार हुई। 1764 ई. में वाण्डीवाश या बक्सर का युद्ध मुगल बादशाह शाहआलम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला, बंगाल के नवाब मीर कासिम और अंग्रेज सेनापति हेक्टर मुनरो के मध्य लडत्रा गया, जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई और भारत के बादशाह व नबाबों के संघ की हार हुई। इसके पश्चात् मुगल वंश की बागडोर अगबर द्वितीय ने (1806–1837 ई.) सम्भाली। 1837–1857 ई. तक बहादुर शाह द्वितीय गद्दी पर बैठा। यह मुगल वंश का अन्तिम बादशाह था। इसके समय अंग्रेज अत्यधिक शक्तिशाली हो गए थे। इसी के समय सन् 1857 ई. का असफल विद्रोह हुआ था। इस विद्रोह में नेतृत्व करने के कारण बहादुरशाह बन्दी बना लिया गया, और रंगून भेज दिया गया, जहाँ उसकी 1826 ई. में मृत्यु हो गई।

औरंगजेब (1658–1707 ई.)
- मुअज्जम बहादुरशाह प्रथम (1707–1712 ई.)
  - मुइनुद्दीन जहाँदारशाह (1712–1713 ई.)
  - फर्रूखसियर (1713–1719 ई.)
  - नेकुसियर (1719 ई.)
  - रफीउद्दौला (शाहजहाँ द्वितीय) (1719 ई.)
  - रफीउद्दौला (1719 ई.)
  - मुहम्मद शाह (1720 ई.–1748 ई.)
  - आलमगीर द्वितीय (1754–1759 ई.)
  - शाहआलम द्वितीय (1759–1806 ई.)
  - अकबर द्वितीय (1806–1837 ई.)
  - बहादुर शाह द्वितीय (1837–1857 ई.)
- आजम
- अकबर
- कामबख्श

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा बंगाल के नवाब

भारत में यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों का आगमन	
कम्पनी	**स्थापना–वर्ष**
पुर्तगाली ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1498 ई.
अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1600 ई.
डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1602 ई.
डेनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1616 ई.
फ्रांसीसी ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1664 ई.
स्वीडिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1731 ई.

क्र.	राज्य	संस्थापक
1.	बंगाल	मुर्शिद कुली खाँ तथा अलीवर्दी खाँ
2.	पंजाब	रणजीत सिंह
3.	मैसूर	हैदर अली
4.	हैदराबाद	निजाम–उल–मुल्क
5.	कर्नाटक	सआदतउल्ला खाँ
6.	अवध	सआदत खाँ तथा सफदर जंग

बंगाल में अंग्रेज :

अंग्रेजों ने बंगाल में पहली फैक्ट्री शाहजहाँ के काल में शुजा (बंगाल सूबेदार) की आज्ञा से 1651 में **हुगली** में लगायी। 1651 में ही शुजा ने एक फर्मान द्वारा कम्पनी को तीन हजार रूपये वार्षिक कर के बदले व्यापार का विशेषाधिकार दे दिया। तत्पश्चात् अंग्रेजी कोठियाँ कासिमबाजार, पटना आदि स्थानों में भी खुल गयीं। मीर जुमला ने 1658 में बंगाल का सूबेदार बनने के बाद कम्पनी के व्यापार पर अनेक प्रतिबंध लगा दिये, किन्तु शाइस्ता खाँ के सूबेदार बनते ही कम्पनी ने 1672 में फिर व्यापार में अनेक सहूलियतें प्राप्त कर ली। 1691 में सूबेदार इब्राहिम खाँ ने 1651 वाले विशेषाधिकार को पुष्ट कर दिया। 1698 में अंग्रेजों को सूबेदार अजीम–उस–शान से **सुतनुती, कालिकाता** और **गोविंदपुर** नामक तीन गाँवों की जमींदारी मिल गयी, जो बाद में **फोर्ट विलियम** कहलायी। 1717 में मुगल बादशाह फर्रूखसियर ने पिछले सूबेदारों द्वारा दिये गये व्यापारिक विशेषाधिकार को फिर से पुष्ट कर दिया, जिसके अनुसार अंग्रेजों को तीन हजार रुपये वार्षिक कर के बदले चुंगी कर से मुक्त कर दिया गया। कम्पनी के माल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिये दस्तक (पास) जारी करने का अधिकार मिला तथा उन्हें कलकत्ते के समीप अतिरिक्त जमीन किराये पर लेने की छूट भी मिल गयी। परन्तु यह फर्मान अंग्रेजों तथा बंगाल के नवाबों के बीच संघर्ष का कारण बना रहा, क्योंकि इससे एक ओर तो बंगाल को राजस्व की हानि होती थी तथा दूसरी ओर कम्पनी के नौकरों द्वारा करों से बचने के लिये दस्तक का दुरूपयोग अपने निजी व्यापार के लिये किया जाता था। अंग्रेजों द्वारा इस विशेषाधिकार के दुरूपयोग का बंगाल के सभी नवाबों द्वारा विरोध किया गया।

सिराजुद्दौला (मिर्जा मुहम्मद) : 9 अप्रैल, 1756 ई. को अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला गद्दी पर बैठा। अंग्रेजों से संबंध अलीवर्दी के अंतिम समय से ही कलकत्ते की अधिक किलेबंदी को लेकर कटु थे। सिराजुद्दौला के नवाब बनने का विरोध पूर्णिया के **शौकत जंग** व ढाका की **घसीटी बेगम** कर रहे थे जिनका साथ अंग्रेज दे रहे थे। इसके अतिरिक्त नवाब द्वारा कर मांगें जाने पर अंग्रेजों ने कलकत्ते आने वाले भारतीय वस्तुओं पर भारी चुंगी लगा दी। इसके अतिरिक्त अंग्रेजों और फ्रांसिसीयों के बीच युद्ध की आशंका से दोनां ही पक्षों ने कलकत्ता व चन्द्रनगर (चन्दन नगर) की किलेबन्दी आरम्भ कर दी। सिराज के मना करने पर जहाँ फ्रांसीसियों ने उसकी बात मान ली, अंग्रेजों ने कोई ध्यान नहीं दिया, जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों के साथ नवाब का युद्ध अवश्यम्भावी हो गया।

ब्लैक होल : 20 जून, 1756 को फोर्ट विलियम पर सिराजुद्दौला ने अधिकार कर लिया। अंग्रेज अधिकारियों ने भागकर **फुल्टा द्वीप** पर शरण ली। इसी आक्रमण में कहा जाता है कि नवाब सिराजुद्दौला ने एक सौ छियालीस अंग्रेज कैदियों को एक छोटी सी ब्लैक होल नामक कोठरी में रात भर के लिये बन्द कर दिया, जिसमें से केवल तेइस आदमी जिन्दा बचे। परन्तु इस घटना की सत्यता संदिग्ध है। इस कथा का वर्णन हौलवेल ने किया है, जो स्वयं भी एक कैदी था।

इस घटना के बाद क्लाइव और वाट्सन के नेतृत्व में एक सेना मद्रास से कलकत्ता पहुँची, जहाँ उसने आसानी से 2 जनवरी, 1757 को कलकत्ता पर दुबारा अधिकार कर लिया। नवाब 1757 को कलकत्ता पर दुबारा अधिकार कर लिया। नवाब सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों के साथ 9 फरवरी, 1757 को अलीनगर (कलकत्ता) की संधि कर ली, जिसमें उसने अंग्रेजों की सभी मांगों को मान लिया।

प्लासी का युद्ध : इसके बाद अंग्रेजों ने फ्रांसीसी उपनिवेश चन्द्रनगर पर आक्रमण करके मार्च, 1757 को उसे जीत लिया जिसका विरोध सिराजुद्दौला ने किया और फ्रांसीसी भगोड़ों को अपने यहाँ शरण दी। अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला के स्थान पर मीरजाफर को नवाब बनाने का निर्णय लिया। इस षड्यन्त्र में राय दुर्लभ, जगत सेठ, तथा अमीचंद शामिल थे।

23 जून, 1757 को मुर्शिदाबाद से 30 किलोमीटर दूर प्लासी के मैदान पर नवाब और अंग्रेजों की सेना का मुकाबला हुआ, जिसमें सिराजुद्दौला की पराजय हुयी तथा उसका वध कर दिया गया। 25 जून को मीर जाफर को बंगाल का नवाब घोषित कर दिया गया।

मीर जाफर से अंग्रेजों को 24 परगने की जमींदारी और लगभग 1,77,00,000 रुपये मिले, बंगाल, बिहार, उड़ीसा में बिना चुंगी दिये व्यापार करने की अनुमति मिली।

प्लासी के युद्ध का ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्व है। इससे बंगाल पर विजय का अंग्रेजों का रास्ता खुल गया तथा अंत में संपूर्ण भारत की विजय का मार्ग प्रशस्त हो गया।

1760 की क्रांति : यद्यपि मीर जाफर अंग्रेजों की मदद से बंगाल की गद्दी प्राप्त करने में तो सफल हो गया था, परन्तु वह अधिक समय तक अंग्रेजों की धन की मांग पूरी न कर सका। इसके अतिरिक्त प्रशासन में भी क्लाइव दखलंदाजी करता था। इन सबसे ऊबकर मीर जाफर ने चिनसूरा के डचों से मिलकर षड्यंत्र रचा, परन्तु नवम्बर, 1759 में **बेदारा के युद्ध** में अंग्रेजों ने डचों को पराजित कर दिया। इन सब घटनाओं से क्षुब्ध होकर अंग्रेजों ने मीर जाफर के दामाद मीर कासिम के साथ संधि की (27 सितम्बर, 1760), जिसमें उसे नायब सूबेदार के पद के बदले कम्पनी को बकाया चुकाना था तथा बर्दामान, मिदनापुर और चटगांव के जिले देना था। **मीर–जाफर के मीर कासिम को नायब सूबेदार के पद को देने से इंकार करने पर उसे हटाकर अक्टूबर, 1760 में मीर–कासिम को नवाब नियुक्त किया गया।** यही घटना 1760 की क्रांति कहलाती है।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

मीर कासिम : मीर कासिम ने कम्पनी के अधिकारियों को विपुल धनराशि प्रदान की। मीरकासिम अलीवर्दी खाँ के बाद बंगाल का योग्यता नवाब हुआ था। उसने अपनी राधानी **मुर्शिदाबाद से पूर्णिया** स्थानान्तरित कर ली, सेना का गठन यूरोपीय पद्धति पर किया तथा अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बनना स्वीकार नहीं किया। मीरकासिम के 1717 के मुगल फरमान का अंग्रेजों द्वारा दुरूपयोग रोकने के लिये उठाये गये कदमों को लेकर मतभेद आरम्भ हो गया। मीरकासिम ने कठोर कार्यवाही करते हुये सभी आंतरिक कर हटा दिये, जिससे अंग्रेज व भारतीय व्यापारी एक समान हो गये।

बक्सर का युद्ध : अंग्रेजों ने मीर कासिम को 1763 में कई युद्ध में पराजित किया, जिसके फलस्वरूप वह भागकर अवध पहुँचा, जहाँ उसने नवाब शुजाउद्दौला और बादशाह शाहआलम द्वितीय के साथ मिलकर एक संघ कायम किया। 22 अक्टूबर, 1764 को बक्सर के युद्ध में अंग्रेज सेनापति हेक्टर मुनरो ने संघीय सेना को पराजित किया। मीर–जाफर को पुनः नवाब बना दिया गया, शाह आलम अंग्रेजों से जा मिला और मीर कासिम भाग गया।

बक्सर के युद्ध का भी भारीय इतिहास में अपना महत्व है। इसने अंग्रेजों की शक्ति का उत्तर भारत में निर्विरोध स्थापित कर दिया। बंगाल का नवाब उसने हाथ का कठपुतली था, अवध का नवाब सहायक तथा मुगल बादशाह उनका पेन्शनर। दिल्ली जीतने के लिये मार्ग प्रशस्त कर दिया।

नज्मुद्दौला : 1765 के प्रारंभ में मीरजाफर की मृत्यु होने के बाद उसके पुत्र नज्मुद्दौला को गद्दी सौंपी गयी, परन्तु शासन की बागडोर नायब सूबेदार के हाथों में दी जानी थी, जिसे अंग्रेज मनोनीत करते और जिसे उनकी मर्जी के बिना नहीं हटाया जा सकता था। इसके अतिरिक्त नवाब को अपनी सेना की संख्या भी घटानी थी। यह शर्तें 20 फरवरी, 1765 की संधि के द्वारा डाली गयी। कम्पनी के अधिकारियों ने नये नवाब से फिर लगभग 15 लाख रुपये खींचे।

इलाहाबाद की संधि : मई, 1765 में क्लाइव दुबारा बंगाल का गर्वनर बनकर आया और मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय से **इलाहाबाद की संधि** (12 अगस्त, 1765)। इसके अनुसार अंग्रेजों को बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुयी। इसके बदले में कम्पनी ने शाह आलम को कड़ा और इलाहाबाद के जिले तथा छब्बीस लाख रुपये वार्षिक पेंशन देना स्वीकार किया। अब से शाह आलम द्वितीय को इलाहाबाद के किले में ब्रिटिश संरक्षण में रहना था। अवध के नवाब शुजाउद्दौला को पचास लाख रुपये युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में कम्पनी को अदा करने थे। इसके अतिरिक्त अंग्रेजों ने बाहरी आक्रमण के समय नवाब को सैन्य मदद देने का वायदा इस शर्त पर किया कि यदि वह सेना का खर्च अदा करेगा।

दोहरी सरकार : 1765 की संधि से कम्पनी को नवाब नज्मुद्दौला ने निजामत (पुलिस, न्यायिक शक्ति) की शक्ति सौंप दी थी, जबकि इलाहाबाद की संधि द्वारा कम्पनी को दीवानी (वित्त एवं राजस्व अधिकार) शक्तियाँ प्राप्त हो गयी थी। इस प्रकार दीवान के रूप में कम्पनी सीधे राजस्व एकत्र करती थी और नायब सुबहदार के रूप में निजामत शक्तियों का प्रयोग करती थी। इतिहास में इस व्यवस्था को **द्वैध शासन** (Dual Government) कहा गया है।

इस व्यवस्था से अंग्रेजों को लाभ हुआ। उनके पास सारी शक्तियाँ थीं, किन्तु उत्तरादायित्व नहीं था। नवाब के अधिकारियों के पास शक्ति नहीं थी। इसका परिणाम यह हुआ कि कानून–व्यवस्था, व्यापार, वाणिज्य सब की हालत बदतर हो गयी। द्वैध शासन 1767–1772 तक चला, जब वारेन हेस्टिंग्स ने इसे समाप्त कर दिया।

T.I. Highlights

- 1706–1756 तक बंगाल को इसके निर्यात के लिये लगभग छः करोड़ पचास लाख रुपये प्राप्त हुये।
- बंगाल में अंग्रेजी व्यापार की मुख्य वस्तुयें थीं– रेशम, फुटकर सूती के कपड़े, शोरा और चीनी।
- जाब चार्नोक ने 1690 में सुतनुटी में एक अंग्रेज कोठी स्थापित की और इस प्रकार कलकत्ता की नींव डाली।
- 1756 में कलकत्ता जीतने के बाद सीराजुद्दौला ने उसका नाम **अलीनगर** रख दिया था।
- प्लासी के युद्ध (23 जून, 1757) में अंग्रेजों का सेनापति क्लाइव तथा नवाब का सेनापति मीरजाफर थे।
- प्लासी के युद्ध को 1757 की क्रांति भी कहा जाता है।
- क्लाइव को जून, 1758 में कलकत्ता कौंसिल ने बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया।
- क्लाइव को मुगल बादशाह ने **साबत जंग** की उपाधि दी।
- द्वैध शासन के समय दीवानी कार्यों के लिये कम्पनी ने राजा शिताव राय को बिहार तथा मुहम्मद रजा खाँ को बंगाल का नायब दीवान नियुक्त किया। मुहम्मद रजा खाँ ने नायब नाजिम के रूप में भी कार्य किया।
- 1765 से 1772 के मध्य बंगाल के शासन को द्वैध शासन (Dual Government) कहा गया है।
- क्लाइव के शासन काल को के. एम. पन्निकर (K.M. Panniker) ने लुटेरा राज (Robber State) की संज्ञा दी है।
- क्लाइव के शासन काल में भत्ते को लेकर ब्रिटिश सैनिकों ने विद्रोह किया था, जिसे श्वेत विद्रोह (White Mutiny) कहा गया है।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

भारत में ब्रिटिश राज्य का आर्थिक प्रभाव

ब्रिटिश कालीन भारतीय अर्थव्यवस्था से जुड़ी कुछ प्रथायें

दादनी प्रथा	इसके अंतर्गत अंग्रेज व्यापारी भारतीय श्रमिकों शिल्पियों को रुपये अग्रिम संविदा (Advance) के रूप में देते थे।
कमियौटी प्रथा	बिहार एवं उड़ीसा में प्रचलित इस प्रथा में कमियां जाति के कृषि दास मालिक से प्राप्त ऋण पर दी जाने वाला ब्याज की राशि के बदले जीवन पर कार्य करते थे।
तीन कठिया प्रथा	चंपारन (बिहार) क्षेत्र में प्रचलित इस प्रथा में कृषकों को अंग्रेज बागान मालिकों के अनुबंध के अनुसार भूमि के 3/20 भाग पर नील की खेती करना आवश्यक था।
दुबला हाली प्रथा	भारत के पश्चिमी क्षेत्र मुख्यतः सूरत (गुजरात) क्षेत्र में प्रचलित इस प्रथा के अंतर्गत दुबला हाली भूदास अपनी संपत्ति का और स्वयं का संरक्षक अपने मालिकों को ही मानते थे।
गिरमिटिया प्रथा	19वीं शताब्दी के तीसरे दशक में शुरू की गई इस प्रथा में भारतीय श्रमिकों को एक समझौते के अंतर्गत 5 या 7 वर्ष के लिये विदेशों में मजदूरी करनी होती थी। इस समझौते को गिरमिट तथा इस प्रथा को गिरमिटिया प्रथा कहा जाता था।

T.I. Highlights

- अंग्रेजों ने 1813 के बाद से एकतरफा मुक्त व्यापार (Free Trade) की नीति अपनाई।
- मुक्त व्यापार तथा रेलवे के विकास से सूत कातने तथा सूती कपड़ा बुनने के उद्योगों को सबसे अधिक धक्का लगा।
- 1820 के उपरांत यूरोपीय बाजारों के दरवाजे भारतीय निर्यातों (Exports) के लिए वस्तुतः बंद हो गए।
- ब्रिटिश नीतियों के परिणामस्वरूप मध्यकाल के जमींदार (जो महज लगान वसूलने के लिए उत्तरदायी थे) अब उस जमीन के मालिक बन गए।
- ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के फलस्वरूप भूमि का वाणिज्यीकरण (Commercialisation) हुआ। भूमि अब वस्तु (Commodity) की तरह खरीदी–बेची या गिरवी रखी जा सकती थी।

- **रैयतवारी व्यवस्था** (Ryotware System) : यह भू–राजस्व उगाहने की एक व्यवस्था थी, जिसके तहत रैयत (किसान) अपना लगान सीधे सरकार को देता था। इस व्यवस्था के तहत किसान और अंग्रेजी सरकार के बीच जमींदार, ताल्लुकदार जैसा कोई बिचौलिया नहीं होता था। ब्रिटिश भूमि का लगभग 51 प्रतिशत हिस्सा इस व्यवस्था के तहत शामिल था, (मुख्यतः बम्बई, मद्रास तथा असम में)।
- **महलवारी व्यवस्था** (Mahalwari System) : इस व्यवस्था के तहत गांव की बिरादरी अपने प्रतिनिधियों (मुखिया आदि) के माध्यम से रकम चुकाने का भार अपने ऊपर लेती थी। फिर सारी देनदारी आपस में बाँट कर प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए निर्धारित रकम चुकाता था, पर अंततः वह अपने साथियों के अंश के लिए और वे सब उसके अंश के लिए उत्तरदायी होते थे। यह व्यवस्था (उ.प्र., मध्यप्रांत, पंजाब में अर्थात् भारत के कुल 30% भूमि पर लागू थी)।
- **माटिन बर्ड** (Merttins Bird) को उत्तरी भारत में भूमि का व्यवस्था का प्रवर्तक (Father of land-Settlements is Northern India) के नाम से स्मरण किया जाता है।
- **नील दर्पण** : यह **दीनबंधु मित्र** द्वारा 1860 में लिखित नाटक था, जिसमें नील की खेती करने वाले कृषकों की दयनीय दशा का वर्णन था।
- नील से रंग बनाने का उद्योग भारत में 18वीं सदी के अंत में शुरू किया गया था।
- **स्थायी बंदोबस्त** (Permanent Settlement) : यह व्यवस्था लार्ड कार्नवालिस ने सर जॉन शोर के सुझावों पर 1793 में लागू की। इसके तहत लगान की एक निश्चित मात्रा, जो जमींदारों द्वारा देय थी, हमेशा के लिए निर्धारित कर दी गई। जमींदार अपनी सेवाओं के लिए एक हिस्सा (1/11) अपने पास रखता था। यह व्यवस्था बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा बनारस के क्षेत्रों एवं कर्नाटक (19%) पर लागू थी।

नोट : लागू होने का क्रम :

रैयतवाड़ी	>	स्थायी बन्दोबस्त	>	महालवाड़ी
↓		↓		↓
51%		**19%**		**30%**
↓		↓		↓
टॉमस मुनरो		लॉर्ड कार्नवालिस		हाल्ट मैकेन्जी
(1792)		(1793)		(1819)

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

1857 का विद्रोह

पहला भारतीय स्वाधीनता संग्राम :

अवधि : 1857 की ग्रीष्म ऋतु में लॉर्ड कैनिंग के वायसरॉय के कार्यकाल के दौरान यह घटना घटी। इसे 1857 का विद्रोह या सैन्य द्रोह अथवा पहला स्वाधीनता संग्राम भी कहा जाता है। मेरठ का विद्रोह तथा दिल्ली पर कब्जा, एक व्यापक सैन्य विद्रोह तथा पूरे उत्तरी तथा साथ ही मध्य तथा पश्चिमी भारत में विद्रोह की भूमिका तैयार हुई। दक्षिण शांत रहा तथा पंजाब व बंगाल इससे आंशिक रूप से प्रभावित हुए। कम्पनी के सिपाहियों की कुल संख्या 2,32,224 में से लगभग आधों ने अपने रेजीमेटल 'कलर' के प्रति निष्ठा न रखने की घोषणा की तथा लम्बे समय से अनुशासन के एवं मेहनत से तैयार की गई सेना की विचारधारा को तिलांजलि दे दी।

1857 का विद्रोह भले ही असफल रहा हो परंतु इससे विदेशी शासन को समाप्त करने केलिए एक महान प्रयास प्रारंभ हो गया। दिल्ली पर कब्जे तथा बहादुरशाह को भारत का शासक (शहंशाह–ए–हिंदुस्तान) बनाए जाने से इस विद्रोह को अर्थ प्रदान किया और विद्रोही सैनिकों को इस शाही नगर की प्राचीन गरिमा के साथ जुड़ने के लिए एक मजबूत आधार मिल गया।

विद्रोह के कुछ प्रमुख कारण :

1. आर्थिक शोषण तथा देश के परम्परागत ढाँचे का विनाश।
2. डलहौजी का **व्यपगत का सिद्धान्त** (Coctrine of Lapse), जिसके कारण देशी रजवाड़े नष्ट हो गए थे।
3. ब्रिटिश शासन का स्वरूप **'अनुपस्थित प्रभुसत्ता'** (Absentee soverigntyship)। इसके तहत यहाँ से एकत्रित किया गया धन (Revenue), यहां खर्च न कर ब्रिटेन भेजना।
4. ब्रिटिश राज्य द्वारा स्थापित शांति की नीति (Pax Britannica) : इसके कारण भारतीय रियासतों की सेनायें भंग हो गईं, तथा इन सेनाओं से निवृत्त सैनिकों पिण्डारी तथा ठगी जैसे समाज विरोधी कार्यों में लग गए। विद्रोह के दिनों में इन्हें स्वर्ण अवसर मिला और उन्होंने विद्रोहियों की संख्या में वृद्धि की।
5. ब्रिटिश प्रजातीय श्रेष्ठता (Racial superiority) की नीति के तहत उन्होंने भारतीयों के साथ अपमानजनक व्यवहार किए तथा सैनिक–असैनिक क्षेत्रों में उच्च पदों पर उनके लिए प्रतिबंध लगाया।
6. अंग्रेज सेनाओं की अपराजयेता का भ्रम टूटना।
7. ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ तथा ब्रिटिश सरकार द्वारा उनको दिया गया संरक्षण।
8. 1850 में पारित **'धार्मिक अयोग्यता अधीनियम'** (Religous Disabilities Act)। इसके अनुसार धार्मिक परिवर्तन से पुत्र अपने पिता की सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जा सकता था।
9. सैनिकों को अपने जाति या पंथ के चिन्हों के उपयोग पर प्रतिबंध तथा 1856 का सामान्य भर्ती अधिनियम (General Service Enlistment Act)। इस अधिनियम के तहत सैनिकों को आवश्यकता पड़ने पर समुद्र–पार भेजा था। भारतीय मान्यताओं के अनुसार यात्रा पाप थी, तथा दंड स्वरूप उन्हें जाति से बाहर कर दिया जाता था।
10. 1854 का **डाक घर अधिनियम** (post office Act) के पारित होने पर सैनिकों की निःशुल्क डाक सुविधा समाप्त हो गई।
11. **चर्बी मिले कारतूसों** (Greased cartridges) का प्रयोग। इस कारतूसों पर लगे खोल को दाँतों से काटना होता था। गाय तथा सुअर की चर्बी से निर्मित होने की वजह से सैनिकों को अपना धर्म भ्रष्ट होने की आशंका को बल मिला। इन कारतूसों का प्रयोग ने भारतीय सैनिकों तथा जनता में संचित हो रही असंतोष को चिंगारी प्रदान की।

विद्रोह की असफलता के कारण :

1857 के विद्रोह की असफलता के प्रमुख कारण निम्नवत् हैं–

(1) यह विद्रोह स्थानीय, असंगठित एवं सीमित था। बम्बई एवं मद्रास की सेनायें तथा नर्मदा नदी के दक्षिण के राज्यों ने विद्रोह में अंग्रेजों का समर्थन किया। राजस्थान में कोटा एवं अलवर के अतिरिक्त शेष स्थानों पर विद्रोह का कोई प्रभाव नहीं था। सिन्ध भी पूर्णतया शान्त था।

(2) अच्छे साधन एवं धनाभाव के कारण भी यह विद्रोह असफल रहा। अंग्रेजी अस्त्र–शस्त्र के समक्ष भारतीय, अस्त्र–शस्त्र बौने साबित हुए।

(3) 1857 के इस विद्रोह के प्रति 'शिक्षित वर्ग' पूर्ण रूप से उदासीन रहा। यदि इस वर्ग ने अपने लेखों एवं भाषणों द्वारा लोगों में उत्साह का संचार किया होता तो निःसन्देह विद्रोह का परिणाम कुछ और होता।

(4) इस विद्रोह में 'राष्ट्रीय भावना' का सचमुच अभाव था क्योंकि भारतीय समाज के सभी वर्गों का सहयोग इस विद्रोह को नहीं मिल सका। सामन्तवादी वर्गों में एक वर्ग ने विद्रोह में सहयोग किया परन्तु पटियाला, जीन्द, ग्वालियर एवं हैदराबाद के राजाओं ने विद्रोह को कुचलने में अंग्रेजों का सहयोग किया।

(5) विद्रोहियों में अनुभव, संगठन क्षमता व मिलकर कार्य करने की शक्ति की कमी थी।

(6) सैनिक दुर्बलता का विद्रोह की सहफलता में महत्वपूर्ण योगदान हैं बहादुरशाह जफर एवं नाना साहब एक कुशल संगठन कर्ता अवश्य थे, पर उनमें सैन्य नेतृत्व की क्षमता की कमी थी, वहीं अंग्रेजी सेना के पास लारेन्स बन्धु, निकल्सन, हैवलॉक, आउट्रम, एवं एड्वर्क्स जैसे कुशल सेनानायक थे

(7) विद्रोहियों के पास उचित नेतृत्व का अभाव था। वृद्ध मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर विद्रोहियों का उस ढंग से नेतृत्व नहीं कर सका जिस तरह के नेतृत्व की तत्कालीन परिस्थितियों में आवश्यकता थी।

(8) विद्रोहियों के पास ठोस लक्ष्य एवं स्पष्ट योजना का अभाव था। उन्हें अगले क्षण क्या करना होगा यह निश्चित न था, वे मात्र भावावेश एवं परिस्थितिवश आगे बढ़े जा रहे थे।

(9) आवागमन एवं संचार के साधनों के उपयोग से अंग्रेजों को विद्रोह को दबाने में काफी सहायता मिली और इस प्रकार आवागमन एवं संचार के साधनों ने भी इस विद्रोह को असफल करने में सहयोग दिया।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

1857 के विद्रोह के परिणाम :

1857 के विद्रोह के दूरगामी परिणाम रहे। इस विद्रोह के प्रमुख परिणाम निम्नवत् हैं–

(1) विद्रोह के समाप्त होने के बाद 1858 में ब्रिटिश संसद ने एक कानून पारित कर ईस्ट इंडिया कम्पनी के अस्तित्व को समाप्त कर दिया और अब भारत पर शासन का पूरा अधिकार महारानी के हाथों में आ गया। इंग्लैण्ड में 1858 के अधिनियम के तहत एक 'भारतीय राज्य सचिव' की व्यवस्था की गयी, जिसकी सहायता के लिए 15 सदस्यों की एक 'मंत्रणा परिषद्' बनाई गयी। इन 15 सदस्यों में 8 की नियुक्ति सरकार द्वारा करने तथा 7 की कोर्ट ऑफ डाइरेक्टर्स द्वारा चुनने की व्यवस्था की गई।

(2) महारानी विक्टोरिया के आदेशानुसर क्षेत्रों के अन्धाधुन्ध विस्तार की नीति को त्याग दिया गया, स्थानीय राजाओं को उनके गौरव एवं अधिकारों को पुनः वापस करने की बात कही गयी और साथ ही धार्मिक शोषण खत्म करने एवं सेवाओं में बिना भेदभाव के नियुक्ति की बात की गयी।

(3) 1861 में 'भारतीय जनपद सेवा अधिनियम, (Indian Civil Service Act) पास हुआ। इसके अनुसार प्रत्येक वर्ष लन्दन में एक प्रतियोगी परीक्षा आयोजित करने की व्यवस्था की गयी, जिससे संश्रावित जनपद सेवा में भर्ती हो सके।

(4) सेना पुनर्गठन के आधार यूरोपीय सैनिकों की संख्या को बढ़ाया गया, उच्च सैनिक पदों पर भारतीयों की नियुक्ति को बंद हो गया। अब सेना में भारतीयों एवं अंग्रेजों का अनुपात 2 : 1 का हो गया। उच्च जाति के लोगों में से सैनिकों की भर्ती बंद कर दी गई।

(5) 1858 के अधिनियम के अन्तर्गत ही भारत में गवर्नर जनरल के पद में परिवर्तन कर उसे 'वायसराय' का पद बना दिया गया।

(6) विद्रोह के फलस्वरूप सामंतवादी ढाँचा चरमरा गया, आम भारतीय में सामंतवादियों की छवि गद्दारों की हो गई, क्योंकि इस वर्ग ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों को सहयोग दिया था।

(7) विद्रोह के परिणामस्वरूप भारतीयों में राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास हुआ और हिन्दू–मुस्लिम एकता ने जोर पकड़ना शुरू किया, जिसका कालान्तर में राष्ट्रीय आंदोलन में अच्छा योगदान रहा।

(8) 1857 के विद्रोह के बादसाम्राज्य विस्तार की नीति का तो खत्म हो गया परन्तु इसके स्थान पर अब आर्थिक शोषण केयुग का आरम्भ हुआ।

(9) भारतीयों के प्रशासन में प्रतिनिधित्व के क्षेत्र में अल्प प्रयास के अन्तर्गत 1861 में भारतीय परिषद् अधिनियम को पारित किया गया।

इसके अतिरिक्त इसाई धर्म के प्रचार–प्रसार में कमी आई, श्वेत जाति की उच्चता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया, मुगल साम्राज्य के अस्त्वि को सदैव के लिए खत्म कर दिया गया आदि 1857 के विद्रोह के परिणाम थे।

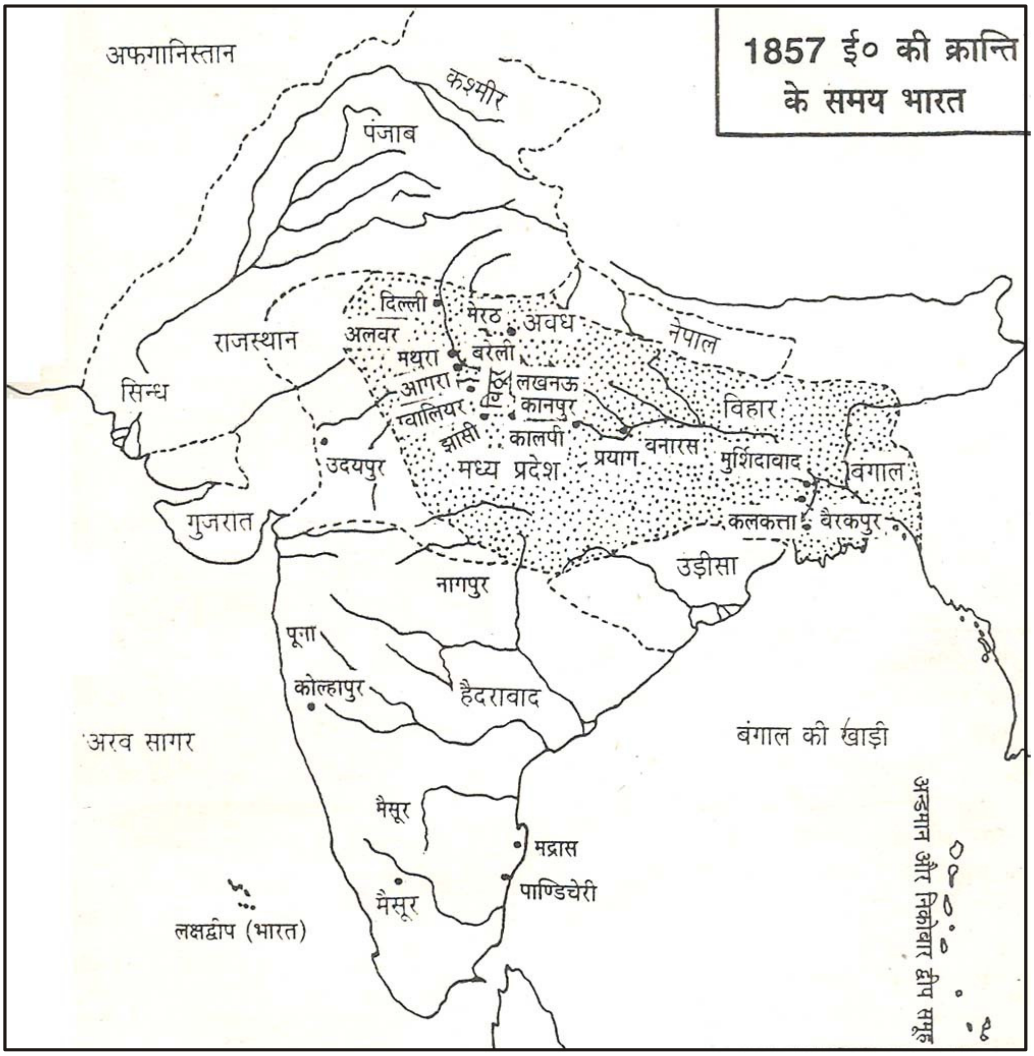

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

1857 का विद्रोह				
भारतीय नायक (विद्रोह के)	समय (विद्रोह का)	केन्द्र	ब्रिटिश नायक (विद्रोह दबाने के)	समय (विद्रोह दबाने का)
बहादुरशाह जफर एवं जफर बख्त खां, कार्यकारी सेनापति (सैन्य नेतृत्व)	11, 12 मई, 1857	दिल्ली	निकलसन, हडसन	21 सितम्बर, 1857
नाना साहब एवं तात्या टोपे	5 जून, 1857	कानपुर	कैंपबेल	6 सितम्बर, 1857
बेगम हजरत महल	4 जून, 1857	लखनऊ	कैंपबेल	मार्च, 1858
रानी लक्ष्मीबाई एवं तात्या टोपे	जून, 1857	झांसी, ग्वालियर	ह्यूरोज	3 अप्रैल, 1858
लियाकत अली	1857	इलाहाबाद, बनारस	कर्नल नील	1858
कुँअर सिंह	अगस्त, 1857	जगदीशपुर (बिहार)	विलियम टेलर, मेजर विसेंट आयर	1858
खान बहादुर खां	1857	बरेली	सर कौलिन कैंपबेल	1858
मौलवी अहमद उल्ला	1857	फैजाबाद		1858
अजीमुल्ला	1857	फतेहपुर	जनरल रेनर्ड	1858

विद्रोह का स्वरूप – कुछ प्रमुख विचार :

इतिहासकारों तथा विद्वानों ने 1857 के विद्रोह के स्वरूप के विषय में भिन्न–भिन्न मत प्रकट किए हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. **सर जॉन सीले (John Seeley) :** एक संस्थापित सरकार के विरूद्ध भारतीय सेना का विद्रोह।
2. **एल. ई. आर. रीज (L. E. R. Rees) :** 'धार्मिक युद्ध' (धर्मान्धों का ईसाईयों के विरुद्ध युद्ध)।
3. **जे. जी. मेडले (J. G. Medley) :** 'जातियों का युद्ध'
4. **टी. आर. होम्ज (T. R. Holmes) :** 'बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध'।
5. **सर जेम्स आउन्ट्रम** (Sir James Outram) : 'हिन्दू मुस्लिम षड्यंत्र'।
6. **बेन्जामिन डिजरेली** (Benjamin Disraeli) : 'राष्ट्रीय विद्रोह'।
7. **बी. डी. सावरकर** (V. D. Sawarkar) : 'सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम'।
8. **आर. सी. मजूमदार** (R. C. Majumdar) : 'सैन्य विद्रोह' (स्वतन्त्रता संग्राम नहीं था)।
9. **डॉ. एस. एन. सेन** (S. N. Sen) : 'स्वतंत्रता संग्राम'।
10. **डॉ. एस. बी. चौधरी** (S. B. Choudhary) : 'सैनिक विप्लव और विद्रोह (नागरिक)'।
11. **जे. एल. नेहरू** (J. L. Nehru) : 'सामन्ती विद्रोह'।
12. **कार्ल मार्क्स** (Karl Marx) : 'राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष'।

T.I. Highlights

- विद्रोह का विस्तार दक्षिण में नर्मदा नदी तक था।
- 1857 के विद्रोह की एक प्रमुख विशेषता थी – हिन्दू–मुस्लिम एकता।
- बहादुर शाह–द्वितीय (जफर) ने 'शहंशाह–ए–हिन्दुस्तान' की उपाधि ग्रहण की। बहादुर शाह दिल्ली में प्रतीकात्मक नेता था। वास्तविक नेतृत्व सैनिकों की एक परिषद के हाथों में था, जिसका प्रधान बख्त खान था।
- उत्तर–पश्चिम प्रांत तथा अवध में मुजफ्फरनगर और सहारनपुर को छोड़ कर सभी स्थानों पर सैन्य विद्रोह के बाद नागरिक विद्रोह (Civil rebelion) हुए।
- विद्रोह के दौरान भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग था।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

18वीं शताब्दी में हुए जन–आन्दोलन

अंग्रेजी शासन के दौरान हुए महत्वपूर्ण विद्रोह

आन्दोलन/विद्रोह	प्रभावित क्षेत्र	सम्बन्धित नेता/नेतृत्व	विद्रोह का वर्ष
संन्यासी विद्रोह	बिहार, बंगाल	केना सरकार, दिरजीनारायण	1763–1800 ई.
फकी विद्रोह	बंगाल	मजनुशाह एवं चिराग अली	1776–77 ई.
चुआर विद्रोह	बाकुड़ा (बंगाल)	दुर्जन सिंह	1798 ई.
पॉलीगरो का विद्रोह	तमिलनाडु	वीर पी. काट्टावाग्मान	1799–01 ई.
वेलुथाम्पी विद्रोह	ट्रावनकोर	वेलुथाम्पी	1808–09 ई.
भील विद्रोह	पश्चिमी घाट	सेवाराम	1825–31 ई.
रामोसी विद्रोह	पश्चिमी घाट	चितर सिंह	1822–29 ई.
पागलपन्थी विद्रोह	असोम	टीपू	1825–27 ई.
अहोम विद्रोह	असोम	गोमधर कुँवर	1828 ई.
वहाबी आन्दोलन	बिहार, उत्तर प्रदेश	सैयद अहमद टीटूमीर	1831 ई.
कोल आन्दोलन	छोटा नागपुर (झारखण्ड)	नारायण राव	1831–32 ई.
खासी विद्रोह	असोम	तीरथ सिंह	1833 ई.
फैराजी आन्दोलन	बंगाल	शरीयतुल्ला	1839 ई.
संथाल विद्रोह	बंगाल, बिहार	सिद्धू कान्हू	1855–57 ई.
मुण्डा विद्रोह	बिहार	बिरसा मुण्डा	1899–1900 ई.
पाइक विद्रोह	उड़ीसा	बख्शी जंगबन्धु	1817–1825 ई.
नील आन्दोलन	बंगाल	दिगम्बर	1859–60 ई.
पाबना विद्रोह	पाबना (बंगाल)	ईशानचन्द्र राय एवं शम्भुपाल	1873–76 ई.
दक्कन विद्रोह	महाराष्ट्र	–	1874–75 ई.
मोपला विद्रोह	मालाबार (केरल)	अली मुदालियार	1920–22 ई.
कूका आन्दोलन	पंजाब	भगत जवाहरमल	–
रम्पा विद्रोह	आन्ध्र प्रदेश	सीताराम राजू	1879–1922 ई.
तानाभगत आन्दोलन	बिहार	जतरा भगत	1914 ई.
तेभागा आन्दोलन	बंगाल	कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह	1946 ई.
तेलंगाना आन्दोलन	आन्ध्र प्रदेश	–	1946 ई.

T.I. Highlights

- संन्यासी विद्रोह में भाग लेने वाले संन्यासी **'शंकराचार्य'** के अनुयायी थे।
- बंकिम चन्द्र चटर्जी ने अपने उपन्यास आनन्द मठ में संयासी विद्रोह के बारे में वर्णन किया।
- मोपलाओं ने 1836 से 1854 के मध्य 22 बार विद्रोह किए।
- 1858 के बाद ब्रिटिश शासन के विरूद्ध कृषक प्रतिरोध में एक खास परिवर्तन आया। अब किसानों ने अपनी माँगों के लिए सीधे–सीधे सरकार से लड़ाई प्रारम्भ की।

- 18वीं–19वीं शताब्दी में होने वाले विद्रोहों की एक खास बात यह थी कि वे सभी स्थानीय विद्रोह थे, जो स्थानीय समस्याओं से उपजे थे।
- इस दौरान होने वाले सभी आंदोलन प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश शासन के विरूद्ध असंतोष के परिणाम थे।
- इन जन–आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए पृष्ठभूमि तैयार की।
- दीनबंधु मित्र ने अपने नाटक **'नील दर्पण'** (जो 1860 में प्रकाशित हुई) में नीलहों द्वारा किए गए अत्याचार का सजीव चित्रण किया है।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

19वीं शताब्दी में धार्मिक तथा समाज सुधार आंदोलन

पुनर्जागरण तथा समाज सुधार आन्दोलन

आधुनिक शिक्षा तथा पाश्चात्य देशों के सम्पर्क से आधुनिक शिक्षा प्राप्त लोगों में सामाजित चेतना जागी। उन्होंने अनुभव किया कि रूढ़िवादिता व अन्धविश्वासों के कारण ही भारतीय समाज पिछड़ा हुआ है। इस जागृति के फलस्वरूप भारत में पुनर्जागरण की लहर चल पड़ी और समाज सुधार हेतु अनेक संगठनों ने आंदोलन चलाये। इसमें प्रमुख अधोलिखित थे–

राजा राममोहन राय :

- ये ऐसे प्रथम शिक्षित व्यक्ति थे, जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों के विरोध में आवाज उठायी।
- इन्हें आधुनिक भारत का जन्मदाता कहा जाता है।
- इन्होंने जाति प्रथा, सती प्रथा, मूर्ति पूजा आदि का विरोध किया।
- 1816 ई. में कलकत्ता में पाश्चात्य शिक्षा के लिए उन्होंने **हिन्दू कालेज** की स्थापना की।
- अंग्रेजी, यूनानी और हिन्दी की पढ़ाई से राम मोहन राय आधुनिक विचारों की ओर आकर्षित हुए। इन्होंने उपनिषदों का अंग्रेजी में रूपान्तरण किया।
- ये भारत में पत्रकारिता के जन्मदाता कहे जाते हैं।
- 1828 ई. में इन्होंने **ब्रह्म समाज** की स्थापना की। इसका उद्देश्य शाश्वत, सर्वाधार, अपरिवर्त्य ईश्वर की पूजा थी जो सारे विश्व का कर्त्ता और रक्षक है।
- 1833 ई. में ब्रिस्टल (इंग्लैण्ड) में इनकी मृत्यु हो गयी।
- इस संस्था को 1842 ई. में महर्षि देवेन्द्र नाथ टैगोर ने नव जीवन प्रदान किया। केशव चन्द्रसेन ने इसे लोकप्रिय बनाया।
- 1867 में केशव चन्द्रसेन ने आदि ब्रह्म समाज की स्थापना की।

प्रार्थना समाज :

- 1867 ई. में केशव चन्द्र सेन की प्रेरणा से बम्बई में एक प्रार्थना समाज की स्थापना की गयी।
- इसके प्रमुख नेता महादेव गोविन्द रानाडे तथा एन. जी. चन्द्रावरकर थे।
- इसी समाज द्वारा स्थापित दलित जाति मण्डल तथा दक्कन शिक्षा सभा ने प्रशंसनीय कार्य किया।

आर्य समाज (1875) :

- इसके संस्थापक स्वामी दयानन्द थे।
- यह आन्दोलन पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रियास्वरूप उदित हुआ था।
- स्वामी दयानन्द के गुरू स्वामी विरजानन्द थे। स्वामी दयानन्द तथा उनके गुरू दोनों ही शुद्ध वैदिक परम्परा में विश्वास करते थे।
- उन्होंने **'पुनः वेदों की ओर चलो'** तथा **'हिन्दुओं के लिए भारत'** नारा दिया।
- स्वामी दयानन्द का वास्तविक नाम **मूलशंकर** था।
- इनका जनम 1824 में गुजरात की मौरवी रियासत के निवासी एक ब्राह्मण कुल में हुआ।
- इन्होंने 1863 ई. में झूठे धर्मों की खण्डिनी पताका लहराई।
- 1875 ई. में प्राचीन वैदिक धर्म की पुनः स्थापना के लिए इन्होंने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की।
- सितम्बर, 1897 ई. में शिकागो के धार्मिक सम्मेलन में भाग लेकर इन्होंने वेदों पर भाष्य भी लिखे।
- स्वामी जी धार्मिक क्षेत्र में मूर्तिपूजा, बहुदेवतावाद, अवतारवाद, पशुबलि, श्राद्ध और झूठे कर्मकाण्ड तथा अन्धविश्वासों को स्वीकार नहीं करते थे। सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने छुआ–छूत, जातिप्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया।
- ये पहले समाज सुधारक थे, जिन्होंने शूद्र तथा स्त्री को वेद पढ़ने तथा ऊँची शिक्षा प्राप्त करने, यज्ञोपपवती धारण करने तथा अन्य सभी ऊँची जाति तथा पुरुषों के बराबर अधिकार के लिए आन्दोलन किया।
- इनके अनुयायियों ने शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' (हिन्दी) नामक पुस्तक लिखी, जिसे आर्य समाज की बाइबिल कहा जाता है।
- इनके अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द ने शूद्धि आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना (हरिद्वार) 1902 ई. में की।

रामकृष्ण मिशन :

- स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस की स्मृति में 1896 ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना बंगाल के बेलूर में की।
- इनका पहला नाम नरेन्द्र नाथा दत्त था। स्वामी विवेकानन्द एक कर्मयोगी और वेदान्ती थे।
- 1893 ई. में शिकागो में धर्मों की संसद में भाग लेकर इन्होंने पाश्चात्य जगत को भारतीय संस्कृति व दर्शन से अवगत कराया।
- इन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वे ऐसे धर्म में विश्वास नहीं करते जो किसी विधवा के आंसू नहीं पोंछ सकता अथवा किसी अनाथ को रोटी नहीं दे सकता।

थियोसोफिकल सोसायटी :

- एक रूसी महिला, मैडम एच.पी. ब्लावेटस्की (1831–91) तथा एक अमरीकन सैनिक अफसर कर्नल एच.एस. आल्कॉट ने 1875 में संयुक्त राज्य अमेरिका में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की।
- वे 1875 में भारत आए और मद्रास के निकट 1886 ई. में आड्यार में इसके मुख्य केन्द्र की स्थापना की।
- ऐनी बिसेंट ने 1886 ई. में इस सोसायटी में प्रवेश किया और चार साल बाद वे भारत में बस गयीं।
- इस सोसायटी का उद्देश्य प्राचीन हिन्दुवाद को पुनः स्थापित करना तथा पुराने विधि विधानों की तार्किक व्याख्या करना था।
- ऐनी बेसेंट ने बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल की स्थापना की, जो बाद में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU) के रूप में विकसित हुआ।

रहनुमाई माजदायान सभा :

- पारसियों में धर्म सुधार के लिए 1851 ई. में रहनुमाई माजदायान सभा की स्थापना बम्बई में नौरोजी फरदोनजी, दादाभाई नौरोजी, एम.एस. बेंगाली और अन्य लोगों ने की।

सिक्खों में सुधार :

- उन्नीसवीं सदी के अन्त में अमृतसर में खालसा कालेज की स्थापना से यह आंदोलन आरम्भ हुआ।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- ये सुधार 1920 ई. में पंजाब में अकाली आन्दोलन से और तेज हो गए।
- इनका मुख्य उद्देश्य गुरुद्वारों के प्रबन्ध को स्वच्छ बनाना था।
- अकालियों ने 1922 ई. में नया सिख एक्ट बनाने को विवश किया।
- इस एक्ट की सहायता से लेकिन बहुधा सीधी कार्यवाही द्वारा सिक्खों ने भ्रष्ट महंतों को गुरुद्वारों से बाहर निकाल दिया।

अहमदिया आन्दोलन :

- 19वीं शताब्दी का यह एक प्रसिद्ध मुस्लिम आन्दोलन था।
- इसके प्रवर्तक मिर्जा गुलाम अहमद (1839–1908) थे।
- यह आन्दोलन पंजाब के गुरूदासपुर जिले के अन्तर्गत कादियां नगर से हुआ।
- मिर्जा साहब ने अपने सिद्धान्तों को अपनी पुस्तक **बराहीन–ए–अहमदिया**, जो 1880 में प्रकाशित हुई, में व्याख्यायित किया।
- 1891 ई. में मिर्जा साहब ने स्वयं को मसीह–उल–ऊद अथवा वह मसीहा कहा, जिसका वर्णन मुस्लिम धर्म पुस्तकों में है और 1904 ई. में अपने आपको कृष्ण का अवतार कहना आरम्भ कर दिया।
- इस आन्दोलन ने भी मुसलमानों में समाज सेवा और विद्या प्रसार में बहुत प्रशंसनीय कार्य किया।
- मुसलमानों में सुधार करने के क्षेत्र में सर सैयद अहमद खां तथा मौलवी चिराग दिल्ली का महत्वपूर्ण योगदान है।
- चिराग दिल्ली ने ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी की तथा अपने सहधर्मियों को कम्पनी प्रशासन में समुचित स्थान ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया।
- वे बहुविवाह विरोधी थे तथा मुस्लिम स्त्रियों की स्थिति में सुधार लाने का सतत् प्रयास करते रहे।

सर सैयद अहमद :

- सैयद अहमद 1838 में कंपनी की नौकरी में आए तथा 1857 तक स्वामिभक्त बने रहे।
- 1857 के बाद उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य और मुसलमानों के बीच बेहतर संबंध बनाने का प्रयास किया।
- विदेश से लौटने के बाद इन्होंने मुस्लिम समाज की कुरीतियां त्याग कर पाश्चात्य शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया।
- 1875 ई. में इन्होंने अलीगढ़ में एंग्लो–मुस्लिम स्कूल की स्थापना की जो बाद में (1921 ई.) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU) के रूप में विख्यात हुआ।

अन्य सुधार आंदोलन :

- राजा राम मोहन राय ने विलियम बैंटिक के काल में 1929 ई. में अधिनियम द्वारा सती प्रथा को समाप्त करा दिया।
- बालिका शिशु हत्या को 1765 के बंगाल रेगुलेशन संख्या 21 द्वारा अवैध घोषित कर दिया गया।
- 1856 के हिन्दू विधवा पुर्नविवाह अधिनियम के द्वारा विधवा विवाह को कानूनी मान्यता दे दी गई।
- इसमें ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने, महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाराष्ट्र में केशव करवे ने महिलाओं के उत्थान के लिए बहुमूल्य प्रयास किए।
- 1899 में पुणे में करवे ने एक हिन्दू विधवा गृह की स्थापना की थी।
- 1916 ई. में करवे ने बम्बई में एक भारतीय महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की।
- 1905 में भारतीय जनता के हितों की रक्षा के लिए गोपाल कृष्ण गोखले ने 'सर्वेन्ट्स ऑफ इंडियन सोसायटी' की स्थापना की।
- 1911 में श्री नारायण राव मल्हार जोशी ने बम्बई में सामाजिक समस्याओं पर विचार के लिए सोशल सर्विस लीग (1910) की स्थापना की।

आत्म–सम्मान आन्दोलन :

- यह तमिलनाडु में चलाया गया। इसके नेता ई. वी. रामास्वामी नायकर थे।

सत्यशोधक समाज :

- इसकी स्थापना 'ज्योतिबा फुले ने महाराष्ट्र में की। फुले ने मानव के अधिकारों पर एवं जाति प्रथा के उन्मूलन पर जोर दिया।
- 1851 में पूना में अछूतों के एक स्कूल की स्थापना की गई।
- मद्रास के कारीगर जातियों ने सरकारी नौकरियों से ब्राह्मणों का एकाधिकार समाप्त करने की मांग की और राजस्व बोर्ड को एक आवेदन दिया, जिसमें बिना किसी भेद–भाव के सभी सरकारी ओहदों पर भर्ती करने का आवेदन किया।
- उन्होंने 1917 ई. में अब्राह्मणों के हितों के प्रसार के लिए जस्टिस (न्याय) नामक एक समाचार पत्र प्रारम्भ किया।
- 1932 में गांधीजी ने अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना की।
- बिहार में जगजीवन राम ने दलितों पर आधारित एक कृषि मजदूर संगठन की स्थापना की।
- आन्ध्र में कम्मा तथा रेड्डी दो ब्राह्मण जातियों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर ब्राह्मणों में तरक्की की।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने 'स्वतंत्र मजदूर पार्टी' की स्थापना द्वारा दलित किसानों और मजदूरों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

श्रम संघ आन्दोलन :

- मजदूरों के हित एवं सुविधाओं के लिए प्रयास 1881 (रिपन) में ही प्रारम्भ हो गए थे, जब प्रथम कारखाना कानून बनाया गया तथा दूसरा कारखाना कानून 1891 में पारित हुआ।
- 1897 में काप, स्थायी सदस्यता तथा स्पष्ट नियमों के साथ पहली बार एक मजदूर संगठन सामने आया, जिसका नाम था 'सोसायटी ऑफ रेलवे सरवेंट्स ऑफ इंडिया एण्ड वर्मा'।
- 1905 में प्रिंटर्स यूनियन कलकत्ता नामक मजदूर संगठन बना।
- 1907 ई. में बम्बई पोस्टल यूनियन गठित हुआ।
- 1910 ई. में सोशल सर्विस लीग, बम्बई तथा 1910 में ही कामगार हितवर्द्धक सभा आदि की स्थापना हुई।
- प्रथम नियमित ट्रेंड यूनियन 1918 ई. में मद्रास में टेक्सटाइल लेबर यूनियन के नाम से वी. पी. वाडिया द्वारा शुरू किया गया।
- 1916 में इंडियन सीमैन्स यूनियन; 1920 में अहमदाबाद टेक्सटाइल वर्कर्स यूनियन; 1920 में इंडियन कालियरी इप्लाइज एसोसियेशन तथा 1920 में जमशेदपुर लेबर एसोसियेशन की स्थापना की गई।
- 1920 ई. में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की गई। इसका पहला सम्मेलन 31, अक्टूबर, 1920 को बम्बई में हुआ, जिसकी अध्यक्षता लाला लाजपत राय ने की।
- 1926 केन्द्रीय विधान सभा ने ट्रेड यूनियन अधिनियम पास किया। 1926 के बाद से ट्रेड यूनियन आन्दोलन में तीव्रता आयी।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- 1929 ई. के नागपुर सम्मेलन में उदारवादियों व उग्रवादियों के समूहों के बीच विभाजन हुआ।
- एन. एम. जोशी, ने एक नए संगठन ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन फेडरेशन का गठन किया।
- 1931 ई. में रणदिवे आर. देशपांडे ने ए.आई.टी.यू.सी. को छोड़कर ऑल इंडिया रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की।
- 1938 ई. में कम्युनिस्टों ने नागपुर और शोलापुर में एक हड़ताल का आयोजन किया।
- सरकार ने कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया। सभी यूनियनों ने मिलकर संघर्ष करना प्रारम्भ किया।
- फेडरल असेम्बली में दस तथा प्रांतीय विधायिकाओं में 38 सीटों पर मजदूरों के प्रतिनिधि चुने जाने पर इस आन्दोलन को गति मिली।
- 1917 में कांग्रेसी नेताओं ने इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की।
- 1948 में समाजवादी नेताओं ने हिन्द मजदूर सभा की स्थापना की।
- 1948 में प्रो. के. पी. साह ने यूनाइटेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस का गठन किया।
- 1928 में देश में अभूतपूर्व औद्योगिक अशान्ति रही। कुल 203 हड़तालें हुईं, जो कि आर्थिक मांगों से नहीं अपितु राजनैतिक विचारों से प्रेरित थीं।
- 1940 में भी बहुत सी हड़तालें हुईं, विशेषकर इसलिए कि श्रमिक संगठन राजनैतिक घटनाओं से अलग नहीं रह पाते थे।

भारत में कृषक आंदोलन

1855–56 का संथाल विद्रोह :

- संथाल लोग सिंहभूमि, बड़ा भूमि, हजारी बाग, मिदनापुर, बांकुड़ा तथा वीरभूमि प्रदेश में रहते थे।
- 1793 की स्थाई भूमि कर व्यवस्था के अनुसार इनकी पैतृक भूमि जमींदारों की हो गई। बंगाल व उत्तर भारत में साहूकारों ने यहाँ सूदखोरी प्रारम्भ कर दी।
- पुलिस तथा सरकारी कर्मचारियों के अत्याचारों के विरुद्ध इन्होंने **सीद्धू व कान्हू** के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया तथा अपनी सरकार स्थापित करने की घोषणा की।
- सेना ने कार्यवाही की तथा फरवरी, 1856 ई. में नेताओं को बंदी बनाकर विद्रोह को दबा दिया गया।

बंगाल में नील कृषकों की हड़ताल :

- 1858 से 1860 तक चला यह आंदोलन अंग्रेज भूमिपतियों के विरूद्ध किया गया।
- कम्पनी के कुछ अवकाश प्राप्त अधिकारी बंगाल तथा बिहार के जमींदारों से भूमि प्राप्त कर नील की खेती करवाते थे।
- वे किसानों पर अत्याचार करते थे व मनमानी शर्तों पर खेती करने के लिए बाध्य करते थे।
- अप्रैल, 1860 में पाबना और नादिया जिलों के समस्त कृषकों ने भारतीय इतिहास की प्रथम कृषक हड़ताल की।
- यह हड़ताल जैसोर, खुलना, राजशाही, ढाका, मालदा, दीनाजपुर आदि में फैल गई।
- 1860 में विवश होकर अंग्रेजों ने एक नील आयोग नियुक्त किया।
- 1859 ई. में नील विद्रोह का वर्णन दीन बंधु मित्र ने अपने नाटक 'नील दर्पण' में किया।
- 1875 में दक्कन में मराठी किसानों ने मारवाड़ी तथा गुजराती साहूकारों के विरुद्ध विद्रोह किया। ये साहूकार ऋणों में हेराफेरी करके किसानों का शोषण करते थे।
- 1879 में कृषक राहत अधिनियम बनाया गया।

चम्पारन सत्याग्रह :

- उत्तर भारत के चम्पारन जिले के यूरोपीय नील उत्पादक बिहारी नील कृषकों का शोषण करते थे।
- गांधी जी ने 1917 में बाबू राजेन्द्र प्रसाद की सहायता से कृषकों को अहिंसात्मक असहयोग करने की प्रेरणा दी और सत्याग्रह किया।
- जिससे बिहार सरकार ने क्रुद्ध होकर गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया।
- जांच समिति रिपोर्ट के बाद चम्पारन कृषक अधिनियम पारित किया गया।

खेड़ा (केरा) आन्दोलन :

- यह आंदोलन मुख्यतः बम्बई सरकार के विरुद्ध था। 1918 में सूखे के कारण फसलें नष्ट हो गईं, जिससे कृषक कर देने में असमर्थ थे।
- सरकार बिना किसी छूट के भू–कर पूरा वसूलना चाहती थी। फलस्वरूप किसानों ने गांधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह किया, जो जून 1918 तक चलता रहा। अन्त में सरकार को मांगे माननी पड़ीं।

किसान सभाओं का गठन :

- 1928 में आंध्र प्रान्तीय सभा तथा 1936 में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन हुआ। जिसके प्रथम अध्यक्ष स्वामी सहजानंद सरस्वती थे।

अन्य कृषक आन्दोलन :

- बंगाल का तेभागा आन्दोलन, हैदराबाद, दक्कन का तेलंगाना आन्दोलन, पश्चिमी भारत में वर्ली विद्रोह आदि।

T.I. Highlights

- भारत में मजदूर संघ बनाने की माँग, सर्वप्रथम लंकाशायर कपड़ा उद्योग के पूँजीपतियों ने की।
- पहला फैक्टरी एक्ट 1881 में और दूसरा 1891 में पास हुआ जिससे कि कुछ संविधायें स्त्री व बाल श्रमिकों को प्राप्त हुयी।
- 1908 में लोकमान्य तिलक को वर्मा के माण्डले जेल की सजा होने पर बम्बई के श्रमिकों ने छः दिनों तक हड़ताल की जिसकी प्रशंसा लेनिन ने की है।
- एम. एन. रॉय ने 1921 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन किया।
- सी. आर. दास, वी. बी. गिरी, सरोजनी नायडु, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस 'आयटक' (AITUC) के अध्यक्ष रहे।
- 1918 में गाँधी जी ने अहमदाबाद टैक्सटाइल लेबर एशोसिएशन (TLA) का गठन किया।
- 1920 के बाद से वामपंथी दलों का प्रभाव, पूरे स्वतंत्रता संग्राम पर पड़ा।
- 1927 में एस. ए. डांगे, मुजफ्फर अहमद, पी. सी. जोशी, सोहन सिंह जोश ने मिलकर वर्क्स और पीसेन्ट पार्टी (Women and Peasants Party WPP) का गठन किया। वे कांग्रेस के भीतर ही कार्य करते थे।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

भारतीय संविधान का विकास

संविधान क्या है ?
(What is Constitution)

- संविधान का तात्पर्य उस लेखापत्र (document) या दस्तावेज से है, जिसको एक विशिष्ट वैधानिक गरिमा प्राप्त है और जो सरकार की रूपरेखा व प्रमुख कृत्यों (function) का निर्धारण करता है।
- किसी देश का संविधान उस देश की राजनीतिक व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत उसके लोग शासित होते हैं, के मूलभूत ढाँचे को स्पष्ट करता है।
- यह राज्य के मुख्य अंगों की शक्तियों को परिभाषित करता है, उनके उत्तरदायित्वों का निर्धारण करता है और उनके पारस्परिक सम्बन्धों तथा जनता के साथ संबंधों को विनियमित (regulate) करता है।
- इसे देश की 'आधारभूत विधि' (Fundamental law) भी कहा जा सकता है, जो जनता के विश्वास व उनकी आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करता है।

संविधान का महत्त्व
(Significance of the Constitution)

- किसी राष्ट्र के संविधान में निहित दर्शन यह निर्धारित करता है कि वहाँ किस प्रकार की सरकार है। कोई संविधान सम्बन्धित राष्ट्र के दर्शन की रूपरेखा तैयार करता है और उस राष्ट्र का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लेखापत्र (Document) या दस्तावेज होता है।
- कोई संविधान सम्बद्ध देश के नागरिकों के लिए कुछ अधिकार सुनिश्चित करता है और उनके कर्तव्यों को भी परिभाषित करता है।
- कोई संविधान सम्बन्धित राज्य के प्रति वहाँ की जनता के विश्वास व आशा को अभिव्यक्त करता है और भविष्य के लिए उनकी आकांक्षाओं के प्रति आश्वासन देता है।

सांविधानिक विकास
(Constitutional Development)

संविधान के विकास के महत्वपूर्ण चरण इस प्रकार हैं–

1773 का विनियमन–अधिनियम
(Regulating Act of 1773)

- भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी से संबंधित मामलों को विनियमित व नियंत्रित करने के लिए यह ब्रिटिश सरकार का प्रथम प्रयास था।
- इसके तहत बंगाल के 'गवर्नर' को बंगाल के 'गवर्नर जनरल' के रूप में नियुक्त किया गया।
- लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स प्रथम 'गवर्नर जनरल' थे।
- इस अधिनियम ने बम्बई व मद्रास के गवर्नरों को बंगाल के गवर्नर जनरल के अधीन कर दिया।
- 1774 में 'फोर्ट विलियम' (कलकत्ता) में 'एपेक्स (Apex) न्यायालय' के रूप में उच्चतम न्यायालय की स्थापना की गयी।

1784 का पिट्स इण्डिया अधिनियम
(Pitts India Act-1784)

- विनियमन–अधिनियम (Regulating Act) की कमियों को दूर करने के लिए यह अधिनियम लाया गया। इस अधिनियम का नाम तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री के नाम पर रखा गया।
- इसके तहत, भारत से संबंधित मामलों को ब्रिटिश सरकार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में लाया गया।
- 'बार्ड–ऑफ डाइरेक्टर्स' के नियंत्रण हेतु उसके ऊपर 'बोर्ड ऑफ कण्ट्रोल' की स्थापना की गयी।

1833 का चार्टर अधिनियम
(Charter Act - 1833)

- इसके तहत बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया।
- भारत के प्रथम 'गवर्नर जनरल' लार्ड विलियम बेंटिक थे।
- गर्वनर जनरल को सभी नागरिक तथा सैन्य शक्तियाँ प्रदान की गयीं।
- बम्बई व मद्रास के सरकारों की विधायी शक्तियाँ समाप्त कर दी गयीं।
- ब्रिटिश–भारत में केन्द्रीकरण की दिशा में यह निर्णायक कदम था।
- इस अधिनियम ने एक वाणिज्यिक निकाय के तौर पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी की गतिविधियों को समाप्त कर दिया।

1853 का चार्टर अधिनियम
(Charter Act - 1853)

- 'गवर्नर जनरल्स काउंसिल' के कार्यपालिका तथा विधायिका से संबंधित कार्यों को अलग कर दिया गया।
- कम्पनी के 'सिविल सर्वेण्ट्स' की नियुक्ति के लिए खुली प्रतियोगिता परीक्षा की एक प्रणाली को आधार बनाकर प्रस्तुत किया गया।

1858 का भारत शासन अधिनियम
(Government of India Act - 1858)

- इस अधिनियम के तहत भारत के शासन, क्षेत्र तथा राजस्व को ईस्ट इण्डिया कम्पनी से ब्रिटिश क्राउन को हस्तान्तरित कर दिया गया। दूसरे शब्दों में, भारत में कम्पनी के शासन को ब्रिटिश क्राउन के शासन में हस्तांतरित कर दिया गया।
- ब्रिटिश क्राउन की शक्तियों का प्रयोग 'भारत मंत्री' या 'भारत–सचिव' (Secretary of State for India) द्वारा किया जाना था।
- 'भारत मंत्री' या 'भारत सचिव' (Secretary of State for India) ब्रिटिश कैबिनेट का सदस्य था।
- उसकी सहायता के लिए 15 सदस्यों वाली भारतीय परिषद् (Council of India) थी।
- अपने प्रतिनिधियों (Agent) गवर्नर जनरल के माध्यम से उसे भारतीय शासन पर पूर्ण नियंत्रण एवं अधिकार प्रदान किया गया।
- वह ब्रिटिश संसद् के प्रति अन्तिम रूप से उत्तरदायी था।
- गवर्नर जनरल को भारत का 'वाइसराय' घोषित किया गया।
- लॉर्ड कैनिंग भारत का प्रथम 'वाइसराय' था।

1861 भारतीय परिषद् अधिनियम
(Indian Council Act - 1861)

- इसके तहत भारत में पहली बार प्रतिनिधि संस्थाओं (Representative Institutions) को लाया गया।
- इसमें विधायिका संबंधी कार्यों के निर्वाह के लिए गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद् में अनाधिकारिक (Non-official) सदस्यों के रूप में कुछ भारतीयों की उपस्थिति का भी प्रावधान था।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- बम्बई व मद्रास प्रेसिडेंसियों की विधायी शक्तियों को पुनः वापस कर विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ की गयी।
- 'पोर्टफोलियो व्यवस्था' को इसने वैधानिक मान्यता प्रदान की।

1892 भारतीय परिषद् अधिनियम

(Indian Council Act - 1892)

- यद्यपि इसके तहत निर्वाचन–पद्धति को लाया गया, परन्तु यह पद्धति परोक्ष प्रकार की थी।
- विधान–परिषद के कार्यों को बढ़ाया गया एवं उसे बजट पर विचार–विमर्श करने तथा कार्यपालिका से प्रश्न करने की शक्ति प्रदान की गयी।

1909 का भारतीय परिषद् अधिनियम

(Indian Councils Act - 1909)

- इस अधिनियम को 'मार्ले–मिण्टो सुधार' के नाम से भी जाना जाता है। (लार्ड मॉर्ले तथा लॉर्ड मिण्टो क्रमशः तत्कालीन भारत मंत्री तथा तत्कालीन गवर्नर जनरल थे)
- 'केन्द्रीय विधान परिषद्' (Central Legislative Council) का नाम 'औपनिवेशिक विधान परिषद्' (Imperial Legislative Council) रखा गया।
- इस अधिनियम के तहत 'पृथक् निर्वाचक मण्डल' (Separate Electorate) की अवधारणा को स्वीकार कर मुसलमानों के साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की व्यवस्था का सूत्रपात किया गया।
- लॉर्ड मिण्टो को 'साम्प्रदायिक निर्वाचक मण्डल के जनक' (Father of Communal Electorate) के रूप में जाना जाने लगा।

1919 का भारत शासन अधिनियम

(Government of India Act - 1919)

- इस अधिनियम को 'माण्टेग्यू–चेम्सफोर्ड' सुधार के नाम से भी जाना जाता है। माण्टेग्यू तथा चेम्सफोर्ड क्रमशः तत्कालीन भारत मंत्री तथा तत्कालीन गवर्नर जनरल थे।
- केन्द्र से संबंधित विषयों को चिह्नित किया गया तथा उन्हें प्रान्तों से संबंधित विषयों से पृथक् किया गया।
- इस अधिनियम ने देश में पहली बार द्विसदनात्मक व्यवस्था (Bicamerialism) एवं प्रत्यक्ष निर्वाचन का प्रावधान किया।
- प्रान्तों में द्वैध शासन प्रणाली लायी गयी।
- इस अधिनियम के अनुसार, गवर्नर जनरल की परिषद् के 6 सदस्यों में से (कमाण्डर इन चीफ को छोड़कर) 3 सदस्यों को भारतीय होना आवश्यक था।

1935 का भारत शासन अधिनियम

(Government of India Act - 1935)

- इस अधिनियम ने प्रान्तों तथा देशी रियासतों के अखिल भारतीय संघ का प्रावधान किया।
- इस अधिनियम के तहत, केन्द्र व उसकी इकाइयों के बीच तीन सूचियों के रूप में शक्तियों का विभाजन हुआ। ये सूचियाँ हैं– संघ सूची, प्रान्त सूची तथा समवर्ती सूची।
- केन्द्र हेतु बनी संघ–सूची में 59 विषय, प्रानतों हेतु बनी प्रान्त–सूची में 54 विषय तथा दोनों के लिए बनी समवर्ती सूची में 36 विषय सम्मिलित थे।
- अवशिष्ट शक्तियाँ (Residuary Powers) गवर्नर जनरल में निहित थी।
- इस अधिनियम ने प्रान्तों में द्वैध–शासन (Dyarchy) समाप्त कर दिया तथा 'प्रान्तीय स्वायत्तता' (Provincial Autonomy) का प्रावधान किया।
- इसने केन्द्र में द्वैध–शासन को अंगीकृत करने का प्रावधान किया।
- इस अधिनियम के अनुसार 11 प्रान्तों में से 6 प्रानतों में द्विसदनात्मक व्यवस्था (Bicameralism) का आरम्भ हुआ।
- वे 6 प्रान्त थे– असम, बंगाल, बम्बई, बिहार, मद्रास तथा संयुक्त प्रान्त।

1947 का भारत स्वतन्त्रता अधिनियम

(Indian Independence Act-1947)

- इस अधिनियम ने भारत को एक स्वतन्त्र व सम्प्रभुता सम्पन्न राज्य घोषित किया।
- केन्द्र व प्रान्तों–दोनों में ही इसने उत्तरदायी सरकारें बनायी।
- भारत के गवर्नर जनरल तथा प्रान्तों के गवर्नरों की सांविधानिक प्रमुखों (वस्तुतः नाममात्र के प्रमुख) के रूप में नियुक्त किया गया।
- इसने संविधान–सभा (Constituent Assembly) के लिए दो तरह के कार्य (संविधान सम्बन्धी तथा विधायिका संबंधी) निर्धारित किए तथाइस डोमीनियन विधायिका (Cominian Legislature) को सम्प्रभुता सम्पन्न निकाय (Sovereign Body) घोषित कर दिया।

T. I. Highlights

- बंगाल का प्रथम गवर्नर रोबर्ट क्लाइव था।
- बंगाल का अंतिम गवर्नर वारेन हेस्टिंग था।
- बंगाल का प्रथम गवर्नर–जनरल **वारेन हेस्टिंग्स** (Warren Hasting) था।
- बंगाल का अंतिम गवर्नर–जनरल **विलियम बेटिंक** (William Bentinck) था।
- भारत का प्रथम गवर्नर–जनरल **विलियम बेटिंक** (William Bentinck) था।
- भारत का अंतिम गवर्नर–जनरल **लॉर्ड कैनिंग** (Lord Canning) था। (कम्पनी शासन के तहत)
- भारत का प्रथम वायसराय **लॉड कैनिंग** (Lord Canning) था।
- भारत का अंतिम वायसराय **लॉर्ड माउन्टबेटन** (Lord Mountbatten) था।
- स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर–जनरल **लॉर्ड माउन्टबेटन** (Lord Mountbatten) था।
- भारत का प्रथम भारतीय गवर्नर–जनरल **सी. राजगोपालचारी** (C. Rajgopalchari) था।
- स्वतंत्र भारत का अंतिम गवर्नर–जनरल **सी. राजगोपालचारी** (C. Rajgopalchari) था।

नोट : 1858 के बाद से भारत का गवर्नर–जनरल, 'गवर्नर जनरल' तथा 'वायसराय' दोनों नामों से जाना जाने लगा।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

स्वतंत्रता संग्राम

भारत में राष्ट्रीयता के तत्व तो पहले से ही विद्यमान थे। किन्तु उनका विकास का संगठन ब्रिटिश काल में ही हुआ। भारत में राष्ट्रीयता के विकास के अनेकानेक कारण थे। अंग्रेज भारत में केवल अपने हितार्थ ही शासन कर रहे थे। इस बात को भारतीयों ने भली–भाँति समझ लिया था। भारतीय इस बात का भी अनुभव कर रहे थे कि अंग्रेजी सरकार उन्हें किसी भी प्रकार लाभ नहीं पहुँचाएगी। अंग्रेजों की अत्याचारी एवं दमनकारी नीति से भारतीय त्रस्त हो चुके थे। डलहौजी द्वारा दत्तक पुत्र को पैतृक संपत्ति का अधिकारी न मानने के कारण भारतीयों में रोष व्याप्त था। यह रोष 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में स्पष्ट भी हो चुका था। यद्यपि इस विद्रोह का अंग्रेजी सरकार ने दमन कर दिया था, किन्तु भारतीयों ने जाग्रत राष्ट्रीयता भी भावना को वे नष्ट नहीं कर सके थे। ये भावनाएँ लगातार बलवती होती चली गई। अंग्रेजों ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार इस उद्देश्य से किया था जिससे वे भारतीय क्लर्क तैयार कर सकें किन्तु अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार से भारतीय पाश्चात्य साहित्य के संपर्क में आए। परिणामस्वरूप अब वह स्वतंत्र होने की बात सोचने लगे। अंग्रेजी गवर्नर जनरलों के प्रयासों से रेल, डाक–तार एवं टेलीफोन द्वारा समस्त भारत एक सूत्र में बँध चुका था। अतः इन साधनों ने राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1905 ई. में लॉर्ड कर्जनद्वारा बंगाल विभाजन की घोषणा ने तो आग में घी का काम किया। समस्त भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु आंदोलन की बाढ़ सी आ गई और यह बाढ़ 1947 ई. में ही जाकर शांत हुई। जब भारत पूर्णरूपेण स्वतंत्र हो गया।

प्रारंभिक राजनीतिक संगठन

बंगाल ब्रिटिश इण्डिया सोसायटी :

- इस सोसायटी की स्थापना 1843 ई. में की गई थी। जिसके अध्यक्ष एक अंग्रेज जॉर्ज थामसन थे। सोसायटी के सदस्य जमींदार थे।
- इस संस्था का उद्देश्य किसानों को उचित अधिकार प्रदान करवाना तथा जनता की उन्नति करना था।

ब्रिटिश इण्डियन सोसायटी :

- 1838 ई. में निर्मित बंगाल के जमींदारों की सभा तथा बंगाल ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी दोनों एक हो गए दोनों ने मिलकर 1851 ई. में ब्रिटिश इण्डियन सोसायटी की स्थापना की।
- इसका मुख्य उद्देश्य प्रशासन में भारतीयों के प्रतिनिधित्व की माँग करना था।

मद्रास नेटिव एसोसिएशन :

- इसकी स्थापना 1852 ई. में की गई थी।
- चूँकि इस संस्था में 1857 ई. में हुए विद्रोह की निंदा की। अतः इसे जनसमर्थन प्राप्त न हो सका।

बम्बई एसोसिएशन :

- इसमें बंबई के विभिन्न जाति और धर्मानुयायी, धनी व्यापारी तथा मध्यमवर्गीय लोग सम्मिलित थे। इसकी स्थापना 1852 में हुई थी।
- इसका मुख्य उद्देश्य भारत में सिविल सेवा परीक्षा को आयोजित करना तथा सरकारी पदों पर भारतीयों की नियुक्ति करना था।

पूना सार्वजनिक सभा :

- इस सभा की स्थापना 1870 ई. में इस उद्देश्य से की गई थी कि यह संस्था सरकार व जनता के मध्य मध्यस्थता बनाए रखेगी।

इण्डियन लीग :

- इसकी स्थापना 1875 ई. में शिशिर कुमार घोष द्वारा की गई।
- लीग का मुख्य उद्देश्य नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना को जाग्रत करना तथा उन्हें राजनीतिक शिक्षा प्रदान करना था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885) :

- यद्यपि अंग्रेजों ने 1857 में हुए विद्रोह को दबा दिया था। किन्तु वे भारतीय हृदयों में जन्मी राष्ट्रीय भावना को नहीं दबा सके।
- राष्ट्रीयता की भावना उत्तरोत्तर तीव्र होती जा रही थी। यही कारण था कि राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने हेतु देशव्यापी आंदोलन चलाने के लिए भारतीय डाक राष्ट्रीय संस्था की आवश्यकता अनुभव कररहे थे।
- 1857 के पश्चात् 1885 ई. तक अनेक संस्थाओं का निर्माण भी हुआ। किन्तु इन संस्थाओं को कुछ विशेष सफलता न मिली।
- 1879 ई. में नीति संबंधी मतभेद होने के कारण लॉर्ड लिटन ने एक अंग्रेज अधिकारी एलन ओक्टोवियम ह्यम की पदावनति की थी। इस घटना ने उसे राजनीतिक आंदोलनकारी बना दिया।
- बाद में तत्कालीन गवर्नर लॉर्ड डफरिन की सलाह पर इसी अंग्रेज अधिकारी ने भारतीय नेताओं से विचार विमर्श कर 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की पूना में इसका प्रथम अधिवेशन बुलाया जाना तय हुआ। किन्तु पूना में प्लेग फैल जाने के कारण वहाँ अधिवेशन न बुलाया जा सका।
- अतः अब पूना के स्थान पर अधिवेशन का स्थान बंबई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में प्रथम अधिवेशन हुआ।
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता व्योमेशचन्द्र बनर्जी ने की। इस अधिवेशन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- ए.ओ. ह्यूम को इस संस्था का सचिव नियुक्त किया गया।
- इस संस्था की एक शाखा 1889 ई. में इंग्लैण्ड में भी खोली गई।
- यद्यपि ए.ओ. ह्यूम ने रक्षा अर्थात् सेफ्टी वाल्व के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेज की स्थापना की थी किन्तु शीघ्र ही कांग्रेस स्वाधीनता संग्राम के लिए कटिबद्ध हो गई।
- ब्रिटिश सरकार ने पहले कांग्रेस से सहयोग किया। फिर उदासीनता का दृष्टिकोण अपनाया किन्तु बाद में विरोध के उपरांत दमन की नीति अपनाई।
- यहीं से कांग्रेस की नीति में भी परिवर्तन हो गया जो स्वतंत्रता प्राप्ति तक चलता रहा। कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् 1947 ई. तक जो स्वतंत्रता संग्राम हुआ उसका अध्ययन चार चरणों में किया जा सकता है।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

आंदोलन का प्रथम चरण या उदारवादी काल (1885–1905) :

- बंबई में हुए प्रथम अधिवेशन के पश्चात् कांग्रेस की शक्ति में लगातार वृद्धि होती गई। प्रारंभिक 20 वर्षों में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले, व्योमेश चन्द्र बनर्जी एवं पंडित मदनमोहन मालवीय ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नेतृत्व किया।
- चूँकि इन नेताओं पर ब्रिटिश उदारवाद का पूरा–पूरा प्रभाव था। अतः ये उदारवादी कहलाए तथा इनका युग उदारवादी युग कहलाया।
- उदारवादी वैधानिक तरीकों से प्रतिवर्ष कांग्रेस के अधिवेशन में पारित माँगों को समाचार–पत्रों एवं भाषणों के माध्यम से जनता में प्रसारित करते थे। याचिकाओं एवं स्मरणपत्रों को विनम्र भाषा में लिखकर गृह सरकार के समक्ष प्रस्तुत करते थे।
- अपने उदारपूर्ण तरीकों से कांग्रेस ने प्रतिवर्ष अधिवेशन कर राष्ट्रीय जागृति, राजनीतिक शिक्षा तथा भारतीयों में संगठन की भावना उत्पन्न करने का कार्य किया।
- 1892 में इण्डियन काउंसिल एक्ट पारित कराया। जिससे भारतीयों को पहले की अपेक्षा अधिक राजनीतिक अधिकार प्राप्त हुए।
- कांग्रेस में भाग लेने वाले सदस्यों की संख्या में लगातार वृद्धि होती गई, किन्तु अनेक विद्वानों न उदारवादियों की कार्यपद्धति की कटु आलोचना भी की।
- जो भी हो इतना तो सत्य है कि उदारवादियों ने अपने तरीकों से स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु संघर्ष किया।

आंदोलन का द्वितीय चरण या उग्रवादी काल (1905–1919) :

- 1905 ई. से 1919 के मध्य कांग्रेस का नेतृत्व एक नवीन उग्र विचारधारा के नेताओं यथा लोकमान्य तिलक, विपिनचन्द्रपाल, अरविन्द घोष, लाला लाजपतराय आदि द्वारा किया गया।
- बंगाल विभाजन के पश्चात् इस नवीन विचारधारा का उदय हुआ। ये लोग नरम दल के नेताओं से भिन्न विचार रखते थे।
- इन उग्रवादियों ने अपना लक्ष्य स्वराज्य प्राप्ति रखा। उनका विचार था कि स्वशासन के बिना कोई सुधार नहीं हो सकता।
- उन्होंने न तो हिंसा का आश्रय लिया और न सरकार के कानूनों की अवज्ञा की बात कही। उन्होंने मात्र सरकार के साथ असहयोग की नीति अपनाने का सुझाव दिया।
- 1907 ई. के सूरत अधिवेशन में दोनों वर्गों में टकराव हो गया।
- नरम दल के रास बिहारी घोष चुनाव जीत गए। उग्रवादी तिलक पराजित हुए। उन्हें कांग्रेस से निष्कासित भी कर दिया गया।
- 1908 में उनहें 6 वर्ष की जेल हो गई। विपिनचन्द्र पाल ने अवकाश ले लिया। उन्हें कांग्रेस से निष्कासित भी कर दिया गया।
- 1908 में उन्हें 6 वर्ष की जेल हो गई। विपिनचन्द्र पाल ने अवकाश ले लिया।
- अरविंद घोष पांडिचेरी और लाला लाजपतराय अमरीका चले गए। जब तिलक जेल से छूट कर आए तो उग्रवादियों की पुनः गतिविधियाँ शुरू हो गईं।
- 1916 ई. में उग्रवादी कांग्रेस में पुनः प्रवेश कर गए और उनका प्रभुत्व बढ़ता ही गया।
- 1905 से 1919 के बीच राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित अनेक घटनाएँ घटित हुईं।

भारतीय क्रांतिकारी संगठन

संगठन	स्थापना वर्ष	संस्थापक	स्थान
हिन्दू धर्म संघ	19वीं शता. के अंत में	चापकर बंधु	महाराष्ट्र
मित्र मेला	1899	वी. डी. सावरकर, गणेश सावरकर	महाराष्ट्र
अनुशीलन समिति	1902	वरींद्र कुमार घोष, जतींद्र नाथ बनर्जी, प्रबोध मित्र, पुलिनदास, सतीश चन्द्र बोस, प्रमथनाथ मित्र	बंगाल
अभिनव भारत समाज	1904	वी. डी. सावरकर	महाराष्ट्र
भारत माता सोसायटी	1904	जे. एम. चटर्जी	पंजाब
भारत माता समिति	1908	नीलकंठ ब्रह्मचारी, वंची अय्यर	मद्रास
आत्मोन्नति समिति	1905	विपिन बिहारी गांगुली	बंगाल
सुहद समिति	1905	मायसेन सिंह	बंगाल
साधना समिति	1905	मायसेन सिंह	बंगाल
स्वदेश बांधव समिति	1905		बारिसाल
ब्रती समिति	1906		फरीदपुर
युगांतर	1906	बरींदु घोष, भूपेंद्र नाथ दत्त	बंगाल
हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन	1924	शचींद्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल योगेश चटर्जी	उत्तर प्रदेश
नौजवान सभा	1926	भगत सिंह, छबील दास, यशपाल	पंजाब
हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन	1928	चंद्रशेखर आजाद	दिल्ली
बंगाल स्वयं सेवक संघ	1930	हेमचन्द्र घोष, लीला नाग	बंगाल
श्री संघ	1930	अनिल राय	बंगाल
इंडियन रिपब्लिकन आर्मी	1930	सूर्यसेन	बंगाल

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

विदेशों में संचालित संगठन			
इंडिया होम रूल सोसाइटी	1904	श्याम जी कृष्ण वर्मा	इंग्लैण्ड
भारतीय स्वतंत्रता लीग	1907	द्वारका नाथ दास	अमेरिका
हिंद एसोसिएशन ऑफ अमेरिका	1913	सोहन सिंह भाकना	अमेरिका
गदर पार्टी (युगांतर आश्रम)	1914	लाला हरदयाल, रामचंद्र, बरकतुल्ला	अमेरिका
इंडियन इंडिपेडेन्स लीग	1914	लाला हरदयाल, वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय	जर्मनी
इंडियन इंडिपेडेन्स लीग और स्वतंत्र सरकार	1915	राजा महेंद्र प्रताप	अफगानिस्तान
इंडियन इंडिपेंडेन्स लीग	1942	रास बिहारी बोस	जापान
आजाद हिंद फोज	1942	रास बिहारी बोस	जापान
हिंद संघ	1913	सोहन सिंह भाकना	अमेरिका

बंगभंग (बंगाल विभाजन) 1905 :

- बंगाल में बढ़ती हुई राष्ट्रीय चेतना से ब्रिटिश सरकार चिंतित हो उठी। अतः तत्कालीन गवर्नर लॉर्ड कर्जन ने बाँटो एवं राज्य करो की नीति का अनुसरण किया।
- राष्ट्रीय भावनाओं को कुचलने के उद्देश्य से उसने 20 जुलाई, 1905 ई. में बंगाल विभाजन कर हिन्दू एवं मुसलमानों में फूट डाल दी।
- लॉर्ड कर्जन द्वारा किया गया बंगाल विभाजन भारत की राष्ट्रीयता पर धूर्ततापूर्ण आक्रमण था। इस विभाजन का सर्वत्र विरोध हुआ।
- इस आंदोलन से सभी वर्ग के लोग प्रभावित हुए सरकार ने इस आंदोलन को दबाने का असफल प्रयास किया।
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने समस्त भारत का भ्रमण किया। कांग्रेस ने प्रतिवर्ष बंगभंग के विरोध में प्रस्ताव पारित किए।
- 1911 में बंगभंग को सरकार ने रद्द कर दिया। अविभाजित बंगाल की पुनः स्थापना हो गई।

स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन (1905) :

- स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन चलाया गया। जगह–जगह सभाएँ आयोजित की गईं।
- वंदेमातरम् का गान करती हुईं अनेक टोलियाँ जुलूस के रूप में निकाली।
- आंदोलनकारियों ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करके स्वदेशी आंदोलन चलाया अनेक स्थलों पर भारतीयों ने विदेशी कपड़ों की होली जलाकर अंग्रेजी सरकार के समक्ष अपना विरोध प्रकट किया।
- गोपालकृष्ण गोखले ने ब्रिटिश सरकार के समख लंदन जाकर बंगाल विभाजन रद्द करने की प्रार्थना की। किन्तु गोखले की प्रार्थना कर अंग्रजों ने कोई ध्यान नहीं दिया।
- चूँकि अंग्रेजी सरकार ने इस आंदोलन को दबाने के लिए दमन का सहारा लिया। परिणामतः उग्रवाद युग का प्रारंभ हुआ।

मुस्लिम लीग का उदय (1906) :

- राष्ट्रीय आंदोलन की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने के उद्देश्य से फूट डालो और शासन करो की नीति का अनुसरण कर बंगाल विभाजन कर दिया।
- यहीं से अंग्रेज कुछ हद तक अपने उद्देश्य में सफल हो गए। हिन्दू एवं मुसलमानों के बीच मतभेद उत्पन्न हो गए।
- मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खाँ ने मुसलमानों को पृथक निर्वाचन एवं विभिन्न सेवाओं में उचित प्रतिनिधित्व के लिए उकसाया।
- लॉर्ड मिण्टो ने इसका समर्थन किया। परिणामस्वरूप 30 दिसम्बर, 1906 में ढाका में अंग्रेज समर्थक मुसलमानों ने नवाब बकासल मुल्क की अध्यक्षता में मुस्लिम लीग की स्थापना की। जिसके प्रमुख उद्देश्य थे–
  1. भारतीय मुसलमानों को ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार बनाना और
  2. भारतीय मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों और हितों की रक्षा करना प्रारंभ में लीग साम्प्रदायिकता नीति का अनुसरण करती रहीं। किन्तु बाद में इसकी नीतियों में कुछ परिवर्तन हुआ और लीग कांग्रेस के समीप आई।

सूरत अधिवेशन (1907) :

- बंगभंग के पश्चात् गोखले ने लंदन जाकर ब्रिटिश सरकार के समक्ष बंगाल विभाजन रद्द करने की प्रार्थना की। जब उनकी प्रार्थना पर ब्रिटिश सरकार द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया गया। तब एक नवीन उग्र विचारधारा का जन्म हुआ।
- लाला लाजपतराय, विपिनचंद्र पाल, बालगंगाधर तिलक इस विचारधारा के प्रमुख समर्थक तथा उदारवादी नीतियों के विरोधी थे।
- 1907 के **सूरत अधिवेशन** में मतभेद और स्पष्ट हो गए अब कांग्रेस दो दल– नरमदल और उग्र दल में विभाजित हो गई।
- अंग्रेजी सरकार ने मार्लेमिण्टो सुधारों द्वारा उदारवादियों को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया।

मार्ले मिण्टो सुधार (1909) :

- भारत सचिव मार्ले ने लॉर्ड मिण्टो से बातचीत करके 1909 ई. में एक सुधार अधिनियम पारित करवाया। जो मार्ले मिण्टो सुधार के नाम से जाना जाता है।
- इस एक्ट के द्वारा केन्द्रीय व प्रांतीय सभाओं की सदस्य संख्या तथा उनके अधिकारों में भी कुछ वृद्धि की गई।
- हिन्दु एवं मुसलमानों के लिए अलग–अलग निर्वाचन क्षेत्रों की व्यवस्था की गई। अंग्रेजों की इस नीति ने ही पाकिस्तान का बीजारोपण कर दिया।
- अंग्रेजी सरकार के इन सुधारों से भारतीय प्रसन्न नहीं हुए। केवल अलीगढ़ विचारधारा के मुसलमान पृथक निर्वाचन क्षेत्र सुविधा से प्रसन्न हुए मार्ले–मिण्टो सुधार अधिनियम के उदारवादी नेताओं में भी निराशा फैल गई।

THE EXAM NEXT

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

राजद्रोह सभा अधिनियम (1911) :

- मार्ले मिण्टो सुधार अधिनियम से उग्रवादी सर्वाधिक असंतुष्ट हो गए। अंग्रेजी सरकार के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियाँ और तेज हो गईं।
- इन गतिविधियों के दमन हेतु ब्रिटिश सरकार ने 1911 ई. में राजद्रोह सभा अधिनियम पारित किया।
- लाला लाजपतराय, अजीतसिंह व अनेक क्रांतिकारी नेताओं को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

दिल्ली दरबार (1911) :

- लॉर्ड हार्डिंग ने 1911 ई. में दिल्ली में एक भव्य दरबार का आयोजन किया। इस दरबार में इंग्लैण्ड से सम्राट जॉर्ज पंचम तथा महारानी मेरी को बुलाया गया।
- दरबार में बंगाल विभाजन के रद्द होने की घोषणा की गई साथ ही यह भी घोषित किया गया कि अब भारत की राजधानी कलकत्ता के स्थान पर दिल्ली होगी।
- बांग्ला भाषा क्षेत्र को एक प्रांत बना दिया गया तथा एक अन्य घोषणा से बिहार व उड़ीसा के नाम से एक नवीन प्रांत बनाया गया।

आधुनिक भारत एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय गठित महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं सामाजिक संगठन तथा संस्थाएँ

संस्था	स्थापना वर्ष	संस्थापक
एशियाटिक सोसाइटी	1784 ई.	विलियम जोन्स
आत्मीय सभा	1815 ई.	राजा राममोहन राय
वेदान्त कॉलेज	1825 ई.	राजाा राममोहन राय
युवा बंगाल आन्दोलन	1826 ई.	हेनरी लुई विवियन डेरोजियो
ब्रह्म समाज	1828 ई.	राजा राममोहन राय
तत्त्वबोधिनी सभा	1839 ई.	देवेन्द्रनाथ ठाकुर
ब्रिटिश सार्वजनिक सभा	1843 ई.	दादाभाई नौरोजी
परमहंस सभा	1849 ई.	दादोबा पाण्डुरंग
रहनुमाई माजदायान सभा	1851 ई.	दादा भाई नौरोजी
बालिका विद्यालय	1851 ई.	ज्योतिबा फूले
मोहम्मडन एंग्लो लिटरेरी सोसायटी	1863 ई.	अब्दुल लतीफ
साइण्टिफिक सोसायटी	1864 ई.	सर सैयद अहमद खाँ
इण्डियन एसोसिएशन	1866 ई.	दादाभाई नौरोजी
पूना सार्वजनिक सभा	1867 ई.	एम. जी. रानाडे
प्रार्थना समाज	1867 ई.	एम. जी. रानाडे, आत्माराम पाण्डुरंग
वेद समाज	1867 ई.	श्री घरलू नायडू
अलीगढ़ मोहम्मडन एंग्लो ओरिएण्टल कॉलेज	1875 ई.	सर सैयद अहमद खाँ
इण्डियन लीग	1875 ई.	शिशिर कुमार घोष
आर्य समाज	1875 ई.	स्वामी दयानन्द सरस्वती
इण्डियन एसोसिएशन	1876 ई.	आनन्दमोहन बोस, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
थियोसोफिकल सोसायटी	1882 ई.	मैडम ब्लावट्स्की एवं कर्नल अल्काट
यूनाइटेड इण्डियन कमेटी	1883 ई.	व्योमेशचन्द्र बनर्जी
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	1885 ई.	ए. ओ. ह्यूम
बॉम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन	1885 ई.	फिरोजशाह मेहता, तैलंग तथा तैयबजी
वेलूर मठ	1887 ई.	स्वामी विवेकानन्द
इण्डियन सोशल कॉन्फ्रेंस	1887 ई.	महादेव गोविन्द रानाडे
शारदा सदन	1889 ई.	रमाबाई
रामकृष्ण मिशन	1897 ई.	स्वामी विवेकानन्द
सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी	1905 ई.	गोपाल कृष्ण गोखले
मुस्लिम लीग	1906 ई.	आगा खाँ एवं सलीमुल्लाखान
अभिनव भारती	1906 ई.	विनायक दामोदर सावरकर
अनुशीलन समिति	1907 ई.	बारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र दत्त
सोशल सर्विस लीग	1911 ई.	नारायण मल्हार जोशी
विश्व भारती	1912 ई.	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
गदर पार्टी	1913 ई.	लाला हरदयाल, काशीराम
हिन्दू महासभा	1915 ई.	मदन मोहन मालवीय, लाला लाजपत राय एवं केलकर
होमरूल लीग	1916 ई.	तिलक एवं ऐनी बेसेन्ट
वीमेन्स इण्डिया एसोसिएशन	1917 ई.	लेडी सदाशिव अय्यर

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

खिलाफत आन्दोलन	1919 ई.	अली बन्धु
अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन	1920 ई.	एन.एम. जोशी
स्वराज पार्टी	1923 ई.	मोतीलाल नेहरू एवं चितरंजन दास
बहिष्कृत हितकारिणी सभा	1924 ई.	बी. बार. अम्बेडकर
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	1927 ई.	डॉ. हेडगेवार एवं बी. एस. मुंजे
हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी	1928 ई.	भगत सिंह एवं चन्द्रशेखर आजाद
स्वतन्त्र श्रमिक पार्टी	1936 ई.	बी. आर. अम्बेडकर
खुदाई खिदमतगार	1937 ई.	खान अब्दुल गफ्फार खाँ
फॉरवर्ड ब्लॉक	1939 ई.	सुभाषचन्द्र बोस
आजाद हिन्द फौज	1942 ई.	रास बिहारी बोस
आजाद हिन्द सरकार	1943 ई.	सुभाषचन्द्र बोस

गदर दल का गठन (1913) :

- 1 नवम्बर, 1913 ई. को संयुक्त राज्य अमरीका स्थित सान फ्रांसिस्को नगर में पंजाब के महान क्रांतिकारी नेता लाला हरदयाल ने रामचन्द्र तथा बरकतुल्ला के सहयोग से गदर दल का गठन किया।
- अन्य देशों में भी इसकी शाखाएँ खोली गईं। रास बिहारी बोस, राजा महेन्द्रप्रताप, अब्दुल रहमान तथा कामा आदि इस दल के प्रमुख सदस्य थे।
- प्रथम विश्व युद्ध आरंभ होने पर लाला हरदयाल जर्मनी चले गए। यहाँ बर्लिन में उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता समिति का गठन किया।

लखनऊ पैक्ट (1916) :

- मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, मौलाना मोहम्मद अली, शौकत अली आदि अनेक ऐसे मुस्लिम नेता हुए, जो साम्प्रदायिक नीति के विरूद्ध थे।
- बाल्कान युद्ध के पश्चात् लीग अंग्रेजों से रूष्ट थी। अतः 1913 के अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने अपने लखनऊ अधिवेशन में स्वराज्य प्राप्त करने का प्रस्ताव पारित किया।
- इस प्रकार बदलती हुई परिस्थितियाँ तथा हिन्दू–मुस्लिम नेताओं के सहयोग से 1916 में लखनऊ में कांग्रेस व लीग के मध्य एक समझौता हुआ। जो लखनऊ पैक्ट के नाम से जाना जाता है।
- इसी अधिवेशन में दोनों संस्थाओं में मेल करने के उद्देश्य से कांग्रेस व लीग ने एक संयुक्त समिति बनाकर एक योजना तैयार की। इस योजना को कांग्रेस लीग योजना कहा जाता है।
- इस समझौते में मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की माँग को मान लिया गया। जिसके बाद अत्यंत ही घातक परिणाम निकले।
- इसी अधिवेशन में तिलक को आमंत्रित कर उग्रवादियों को कांग्रेस में शामिल कर लिया गया।

होमरूल आंदोलन (1916) :

- 1914 ई. में जेल से रिहा होने के पश्चात बाल गंगाधर तिलक ने उग्रवादियों को संगठित करना प्रारंभ किया।
- 1916 ई. में उन्होंने श्रीमती ऐनी बेसेन्ट के साथ मिलकर स्वशासन की प्राप्ति हेतु होमरूल आंदोलन चलाया।
- श्रीमती ऐनी बेसेन्ट की प्रेरणा से 28 अप्रैल, 1916 ई. को पूना में प्रथम होमरूल लीग की स्थापना की।
- सितम्बर, 1916 में श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने मद्रास में होमरूल लीग की स्थापना की।
- **तिलक** ने अपने **'मराठा'** तथा **'केसरी'** व **ऐनी बेसेन्ट** ने अपने **'कॉमन'** तथा **'न्यू इण्डिया'** समाचार पत्रों के माध्यम से गृह शासन की जोरदार माँग का प्रचार किया व शीघ्र ही यह आंदोलन समस्त भारत में फैल गया।
- अंग्रेजी सरकार ने इस आंदोलन को कठोरता से दबाना प्रारंभ किया। 1917 ई. में अंग्रेजी सरकार ने विद्यार्थियों को इस आंदोलन से दूर रहने की चेतावनी दी। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट को गिरफ्तार कर लिया गया।
- उनकी गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए तिलक सत्याग्रह शुरू ही करने जा रहे थे कि ऐनी बेसेन्ट को सरकार ने रिहा कर दिया।
- यही नहीं 20 अगस्त, 1917 को ब्रिटिश संसद में भारत सचिव द्वारा यह घोषणा की गई कि भारत को उत्तरदायी शासन दिया जाएगा। परिणामस्वरूप यह आंदोलन समाप्त हो गया।

रौलट एक्ट अथवा काला कानून (1919) :

- भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने न्यायाधीश रौलट की। अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की।
- फरवरी 1919 में रौलट ने दो विधेयक प्रस्तावित किए। जो पारित होने के पश्चात् रौलट एक्ट के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- अनेक भारतीय नेताओं द्वारा इस कानून का विरोध किया गया, किन्तु सरकार ने 21 मार्च, 1919 ई. को इसे लागू कर दिया।
- इस एक्ट के अनुसार किसी भी व्यक्ति को संदेह मात्र होने पर उसे गिरफ्तार किया जा सकता था अथवा गुप्त मुकदमा चलाकर अपराधी को दण्डित किया जा सकता था।
- इस एक्ट को भारतीयों ने काले कानून की संज्ञा दी। संपूर्ण भारत में इस एक्ट के विरूद्ध प्रदर्शन हुआ।
- महात्मा गाँधी जो अब तक भारतीय राजनीति में सक्रिय हो चुके थे, ने अप्रैल, 1919 में देशव्यापी हड़ताल रखा तथा जुलूस निकाले।
- दिल्ली में स्वामी श्रद्धानंद ने जुलूस का नेतृत्व किया। दिल्ली रेलवे स्टेशन के निकट अंग्रेजों ने जुलूस पर गोली चला दी, जिससे 5 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।
- लाहौर तथा पंजाब में उपद्रव हुए **स्वामी श्रद्धानंद** एवं पंजाब के नेता **डॉ. सत्यपाल** के कहने पर गाँधी ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। पलवल में गाँधीजी को ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार कर बंबई भेज दिया। इस एक्ट से भारतीयों में और अधिक राष्ट्रीय भावना जाग्रत हो गई।

जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड (1919) :

- महात्मा गाँधी की गिरफ्तारी से जनता में और अधिक उत्तेजना फैल गई।
- अंग्रेजी सरकार ने भारतीयों के विद्रोह को दबाने के उद्देश्य से अमृतसर के दो प्रसिद्ध नेताओं डॉ. किचलू एवं डॉ. सत्यपाल को गिरफ्तार कर अज्ञात स्थान पर भेज दिया।

THE ANSWER

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- इससे विद्रोह शांत होने के बजाय और भड़क उठा। जब भीड़ अपने नेताओं के संबंध में जानकारी हासिल करने जिला मजिस्ट्रेट की कोठी पर आ गई तो सैनिक अधिकारियों ने भीड़ पर गोली चला दी। गोली से दो व्यक्ति मारे गए।
- उत्तेजित भीड़ ने एक बैंक में आग लगाकर वहाँ के अंग्रेज मैनेजर की हत्या कर दी।
- 10 अप्रैल, 1919 का अमृतसर का शासन सैनिक अधिकारियों को सौंप दिया गया। 13 अप्रैल बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियावाला बाग में भारतीयों द्वारा एक आम सभा का आयोजन किया गया।
- जब सभा चल रही थी, तब अंग्रेज जनरल डायर ने उसे गैर कानूनी घोषित कर भीड़ पर बिना चेतावनी दिए गोली चला दी।
- जिसमें लगभग 400 व्यक्ति मारे गए तथा दो हजार के आसपास घायल हुए।
- किन्तु वास्तव में मरने वालों व घायलों की संख्या कहीं इससे अधिक थी।
- भारतीय इतिहास में यह घटना जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के नाम से प्रख्यात है। इस घटना से अंग्रेज और भारतीयों के बीच वैमनस्यता और अधिक बढ़ गई। इस घटना का संपूर्ण भारत पर असर पड़ा।

आंदोलन का तीसरा चरण और महात्मा गाँधी (1919–1929) :

- स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के तीसरे चरण में गाँधीजी का सक्रिय राजनीति में प्रवेश हुआ। इस दौरान उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अनेक आंदोलन किए।
- इससे पूर्व 1894 ई. तक गाँधीजी अफ्रीका में रहे। वहाँ उन्होंने जातीय भेदभाव के विरूद्ध सफल सत्याग्रह आंदोलन चलाया।
- 1915 में भारत आकर गाँधीजी भारतीय राजनीति में प्रविष्टि हुए।
- 1916 ई. में अहमदाबाद के समीप साबरमती आश्रम की स्थापना की।
- 1917 में बिहार स्थित चंपारन में किसान आंदोलन चलाया।
- 1918 में खेड़ा में कर नहीं (No Taxation) आंदोलन चलाया तथा अहमदाबाद में मिल मजदूरों की लड़ाई लड़ी।
- प्रारंभ में गाँधीजी भारत में संवैधानिक सुधारों के हिमायती थे इसीलिए उन्होंने तिलक एवं एनी बेसेन्ट द्वारा चलाए गए होमरूल लीग आंदोलन में भाग नहीं लिया।
- किन्तु 1919 के अमृतसर अधिवेशन के बाद गाँधीजी ने अंग्रेजी शासक के खिलाफ खुलकर आवाज उठाई और भारतीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया। आंदोलन के इस तृतीय चरण में अनेक घटनाएँ घटित हुईं।

खिलाफत आंदोलन (1919–1922) :

- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने भारतीय मुसलमानों को उनके धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया था, किन्तु उन्होंने वचन का पालन नहीं किया और टर्की में **"खलीफा"** के पद को समाप्त कर मुसलमानों द्वारा विरोध किया गया।
- प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार ने तुर्की साम्राज्य का विघटन करने का निश्चय किया जिसके कारण भारत में खिलाफत आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और 17 अक्टूबर, 1919 ई. को अखिल भारतीय स्तर पर खिलाफत दिवस मनाया गया और आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। 10 अगस्त, 1920 ई. को सम्पन्न सीवर्स संधि के बाद तुर्की का विभाजन हो गया।
- मौलाना मोहम्मद अली और शौकत अली ने खिलाफत कमेटी का गठन कर अंग्रेजों के खिलाफ खिलाफत आंदोलन प्रारंभ कर दिया।
- इस आंदोलन का समर्थन कांग्रेस द्वारा किया गया, क्योंकि महात्मा गाँधी के विचार से अंग्रेजों के खिलाफ हिन्दू और मुसलमानों के एक होने का यह स्वर्णिम अवसर था।
- जब मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में टर्की में खलीफा की सत्ता समाप्त कर दी गई तो 1922 में यह आंदोलन स्वतः ही समाप्त हो गया।

असहयोग आंदोलन (1920–1922) :

- गाँधीजी को रौलट एक्ट एवं मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार में बड़ा आघात लगा मुसलमानों ने भी खिलाफत कमेटी का गठन कर खिलाफत आंदोलन शुरू किया।
- इस आंदोलन में उन्हें कांग्रेस का सहयोग मिला। हिन्दू और मुसलमान पुनः एक हुए।
- गाँधीजी ने अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आंदोलन चलाने का निश्चय किया।
- सितम्बर, 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया। इस अधिवेशन में गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव रखा। देशबंधु चितरंजन दास एवं मदनमोहन मालवीय ने इस प्रस्ताव का विरोध किया किन्तु मोतीलाल नेहरू एवं अली बंधुओं के समर्थन से प्रस्ताव पारित हो गया।
- गाँधीजी एवं अली बंधुओं ने समस्त भारत का भ्रमण कर आंदोलन का वातावरण तैयार कर लिया। दिसंबर, 1920 ई. के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में इस प्रस्ताव की पुष्टि कर दी गई।

असहयोग आंदोलन का आरंभ :

- प्रस्ताव पारित होने के पश्चात् गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन प्रारंभ कर दिया। इस आंदोलन में भारत का अपार जनसमूह गाँधीजी के साथ था।
- आंदोलनकारियों ने सरकारी उपाधियों को त्याग दिया। वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया। विद्यार्थियों द्वारा स्कूल एवं विद्यालय त्याग दिए गए। विदेशी वस्त्रों का परित्याग कर जगह–जगह होली जलाई गई। देशी वस्त्रों को अपनाया गया।
- 1921 ई. में अहमदाबाद में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में आंदोलन को और अधिक तेज करने का निर्णय लिया गया।
- गाँधीजी ने पत्र द्वारा वायसराय लॉर्ड रीडिंग को सूचित किया कि यदि सरकार ने अपना रवैया न बदला तो शीर्घ ही कर न देने का आंदोलन चलाया जाएगा।

चौरी–चौरा काण्ड एंव असहयोग आंदोलन की समाप्ति :

- गाँधीजी ने **कर न देने** का आंदोलन चलाने के लिए ब्रिटिश सरकार को एक सप्ताह का समय दिया था। यह समय अभी पूरा भी नहीं हुआ था कि 5 फरवरी 1922 ई. को उत्तर प्रदेश स्थित गोरखपुर जिले के चौरी–चौरा ग्राम में विरोधस्वरूप कांग्रेस के द्वारा एक जुलूस को रोकने का प्रयास किया जिससे जनता और जुलिस में मुठभेड़ हो गई पुलिस भागकर थाने में छिप गई अब उत्तेजित भीड़ ने थाने को घेर कर उसमें आग लगा दी।
- जनता की इस हिंसात्मक कार्यवाही में एक थानेदार व 21 सिपाही जलकर राख हो गए। इस हिंसात्मक घटना से गाँधीजी को बहुत दुख पहुँचा, क्योंकि वे अहिंसा के पुजारी थे।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- गाँधीजी ने 12 फरवरी को बारदौली में कांग्रेस कार्य समिति की एक बैठक बुलाई, जिसमें चौरी–चौरा काण्ड के कारण सामूहिक सत्याग्रह व असहयोग आंदोलन स्थगित करने का प्रस्ताव पारित कराया।
- प्रस्ताव में रचनात्मक कार्यक्रमों पर जोर दिया गया। इस प्रकार गाँधीजी का असहयोग आंदोलन स्थगत हो गया।
- इनेक भारतीय नेताओं द्वारा गाँधीजी के इस कदम की कटु आलोचना हुई तथा वे कुछ समय के लिए अलोकप्रिय भी हो गए।
- उनकी अलोकप्रियता का लाभ उठाकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 10 मार्च, 1922 ई. को गिरफ्तार कर 6 वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया। किन्तु बिमारी के कारण उन्हें समय से पूर्व 5 फरवरी, 1924 को रिहा कर दिया गया।
- उनकी गिरफ्तारी के साथ ही भारत में असहयोग आंदोलन स्वतः ही समाप्त हो गया।

स्वराज्य दल की स्थापना (1923) :

- चौरी–चौरा काण्ड से व्यथित होकर गाँधी ने अपना असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया। इस समय लगभग सभी बड़े कांग्रेसी नेता जेल में कैद थे।
- असहयोग आंदोलन के स्थगन से स्वराज्य प्राप्ति की मंजिल दूर हो गई थी।
- जनता के मार्ग निर्देशन के लिए किसी नए कार्यक्रम की आवश्यकता थी। अतः जेल से छूटने के बाद चितरंजनदास ने कौंसिल प्रवेश का प्रचार किया।
- 1922 ई. में गया में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में डॉ. अंसारी एवं राजगोपालाचारी से दिसम्बर 1922 में मतभेद होने के कारण चितरंजन दास ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया तथा इलाहाबाद में मोतीलाल नेहरू एवं चितरंजन दास ने मार्च, 1923 में स्वराज्य पार्टी स्थापना की और पार्टी के कार्यक्रमों का प्रचार करने के लिए देश का तूफानी दौर किया।
- 1923 के चुनाव में इस पार्टी ने भाग लिया और सफलता प्राप्त की तथा विधान सभा में सम्मिलित होकर सरकार के समक्ष परेशानियाँ उत्पन्न की।

साइमन कमीशन का बहिष्कार (1927) :

- 1919 के अधिनियम में यह बात कही गई थी कि भारत में संवैधानिक सुधार हेत प्रति दस वर्ष बाद एक कमीशन की नियुक्ति की जाएगी। जो प्रशासनिक सुधार की जाँच कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।
- इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु ब्रिटिश संसद ने एक वकील सर जान साइमन की अध्यक्षता में सात सदस्यीय दल भारत भेजा।
- इस कमीशन का एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। भरत में साइमन कमीशन का जगह–जगह पर काले झण्डे दिखाकर विरोध प्रदर्शित किया गया।
- साइमन वापस जाओ के नारे लगाए गए। लाहौर में लाला लाजपतराय के नेतृत्व में विरोध किया गया। जब वे जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे, तो अंग्रेजों द्वारा जुलूस पर लाठी प्रहार किया गया। इस लाठी प्रहार में लाला लाजपतराय गंभीर रूप से घायल हुए और उनकी मृत्यु हो गई।
- व्यापक विरोध के बावजूद भी साइमन कमीशन ने दो बार भारत का दौरा किया। साइमन कमीशन की रिपोर्ट मई, 1930 ई. में प्रकाशित हुई। जिसमें निम्नलिखित बातें कहीं गई–

साइमन कमीशन की रिपोर्ट– मुख्य सुझाव :

1. प्रांतों में दोहरा शासन समाप्त करके प्रांतों में उत्तरदायी शासन स्थापित किया जाए।
2. केन्द्रीय शासन में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जाए।
3. भारत के लिए संघीय शासन की स्थापना की जाए।
4. उच्च न्यायालय को भारतीय सरकार के अधीन कर दिया जाए।
5. अल्पसंख्यकों के हितों के लिए गवर्नर व गवर्नर जनरल को विशेष शक्तियाँ प्रदान की जाए।
6. प्रांतीय विधानमण्डलों के सदस्यों की संख्या में वृद्धि कर दी जाए।
7. वर्मा को भारत से पृथक कर दिया जाए तथा सिंघ एवं उड़ीसा को नए प्रांत के रूप में मान्यता प्रदान की जाए।
8. संघ की स्थापना से पहले भारत में एक वृहदत्तर भारतीय परिषद् की स्थापना की जाए।
9. रिपोर्ट में मताधिकार के विस्तार की सिफारिश की गई।
10. प्रत्येक दस वर्ष पश्चात् भारत की संवैधानिक प्रगति की जाँच को समाप्त कर दिया जाए तथा ऐसा नवीन लचीला संविधान बनाया जाए। जो स्वतः विकसित होता रहे।

यद्यपि साइमन कमीशन की बातों की तीखी आलोचना हुई तथा सर शिवस्वामी आयर द्वारा इसे रद्दी की टोकरी में फेंकने लायक बताया गया, किन्तु फिर भी इस कमीशन की अनेक बातों को 1935 ई. के अधिनियम में अपना लिया गया।

वारदोली सत्याग्रह :

- गुजरात स्थित वारदोली के किसानों को जब जमींदारों द्वारा अधिक लगान वसूल कर उत्पीड़ित किया गयातो लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सन् 1928 ई. में किसानों को संगठित कर सत्याग्रह किया।

लाहौर अधिवेशन और पूर्ण स्वतंत्रता की माँग (1929) :

- 1929 में हुए लाहौर के कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने की।
- चूँकि ब्रिटिश सरकार ने नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकृत कर दिया था। अतः लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव स्वीकार किया गया।
- 31 दिसम्बर, 1929 की रात्रि के 12 बजे कांग्रेस ने भारत का तिरंगा झण्डा फहराया और कांग्रेस कमेटी को अधिकार दिया कि वह उपर्युक्त अवसर पर सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ कर दे।
- यह भी तय किया गया कि प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस मनाया जाए। यही कारण है कि 26 जनवरी का दिन भारतीय इतिहास में विशेष महत्व का माना जाता है। आगे चलकर भारत का नवनिर्मित संविधान भी 26 जनवरी को ही लागू किया गया और 26 जनवरी का दिन गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

आंदोलन का चतुर्थ चरण (1929–1939) :

आंदोलन के चतुर्थ चरण में निम्नलिखित घटनाएँ घटित हुईं–

सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं डांडी मार्च :

- असहयोग आंदोलन असफल होने के पश्चात् गाँधीजी शांत नहीं बैठे। अब उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्धारित लगान, मद्य–निषेध, नमक कर, सैनिक व्यय संबंधी नीतियों के विरूद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया।
- 12 मार्च, 1930 को गाँधीजी अपने चुन हुए 78 साथियों के साथ ब्रिटिश सरकार की अवज्ञा करने के लिए गुजरात प्रदेश के समुद्र तट पर डांडी नामक स्थान की ओर नमक कानून तोड़ने के लिए चल पड़े।
- साबरमती आश्रम से डांडी समुद्र तट की 241 मील की यात्रा पैदल चलकर 24 दिनों में तय की गई। इस यात्रा में सरदार पटेल भी गाँधीजी के साथ थे।
- 5 अप्रैल, 1930 को गाँधीजी डांडी पहुँच गए और 6 अप्रैल को प्रातः प्रार्थना के बाद गाँधीजी ने नमक कानून तोड़ा।
- सुभाष चन्द्र बोस ने गाँधीजी की डांडी यात्रा को नेपोलियन के पेरिस मार्च और मुसोलिनी के रोम मार्च के समान बताया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन का कार्यक्रम :

महात्मा गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा का निम्नलिखित कार्यक्रम निश्चित किया–

1. भारतवासियों को नमक बनाना चाहिए।
2. हिन्दुओं को अस्पृश्यता को त्याग देना चाहिए।
3. विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाए।
4. शराब की दुकानों पर धरना दिया जाए।
5. सरकारी कर्मचारी अपने कार्यालय का त्याग करें।
6. विद्यार्थियों द्वारा सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार किया जाना चाहिए।

5 मई, 1930 को गाँधीजी को गिरफ्तार करने के बाद करबंदी को भी उपर्युक्त कार्यक्रम में शामिल कर लिया गया।

प्रथम गोलमेज–सम्मेलन (1930) :

- भारत की संवैधानिक समस्या को सुलझाने के लिए लंदन में 12 नवम्बर, 1930 को प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड की अध्यक्षता में प्रथम गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया।
- इसमें भाग लेने वाले कुल 89 प्रतिनिधियों में से 16 प्रतिनिधि ब्रिटिश थे।
- संसद ने भी यह अनुभव किया कि बिना कांग्रेस के किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा जा सकता अतः ब्रिटिश सरकार ने वायसराय इरविन को आदेश दिया कि वे गाँधीजी से समझौता करें।
- 5 मार्च, 1931 को गाँधी व इरविन के बीच एक समझौता हुआ, जो **गाँधी इरविन समझौता** के नाम से जाना जाता है।

इस समझौते में इरविन द्वारा स्वीकार की जाने वाली बातें थीं–

1. केवल उन्हीं राजनीतिक बंदियों को जेल में रखा जाए जिन पर हिंसक आरोप है। शेष बंदियों को जेल में रखा जाए। जिन पर हिंसक आरोप है। शेष बंदियों को रिहा कर दिया जाए।
2. भारतीय समुद्र के किनारे नमक बना सकते हैं।
3. शराब एवं विदेशी कपड़ों की दुकान पर भारतीय धरना दे सकते हैं।
4. जिन सरकारी कर्मचारियों ने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दिया है। उन्हें पद पर बहाल करने में सरकार उदारता दिखाएगी।

इस समझौते में कांग्रेस की ओर से महात्मा गाँधीजी द्वारा स्वीकार की जाने वाली बातें थी–

1. सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित कर दिया जाएगा।
2. लंदन में आयोजित होने वाले द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस भाग लेगी।
3. कांग्रेस ब्रिटिश सामान का बहिष्कार नहीं करेगी।
4. गाँधीजी पुलिस द्वारा की गई ज्यादतियों के बारे में जाँच की माँग नहीं करेंगे।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931) :

- गाँधी–इरविन समझौते के पश्चात् जब लंदन में 7 सितम्बर, 1931 को द्वितीय गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया तो कांग्रेस की ओर से गाँधीजी इस सम्मेलन में पहुँचे।
- वहाँ डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं जिन्ना आदि ने ब्रिटिश सरकार के इशारे पर स्वराज्य के स्थान पर अपनी–अपनी जातियों के लिए सुविधाओं की माँग की। इससे गाँधीजी को बहुत दुःख पहुँचा और वे खाली हाथ लौट आए।

सविनय अवज्ञा आंदोलन पुनः प्रारंभ :

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से लौटकर गाँधीजी ने पुनः सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ कर दिया।
- यह आंदोलन 1934 तक चलता रहा। अप्रैल 1934 में जनता के कम होते हुए उत्साह को देखकर यह आंदोलन स्थगित कर दिया गया।

तृतीय गोलमेज सम्मेलन (1932) :

- 1932 में लंदन में तीसरा एवं अंतिम गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में पुनः कांग्रेस ने भाग लिया।
- तीनों गोलमेज सम्मेलनों की सिफारिशों के आधार पर ब्रिटिश सरकार ने श्वेत पत्र प्रकाशित किया।
- ब्रिटिश संसद की प्रवर समिति की रिपोर्ट व कुछ संशोधनों के पश्चात् संसद ने 1935 का भारत शासन अधिनियम पारित किया। जो आंशिक संशोधन के पश्चात् भारत में नवीन संविधान लागू होने से पूर्व तक लागू रहा।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

गोलमेज सम्मेलन (1930–32)

सम्मेलन	तिथि	वायसराय	उद्देश्य	टिप्पणी
1. प्रथम	1930 (12 दिसम्बर, 1930 से 19 जनवरी, 1931)	लॉर्ड इरविन	साइमन कमीशन के सुझावों पर विचार करने के लिए	(1) कांग्रेस ने इस सम्मेलन में भाग नहीं लिया। (2) इसकी अध्यक्षता ब्रिटिश प्रधानमंत्री राम्से मैकडोनाल्ड ने की। (3) इसमें कुल 89 सदस्य शामिल हुए। (4) इस सम्मेलन में तीन सिद्धांतों पर सहमति हुई। (i) एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना, (ii) संघीय सरकार संघीय विधायिका के प्रति उत्तरदायी हो तथा (iii) प्रांतों को पूर्ण स्वायत्तता दी जाए।
2. द्वितीय	17 सितंबर से 1 दिसंबर, 1931	लॉर्ड विलिंग्डन	संघीय ढांचे पर विचार करने तथा अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा हेतु।	(1) कांग्रेस ने इसमें भाग लिया, (2) कुल 107 सदस्य इसमें शामिल हुए, (3) किसी भी मुद्दे पर सहमति नहीं हो पाई।
3. तृतीय	17 नवम्बर से 24 दिसम्बर, 1932	लॉर्ड विलिंग्डन	भारत में शासन सुधारों पर विचार करने हेतु।	(1) इसमें कुल 46 सदस्यों ने भाग लिया, (2) कांग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया, (3) संघीय सरकार पर हुए विचार विमर्श पर श्वेत पत्र जारी किया गया जो अन्ततः भारत सरकार कानून 1935 का मूल बना।

कम्यूनल अवार्ड एवं पूना समझौता (1932) :

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के अंत में ब्रिटिश प्रधानमंत्री रेम्जे मैकडोनाल्ड ने यह घोषणा की थी कि अगर भारतीय प्रतिनिधि अपनी साम्प्रदायिक समस्या को शीघ्र न सुलझा सके तो वे मजबूरन इस संबंध में अपना निर्णय दे देंगे और हुआ भी यही।
- भारतीय प्रतिनिधियों के मध्य साम्प्रदायिक समस्या को लेकर कोई समझौता न हो सका। अतः 16 अगस्त 1932 को मैकडोनाल्ड ने अपने निर्णय की घोषणा कर दी जिसको साम्प्रदायिक पंचाट अथवा कम्यूनल अवार्ड कहा जाता है।
- अपनी इस घोषणा में मेकडोनाल्ड ने मुसलमान, सिख, ईसाई तथा हरिजनों के लिए पृथक चुनाव की व्यवस्था की।
- इस घोषणा का वास्तविक उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय एकता को क्षति पहुँचाना था।
- गाँधी जी ने मैकडोनाल्ड को पत्र द्वारा चेतावनी दी कि वह अपना निर्णय 20 सितम्बर, 1932 तक वापस ले लें, नहीं तो में आमरण अनशन प्रारंभ कर देंगे।
- गाँधीजी के इस पत्र की ओर ब्रिटिश सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया। अतः 20 सितम्बर, 1932 को गाँधीजी ने आमरण अनशन शुरू कर दिया।
- अंत में अम्बेडकर व गाँधीजी के मध्य 26 सितम्बर 1932 को एक समझौता हुआ जो **पूना समझौता** के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के साथ ही गाँधीजी ने आमरण अनशन समाप्त कर दिया।

अगस्त प्रस्ताव (1940) :

- युद्ध की गंभीरता को देखते हुए वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने भारत की संवैधानिक गुत्थी को सुलझाने के लिए 8 अगस्त, 1940 को अगस्त प्रस्ताव की घोषणा की।
- भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य की स्थापना, वायसराय की कार्यकारिणी में भारतीय प्रतिनिधियों को अधिक–से–अधिक शामिल करना, युद्ध संबंधी विषयों पर विचार–विमर्श हेतु युद्ध परामर्श समिति बनाना आदि इस प्रस्ताव की मुख्य बातें थीं।
- कांग्रेस व लीग ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया।

पाकिस्तान की माँग (1940) :

- 22 दिसंबर, 1939 को मुक्ति दिवस मनाने के पश्चात् लाहौर में मार्च 1940 में मुस्लिम लीग का अधिवेशन हुआ तो इस अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए जिन्ना ने 22 मार्च, 1940 को अलग से एक मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान की माँग की।
- अपने भाषण में उन्होंने यह भी कहा कि वे अलग मुस्लिम राष्ट्र के अलावा और कुछ स्वीकार नहीं कर।

क्रिप्स मिशन (1942) :

- द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों की बिगड़ती हुई स्थिति ने चर्चिल की सरकार को भारत के प्रति अपना रवैया बदलने के लिए विवश कर दिया।
- प्रधानमंत्री चर्चिल ने भारत के राजनीतिक गतिरोध को दूर करने के लिए मजदूर दल के नेता सर स्टैफर्ड क्रिप्स को, जो कि पं. नेहरू के व्यक्तिगत मित्र भी थे, भारत भेजा।
- क्रिप्स ने भारतीयों से वादा किया कि युद्ध के पश्चात् औपनिवेशीय राज्य की स्थापना की जाएगी।
- संविधान सभा का निर्वाचन कराया जाएगा जो भारत के नए संविधान का निर्माण करेगी।
- संविधान सभा में भारतीय प्रतिनिधि भी होंगे, जो प्रांत या देशी रियासत संविधान सभा द्वारा निर्मित संविधान को स्वीकार नहीं करते हैं; उन्हें अपना अलग संविधान बनाने का अधिकार होगा।
- अगर वे चाहें तो बाद में भारतीय संघ में शामिल भी हो सकते हैं।
- भारत चाहे तो वह राष्ट्रमण्डल से अपने संबंध विच्छेद कर सकेगा।
- युद्ध के समय भारत की सुरक्षा का उत्तरदायित्व ब्रिटिश सरकार का होगा। यद्यपि यह प्रस्ताव 1940 के अगस्त प्रस्ताव से अपेक्षाकृत अच्छे थे, किन्तु फिर भी ये भारतीयों को संतुष्ट नहीं कर सके।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- अंत में कांग्रेस ने क्रिप्स प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया तथा इस प्रस्ताव को मुस्लिम लीग ने भी स्वीकार नहीं किया।
- 11 अप्रैल, 1942 को ब्रिटिश सरकार ने क्रिप्स प्रस्ताव वापस ले लिया।

भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) :

- अगस्त प्रस्ताव एवं क्रिप्स प्रस्ताव में अनेक दोष होने के कारण कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया था।
- क्रिप्स ने भी कांग्रेस को संकेत दे दिया था। अगर उसके प्रस्ताव पर कांग्रेस विचार नहीं करती है तो भविष्य में ब्रिटिश सरकार भारत में राजनीतिक गतिरोध को दूर करने के लिए कोई बातचीत नहीं करेगी।
- अतः क्रिप्स की असफलता के पश्चात् आंदोलन की एकमात्र रासता था, जिससे राजनीतिक गतिरोध दूर किया जा सकता था।
- अतः विवश होकर 14 जुलाई, 1942 को वर्धा में कांग्रेस की कार्य समिति ने प्रस्ताव पारित किया, जिसका शीर्षक था भारत छोड़ो प्रस्ताव।
- इस प्रस्ताव में कहा गया कि यदि अंग्रेज भारत पर से अपना नियंत्रण हटा लें, तो भारतीय जनता विदेशी आक्रमणकारियों के विरूद्ध अपना योगदान देने को तैयार है।
- 8 अगस्त, 1942 को बंबई अधिवेशन में कुछ संशोधनों के साथ कांग्रेस कार्यसमिति ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।
- इस आंदोलन के समय गाँधीजी ने कहा कि मेरे जीवन का यह अंतिम संघर्ष होगा।
- उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु आंदोलनकारियों को **करो या मरो** का नारा दिया।
- दूसरे दिन 9 अगस्त को प्रातः अनेक प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
- इस पर भी शीघ्र ही यह आंदोलन व्यापक स्तर पर समस्त भारत में फैल गया।
- आंदोलनकारियों ने जुलूस निकाले, हड़ताल की, ब्रिटिश सरकार ने दमन की नीति अपनाई, अनेक बार पुलिस को गोली चलानी पड़ी जिससे अनेक लोग मर गए।
- उत्तेजित आंदोलनकारियों ने सरकारी इमारतों को लूट लिया। थाने एवं डाकखानों में आग लगा दी। रेल पटरियाँ उखाड़ दीं।
- यह स्थिति फरवरी, 1943 तक चलती रही। इसके पश्चात् मई 1944 तक यह आंदोलन धीमी गति से चलता रहा। इसी समय इस आंदोलन को दबा दिया गया।

आजाद हिन्द फौज का गठन (1943) :

- कैप्टन मोहन सिंह ने आई.एन.ए. की पहली डिवीजन का गठन 1942 में किया जो शीघ्र ही समाप्त हो गई। आजाद हिन्द फौज के सफलतापूर्वक गठन का श्रेय श्री रास बिहारी बोस को जाता है (1942) तत्पश्चात् 1943 ई. में सुभाष चन्द्र बोस ने इसका पुनर्गठन किया और दिल्ली चलो का नारा दिया।
- अगस्त 1945 में जब जापान ने हथियार डाल दिए तो आजाद हिन्द फौज को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा।

वेवल योजना (1945) :

- लॉर्ड लिनलिथगो के पश्चात् नियुक्त गवर्नर जनरल लॉर्ड वेवल योजना ने भारत में व्याप्त गतिरोध को दूर करने के लिए इंगलैण्ड से सलाह कर एक योजना प्रस्तुत की जो वेवल के नाम से जानी जाती है।
- इस योजना में अन्य बातों के अलावा कहा गया कि वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में वायसराय व प्रधान सेनापति को छोड़कर शेष सभी भारतीय सदस्य होंगे।
- वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में मुसलमानों और सवर्ण हिन्दुओं का समान प्रतिनिधित्व मिलेगा और यह परिषद् एक अंतरिम राष्ट्रीय सरकार की भाँति होगी।

शिमला सम्मेलन (1945) :

- वेवल योजना पर विचार–विमर्श करने हेतु 25 जून, 1945 को शिमला में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- इस सम्मेलन में महात्मा गाँधी, मि. जिन्ना कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना अब्दुल कलाम आजाद तथा तारासिंह ने भाग लिया।
- सम्मेलन अत्यंत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में प्रारंभ हुआ, किन्तु साम्प्रदायिक मतभेद एवं जिन्ना की हठधर्मी के कारण कोई निर्णय नहीं लिया जा सका।
- जिन्ना की जिद थी कि मुस्लिम लीग ही एकमात्र मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करेगी।
- उधर कांग्रेस का यह तर्क था कि वह एक अखिल भारतीय संस्था है। इसलिए उसे भी कार्यकारिणी परिषद् में मुसलमानों को नियुक्त करने का अधिकार है। इस प्रकार आपसी सामंजस्य स्थापित न होने के कारण यह सम्मेलन असफल हो गया।

कैबिनेट मिशन (1946) :

- 24 मार्च, 1946 को भारतीयों को सत्ता हस्तांतरित करने के संबंध में कैबिनेट मिशन भारत आया।
- इस मिशन के अध्यक्ष लॉर्ड पैंथिक लारेन्स थे।
- इसके अतिरिक्त स्टैफर्ड क्रिप्स तथा ए.वी. अलेक्जेण्डर दो अन्य सदस्य थे।
- इस मिशन ने संविधान सभा तथा अंतरिम सरकार के गठन के संबंध में मुस्लिम लीग तथा कांग्रेसी से बातचीत की। किन्तु दोनों ही अपनी जिद पर अड़े थे।
- मुस्लिम लीग तो पाकिस्तान की माँग पर अटल थी, जबकि कांग्रेस विभाजन के लिए तैयार न थी।
- इस मिशन ने लीग तथा कांग्रेस के बीच समझौता करने का प्रयास किया। किन्तु सफलता नहीं मिली।
- 12 मई, 1946 को यह सम्मेलन असफल घोषित किया गया।

एटली की घोषणा (1947) :

- प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस के पश्चात् समस्त भारत में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे।
- स्थिति इतनी भयंकर हो गई थी कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने 20 फरवरी, 1947 को घोषणा कर दी कि ब्रिटिश सरकार जून, 1948 से पहले ही भारतीयों को पूर्ण सत्ता हस्तांतरित कर देगी।

माउन्टबेटन योजना और स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) :

- लॉर्ड वेवल के पश्चात् लॉर्ड माउण्टबेटन भारत के वायसराय बने।
- एटली की सत्ता हस्तांतरण संबंधी पूर्व घोषणा के अनुसर माउण्टबेटन ने पंडित नेहरू व सरदार पटेल से पाकिस्तान की माँग स्वीकार करने के लिए वार्ता की भारत विभाजन की योजना पर कांग्रेस से सहमति प्राप्त कर विभाजन संबंधी योजना पर वार्ता करने हेतु इंग्लैण्ड गए।
- इंग्लैण्ड से लौटकर 3 जून, 1947 को अपनी योजना प्रकाशित की। यही योजना **माउण्टबेटन योजना** के नाम से जानी जाती है।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- माउण्टबेटन के दबाव के कारण जिन्ना ने इस योजना को स्वीकार कर लिया। 15 जून, 1947 को कांग्रेस ने बड़ी विवशता में इस योजना को स्वीकार कर लिया जुलाई, 1947 के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम द्वारा इस योजना को क्रियान्वित कर दिया गया।

राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े प्रमुख पत्र/पत्रिकायें

पत्र	संस्थापक/संपादक
अमृ बाजार पत्रिका	मोतीलाल घोष
नेटिव ओपिनियन	वी. एन. मांडलिक
कविवचन सुधा	भारतेंदु हरिश्चंद्र
सोम प्रकाश	ईश्वरचंद्र विद्यासागर
बंगवासी	जोगिंदर नाथ बोस
मराठा	बालगंगाधर तिलक
केसरी	बालगंगाधर तिलक
हिंदोस्तान	मदन मोहन मालवीय
बंगाली	सुरेंद्र नाथ बनर्जी
हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड	सच्चिदानंद सिन्हा
यंग इंडिया	महात्मा गांधी
हरिजन	महात्मा गांधी
नवजीवन	महात्मा गांधी
इनडिपेंडेन्स	मोतीलाल नेहरू
उदन्त मार्तण्ड	जुगल किशोर
द ट्रिब्यून	सर दयाल सिंह मजीठिया
अल हिलाल	मौलाना अबुल कलाब आजाद
अल बिलाग	मौलाना अबुल कलाम आजाद
कॉमरेड	मौलाना मुहम्मद अली
प्रताप	गणेश शंकर विद्यार्थी कामनवील, सोशलिस्ट
न्यू इंडिया	एस. ए. डांगे
कामनवील	एनी बेसेन्ट
बॉम्बे क्रोनिकल	फिरोजशाह मेहता
हिंदू पैट्रियट	हरिश्चंद्र मुखर्जी
हमदर्द	मौलाना मुहम्मद अली
नेशन	गोपाल कृष्ण गोखले
मॉडर्न रिव्यु	रामानंद चटर्जी
इंडियन मिटर	केशव चंद्र सेन
संवाद कौमुदी	राजा राम मोहन राय

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम (1947) :

- लॉर्ड माउण्टबेटन की योजना को लागू करने के लिए 4 जुलाई, 1947 को एक विधेयक कॉमन सभा में पेश किया गया।
- 18 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश संसद ने इस विधेयक को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम के रूप में पारित कर दिया।
- इस अधिनियम के अनुसार भारत–पाकिस्तान दो स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई।
- लॉर्ड माउण्टबेटन ने 13 अगस्त, 1947 को कराची जाकर पाकिस्तान संविधान सभा को सत्ता सौंप दी।
- जिन्ना नवनिर्मित पाकिस्तान देश के गवर्नर जनरल बने।
- 14 अगस्त, 1947 को मध्यरात्रि को भारत स्वतंत्र देश हो गया लॉर्ड माउण्टबेटन को भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया।
- माउण्टबेटन के इस पद से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भारत के गवर्नर जनरल बने। 26 जनवरी, 1950 को भारत में नवीन संविधान लागू हुआ।

स्वाधीनता सेनानियों द्वारा दिये गये नारे/कथन

''सत्य और अहिंसा मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है''	महात्मा गांधी
''वंदे मातरम्''	बंकिम चंद्र चटर्जी
''स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा''	बाल गंगाधर तिलक
''आओ हम पुरुषों की तरह बोलें और घोषणा कर दें कि हम पूरे राजभक्त हैं''	दादाभाई नौरोजी
''जयहिन्द, दिल्ली चलो''	सुभाष चंद्र बोस
''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा''	सुभाष चंद्र बोस
''करो या मरो''	महात्मा गांधी
''हिंदी, हिन्दू हिन्दूस्तान'	भारतेंदु हरिश्चंद्र
''इंकलाब जिन्दाबाद''	सरदार भगत सिंह
''वेदो की ओर लौटो''	स्वामी दयानंद सरस्वती
''सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा''	मोहम्मद इकबाल
''राष्ट्रीयता एक धर्म है जो भगवान से आता है''	अरविंद घोष
''निर्धन, अज्ञानी, अशिक्षित और असहाय को अपना ईश्वर मानो। उनकी सेवा करना ही धर्म है''	स्वामी विवेकानंद
''मैं भारत की लंबी बंदूक हूँ, जिसने सब सोने वालों को जगाये जिससे वे जाग सकें तथा अपनी मातृभूमि के लिये कार्य कर सकें''	एनी बेसेंट
''हमें ऐसी कार दी गई है जिसमें ब्रेक तो है इंजन नहीं'' (भारत सरकार 1935 एक्ट पर)	जवाहर लाल नेहरू
''हम देश की उन्नति के उस चरण पर हैं जहां हमारी उपलब्धियां थोड़ी ही होंगी और हमारी निराशायें अधिक और कठोर''	गोपाल कृष्ण गोखले
''एक सांप्रदायिकता से दूसरी सांप्रदायिकता समाप्त नहीं होता। प्रत्येक एक दूसरे को बढ़ावा देती है और दोनों ही पनपती है''	जवाहर लाल नेहरू
''जनगणमन अधिनायक जय हो भारत भाग्य विधाता''	रवींद्र नाथ टैगोर

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

भारत विभाजन

- 18 जुलाई, 1947 को पारित हुए स्वतंत्रता अधिनियम के अनुसार भारत का विभाजन हो गया। यह विभाजन भारतीय इतिहास की एक अत्यंत दुखद घटना है।
- भारत का विभाजित होना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। अंग्रेजों ने भारतीयों के साथ अतयाचारपूर्ण नीति का व्यवहार किया। एक सीमा तक अत्याचार सहने के पश्चात् भारतीय आंदोलित हो उठे। उनमें राष्ट्रीय भावना का तीव्र गति से विकास हुआ।
- अंग्रेजों ने इस स्थिति से निपटने के लिए भारत में सदियों से एक साथ रहते आ रहे हिन्दू एवं मुसलमानों में साम्प्रदायिकता के मध्य वैमनस्यता इतनी बढ़ती गई कि इसके दूरगामी परिणाम अत्यंत ही घातक हुए।
- भारत दो भागों पाकिस्तान व भारत में विभाजित हो गया। संक्षेप में इस विभाजन के निम्नलिखित उत्तरदायी कारण थे–

मुसलमानों की पृथकतावादी प्रवृत्ति :

सर सैयद अहमद खाँ ने मुस्लिम समुदाय में पृथकतावादी भावना को प्रोत्साहित किया। उदित इस प्रवृत्ति के कारण मुसलमान स्वयं को हिन्दुओं से अलग समझने लगे।

मुसलमानों का शैक्षणिक पिछड़ापन :

शैक्षणिक दृष्टि से मुसलमान हिन्दुओं की तुलना में पिछड़े हुए थे। उनका विचार था कि शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े होने के कारण वे हिन्दुओं से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकेंगे।

जिन्ना की हठधर्मी नीति :

जिन्ना ने द्विराष्ट्र के सिद्धांत का प्रतिपादन कर मुस्लिम समुदाय को विभाजन के लिए उकसाया तथा अंत तक व पाकिस्तान निर्माण के लिए अपनी जिद पर अड़े रहे।

ब्रिटिश सरकार की फूट डालो नीति :

ब्रिटिश सरकार ने फूट डालो और शासन करो की नति का अनुसरण कर सदैव हिन्दु–मुसलमानों को लड़ाया। इसी नीति के अंतर्गत 1905 में बंगल विभाजन किया यहीं से मुलसमानों के दिमाग में विभाजन की बात घर कर गई।

साम्प्रदायिक उन्माद :

अंतरिम सरकार के समय भारत में साम्प्रदायिक झगड़े हुए। जगह–जगह कत्लेआम हुए। अतः विवश होकर कांग्रेस के नेताओं ने विभाजन को स्वीकार कर लिया।

मुस्लिम लीग की अड़ंगा नीति :

मुस्लिम लीग की स्थापना के बाद से ही लीग ने अड़ंगा नीति का अनुसरण किया लीग के नेताओं ने अंतरिम सरकार में रहकर अड़ंगा डालना प्रारंभ कर दिया। इस नीति के पीछे उनका उद्देश्य भारत को विभाजित करना ही था।

कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति :

न केवल ब्रिटिश वरन् कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति भी भारत विभाजन का कारण बनी। कांग्रेस ने अनेक भूलें कीं। लखनऊ पैक्ट 1932 के साम्प्रदायिक निर्णय के परिणामस्वरूप मुस्लिम लीग की माँगें लगातार बढ़ती गईं। कांग्रेस की यह तुष्टिकण की नीति अत्यंत ही घातक सिद्ध हुई।

गृह युद्ध की संभावना :

एटली की सत्ता हस्तांतरण की घोषणा के पश्चात् हिन्दू और मुसलमान दोनों ही यह सोच रहे थे कि अगर दोनों के मध्य कोई समझौता नहीं हुआ तो सत्ता हस्तांतरण के समय गृहयुद्ध छिड़ जाएगा और वह स्थिति बंद से बदतर होगी। अतः हिन्दू एवं मुसलमान दोनों ने ही विभाजन की माँग को स्वीकार कर लिया।

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में सहायक तत्व :

1. द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् ब्रिटिश शक्ति का ह्रास होगा।
2. एशिया में होने वाले अनेक आंदोलनों का भारत पर प्रभाव।
3. 1945 के पश्चात् ब्रिटेन में शासन करने वाली मजदूर पार्टी का उदार दृष्टिकोण।
4. भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए ब्रिटेन पर अत्यधिक अंतर्राष्ट्रीय दबाव।
5. भारत में हुए शक्तिशाली आंदोलन।
6. साम्यवाद का भय।
7. सेना में असंतोष का व्याप्त हो जाना।
8. माउंटबेटन की योजना को लीग तथा कांगेस द्वारा स्वीकार कर लेना।

आधुनिक भारत एवं स्वतंत्रता आंदोलन में चर्चित व्यक्तित्व :

अरबिन्द घोस (1872–1950 ई.) :

- अरबिन्द घोष का जन्म बंगाल में हुआ। उनकी शिक्षा इंग्लैण्ड में हुई।
- सिविल सर्विस में न लिए जाने पर वह महाराजा बड़ौदा के प्राइवेट सेक्रेटरी बन गए।
- उनका संपर्क क्रांतिकारियों से था तथा 1908 के अलीपुर केस में उन्हें अभियुक्त बनाया गया।
- 1910 में ब्रिटिश भारत को छोड़ वह पांडिचेरी में बस गए तथा वहाँ एक आश्रम की स्थापना की।
- अरबिन्द एक योगी, दार्शनिक व विद्वान थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– द लाइफ डिवाइन, द सोसल साइकिल तथा द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी।

ईश्चवरचन्द्र विद्यासागर :

- 1820 में बंगाल के मिदनापुर जिले में जन्म हुआ। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे।
- पाश्चात्य शिक्षा के विकास में तथा स्त्री शिक्षा के प्रसार में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।
- वह एक महान समाज सुधारक थे तथा विधवा पुनर्विवाह के क्षेत्र में उन्होंने अथक प्रयास कर सफलता पाई। इसे वह अपने जीवन की महानतम् उपलब्धि मानते थे।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

राजा राममोहन राय :

- आपकी गणना 19वीं शताब्दी के महान् समाज सुधारक के रूप में की जाती है।
- आपने सती प्रथा, पर्दा प्रथा और बाल विवाह का विरोध किया तथा उसका अंत कराया।
- विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया।
- आपने बहुदेववाद का विरोध किया। ब्रह्म समाज की स्थापना का श्रेय इन्हीं को ही जाता है।

दयानन्द सरस्वती :

- आपका जन्म गुजरात में हुआ था बचपन का नाम मूलशंकर था।
- आपने वेदों की ओर लौटो का नारा दिया तथा हिन्दू धर्म में सुधारवादी रुख अपनाया। आर्य समाज की स्थापना की।

स्वामी विवेकानंद :

- स्वामी विवेकानंद का जन्म 1863 में कलकत्ता में हुआ था आपका बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ था। आप रामकृष्ण के परम शिष्य थे।
- 1893 में अमरीका के शिकांगो नगर में आयोजित सर्व धर्म सम्मेलन में अपने भाषण में सभी को प्रभावित किया।
- वहाँ उन्होंने वेदान्त समाज की स्थापना की भारत में कर्मकाण्ड, अंधविश्वास आदि का विरोध किया।
- 1897 में रामकृष्ण मिशन तथा 1899 में प्राचीन मठ को वेल्लौर पश्चिम बंगाल में स्थापित किया।
- 39 वर्ष की अल्पायु में 1902 में आपका निधन हो गया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर :

- आप एक महान् कवि, चित्रकार तथा दार्शनिक थे। आपका जन्म 8 मई, 1861 में कलकत्ता में हुआ था।
- 1901 में अपने बोलपुर में ब्रह्मचर्य आश्रम नामक एक आवासीय विद्यालय की स्थापना की, जो शांति निकेतन के नाम से प्रख्यात हुआ तथा 1921 में विश्व भारती में परिणित हुआ।
- 1910 में आपने प्रसिद्व ग्रंथ गीतांजलि लिखा, द रिलीजन ऑफ मैन, क्रिएटिव यूनिटी एवं पर्सनलिटी आदि आपके प्रसिद्व दार्शनिक ग्रंथ है।
- साहित्य सेवा के लिए आपको नोबेल पुरस्कार भी प्रदान किया जा चुका है। (1913 गीतांजली के लिए)

गोपाल कृष्ण गोखले :

- गोपाल कृष्ण गोखले उदारवादी दल के प्रमुख नेता थे नमक कर के उनमूलन, अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के प्रसार, सरकारी नौकरियों में चुनाव तथा स्वतंत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की माँग के समर्थक थे।
- 1905 में आपने सर्वेन्ट ऑफ इण्डिया सोसाइटी की स्थापना की, जिसका लक्ष्य मातृभाषा के प्रति आदर की भावना उत्पन्न करना था।

महात्मा गाँधी (1869–1948) :

- आपका जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात स्थित काठियावाड़ के पेरम्बटूर नामक गाँव में हुआ था।
- इंग्लैण्ड में कानून का अध्ययन करने के बाद आप बैरिस्टर बने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का नेतृत्व किया।
- 1915 में भारत लौटे और असहयोग आंदोलन व सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व किया देश को स्वतंत्र कराने में अपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 30 जनवरी, 1948 को नाथूराम गौडसे की गोली से मारे गए आपको राष्ट्रपिता कहकर भी पुकारा जाता है।

जवाहरलाल नेहरू :

- आपका जन्म 14 नवम्बर, 1889 को उत्तर प्रदेश स्थित इलाहाबाद नगर में हुआ था।
- आपने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। स्वतंत्र भारत के आप प्रथम प्रधानमंत्री बने।
- आप पंचशील सिद्धांतों के प्रणेता, निर्गुट आंदोलन के जन्मदाता, विश्व शांति व संयुक्त राष्ट्र के प्रबल पक्षधर थे।
- आपकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं– Discovery of India & Glimpses of World History.

सुभाष चन्द्र बोस :

- आपका जन्म 23 जनवरी, 1897 को बंगाल के चौबीस परगना जिले में कोडोलिया नामक गाँव में हुआ था।
- आप उग्र विचारधारा के समर्थक तथा महान् क्रांतिकारी थे।
- आपने गाँधीजी की नीति का विरोध किया तथा फारवर्ड ब्लाक की स्थापना की आजाद हिन्द फौज की स्थापना का श्रेय भी आपको ही जाता है।
- तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा। आपका प्रसिद्ध नारा था। आपको लोग नेताजी कहकर भी पुकारते हैं।

भगतसिंह :

- भगतसिंह की गणना महान् क्रांतिकारियों में की जाती है। वे जीवन–पर्यन्त भारत को स्वतंत्र कराने के लिए क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न रहे।
- जब अंग्रेजों की लाठियों की चोट से लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई, तो क्रांतिकारियों ने बदला लेने का निश्चय किया तथा भगतसिंह एवं राजगुरू ने लाला लाजपतराय की मृत्यु के जिम्मेदार व्यक्ति साण्डर्स को गोली मारकर हत्या कर दी।
- अंग्रेजों ने भगतसिंह को गिरफ्तार कर मृत्यु–दण्ड दिया, किन्तु वे तनिक भी विचलित नहीं हुए और हँसते–हँसते फाँसी के फन्दे पर झूल गए।

मौलाना अब्दुल कलाम आजाद (1890–1958) :

- भारत सरकार के भूतपूर्व शिक्ष प्राकृतिक संसाधन व वैज्ञानिक शोध मंत्री, अल अजहर विश्वविद्यालय, काहिरा में अध्यात्मवाद की शिक्षा ग्रहण की अनेक देशों का भ्रमण किया।
- कांग्रेस अध्यक्ष बने, संविधान सभा के सदस्य रहे, मुस्लिम अध्यात्मवाद पर अनेक पुस्तकें लिखीं।

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

कांग्रेस अधिवेशन

सन्	स्थान	अध्यक्ष
1885	बम्बई	व्योमेश चन्द्र बनर्जी
1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी
1887	मद्रास	बदरूद्दीन तैयबजी
1888	इलाहाबाद	जॉर्ज यूले
1889	बम्बई	विलियम बेडरबर्न
1890	कलकत्ता	फिरोजशाह मेहता
1891	नागपुर	बी. आनन्द चार्लू
1892	इलाहाबाद	व्योमेश चन्द्र बनर्जी
1893	लाहौर	दादा भाई नौरोजी
1894	मद्रास	अल्फ्रेड वेब
1895	पूना	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
1896	कलकत्ता	रहीमतुल्लाा सायानी
1897	अमरावती	शंकरन नायर
1898	मद्रास	आनन्द मोहन बसु
1899	लखनऊ	रमेशचन्द्र दत्त
1900	लाहौर	नारायण गणेश चंदावरकर
1901	कलकत्ता	दिनश्म ईतुलजी वाचा
1902	अहमदाबाद	दिनश्म ईतुलची वाचा
1903	मद्रास	लाल मोहन घोष
1904	बम्बई	सर हेनरी कॉटन
1905	बनारस	गोपाल कृष्ण गोखले
1906	कलकत्ता	दादा भाई नौरोजी
1907	सूरत (स्थगित)	रास बिहारी घोस
1908	मद्रास	रास बिहारी घोस
1909	लाहौर	मदन मोहन मालवीय
1910	इलाहाबाद	विलियम वेडर बर्न
1911	कलकत्ता	विशन नारायण दत्त
1912	बांकीपुर	रा. बा. रंगनाथ नृसिंह मुधोलकर
1913	कराँची	नवाब सैयदउ मुहम्मद बहादुर
1914	मद्रास	भूपेन्द्र नाथ बसु
1915	बम्बई	सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा
1916	लखनऊ	अम्बिका चरण मजूमदार
1917	कलकत्ता	ऐनी बेसेंट
1918	बम्बई (विशेष)	सैयद इमाम हसन
1919	अमृतसर	मोती लाल नेहरू
1920	नागपुर	चक्रवर्ती विजय राघवाचार्य
1920	कलकत्ता (विशेष)	लाला लाजपत राय
1921	अहमदाबाद	अजमल खाँ
1922	गया	चितरंजन दास
1923	काकोनाडा	मोहम्मद अली
1923	दिल्ली (विशेष)	अबुल कलाम आजाद
1924	बेलगांव	महात्मा गांधी
1925	कानपुर	सरोजनी नायडू
1926	गोहाटी	श्रीनिवास आयंगर
1927	मद्रास	डॉ. अन्सारी
1928	कलकत्ता	मोती लाल नेहरू
1929	लाहौर	जवाहर लाल नेहरू
1931	करांची	सरदार पटेल
1932	दिल्ली	रणछोड़मल अमृतलाल
1933	कलकत्ता	नेल्ली सेन गुप्ता
1934	बंबई	राजेन्द्र प्रसाद
1936	लखनऊ	जवाहर लाल नेहरू
1937	फैजपुर	जवाहर लाल नेहरू
1938	हरिपुरा	सुभाषचन्द्र बोस
1939	त्रिपुरा	सुभाषचन्द्र बोस
1940	रामगढत्र	अबुल कलाम आजाद
1946	मेरठ	जे. बी. कृपलानी
1948	जयपुर	पट्टाभि सीतारमैया

स्वतंत्रता संग्राम के समय की कुछ प्रमुख कृतियां

पुस्तक	लेखक
बंदी जीवन	शचींद्र नाथ सन्याल
इंडियन होमरूल	महात्मा गांधी
इंडिया डिवाइडेड	राजेंद्र प्रसाद
इंडिया टुडे	रजनी पाम दत्त
इंडियन इस्लाम	टाइटस
नेशन इन मेकिंग	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
पाकिस्तान एंड द पार्टिशन ऑफ इंडिया	बी. आर. अंबेडकर
अनहैप्पी इंडिया	लाला लाजपत राय
गीता रहस्य	बाल गंगाधर तिलक
भवानी मंदिर	बारींद्र कुमार घोष
द फिलासफी आफ द बॉम्ब	भगवती चरण बोहरा

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

माई एक्सपेरिमेंट विद ट्रूथ	महात्मा गांधी
सत्यार्थ प्रकाश	दयानन्द सरस्वती
इंडिया विन्स फ्रीडम	मैलाना अबुल कलाम आजाद
तराना एम्हिंद	मोहम्मद इकबाल
डिस्कवरी ऑफ इंडिया	जवाहर लाल नेहरू
इंडिया फ्राम कर्जन टू नेहरू एंड आफ्टर	दुर्गा दास
इंडियन स्ट्रगल	सुभाश चंद्र बोस
पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया	दादा भाई नौरोजी
आनंद मठ	बंकिम चंद्र चटर्जी
द स्कोप ऑफ हैप्पीनेस	विजय लक्ष्मी पंडित
फ्रीडम एंट मिडनाइट	लैरी कालिन्स, डामिनिक लैपियरे
इंडियाज पास्ट	आर्थर ए. मैकडॉनल
इंडिया एंड इंडियन मिशन	एलेक्जेंडर डफ
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम	बी. डी. सावरकर
पथेरी दावी	शरत चंद्र चट्टोपाध्याय
नील दर्पण	दीन बंधु मित्रा
ए बन्च ऑफ ओल्ड लेटर्स	जवाहर लाल नेहरू
हिंट्स फार सेफ कल्चर	लाला हरदयाल
इंडियन फिलासफी	राधाकृष्णन
लाइफ डिवाइन	अरविंद घोष
सांग ऑफ इंडिया	सरोजिनी नायडु
गीतांजलि, चित्र, गोरा	रविंद्र नाथ टैगोर
नेशन्स वायस	राधाकृष्णन
गैदरिंग स्टार्म	लैपियरे, कालिंस
एसेज ऑन गीता	अरविंद घोष
इंडिया वेलेन्टाइन	शिरोल
इंडिया ए नेशन	ऐनी बेसेन्ट
अकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया	आर. सी. दत्त
इंडियन रेनेसा	सी.एफ. एंड्रूज
क्रीसेंट मून, पोस्ट ऑफिस	रविंद्रनाथ टैगोर
ग्लिम्पसेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री	जवाहर लाल नेहरू
माई अर्ली लाइफ, हिंदू स्वराज	महात्मा गांधी
रिलिजन एंड सोशल रिफॉर्म	एम. जी. रानाडे
द रिडल्स ऑफ हिंदुइज्म	भीमराव अंबेडकर
इंडियन डायरी	इ. एव. मान्टेग्यु
कामेन्टरीज आन द कुरान	सैय्यद अहमद खान

ब्रिटिश कालीन भारत की प्रमुख संस्थायें/संगठन

संस्था/संगठन	संस्थापक	स्थापना वर्ष
एशियांटिक सोसायटी ऑफ बंगाल	विलियम जोंस	1781
कलकत्ता मदरसा	वारेन हेस्टिंग्ज	1781
संस्कृत कालेज	डंकन	1791
आत्मीय सभा	राम मोहन राय	1814
हिंदू कालेज (कलकत्ता)	डेविड हेयर	1817
तरुण बंगाल आंदोलन	हेनरी विवियन डेरोजियो	1826
ब्रह्म समाज	राम मोहन राय	1828
धर्म सभा	राधाकांत देव	1830
साधारण ज्ञान सभा		1838
लैंड होल्डर्स सोसायटी	द्वारका नाथ टैगोर का प्रयास	1838
तत्व बोधिनी सभा	देवेन्द्र नाथ टैगोर	1839
तायूनी आंदोलन	करामत अली जौनपुरी	1839
नामधारी/कूका आंदोलन	भाई बालक सिंह	1841
बंगाल ब्रिटिश एसोशिएशन	राधा कांत देव	1843
परमहंस मण्डली		1849
बेथुने स्कूल	ड्रिक वाल्टर बेथुने	1849
रहनुमाई मजद्यासन सभा	एस.एस. बंगाली, नौरोजी, फुरदोनजी, जे. बी. वाचा	1851
बालिका विद्यालय	ज्योतिबा फुले	1851
ब्रिटिश इंडिया एसोशिएशन	राधाकांत देव, देवेन्द्र नाथ टैगोर	1851
सत्य प्रकाश	कर्सन दास मूलजी	1852
मद्रास	नोटिव एसोसिएशन	1852
संगत सभा	केशव चंद्र सेन	1860
विधवा पुनर्विवाह	विष्णुशास्त्री पंडित	1860
राधा स्वामी सत्संग	स्वामी शिव दयाल	1861
ईस्ट इंडिया एसोसिएशन (लंदन)	दादा भाई नौरोजी	1866
प्रार्थना सभा	महागोविंद रानाडे	1867

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

दार–उल–उलूम (देवबंद)	मुहम्मद कासिम ननौत्वी	1867
भारतीय सुधार संघ	केशव चंद्र सेन	1870
पूना सार्वजनिक सभा	महागोविंद रानाडे	1870
कूका आंदोलन	बाबा रामसिंह	1871
वेद समाज	के. के. श्रीधरालु नायडु	1872
सत्य शोधक समाज	ज्योतिबा फुले	1873
आर्य समाज	दयानंद सरस्वती	1875
थियोसोफिकल सोसायटी मैडम ब्लावट्स्की, (न्यूयार्क) (भारत में अड्यार में 1886 में)	कर्नल आल्कर	1875
इंडिया लीग	शिशिर कुमार घोष	1875
मोहम्मदान एंग्लो ओरिएंटल कालेज	सैयद अहमद खाँ	1875
इंडियन एसोसिएशन	सुरेंद्र नाथ बनर्जी	1876
दक्कन शिक्षा समाज	महागोविंद रानाडे	1884
सेवा सदन	वहराम जी एम. मालाबारी	1885
बंबई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन	महागोविंद रानाडे	1885
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	एलन ओक्टेवियन ह्यूम	1885
भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन	महादेव गोविंद रानाडे	1887
देव समाज	शिवनारायण अग्निहोत्री	1887
मद्रास हिंदू एसोसिएशन	वीर शलिंगम् पन्तलु	1892
अरविपुरम् आंदोलन	श्री नारायण गुरू	1888
अहमदिया आंदोलन	मिर्जा गुलाम अहमद	1889
नदवातल उलेमा	मौलाना शिवली नूमानी	1894
अनुशीलन समिति	पुलिन बिहारी दास	1902
भारत धर्म महामंडल	मदन मोहन मालवीय	1902
श्री नारायण धर्म परिपालन योगम्	श्री नारायण गुरू कुमार आसन, डा. पाल्यू	1902
साइंटिफिक सोसायटी	सैयद अहमद खाँ	1902
अभिनव भारत	वी.डी. सावरकर	1904
भारतसेवक समाज	गोपाल कृष्ण गोखले	1905
(सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सो.)		
दलित वर्ग मिशन समाज	वी. आर. शिंदे	1906
बहुजन समाज	मुकुन्दराव पारिल	1910
निष्काम कर्ममठ	जी. के कर्वे	1910
भारत स्त्री मंडल	सरला बाई देवी चौधरानी	1910
समाज सेवा संघ	एन. एम. जोशी	1911
गदर पार्टी	लाला हरदयाल	1914
जस्टिस (पार्टी) आन्दोलन	सी.एन. मुदालियार, टी. एम. नायर, पी. त्यागराज चेट्टी	1915
होमरूल लीग	वी. जी. तिलक/ऐनी बेसेन्ट	1916
साबरमती आश्रम	महात्मा गांधी	1916
भारत महिला संघ	ऐनी बेसेन्ट	1917
विश्व भारती	रविन्द्र नाथ टैगोर	1918
अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC)	एन.एम. जोशी	1920
कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया	एम. एम. राय	1920
स्वराज्य दल	मोती लाल नेहरू, सी. आर दास	1922
भल सेवा मंडल	अमृत लाल विठ्ठलदास	1922
बहिष्कृत हितकारिणी सभा (दलित वर्ग कल्याण संस्थान)	भीमराव अंबेडकर	1924
मोहम्मदान लिटरेरी सोसाइटी	अब्दुल लतीफ	
खाकसार पार्टी	अल्ला मशरीकी	
आजाद मुस्लिम कांफ्रेंस	अल्लाबख्श	
आत्म–सम्मान आंदोलन	ई. वी. मास्वामी नायकार पेरियार	1925
वुमेन्स इंडिया एसोसिएशन	लेडी सदाशिव	1927
हरिजन संवक संघ	महात्मा गांधी	1932
फॉरवर्ड ब्लाक	सुभाष चंद्र बोस	1939
आजाद हिंद फौज	रास बिहारी बोस	1942

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

ब्रिटिश काल के दौरान सुधार/कानून

क्र. सं.	सुधार/कानून का नाम	वर्ष	कार्यकाल में	महत्व
1.	सती प्रथा और कन्या भ्रूण हत्या पर रोक	1829	लॉर्ड विलियम बैंटिक	राजा राम मोहन राय का समर्थन
2.	लैप्स की नीति	1848	डलहौजी	राजाओं की अपनी संतान न होने पर गोद लेने पर पाबंदी लगा दी गई।
3.	इंडियन कांउसिल एक्ट	1861	लॉर्ड कैनिंग	उपरी स्तर के प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी को स्वीकृति
4.	इलबर्ट बिल	1883	लॉर्ड रिपन	भारतीय और यूरोपियन मजिस्ट्रेटों को एक समान माना।
5.	इंडियन काउंसिल एक्ट	1892	लॉर्ड लैंड्सडाउन	केंद्रीय विधान परिषद् में सदस्यों की संख्या बढ़ाई गई।
6.	मार्ले–मिंटो	1901	लॉर्ड मिंटो II	अलग–अलग निर्वाचन क्षेत्रों द्वारा हिंदूओं तथा मुसलमानों के बीच खाई बढ़ाने का प्रयास।
7.	इंडियन काउंसिल एक्ट	1909	लॉर्ड मिंटो II	मोर्ले–मिंटो सुधार देखिए।
8.	द्विशासन	1919	लॉर्ड चेम्सफोर्ड	सरकार का दुहरा शासन (रौलेट कानून देखिए)
9.	जलियाँवाला बाग	1919	लॉर्ड चेम्सफोर्ड	जनरल डायर द्वारा अमृतसर के जलियाँवाला बाग में हत्याकांड।
10.	रौलेट एक्ट	1919	लॉर्ड चेम्सफोर्ड	सरकार को स्वाधीनता संग्राम को कुचलने के लिए असाधारण अधिकार दिए गए। जनरल डायर को कमांडर बनाया गया।
11.	साइमन–कमीशन	1928	लॉर्ड इरविन	सुधार कार्यों पर रिपोर्ट तैयार करना, प्रान्तों में द्विशासन की सिफारिश किया, भारत के संघीय संविधान के लिए सिफारिश, भारतीय सेनाओं का भारतीयकरण।
12.	गाँधी–इरविन समझौता	1931	लॉर्ड इरविन	कांग्रेस ने विरोध प्रदर्शन समाप्त कर दिया और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए सहमति दे दी।
13.	साम्प्रदायिक पुरस्कार	1932	लॉर्ड विलिंगटन	हिंदू, मुस्लिम और सिखों के अतिरिक्त दलित वर्ग के लिए सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व दिया।
14.	भिन्न निर्वाचन	1932	लॉर्ड विलिंगटन	(देखिए सांप्रदायिक पुरस्कार)
15.	गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट	1935	लॉर्ड विलिंगटन	संघीय संविधान का प्रावधान।
16.	क्रिप्स मिशन	1942	लॉर्ड निलिथगो	दूसरे महायुद्ध के बादभारत के लिए डोमीनियन दरजे का प्रस्ताव रखा।
17.	आई.एन.ए. ट्रायल	1945	लॉर्ड वावेल	आई.एन.ए. के कैदियों के खिलाफ लालकिला दिल्ली में मुकदमा चला जवाहरलाल नेहरू ने उनके पक्ष की रखा की।
18.	वावेल प्लान	1945	लॉर्ड वावेल	संविधान के निर्माण के लिए संवैधानिक समिति का इस प्रकार गठन करने का प्रस्ताव रखा गया कि उसमें हर प्रमुख संप्रदाय को प्रतिनिधित्व मिले।
19.	कैबिनेट मिशन	1947	लॉर्ड वावेल	संविधान बनाने के लिए समिति का गठन किया गया।
20.	इंडियन इंडिपेंडेंस एक्ट	1947	लॉर्ड माउंटबैटन	भारत का विभाजन हो गया और भारत स्वाधीन हो गया।

THE INSTITUTE

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण–सामाजिक–धार्मिक आंदोलन			
वर्ष	**स्थान**	**संगठन का नाम**	**संस्थापक**
1815	कलकत्ता	आत्मीय समाज	राजा राममोहन राय
1828	कलकत्ता	ब्रह्म समाज	राजा राममोहन राय
1829	कलकत्ता	धर्म सभा	राधाकांत देव
1839	कलकत्ता	तत्वबोधिनी सभा	देवेन्द्रनाथ टैगोर
1840	पंजाब	निरंकारी	दयालदास, दरबारा सिंह, रतन चंद आदि
1844	सूरत	मानव धर्म सभा	दुर्गा राम मंछाराम
1849	बम्बई	परमहंस मंडली	ददोवा पांडुरंग
1857	पंजाब	नामधारी	रामसिंह
1861	आगरा	राधा स्वामी सत्संग	तुलसी राम
1866	कलकत्ता	ब्रह्म समाज	केशव चंद्र सेन
1867	बम्बई	प्रार्थना समाज	डॉ. आत्माराम पांडुरंग
1875	बम्बई	आर्य समाज	स्वामी दयानंद सरस्वती
1875	न्यूयार्क (यू.एस.ए.)	थियोसोफिकल सोसायटी	मैडम एच.पी. ब्लावत्सकी और कर्नल एच.एस. ओलकॉट
1878	कलकत्ता	सुधर्म ब्रह्म समाज	आनंद मोहन बोस
1884	पूना	डक्कन एजूकेशन कान्फ्रेंस	जी.जी. अगरकर
1886	अलीगढ़	मुहम्मडन एजूकेशन कान्फ्रेंस	सरसैयद अहमद खान
1887	बम्बई	इंडियन नेशनल कान्फ्रेंस	एम. जी. राणाडे
1887	लाहौर	देव–समाज	शिवनारायण व अग्निहोत्री
	लखनऊ	नवाब–उल–उलेमा	मोलाना शबली नुमानी
	बेलुर	रामकृष्ण मिशन	स्वामी विवेकानंद
	बम्बई	सरवेंट्स ऑफ इंडियन सोसायटी	गोपालकृष्ण गोखले
	पूना	पूना सेवा सदन	श्रीमती रामाबाई राणाडे और जी. के. देवधन
	बम्बई	सोशल सर्विस लीग	एन.एम. जोशी
	इलाहाबाद	सेवा समिति	एच. एन. कुंजरू

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण युद्ध/लड़ाई

क्र. सं.	युद्ध/लड़ाई का नाम	काल	युद्ध किनके बीच में	विजयी	महत्व
1.	हाइडेस्पीज का युद्ध	326 ई. पू.	सिकंदर और पोरस	सिकंदर	झेलम के किनारे लड़ा गया, जिसे ग्रीक में ''हिडैप्सस'' कहते हैं, भारत और पश्चिम में संबंधों की शुरुआत हुई।
2.	कलिंग युद्ध	261 ई. पू.	अशोक और कलिंग (उड़ीसा) के राजा	अशोक	भारी तबाही और खून खराबा, जिसने अशोक के जीवन को बदल दिया, और उसने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।
3.	तराइन की पहली लड़ाई या थानेश्वर	1191 ई.	पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गोरी	पृथ्वीराज चौहान	––
4.	तराइन की दूसरी लड़ाई	1192 ई.	पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गोरी	मुहम्मद गोरी	भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना
5.	पानीपत की पहली लड़ाई	1526 ई.	इब्राहिम लोदी और बाबर	बाबर	भारत में मुगल साम्राज्य की शुरुआत
6.	खानवा की लड़ाई	1527 ई.	बाबर और राणा सांगा	बाबर	––
7.	कन्नौज की लड़ाई	1540 ई.	शेरशाह और हुमायूँ	शेरशाह	शेरशाह भारत का सम्राट बना।
8.	पानीपत की दूसरी लड़ाई	1556 ई.	अकबर और हेमू	अकबर	अफगान शासन का अंत और मुगल शासन मजबूत
9.	तालीकोटा की लड़ाई	1564–65 ई.	दक्कन के चार मुस्लिम शासकों की संयुक्त फौज और विजय नगर के रामराज की फौज	मुस्लिम फौजें	दक्कन के हिंदू राज्य को तहस–नहस कर दिया और विजयनगर के साम्राज्य का अंत हो गया।
10.	हल्दी घाटी की लड़ाई	1576 ई.	राणा प्रताप और अकबर	अकबर	राणा प्रताप बहुत बहादुरी से लड़ा और दूर के एक किले में शरण ली।
11.	सामूगढ़ की लड़ाई	1659 ई.	औरंगजेब और दारा के नेतृत्व में शाही फौजें	औरंगजेब	औरंगजेब ने मुगल तख्त लड़ाई पर कब्जा कर लिया।
12.	प्लासी की लड़ाई	1757 ई.	सिराजुद्दौला और अंग्रेजी फौजें क्लाइव के नेतृत्व में	अंग्रेजी फौजें	प्लासी में लड़ा गया, अंग्रेज बंगाल के मालिक बन गए, यह अंग्रेजी शासन की आधारशिला थी।
13.	पानीपत की तीसरी लड़ाई	1761 ई.	अहमदशाह अब्दाली और मराठों के बीच	अहमद शाह	उत्तर में मराठों को आघात पहुँचा मुगल राज के भविष्य का अंत। इस पर अंग्रेजी कब्जा हो गया।
14.	बक्सर की लड़ाई	1764 ई.	मुस्लिम और अंग्रेजी फौजों		भारत में आधिपत्य
15.	तीसरा मैसूर युद्ध	1790–1792 ई.	अंग्रेजी फौजों और टीपू सुलतान के बीच	अंग्रेजी फौजों	टीपू सुलतान को सेरिंगापट्टनम की संधि पर हस्ताक्षर करने पड़े।
16.	चौथा मैसूर का युद्ध	1799 ई.	अंग्रेजी फौजों और टीपू सुलतान के बीच	अंग्रेजी फौजें	मालावली में लड़ा गया और मैसूर के मुस्लिम वंश का अंत।
17.	पहला सिख युद्ध	1854 ई.	अंग्रेजी फौजें और सिख	अंग्रेजी फौजें	सिखों के राज्य पर अंग्रेजों का कब्जा।
18.	भारत–पाक युद्ध	1948 ई.	भारत और पाकिस्तान	–	कश्मीर में लड़ा गया। अंत में शांति समझौता।
19.	चीन–भारत युद्ध	1962 ई.	चीन और भारत	–	चीन ने उत्तरी–पूर्वी सीमा पर हमला बोला। दूसरे देशों के हस्तक्षेप से शांति समझौता।
20.	भारत–पाक युद्ध	1965 ई.	भारत और पाकिस्तान	–	पश्चिमी सेक्टर में लड़ा गया, अंत में भारत और पाकिस्तान के बीच ताशकंद समझौते द्वारा समाप्त दूसरे महायुद्ध के बाद इस युद्ध में सबसे अधिक टैंक इस्तेमाल किए गए।
21.	भारत–पाक युद्ध	1971	भारत और पाकिस्तान	–	3 दिसंबर, 1971 को पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। भारत ने पूर्वी सीमा पर मुक्ति वाहिनी की सहायता की और पूर्वी पाकिस्तान स्वाधीन हो गया और एक नए राष्ट्र बंगलादेश का जन्म हुआ

****

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

T. I. Heighlights

HISTORY

- दिल्ली के तख्त से राज्य करने वाली पहली और एकमात्र मुस्लिम महिला कौन थी ? **–रजिया सुल्तान**
- पानीपत की प्रथम लड़ाई बाबर और किसके बीच हुई थी ? **–इब्राहिम लोदी**
- नटराज की प्रसिद्ध कांस्य प्रतिमा किस कला का सुंदर उदाहरण है ? **–चोल कला**
- राजस्व (मालगुजारी) सुधार शुरू करने में अकबर की सहायता किसने की थी ? **–टोडर मल**
- पिंक सिटी जयपुर किसने स्थापित किया था ? **–सवाई जय सिंह**
- 'सरदेशमुखी' शब्द किससे सम्बद्ध है ? **–राजस्व**
- नालन्दा विश्वविद्यालय विशेष रूप से किस विषय में विद्या का महान केन्द्र था ? **–बौद्ध धर्म**
- पहली बौद्ध परिषद् कहाँ पर हुई थी ? **–राजगृह में**
- 'हर्षचरित्' के लेखक कौन हैं ? **–बाणभट्ट**
- सिन्धु घाटी का विशाल स्नानागार किस स्थान से सम्बन्धित था ? **–मोहनजोदड़ो**
- आकृति चित्र वाले सिक्के किनके अन्तर्गत लोकप्रिय हुए थे ? **–इंडो–बैक्टिरियन**
- ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत में अपना पहला कारखाना कहाँ स्थापित किया था ? **–सूरत**
- महादेव देसाई किसके सचिव थे ? **–महात्मा गाँधी**
- कौन–सा स्वतंत्रता सेनानी भूख हड़ताल के दौरान जेल में मरा था ? **–जतिन दास**
- गाँधी जी ने भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार के विरूद्ध सत्याग्रह किस देश में शुरू किया था ? **–दक्षिण अफ्रीका**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन कहाँ हुआ था ? **–मुम्बई (1885 ई.) में**
- आजाद हिन्द फौज किस वर्ष बनाई गई थी ? **–1942 ई. में**
- 1907 ई. में कांग्रेस का पहला विभाजन कहाँ पर हुआ था ? **–सूरत में**
- भारत में पहला समाचार पत्र किसने शुरू किया था ? **–जेम्स ए. हिकी (बंगाल गजट)**
- किसने 1857 के विद्रोह को स्वतंत्रता का प्रथम भारतीय युद्ध कहा था ? **–बी. डी. सावरकर**
- प्रारंभिक वैदिक काल किसके लिए उल्लेखनीय था ? **–कृषि सभ्यता**
- सांची का स्तूप किसने बनवाया था ? **–अशोक**
- जैन धर्म मुख्य रूप से अपनी किस विशेषता के कारण लोकप्रिय हुआ था ? **–'वर्ण' व्यवस्था को बुराइयों से छुटकारा दिलाने में**
- प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान ने भारत की यात्रा किसके शासन काल में की थी ? **–चन्द्रगुप्त द्वितीय**
- औरंगजेब ने किस सिक्ख गुरु का वध करवाया था ? **–गुरु तेग बहादुर**
- एलोरा और एलिफैन्टा में शैलकृत चैत्य किस काल की है ? **–राष्ट्रकूट**
- गुलाम वंश का संस्थापक कौन था ? **–कुतुबुद्दीन ऐबक**
- शेरशाह सूरी इतिहास में किस रूप में प्रसिद्ध है ? **–महान प्रशासक**
- मनसबदारी प्रथा किसने चलाई थी ? **–अकबर**
- पहला विश्व युद्ध वार्सेलीस की संधि पर हस्ताक्षर के साथ समाप्त हुआ था, वार्सेलीस किस देश में है ? **–फ्रांस**
- कौन–सा राजवंश अपनी नौसैनिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध था ? **–चोल**
- गाँधीजी ने 1932 ई. में 'आमरण अनशन' तब शुरू किया जब ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने घोषणा की, कि– **–दलित वर्ग के लिए विधानसभा में स्थान आरक्षित होंगे**
- 1942 ई. में 'करो या मरो' का नारा किसने दिया ? **–महात्मा गाँधी**
- असहयोग आंदोलन किनके द्वारा चलाया गया था ? **–महात्मा गाँधी के द्वारा**
- अंग्रेजों ने भारत में सर थॉमस रो को किसके शासन काल में भेजा था ? **–जहाँगीर**
- सन् 1857 का गदर असफल रहा था, क्योंकि– **–न तो उसके पीछे राष्ट्रीय भावना थी और न ही ऊपर कोई राष्ट्रीय नेता था**
- भारत में मुसलमानों में उच्च शिक्षा का अग्रणी कौन था ? **–सर सैयद अहमद खाँ**
- 'आजाद हिन्द फौज' (भारतीय राष्ट्रीय सेना) किसने संगठित की थी ? **–सुभाष चन्द्र बोस**
- चंगेज खाँ किसके शासन काल में सिंधु नदी पर पहुँचा था ? **–इल्तुतमिश**
- 'आइने अकबरी' किसके द्वारा लिखा गया था ? **–अबुल फजल**
- 'हर्ष चरित्' किसने लिखी थी ? **–बाणभट्ट**
- लोगों से सीधे संपर्क रखने वाला/सीधे बात करने वाला राजा कौन था ? **–अशोक**
- पानीपत की तीसरी लड़ाई में (14 जनवरी, 1761 को) मराठों को हार खानी पड़ी थी, क्योंकि– **–उन्होंने उत्तर में राजे–रजवाड़ों और लोगों को अपने से अलग कर दिया था**
- लुम्बिनी किसका जन्म स्थान है ? **–बुद्ध का**
- 'अष्टाध्यायी' किसने लिखी थी ? **–पाणिनी**
- गुजरात में किस स्थान पर हड़प्पा की सभ्यता के अवशेष मिले थे ? **–लोथल**
- अजंता और ऐलोरा की गुफाएँ किस राज्य में स्थित हैं ? **–महाराष्ट्र**

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय के अवशेष कहाँ स्थित हैं ? **–नालंदा में**
- मुस्लिम लीग का प्रथम सम्मेलन कहाँ हुआ था ? **–अमृतसर में**
- किस मुगल सम्राट ने श्रीनगर में स्थित शालीमार बाग बनवाया था ? **–शाहजहाँ**
- औरंगजेब ने किस सिख गुरू की हत्या करवाई थी ? **–गुरु तेगबहादुर (1675 ई. में)**
- ''सर्वेन्ट्स ऑफ इंडियन सोसाइटी'' के संस्थापक कौन थे ? **–गोपालकृष्ण गोखले**
- भारत में राष्ट्रीय राजमार्ग सर्वप्रथम किसके शासन काल में बनाये गये थे ? **–अशोक**
- बंगाल का विभाजन किस वर्ष हुआ था ? **–1905 ई.**
- मलिक काफूर के विरूद्ध लड़ने वाले वारंगल के काकतिया शासक का नाम क्या था ? **–प्रताप रूद्र देव**
- अकबर के दरबार में सर्वाधिक प्रसिद्ध हिन्दी कवि कौन थे ? **–अब्दुर रहीम खान–ए–खाना**
- जहाँगीर ने किस कला को संरक्षण दिया ? **–चित्रकला**
- विजयनगर साम्राज्य का पतन किस लड़ाई के कारण हुआ ? **–तलाई कोटा**
- ''तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूँगा'' यह कथन किसका है ? **–सुभाषचन्द्र बोस**
- तमिलनाडु में महाबलीपुरम् मंदिर किसके शासन काल में बनाया गया ? **–पल्लव**
- सिन्धु–घाटी के लोग किस वृक्ष की पूजा करते थे? **–पीपल**
- सामान्य रूप से किसको भारतीय पुनर्जागरण का जनक माना जाता है ? **–राजा राममोहन राय**
- 'ग्रांड ट्रंक रोड' किसने बनवाई थी ? **–शेरशाह सूरी**
- प्रस्तर युग के लोगों के पास कौन–से पहले घरेलू पशु थे ? **–कुत्ता**
- किसने कहा था ''स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा'' ? **–बालगंगाधर तिलक**
- 'दाण्डी यात्रा' मुख्यतः किसके विरुद्ध किया गया था ? **–नमक कर**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन कहाँ पर हुआ था ? **–मुम्बई में**
- कौन–सा वर्ग भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रायः अलग रहा और इसमें सबसे कम भाग लिया ? **–रियासतों के राजे–रजवाड़े**
- सिकन्दर भारत में बढ़ते हुए किस नदी तक पहुँचा था ? **–व्यास**
- सन् 1905 में बंगाल का विभाजन किसने करवाया था ? **–लॉर्ड कर्जन**
- श्रीरंगपट्टनम की संधि टीपू सुल्तान और किसके बीच में हुई थी ? **–लॉर्ड कार्नवालिस**
- स्वराज पार्टी स्थापित करने वाले नेता थे– **–चित्तरंजन दास और मोतीलाल नेहरू**
- पांड्या शासकों की राजधानी कहाँ थी ? **–मदुरै**
- मैसिडानिया के सिकन्दर महान् ने भारत पर किस वर्ष आक्रमण किया था ? **–326 ई. पू.**
- भारत में आर्य सर्वप्रथम कहाँ आकर बसे ? **–सिंधु घाटी में**
- शेरशाह सूरी की महानता का क्या कारण था ? **–प्रशासनिक सुधार**
- किस युद्ध ने भारत में मुगल साम्राज्य की नीव रखी ? **–पानीपत का पहला युद्ध**
- राज्य–अपहरण नीति को किसने लागू किया ? **–लॉर्ड डलहौजी**
- लॉर्ड रिपन किस कारण अधिक जाना जाता है ? **–स्थानीय स्वशासन**
- 'इंडिया हाउस' कहाँ स्थित है ? **–लंदन में**
- 'हुमायूँनामा' की रचना किसने की ? **–गुलबदन बेगम**
- 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कम्पनी' का गठन कब हुआ ? **–1664 ई. में**
- किसने घोषित किया ''स्वराज मेरा जन्म–सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा ?'' **–बाल गंगाधर तिलक**
- भारतीय परिषद् अधिनियम, 1909 का सर्वग्राह्य (Popularly) नाम क्या है ? **–मिन्टो मोर्ले सुधार**
- गौतम बुद्ध का जन्म–स्थान कहाँ है ? **–लुम्बिनी**
- महावीर की माता कौन थीं ? **–त्रिशला**
- अकबर के शासन काल में भूराजस्व सुधारों के लिए कौन उत्तरदायी था ? **–टोडरमल**
- अकबर द्वारा बनवाए गए उपासना–भवन का क्या नाम था ? **–इबादतखाना**
- भारत में पल्लवों का 'एकाश्मीय रथ' कहाँ मिला है ? **–महाबलीपुरम् में**
- कृष्णदेव राय किसके समकालीन थे ? **–बाबर**
- अजन्ता की चित्रकला कृतियों में वर्णित कथानक है **–जातक के**
- कवि कालीदास किसके राजकवि थे ? **–चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य**
- भारत का राष्ट्रीय पंचांग किस काल पर आधारित है ? **–शक काल**
- भारत में संघीय शासन प्रणाली किस अधिनियम के अंतर्गत प्रारंभ हुई ? **–भारत सरकार अधिनियम, 1935**
- उत्तरी भारत की प्रथम मुस्लिम महिला शासक कौन थी ? **–रजिया सुल्तान**
- 'हड़प्पा सभ्यता' का सर्वप्रथम खोजकर्ता कौन थे ? **–दयाराम साहनी**
- सिंधु घाटी सभ्यता का पत्तन नगर (बन्दरगाह) कौन–सा है ? **–लोथल**
- आधुनिक वर्षों में किसने 'अनुभवातीत मनन–चिन्तन' के बारे में प्रचार किया ? **–महर्षि महेश योगी**
- भारतीय राष्ट्रीय सेना (आजाद हिन्द फौज) ने द्वितीय विश्व युद्ध में किसके विरूद्ध युद्ध किया ? **–ग्रेट ब्रिटेन**
- काकोरी डकैती घटना के नायक कौन थे ? **–रामप्रसाद बिस्मिल**

Daily Current Affairs Govt. Jobs SSC Bank Railway IAS-PCS GK eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

Daily Current Affairs Govt. Jobs SSC Bank Railway IAS-PCS GK eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

- प्रथम भक्ति आन्दोलन का आयोजन किसने किया था ? **–रामानुजाचार्य**
- भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 किस वायसराय (Governorship) के प्रभुत्व में पारित किया गया था ? **–लॉर्ड कर्जन**
- 1919 ई. के अधिनियम में 'द्विशासन धारणा' को किस व्यक्ति ने परिचित कराया ? **–लाइनेल कर्टिस**
- होयसल की राजधानी का नाम क्या है ? **–द्वारसमुद्र**
- सिखों की सैन्य सम्प्रदाय (Military sect) 'खालसा' का प्रवर्त्तन किसने किया ? **–गुरु गोविन्द सिंह**
- किस व्यक्ति को 'द्वितीय अशोक' कहा जाता है ? **–कनिष्क को**
- कांची में प्रसिद्ध कैलाशनाथ मन्दिर का निर्माण किसने किया ? **–नरसिंहवर्मन– II**
- शिवाजी ने मुगलों को किस संधि (Treaty) के द्वारा किलों को सत्तानतरित किया ? **–पुरन्दर**
- कालिबंगन किस प्रदेश में विद्यमान है ? **–राजस्थान**
- बिन्दुसार ने विद्रोहियों (Rebellion) को कुचलने के लिए आशोक को कहाँ भेजा ? **–तक्षशिला**
- 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' के संस्थापक कौन थे ? **–सर विलियम जॉन्स**
- दिल्ली के प्रथम सुल्तान, जिन्होंने दक्षिण भारत को पराजित करने का प्रयास किया, वह कौन था ? **–अलाउद्दीन खिलजी**
- संत कबीर के गुरू कौन थे ? **–रामानंद**
- महाबलिपुरम् जो एक मुख्य नगर है, वह कला की किन व्यक्तियों की रूचि को दर्शाता है ? **–पल्लवों की**
- सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ–द्वय तानसेन और बैजू बावरा, किसके शासन काल में सुविख्यात थे ? **–अकबर**
- लॉर्ड महावीर की मृत्यु कहाँ हुई थी ? **–पावापुरी में**
- किस भाषा का ज्यादा प्रयोग 'बौद्धवाद' के प्रचार के लिए किया गया ? **–पालि**
- पैमानों की खोज ने यह सिद्ध कर दिया है कि सिंधु घाटी के लोग माप और तौल से परिचित थे। यह खोज कहाँ पर हुई थी ? **–हड़प्पा में**
- मुख्य रूप से किसके प्रयास से सती प्रथा का उन्मूलन हुआ ? **–राजा राममोहन राय**
- किस वायसराय के शासन काल में पहला उद्योगशाला अधिनियम पारित किया गया ? **–लॉर्ड रिपन**
- अलीगढ़ में स्थित मुहम्मदन एंग्लो ओरिएन्टल महाविद्यालय को किसने स्थापित किया ? **–सर सैय्यद अहमद खान**
- अशोक ने अपने सभी अभिलेखों में एकरूपता से किस प्राकृत भाषा का प्रयोग किया है ? **–मगधी**
- हड़प्पा–काल की मुद्राओं के निर्माण में मुख्य रूप से किस द्रव्य का उपयोग किया गया था ? **–टेराकोटा**
- किस राज्य पर अकबर की विजय होने की स्मृति में बुलनद दरवाजे का निर्माण किया गया था? **–गुजरात**
- सन् 1857 के विद्रोह का नेतृत्व लखनऊ से किसने किया था ? **–बेगम हजरत महल**
- 'असहयोग आंदोलन' को क्यों निलंबित किया गया था ? **–चौरी–चौरा में हुई हिंसक घटना के कारण**
- 1919 ई. में 'जलियाँवाला बाग' हत्याकांड कहाँ पर हुआ था ? **–अमृतसर में**
- 'नमक सत्याग्रह' किस सन् में प्रारंभ हुआ था ? **–1930 ई. में**
- ईसा पूर्व द्वितीय शती में कागज बनाने की कला को किसने खोजा ? **–चीनियों ने**
- सिंध को अंग्रेजों ने कब अधिकृत किया ? **–1843 ई. में**
- किस यूरोपीय शक्तियाँ ने शिवाजी को तोपें प्रदान की ? **–अंग्रेज**
- वर्ष 1917 की रूसी क्रांति का संबंध मुख्य रूप से किससे है ? **–वी. आई. लेनिन से**
- भारत में चिश्ती आदेश को किसने संस्थापित किया ? **–शेख मोइनुद्दीन चिश्ती**
- 1853 ई. में लॉर्ड डलहौजी ने जो पहली टेलीग्राफ लाइन शुरू की वह किस–किस के बीच थी ? **कलकत्ता और आगरा**
- 'बाबरनामा' किसने लिखा था ? **–बाबर**
- उत्तर वैदिक काल के वेद विरोधी और ब्राह्मण विरोधी धार्मिक अध्यापकों को किस नाम से जाना जाता है ? **–श्रमण**
- किस प्रकार का मृद्भाण्ड (पॉटरी) भारत में द्वितीय शहरीकरण के प्रारंभ का प्रतीक माना गया ? **–चित्रित धूसर बर्तन**
- 'माओ जी डांग' किस देश की साम्यवादी आंदोलन का नेता था ? **–चीन**
- दक्षिणी भारत में 'दांडी मार्च' का संचालन किसने किया था ? **–राजाजी**
- मुख्यत: किस कृत्य के कारण भगत सिंह और उसके मित्र राजगुरू और सुखदेव को 23 मार्च, 1931 में फाँसी दी गई थी ? **–लाहौर–षड्यंत्र घटना के कारण**
- आजादी के संघर्ष के दौरान गाँधीजी ने किस क्षेत्र में अवैधानिक नमक बनाया था ? **–दाण्डी में**
- "देश की पूजा ही राम की पूजा है" यह किसने कहा था? **–मदनलाल धींगरा**
- कुमार गंधर्व किसके लिए प्रसिद्ध है ? **–मूर्तिकला**
- दिलवाड़ा का जैन मन्दिर कहाँ पर स्थित है ? **–आबू पर्वत**
- किस राजपूत शासक ने 'जिज मुहम्मदशुही' नामक पहाड़ा का समूह बनाया जिससे लोग खगोल संबंधी अवलोकन कर सकें ? **–राजा सवाई जयसिंह**
- 'इनाम भूमि' किसे दिया जाता था ? **–विद्वान और धार्मिक व्यक्ति को**
- 'यंग बंगाल आंदोलन' के नेता कौन थे ? **–हेनरी विवियन डेरोजियो**
- 'थियोसोफिकल सोसाइटी' ने भारत में कब और कहाँ अपना मुख्य कार्यालय स्थापित किया था ? **–1882 ई. में अड्यार में**

Daily Current Affairs Govt. Jobs SSC Bank Railway IAS-PCS GK eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

Daily Current Affairs | Govt. Jobs | SSC | Bank | Railway | IAS-PCS | GK | eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

- किसने बीजापुर में स्थित 'गोल–गुम्बज' का निर्माण किया जो विश्व का दूसरा सबसे बड़ा गुम्बज है, जो अपने मर–मरश्रावी गैलरी के लिए प्रसिद्ध है ? **–मोहम्मद आदिल शाह**
- मोती पोताश्रय, जहाँ अमरीकी पेसिफिक पोतसमूह ठहरा हुआ था, उस पर जापानियों ने कब आक्रमण किया ? **–1941 ई. में**
- 'मोर्ले–मिंटो रिफॉर्म' को किस वर्ष प्रस्तुत किया गया था ? **–1909 ई. में**
- किस प्रदेश में ब्रिटिश के विरूद्ध बिरसा मुंडा का संचालन हो रहा था ? **–छोटा नागपुर**
- 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का नारा किसने दिया था ? **–महात्मा गाँधी**
- किस संग्रहालय में कुषाण की मूर्तियों का संग्रह अधिक मात्रा में है ? **–मथुरा संग्रहालय**
- अकबर के शासन में 'महाभारत' का पर्शियन भाषा में अनुवाद किया गया था। वह किस नाम से जाना जाता है? **–रज्मनामा**
- बंगाल के बँटवारे से किस ब्रिटिश वायसराय का संबंध है? **–लॉर्ड कर्जन**
- किस तोमर शासक को दिल्ली शहर को स्थापित करने का श्रेय प्राप्त है ? **–अनंगपाल**
- भगवान महावीर का जन्म किस नाम से क्षत्रीय गोत्र में हुआ था ? **–ज्ञात्रिक**
- विरूपाक्ष मन्दिर का निर्माण किसने किया था ? **–चालुक्य**
- 1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था ? **–लॉर्ड कैनिंग**
- किस अधिनियम के द्वारा बिना मुकदमा और दोष–सिद्धि के ही विधि के न्यायालय में किसी भी व्यक्ति को कैद करने का प्राधिकार ब्रिटिश सरकार को दिया गया था ? **–वर्ष 1919 का रौलेट अधिनियम**
- गाँधी–इरविन समझौता सम्बन्धित है– **–सविनय अवज्ञा आन्दोलन से**
- किसने कहा था कि "आप मुझे खून दो, मैं आपको स्वतंत्रता दूँगा" ? **–सुभाषचन्द्र बोस**
- ब्रिटिश संसद ने साइमन आयोग को किसके पुनरीक्षण के लिए भेजा था ? **–द्विशासन की क्रिया–कलाप**
- किस यूरोपीय ने भारत में सबसे पहले अपना व्यापार फैलाया और प्रभावित किया ? **–पुर्तगाली**
- अंतिम मुगल सम्राट कौन था ? **–बहादुरशाह– II**
- आर्य समाज मूलतः किसके विरूद्ध है ? **–धार्मिक अनुष्ठान और मूर्ति पूजा**
- स्वतंत्र भारत के प्रथम महाराज्यपाल (गवर्नर जनरल) कौन थे ? **–लॉर्ड माउन्टबेटन**
- किस मुगल सम्राट ने सैयद भाइयों को गिराया ? **–रफी–उद्–दउलाह**
- 1909 ई. का मार्ले–मिन्टो सुधार किस कारण से विख्यात है ? **–पृथक् निर्वाचन मण्डल**
- 1940–46 ई. के दौरान कांग्रेस के अध्यक्ष कौन थे ? **–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**
- डाण्डी अभियान (यात्रा) कब प्रारम्भ किया गया था ? **–12 मार्च, 1930 ई. को**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी ? **–डब्ल्यू. सी. बनर्जी**
- तिरंगे को राष्ट्र ध्वज के रूप में कब स्वीकार किया गया? **–लाहौर कांग्रेस**
- अंग्रेजी शासन के समय 'भारत के लिए सचिव' से क्या अभिप्राय था ? **–ब्रिटेन का एक मंत्री जिसके नियंत्रण में भारत सरकार काम करती थी ?**
- 'लखनऊ समझौता' किनके मध्य तथा किस विषय पर हुआ था ? **–हिन्दुओं तथा मुसलमानों के बीच, विधानसभाओं के स्थानों के बँटवारे के बारे में**
- 1916 ई. में कांग्रेस और मुस्लिम लीग का संयुक्त अधिवेशन कहाँ पर हुआ था ? **–लखनऊ**
- 1920 इ. में 'अखिल भारतीय दलित वर्ग महासंघ' की स्थापना किसने किया था ? **–भीमराव अम्बेदकर**
- अंग्रेजों द्वारा स्थापित प्रथम व्यापार केन्द्र कहाँ था ? **–सूरत में**
- मुगल सम्राटों का 'मीर बख्शी' किस विभाग की अध्यक्षता करता था ? **–सेना संगठन**
- बिन्दुसार किस वंश का एक शासक था ? **–मौर्य वंश**
- कब और किस महाराज्यपाल (गवर्नर जनरल) ने भारत में अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने का निर्णय लिया ? **–1835 ई. में लॉर्ड विलियम बेंटिक ने**
- भारत में स्थानीय स्वशासन का अग्रगामी कौन था ? **–लॉर्ड रिपन**
- किस व्यक्ति को लोकप्रियता के कारण 'परिवार' कहा जाता है ? **–ई. वी. रामास्वामी नैय्यर**
- संगम युग का संबंध कहाँ के इतिहास से है ? **–तमिलनाडु**
- शिवाजी की राजधानी कहाँ थी ? **–रायगढ़**
- किसने बंगाल में सरकार की द्वैध प्रणाली समाप्त की ? **–लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स ने**
- लॉर्ड मैकाले किस लिए विख्यात हुआ ? **–शिक्षा कार्यवृत्ति की रचना के लिए**
- हर्ष का राजकवि कौन था ? **–वाणभट्ट**
- द्वितीय विश्व युद्ध किस वर्ष प्रारम्भ हुआ ? **–1939 ई. में**
- 'फ्रंटियर गाँधी' के नाम से किसे जाना जाता है ? **–खान अब्दुल गफ्फार खाँ**
- स्वामी दयानंद सरस्वती ने प्रथम आर्य समाज 1857 ई. में कहाँ स्थापित की थी ? **–बम्बई में**
- 19वीं शताब्दी के भारत में सामाजिक सुधार आन्दोलनों का अग्रगामी कौन था ? **–राजा राममोहन राय**
- तिरुचिरापल्ली जनपद के दक्षिण में कौन–सा जनपद स्थित है ? **–पुदुक्कोट्टय**
- 'स्वतंत्रता, समानता एवं भाईचारा' का नारा किस क्रान्ति से संबंधित है ? **–फ्रांस की क्रान्ति**

THE EXAM INSTITUTE

Daily Current Affairs | Govt. Jobs | SSC | Bank | Railway | IAS-PCS | GK | eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

Daily Current Affairs | Jobs | SSC | Bank | Railway | UPSC PCS | GK | eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

- 'स्वशासन' आन्दोलन के प्रवर्तक कौन थे ? **–ऐनी बेसेन्ट**
- गाँधी–इर्विन समझौता कब हुआ था ? **–1931 ई. में**
- अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएन्टल कॉलेज को किसने प्रारम्भ कराया ? **–सर सैय्यद अहमद खाँ**
- नील की खेती करने वालों के विरुद्ध विद्रोह को प्रदर्शित करने वाले नाटक 'नील दर्पण' के लेखक कौन थे ? **दीनबन्धु मित्र**
- चम्पारण सत्याग्रह का संबंध किससे था ? **–नील**
- चीन में 1911 ई. के विद्रोह का क्या परिणाम हुआ ? **–एक गणतंत्र की स्थापना**
- भारत में प्रकाशित होने वाला प्रथम समाचार–पत्र का नाम क्या था ? **–दि बंगाल गजट**
- किस राजा के प्रदेश में, पुर्तगालियों ने भारत–भूमि पर अपने दुर्ग का निर्माण किया ? **–कोचीन**
- अंग्रेजों द्वारा बंगाल विभाजन (बंग–भंग) को कब रद्द किया गया ? **–1911 ई. में**
- किस व्यकित ने 1857 के विद्रोह के कारणों का विश्लेषण करते हुए, अंग्रेजों तथा मुसलमानों के बीच मेल–मिलाप की वकालत की ? **–सैयद अहमद बरेलवी**
- बीतपाल तथा धीमन नामक भारत के दो महानतम कलाकार किस युग से सम्बन्धित थे ? **–पाल युग**
- भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक विद्यमान, मद्रास प्रेसीडेन्सी (प्रदेश) को किसने स्थापित किया था ? **–सर थॉमस मुनरो**
- बुद्ध ने अपना प्रथम धर्म–सन्देश कहाँ पर दिया था ? **–सारनाथ में**
- ''आर्थिक अपक्षय'' सिद्धान्त के प्रवर्तक कौन थे ? **–दादाभाई नौरोजी**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन कहाँ आयोजित हुआ था ? **–मुम्बई**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम मुसलमान अध्यक्ष कौन थे ? **–बद्रुद्दीन तैयबजी**
- 1930 ई. में चटगाँव के सरकारी शास्त्रागार पर हुए सशस्त्र आक्रमण का नेता कौन था ? **–सूर्य सेन**
- भारतीय तिरंगे का पहली बार, जवाहरलाल नेहरू ने कहाँ पर ध्वजारोहण किया था ? **–1929 ई. में लाहौर में रावी के तट पर**
- भारतीय संगीत का उद्गम किसमें खोजा जा सकता है ? **–सामवेद की संहिता में**
- चालुक्यों ने अपना साम्राज्य कहाँ स्थापित किया था ? **–मालवा में**
- दिल्ली के किस सुलतान ने एक रोजगार विभाग, एक दान विभाग और एक परोपकारी चिकित्सालय की स्थापना की ? **–फीरोज तुगलक**
- ऐलोरा में सुविख्यात कैलाश शिव–मन्दिर का निर्माण किस राष्ट्रकूट शासक ने करवाया था ? **–कृष्ण– I**
- पुहार नगर की नींव किस चोल शासक ने रखी थी ? **–राजेन्द्र चोल**
- गुप्त युग का प्रवर्तक कौन था ? **–श्रीगुप्त**
- तक्षशिला के प्रसिद्ध स्थल के रूप में होने का क्या कारण था ? **–गान्धार कला**
- भारत में प्रथम स्वर्ण मुद्राएँ किसने चलाई ? **–यूनानी**
- 'सती प्रथा' को निरुत्साहित करने वाला मुगल सम्राट कौन था ? **–अकबर**
- 'मराठा राज्य का दूसरा प्रवर्तक (Second founder) किसे माना जाता है ? **–बालाजी विश्वनाथ को**
- लाला हरदयाल किस पार्टी के नेता थे ? **–गदर पार्टी**
- भारत से ब्रिटेन की ओर 'सम्पत्ति के अपवहन' (Drain of Wealth) का सिद्धान्त किसने प्रतिपादित किया था ? **–दादाभाई नौरोजी**
- 'फासिस्टवाद' का जन्मदाता कौन है ? **–मुसोलिनी**
- मुख्यतः किस युद्ध से भारत में मुगल राज्य की नींव पड़ी? **–पानीपत का प्रथम युद्ध**
- कांग्रेस का 1906 ई. का अधिवेशन, जिसमें स्वराज्य को लक्ष्य घोषित किया गया था, कहाँ हुआ था ? **–कलकत्ता में**
- गाँधीजी ने 'दाण्डी यात्रा' कहाँ से शुरू की थी ? **–अहमदाबाद**
- कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का प्रस्ताव किस वर्ष पारित किया ? **–1942 ई. में**
- भारतीय यूनानी कला के अभिलक्षणों को समन्वित करने वाली कला शैली का क्या नाम है ? **–गांधार**
- मुगल चित्रकारी ने किसके शासन काल में पराकाष्ठा प्राप्त की ? **–जहाँगीर**
- बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी (1784 ई. में स्थापित) के प्रवर्त्तक कौन थे ? **–सर विलियम जोन्स**
- अकबर की जीवन–कथा किसने लिखी थी ? **–अबुल फजल**
- अफीम–युद्ध किनके बीच लड़ेत्र गए थे ? **–ब्रिटेन और चीन**
- चन्देल राजवंश की राजधानी कहाँ थी ? **–खजुराहो**
- 1829 ई. में सती प्रथा को समाप्त करने में किसका योगदान था ? **–लॉर्ड विलियम बेन्टिक**
- 'इण्डिया हाउस' कहाँ स्थित है ? **–लन्दन में**
- हड़प्पा–वासी किस वस्तु के उत्पादन में सर्वप्रथम थे ? **–कांसे के औजार**
- हर्षवर्धन के समय में कौन–सा चीनी तीर्थयात्री भारत आया था ? **–ह्वेनसांग**
- चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय को किसने पराजित किया था ? **–नरसिंह वर्मन प्रथम**
- दिल्ली के किस सुल्तान को इतिहासकारों ने 'विरोधाभाषों का मिश्रण' बताया है ? **–मुहम्मद–बिन–तुगलक**
- लोदी वंश का अंतिम शासक कौन था ? **–इब्राहिम लोदी**
- किस मुगल शासक ने भारत की वनस्पतियों और प्राणि जगत, ऋतुओं और फलों का विशद विवरण अपनी दैनन्दिनी (डायरी) में दिया है ? **–औरंगजेब**
- शेरशाह की महानता का मुख्य द्योतक क्या है ? **–प्रशासनिक सुधार**

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- भारत में ईस्ट इण्डिया कंपनी का पहला गवर्नर जनरल कौन था ? **–वारेन हेस्टिंग्स**
- किसने सभी तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया था ? **–डॉ. बी. आर. अम्बेडकर**
- ''भारत का भव्य वृद्ध पुरुष'' किसे कहा गया था ? **–दादाभाई नौरोजी को**
- 'दिल्ली चलो' का नारा किसने दिया था ? **–सुभाषचन्द्र बोस**
- वर्ष 1100 ई. में निर्मित मन्दिर जो भुवनेश्वर के अन्य मन्दिरों पर प्रधानता रखता है, कौन–सा है ? **–त्रिभुवनेश्वर लिंगराज मन्दिर**
- विजयनगर के गौरव के भग्नावशेष और इसकी वास्तु शैली के ऐतिहासिक महत्व का स्थान अब कहाँ देखा जा सकता है ? **–हम्पी**
- अजन्ता कलाकृतियाँ किससे सम्बन्धित हैं ? **–गुप्त काल से**
- यूनानी–रोमन कला को कहाँ स्थान प्राप्त हुआ है ? **–गाँधार**
- 'गुरूदेव' की उपाधी किन्हें दी गई है ? **–रवीन्द्रनाथ टैगोर को**
- महापाषाण संस्कृति (500 ई.पू.– 100 ई.) हमें दक्षिण भारत के उस एंतिहासिक युग से परिचित कराती है, जब महापाषाण काल में उपयोग में लाये जाते थे– **–बड़े पत्थरों से घेरी गई समाधियाँ (कब्रें)**
- राष्ट्रकूट साम्राज्य का प्रवर्तक कौन था ? **–दन्तिदुर्ग**
- 'मुद्राराक्षस' के लेखक कौन हैं ? **–विशाखदत्त**
- हड़प्पा के निवासी कैसे थे ? **–शहरी**
- तराईन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.) में किसने किसको पराजित किया ? **–मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को**
- सन् 1329 और 1330 के बीच किसने ताँबे के सिक्कों के रूप में प्रमाण–स्वरूप मुद्रा प्रचलित की थी ? **–मुहम्मद–बिन–तुगलक**
- मुगल प्रशासन–व्यवस्था में मनसबदारी प्रणाली को किसने प्रारंभ किया ? **–अकबर**
- पड़ोसी राज्यों पर शिवाजी द्वारा लगाया गया भूमि कर क्या कहलाता था ? **–चौथ**
- सन् 1905 के बंगाल विभाजन के समय वायसराय कौन था ? **–लॉर्ड कर्जन**
- रूसी क्रांति कब हुई थी ? **–1917 ई. में**
- महात्मा गाँधी ने अपनी सत्याग्रह की क्रिया–विधि सबसे पहले कहाँ प्रस्तुत की ? **–दक्षिण अफ्रीका**
- आजाद हिन्द फौज का गठन कब हुआ था ? **–1942 ई. में**
- 'देशबंधु' की उपाधि किसके साथ संबंधित है ? **–चितरंजन दास**
- सिंधु–घाटी के घर किसके बनाए जाते थे ? **–ईंट**
- किन शासकों के राज्यकाल में, अजन्ता और ऐलोरा की गुफा चित्रकला विकसित हुई थी ? **–राष्ट्रकूट**
- अपने काल का महान् संगीतज्ञ तानसेन किसके दरबार में था ? **–अकबर**
- मुगल काल की राजभाषा क्या थी ? **–फारसी**
- भूदान आंदोलन किसने प्रारंभ किया था ? **–विनोबा भावे**
- भूतपूर्व सोवियत राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाच्योव अपनी किस नीति के कारण लोकप्रिय हो गए थे ? **–पेरेस्ट्रोइका**
- गुप्त राजवंश किस लिए प्रसिद्ध था ? **–साम्राज्यवाद**
- विजयनगर साम्राज्य का प्रथम शासक कौन था, जिसने पुर्तगालियों के साथ सन्धि की ? **–देवराय– II**
- पांड्य साम्राज्य की राजधानी कहाँ थी ? **–मदुरै**
- किसके शासन काल में सबसे अधिक मंगोल आक्रमण हुए? **–मुहम्मद–बिन–तुगलक**
- हड़प्पा की सभ्यता किस युग की थी ? **–कांस्य युग**
- चरक किसके राज–चिकित्सक थे ? **–कनिष्क**
- सांची क्यों विख्यात है ? **–सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप के लिए**
- सिंधु घाटी की सभ्यता के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था ? **–कृषि**
- तीसरे आंग्ल–मैसूर युद्ध को समाप्त करने के लिए टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों के साथ कौन–सी सन्धि की थी ? **–श्रीरंगपट्टनम् की सन्धि**
- गुप्त शासन के दौरान ऐसा व्यक्ति कौन था, जो एक महान् खगोल–विज्ञानी तथा गणितज्ञ था ? **–आर्यभट्ट**
- आगरा नगर की स्थापना किसके द्वारा की गई थी ? **–सिकन्दर लोदी**
- ऐलोरा में कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण किनके द्वारा करवाया गया था ? **–राष्ट्रकूट वंश**
- गुजरात विजय की यादगार में अकबर ने किसका निर्माण कराया था ? **–बुलंद दरवाजा**
- वह महानतम् कुषाण नेता कौन था, जो बौद्ध बन गया था? **–कनिष्क**
- 'गुप्त' राजा जिसने 'विक्रमादित्य' की पदवी ग्रहण की थी, वह था– **–चन्द्रगुप्त– II**
- ''राज्यलय (हड़प) नीति'' किसके द्वारा लागू की गई थी ? **–लार्ड डलहौजी**
- भारत में प्रथम रेलवे लाइन किसने बिछवाई थी ? **–जॉर्ज क्लार्क**
- वह शासक कौन था जिसने राजसिंहासन पर बैठने के लिए अपने पिता बिन्दुसार की हत्या की थी ? **–अशोक**
- दिल्ली का वह सुल्तान कौन था, किसकी मृत्यु पोलो खेलते हुए हुई थी ? **–कुतुबुद्दीन ऐबक**
- किस शासक ने बौद्धों के लिए विख्यात 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की थी ? **–धर्मपाल**
- 'द ईस्ट इंडियन रेलवे कम्पनी' की स्थापना कब हुई थी ? **–1844 ई. में**
- 'आइन–ए–अकबरी' नामक एक महान् ऐतिहासिक कृति किसके द्वारा लिखी गई थी ? **–अबुल फजल**
- गुरिल्ला युद्ध का पथ–प्रदर्शक कौन था ? **–शिवाजी**

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- 'कुव्वत–उल–इस्लाम' मस्जिद (दिल्ली) का निर्माण किसके द्वारा किया गया था ? **–कुतुबुद्दीन ऐबक**
- कृष्णदेव राय ने किसके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखे थे ? **–पुर्तगाली**
- पल्लवों ने किस नगर से शासन संचालित किया ? **–कांचीपुरम्**
- अंग्रेज पुलिस अफसर कैप्टन सौण्डर्स किसके द्वारा गोली से मारा गया था ? **–सरदार भगत सिंह**
- पानीपत की दूसरी लड़ाई किनके बीच हुई थी ? **–अकबर और हेमू**
- कुषाण काल के दौरान मूर्तिकला की गांधार शैली किसका मिश्रण है ? **–भारत–ग्रीक (यूनान) शैली का**
- वह सूफी संत कौन था जो यह मानता था कि भक्ति संगीत ईश्वर के निकट पहुँचने का मार्ग है ? **–शेख मुईनुद्दीप चिश्ती**
- मुस्लिम लीग ने एक अलग राष्ट्र का संकल्प कब स्वीकार किया था ? **–1940 ई. में**
- किस सिख गुरु ने फारसी में 'जफरनामा' लिखा था ? **–गुरु गोविन्द सिंह**
- प्रसिद्ध कवि 'विल्हण' किसका राजदरबारी कवि था ? **–विक्रमादित्य**
- अन्तिम बौद्ध राजा कौन था जो संस्कृत का महान विद्वान और लेखक था ? **–हर्षवर्धन**
- तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण किसने किया था ? **–राजा राज चोल**
- विजयनगर किस नदी के तट पर स्थित है ? **–तुगभद्रा**
- 'दीन–ए–इलाही' नामक धर्म किसके द्वारा शुरू किया गया था ? **–अकबर**
- बहमनी राजाओं की राजधानी कहाँ थी ? **–गुलबर्गा**
- किस राजा के द्वारा तृतीय बौद्ध परिषद् को संरक्षण प्रदान किया गया था ? **–अशोक**
- गुप्त शासकों की सरकारी (दरबारी) भाषा क्या थी ? **–संस्कृत**
- किसके शासन काल के दौरान प्रसिद्ध अजन्ता गुफाओं में उत्कीर्णन का काम सबसे पहले शुरू किया गया था ? **–सातवाहन**
- शिवाजी के प्रशासन में 'पेशवा' किसको कहा जाता था ? **–प्रधानमंत्री को**
- चालुक्य वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कौन था ? **–पुलकेशिन– II**
- किस विदेशी यात्री ने भारत का दौरा सबसे पहले किया था ? **–मेगास्थनीज**
- भारत में आलू की फसल किसने शुरू की थी ? **–पुर्तगालियों ने**
- सन् 1829 में सती प्रथा का उन्मूलन किसके द्वारा किया गया था ? **–लॉर्ड विलियम बेंटिक**
- 'हर्षचरित्' जिसमें हर्ष के जीवन का वर्णन किया गया है, किसके द्वारा लिख गया था ? **–बाणभट्ट**
- किस खिलजी शासक ने दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठने के लिए अपने ससुर की हत्या कर दी थी ? **–अलाउद्दीन खिलजी**
- किसको अपनी विजयों के कारण 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है ? **–समुद्रगुप्त को**
- किस शासक के शासन–काल में नेपाल में बौद्ध धर्म का आगमन हुआ था ? **–अशोक**
- उस शासक का नाम क्या है जिसने विजय स्तम्भ का निर्माण कराया था ? **–राणा कुम्भा**
- बरदोली सत्याग्रह मुख्यतः किस व्यक्ति से जुड़ा है ? **–सरदार बल्लभभाई पटेल**
- कनिष्क की राजधानी कहाँ थी ? **–पुरुषपुर**
- तराइन की पहली लड़ाई किनके बीच हुई थी ? **–मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली बैठक किस शहर में हुई थी ? **–बंबई में**
- बेगम हजरत महल ने 1857 ई. के विद्रोह का नेतृत्व किस शहर से किया था ? **–लखनऊ**
- बौद्ध ग्रन्थों 'पिटकों' की रचना किस भाषा में की गई थी? **–प्राकृत**
- 1932 ई. में हस्ताक्षरित पूना पैक्अ में मुख्यतः किसकी व्यवस्था की गई थी ? **–हरिजनों के लिए आरक्षण के साथ संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र की**
- गुप्त वंश का वह राजा कौन था जिसने हूणों को भारत पर आक्रमण करने से रोका ? **–स्कन्दगुप्त**
- स्वामी विवेकानन्द का मूल नाम क्या था ? **–नरेन्द्रनाथ दत्त**
- भारत में डाक व्यवस्था शुरू करने वाला ब्रिटिश गवर्नर जनरल कौन था ? **–लॉर्ड डलहौजी**
- महाराष्ट्र में भक्ति सम्प्रदाय किसकी शिक्षाओं द्वारा फैला था ? **–सन्त ज्ञानेश्वर**
- रजिया सुल्ताना किसकी बेटी थी ? **–अल्तमश (इल्तुतमिश) की**
- सिकन्दर (अलेक्जेंडर) और पोरस की सेनाओं ने किस नदी के आमने–सामने वाले तटों पर पड़ाव डाला था ? **–झेलम**
- भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी करने वाले कौन थे ? **–कुषाण**
- 1932 ई. में साम्प्रदायिक अवार्ड (Communal Award) द्वारा किसे पृथक् प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया था ? **–हरिजनों को**
- विजयनगर के महान् साम्राज्य के अवशेष कहाँ पाए जा सकते हैं ? **–हम्पी में**
- किस सिख गुरु ने गुरुनानक की जीवनी लिखी थी ? **–गुरु अंगद देव ने**
- किस पुर्तगाली ने गोआ पर अधिकार किया था ? **–अल्फोन्सो द अल्बुकर्क**

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने निजाम के हैदराबाद राज्य को किस कार्रवाई द्वारा अधिकार में लिया था ? **–पुलिस कार्रवाई द्वारा**
- विश्व का सबसे बड़ा गुम्बज 'गोल गुम्बज' कहाँ स्थित है? **–बीजापुर में**
- सम्राट अशोक की वह पत्नी कौन थी जिसने उसको प्रभावित किया था ? **–करूवाकी**
- प्रसिद्ध मुस्लिम शासिका चाँद बीबी किस राज्य से सम्बन्धित थी ? **–अहमदनगर**
- ऐलोरा में ठोस शैल को काटकर बनाए गए प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण किसके संरक्षण में किया गया था ? **–राष्ट्रकूट**
- 'पृथ्वीराजरासो' किसकी रचना है ? **–चन्दबरदाई**
- 'अपवाह–तंत्र का निर्माण सबसे पहले किस सभ्यता के लोगों ने किया था ? **–सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने**
- सुभाषचन्द्र बोस ने स्वतंत्र भारत की अनतरिम सरकार की स्थापना कहाँ किए थे ? **–सिंगापुर में**
- पहली भातरीय महिला, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनी थी वह कौन थी ? **–सरोजिनी नायडू**
- 'पेशावर' का दूसरा (पुराना) नाम क्या है ? **–पुरुषपुर**
- नेपोलियन–I और ड्यूक ऑफ बेलिंगटन के बीच कौन–सी प्रसिद्ध लड़ाई हुई थी ? **–वाटरलू की लड़ाई**
- चोल राजाओं की राजधानी किस शहर में थी ? **–तंजौर**
- 'क्रीमियन युद्ध' किसके–किसके बीच हुआ था ? **–रूस और टर्की के बीच**
- किस गवर्नर जनरल के कार्य–काल के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस बनी थी ? **–लॉर्ड इफरिन**
- मोहम्मद गौरी विजित प्रदेशों की देखभाल के लिए किस विश्वसनीय जनरल को छोड़कर गया था?**–कुतुबुद्दीन ऐबक**
- अमरीकी नौसेना तथा वायु सेना बेस– 'पर्ल हॉर्बर' पर किसके द्वारा आक्रमण किया था ? **–जापान**
- किस राजपूत शासक ने भोपाल शहर की स्थापना की थी? **–राजा भोज**
- भारत में ग्रांड ट्रंक रोड किसने बनवाया था?**–शेरशाह सूरी**
- 'त्रिपिटक' किसका धार्मिक ग्रंथ है ? **–बौद्धों का**
- वर्ष 1947 के बाद किस राज्य को भारत के संघ के साथ बलपूर्वक मिलाया गया था ? **–हैदराबाद को**
- 323 ई. पू. में सिकन्दर महान् की मृत्यु कहाँ हुई थी ? **–बेबीलॉन में**
- श्रीलंका पर विजय प्राप्त करने वाला चोल वंश का सबसे प्रतापी राजा कौन था ? **–राजराज– I**
- 'लाल चेर' के नाम से प्रसिद्ध वह चेर राजा कौन था जिसने कण्णगी के मंदिर का निर्माण कराया था ? **–सिंचगुट्टूवन**
- सन् 1798 में लार्ड वेलेजली द्वारा प्रस्तावित सहायक संधि को स्वीकार करने वाला सबसे पहला भारतीय शासक कौन था ? **–निजाम हैदराबाद**
- भारत का प्रथम वायसराय कौन था ? **–लॉर्ड कैनिंग**
- सातवाहनों ने पहले स्थानीय अधिकारियों के रूप में किसके अधीन काम किया था? **–मौर्यों के अधीन**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सबसे पहली महिला अध्यक्ष कौन थी ? **–ऐनी बेसेंट**
- दिल्ली सल्तनत की दरबारी भाषा क्या थी ? **–अरबी**
- बुद्ध ने किस स्थान पर महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था ? **–कुशीनगर में**
- अफगानिस्तान में बुद्ध की दो विशाल मूर्तियों को किस स्थान पर नष्ट किया गया था ? **–बामियान में**
- सिंधु घाटी स्थल, कलिबंगन किस प्रदेश में है? **–राजस्थान**
- वह गवर्नर कौन था, जो मैसूर के तीसरे युद्ध में टीपू सुल्तान के विरूद्ध लड़ा था ? **–लॉर्ड कार्नवालिस**
- बुद्ध कहाँ पैदा हुए थे ? **–लुम्बिनी में**
- ऐलोरा में गुफा एवं शिलोष्कीर्ण मन्दिर किसका प्रतिनिधित्व करते हैं ? **–हिन्दू, बौद्ध और जैनों का**
- 'टका' या 'रुपया' चाँदी का सिक्का किसके द्वारा चलाया गया था ? **–शेरशाह सूरी**
- चन्द्रगुप्त मौर्य के बाद मौर्य सिंहासन पर कौन बैठा था ? **–बिन्दुसार**
- 'सारे जहाँ से अच्छा' राष्ट्रभक्ति गीत किसने लिखा था ? **–मोहम्मद इकबाल**
- औरंगजेब के बाद उसका कौन–सा बेटा 'बहादुरशाह' के नाम से भारत का सम्राट बना ? **–मुहम्मद मोआज्जम**
- 'रज्मनामा' किसका फारसी अनुवाद है ? **–महाभारत**
- दिल्ली में पुराने किला का निर्माण किस शासक के शासन काल में हुआ था ? **–शेरशाह सूरी**
- चोलेश्वर नामक मन्दिर का निर्माण किसने किया था ? **–विजयालय**
- कोणार्क मिन्दर के 'देवता' कौन हैं ? **–सूर्य**
- भक्ति एवं सूफी आन्दोलन के सन्तों का योगदान किस क्षेत्र में था ? **–हिन्दू और मुसलमानों की एकता में**
- भारतीय संस्कृति का 'स्वर्ण युग' था– **–गुप्त काल**
- दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रकाशित पत्रिका का नाम क्या था ? **–इंडियन ओपीनियन**
- 'लौह आवरण' शब्द किसने बनाया था ? **–विन्स्टन चर्चिल**
- अद्वैत दर्शन के मुख्य प्रतिपादक कौन थे ? **–शंकराचार्य**
- किसने पाकिस्तानी राष्ट्रपति अयूब खान के साथ ताशकंद करार पर इस्ताक्षर किए थे ? **–श्री लालबहादुर शास्त्री**
- महमूद गजनी ने किस प्रसिद्ध मंदिर पर धावा बोला था ? **–सोमनाथ**
- वह अकेली रानी कौन थी जिसने दिल्ली पर शासन किया? **–रजिया सुल्तान**
- कनिष्क के शासन काल में रहने वाले मुख्य साहित्यकार कौन थे ? **–वसुमित्र और अश्वघोष**
- मलिक कफूर किसका 'जनरल' था ? **–अलाउद्दीन खिलजी का**
- किस गवर्नर ने भारत में पहली बार सिविल सेवा शुरू किया था ? **–लॉर्ड डलहौजी**
- सिखों की पवित्र पुस्तक 'आदिग्रंथ' का संकलन किसने किया था ? **–गुरु अर्जुन देव**

THE INSTITUTE

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

- बहमनी राज्य का संस्थापक कौन था ? **–अलाउद्दीन बहमनी शाह (जफर खान)**
- हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के खण्डहर किस नदी के तट पर पाए जाते हैं ? **–रावी**
- भारत में 7वीं शताब्दी के प्राचीन विश्वविद्यालय की स्थापना कहाँ की गई थी ? **–नालंदा में**
- अकबर ने पंचमहल का निर्माण, जो खम्भों के लिए विख्यात है, कहाँ किया गया था ? **–फतेहपुर सिकरी में**
- 1932 ई. में अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना किसने की थी ? **–महात्मा गाँधी**
- मंदिर का सबसे लम्बा 'गलियारा' कहाँ पर है ? **–रामेश्वरम्**
- किसने बिदर में मदरसे का निर्माण कराया था ? **–मोहम्मद गवान**
- हरिसेन किस राजा का राजकवि था ? **–समुद्रगुप्त**
- मर्मर–वीथि से गोल गुम्बज का निर्माण किस शासक द्वारा किया गया था ? **–मोहम्मद आदिलशाह– II**
- वह शासक कौन था जो 'विक्रमादित्य' के नाम से भी जाना जाता था ? **–चंद्रगुप्त द्वितीय**
- किसके शासन काल के दौरान भारत में 1 रुपये का सिक्का टकसालित (मिंट) किया गया था ? **–शेरशाह सूरी**
- ब्रिटिश ने पंजाब को किस सन् में अपने राज्य में मिलाया था ? **–1849 ई.**
- मुगल शासकों की दरबारी (अदालती) भाषा क्या थी ? **–फारसी**
- वह आयोग कौन–सा है जिसने सबसे पहले भारत में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा पर ध्यान दिया ? **–हंटर आयोग**
- सिंधु घाटी के लोगों की एक महत्वपूर्ण रचना किसकी मूर्ति थी ? **–नृत्य करती हुई बालिका**
- मराठा साम्राज्य का दूसरा संस्थापक किसे कहा जाता है? **–बाजीराव– I**
- कला की गांधार शैली किसके शासन काल में पनपी थी ? **–कनिष्क**
- 'ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स' में चुना जाने वाला पहला भारतीय कौन था ? **–दादाभाई नौरोजी**
- 'विजयनगर राज्य' की स्थापना किसने की थी ? **–संगम वंश ने**
- सातवाहन वंश का महानतम शासक किसे माना जाता है? **–गौतमीपुत्र शतकरणी**
- पाँचवीं बौद्ध परिषद् का आयोजन किसने किया था ? **–कनिष्क**
- तराई की दूसरी लड़ाई में पृथ्वीराज को किसने पराजित किया था ? **–मुहम्मद गौरी**
- मिहिर भोज या राजा भोज राजपूतों के किस कुल से सम्बन्धित थे ? **–परमार**
- प्राचीन भारत के विख्यात चिकित्सक धन्वंतरि ने अपना परामर्श किसके दरबार में दिया था ? **–चंद्रगुप्त–II**
- प्राचीन काल में खारवेल कहाँ का एक महान शासक था ? **–कलिंग का**
- किस चोल शासक ने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर अपने साम्राज्य का एक प्रांत बनाया था ? **–राजराजा**
- शिवाजी के राज्य की राजधानी कहाँ थी ? **–रायगढ़**
- विद्या की सबसे पुरानी पीठ कौन–सी है ? **–तक्षशिला**
- भारत में सबसे पहले तोपखाने का प्रयोग किसने किया था? **–बाबर**
- भगवद्गीता का अंग्रेजी में अनुवाद करने वाला पहला यूरोपियन कौन था ? **–चार्ल्स विल्किन्स**
- भारत में 'लोकनायक' की पदवी के साथ कौन सम्बन्धित है ? **–जयप्रकाश नारायण**
- वह प्रसिद्ध जैन विद्वान कौन था, जिसका अकबर बहुत सम्मान करता था ? **–हरि विजय**
- मरियम पैलेस कहाँ स्थित है ? **–फतेहपुर सीकरी में**
- भारत का अन्तिम वायसराय कौन था ? **–लॉर्ड माउंटबेटन**
- स्वयं को दूसरा सिकन्दर (सिकन्दर–ए–सानी) कहने वाला सुल्तान कौन था ? **–अलाउद्दीन खिलजी**
- वैदिक आर्यों का प्रमुख भोजन क्या था ? **–दूध और इसके उत्पाद**
- किसकी विफलता के बाद 'स्वराज पार्टी' बनाई गई थी ? **–असहयोग आन्दोलन**
- अलीगढ़ आन्दोलन का संस्थापक कौन था ? **–सर सैयद अहमद खाँ**
- सुल्तान वंश की विशालतम स्थायी सेना, जिसका भुगतान सीधा राज्य द्वारा किया जाता था, किसने बनाई थी ? **–अलाउद्दीन खिलजी ने**
- चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रसिद्ध गुरु चाणक्य किस विद्या केन्द्र से सम्बन्धित था ? **–तक्षशिला**
- महाबलीपुरम् में रथ मन्दिरों का निर्माण किस पल्लव शासक के शासन काल में हुआ था ? **–नरसिंवर्मन प्रथम**
- किस राजपूत राजा ने मुहम्मद गोरी को पहली बार हराया था ? **–पृथ्वीराज तृतीय**
- किस चोल राजा ने लंका (सिंहल) को पहले जीता था ? **–राजराजा प्रथम**
- 'लीग ऑफ नेशन्स' की स्थापना कब हुई थी ? **–10 जनवरी, 1920**
- राजा रवि वर्मा किस क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं ? **–चित्रकारी**
- 'फ्रंटियर गाँधी' पद के साथ कौन संबंधित है ? **–खान अब्दुल गफ्फार खाँ**
- गाँधीजी का राजनीतिक गुरु किसे माना जाता है ? **–गोपालकृष्ण गोखले**
- नादिर शाह के आक्रमण के समय दिल्ली का शासक कौन था ? **–मुहम्मद शाह**
- इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेख में किसकी उपलब्धियाँ वर्णित हैं ? **–समुद्रगुप्त**
- वह सुल्तान कौन था जिसने खलीफा के अधिकार को मानने से इंकार कर दिया था ? **–अलाउद्दीन खिलजी**

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

Daily Current Affairs Govt. Jobs SSC Bank Railway IAS-PCS GK eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

- भारत में सबसे पुराना लौह युग जुड़ा हुआ है– **–चित्रित धूसर मृद्भांडों के साथ**
- मगध के उत्थान के लिए कौन–सा प्रथम शासक उत्तरदायी था ? **–बिंबिसार**
- अवध के स्वायत्त राज्य का संस्थापक कौन था ? **–सआदत खाँ**
- पेशवाओं का संस्थापक कौन था ? **–बालाजी विश्वनाथ**
- प्रसिद्ध गुप्त संवत् किस वर्ष से शुरू किया गया था ? **–319 ई.**
- ऐलोरा में प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण किस राजा ने किया था ? **–कृष्ण प्रथम, राष्ट्रकूट**
- दिल्ली का पहला प्रभुता–संपन्न सुल्तान कौन था ? **–कुतुबुद्दीन ऐबक**
- कृष्णदेव राय ने कौन–सी पुस्तक लिखी थी ? **–अमुक्त माल्याद**
- होमरूल लीग की स्थापना किस समय की गई थी ? **–प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान**
- भारत में पहली बार सन् 1853 में किस स्थान से रेल यात्रा प्रारंभ की गई ? **–बम्बई (मुंबई)**
- समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के सभी कारक किसके स्वामित्व और नियंत्रण में रहते हैं ? **–श्रमिक संघों के**
- बुद्ध ने अपना प्रथम प्रवचन कहाँ दिया था ? **–सारनाथ में**
- वैदिक युग में राजा अपनी जनता से जो कर वसूल करते थे, उसे क्या कहते थे ? **–बलि**
- गुप्तकाल में किस धातु के सर्वाधिक सिक्के जारी किए गए? **–सोना**
- इण्डियन नेशनल कांग्रेस का पहला अधिवेशन कहाँ आयोजित हुआ था ? **–बम्बई**
- अधिकांश चोलकालीन मन्दिर किस देवी/देवता को समर्पित हैं ? **–शिव**
- गुजरात में 'साबरमती आश्रम' की स्थापना गाँधीजी ने किस वर्ष की थी ? **–1916 ई. में**
- गाँधीजी के विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के आंदोलन का लक्ष्य क्या था ? **–कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देना**
- ''इंडिया विन्स फ्रीडम'' पुस्तक के लेखक कौन हैं ? **–मौलाना अबुल कलाम आजाद**
- पुस्तक 'माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रूथ' के लेखक हैं– **–मोहनदास करमचंद गाँधी**
- 'चरक' किस राजा के दरबार में प्रसिद्ध चिकित्सक (आयुर्वेदाचार्य) थे ? **–कनिष्क**
- साँची का महान स्तूप कहाँ है ? **–मध्य प्रदेश में**
- कलानौर में राज्याभिषेक के समय अकबर की आयु कितनी थी ? **–तेरह वर्ष**
- मंगल पांडे ने 1857 के विद्रोह की पहली गोली कहाँ चलाई थी ? **–बैरकपुर में**
- किसने कहा था ''देश की पूजा ही राम की पूजा है'' **–मदनलाल धींगरा**
- चौरी–चौरा कांड के बाद गाँधीजी ने किस आंदोलन को स्थगित कर दिया था ? **–असहयोग आंदोलन**
- हड़प्पा किस नदी के किनारे पर स्थित है ? **–रावी**
- 'दीन–ए–इलाही' बनाने का मूल उद्देश्य क्या था ? **–विश्वबंधुत्व**
- ड्रेन का सिद्धान्त (The theory of Drain) किसने प्रतिपादित किया था ? **–दादाभाई नौरोजी**
- बाल, पाल तथा लाल किसके प्रमुख नेता थे ? **–कांग्रेस पार्टी के**
- कौन–सा स्थान भारत में पुर्तगालियों का मुख्यालय था ? **–गोआ**
- अपनी प्रसार की नीतियों के कारण 'भारत का नेपोलियन' कहलाने वाला राजा है– **–समुद्रगुप्त**
- इंगलैंड के हाउस ऑफ कामन्स द्वारा भारत के किस गवर्नर जनरल पर महाभियोग चलाया गया था ? **–वारेन हेस्टिंग्स**
- 'राजनीति और धर्म को साथ–साथ चलना चाहिए' यह कथन किसका है ? **–महात्मा गांधी**
- अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता में निर्मित दुर्ग का नाम क्या है ? **–फोर्ट विलियम**
- बद्रीनाथ और केदारनाथ मंदिरों के गर्भ गृहों में क्रमशः किन देवताओं की पूजा होती है ? **–विष्णु और शिव**
- चित्तरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने 'स्वराज पार्टी' कब बनाई थी ? **–असहयोग आंदोलन के बाद**
- सिखों के अंतिम गुरु कौन थे ? **–गुरु गोविन्द सिंह**
- गंगा को उत्तर से दक्षिण ले जाने वाला चोला राजा कौन–सा था ? **–राजेन्द्र चोला**
- चन्द्रगुप्त द्वितीय और किस नाम से जाना जाता था ? **–विक्रमादित्य**
- लाला लाजपत राय किसके विरूद्ध प्रदर्शन कर रहे थे, जब वे पुलिस की नृशंसता का शिकार हुए ? **–साइमन कमीशन**
- प्रसिद्ध खजुराहो मंदिर का निर्माण किसने किया था ? **–चंदेल राजाओं ने**
- 'गीत गोविन्द' का लेखक कौन था ? **–जयदेव**
- किस लड़ाई ने मुहम्मद गौरी के लिए दिल्ली क्षेत्र खोल दिया ? **–तराइन की दूसरी लड़ाई**
- चोल राजाओं का शासन था– **–तमिलनाडु पर**
- 'नवजीवन' समाचार–पत्र का संपादन किसने किया था ? **–महात्मा गाँधी**
- सुभाषचन्द्र बोस ने ब्रिटेन व अमरीका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कब की थी ? **–23 अक्टूबर, 1943 को**
- एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण किस राष्ट्रकूट शासक ने कराया था ? **–कृष्ण– I ने**

RAJINSTITUTE

Daily Current Affairs Govt. Jobs SSC Bank Railway IAS-PCS GK eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

Daily Current Affairs Govt Jobs SSC Bank Railway IAS PCS GK eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

सावधान

One Day की रिक्तियों को ध्यान में रखते हुए आज कई संस्थान खुल गए हैं जहाँ अनुभवहीन शिक्षक छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ करते हैं।

ऐसे संस्थान सिर्फ One Day के रिक्तियों की घोषणा का इन्तजार करते हैं। यहाँ न कोई Research Work होता है न ही Material Development।

ये सिर्फ गाँव के भोले–भाले छात्रों को बरगला कर कमाई कर रहे हैं। जागरूक बने एवं हमेशा अनुभवी, प्रतिष्ठित संस्थान को चुनें, जहाँ गुणवत्ता, ईमानदारी एवं सफलता की पूजा की जाती है और जहाँ ज्ञान नहीं सेलेक्शन दिया जाता है।

THE INSTITUTE

जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.

DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/

Daily Current Affairs | Govt. Jobs | SSC | Bank | Railway | IAS-PCS | GK | eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

2010-11 में UPP, CPO, B.Ed., SSC, BANK, RAILWAY में सर्वाधिक Selection देने के बाद अब...

सिपाही
UP & CPO

SSC
Pre & Mains (New Syllabus)

BANK
Clerk (New Pattern)

OUR FACULTY

Team Maths : S.P. Singh, K.M. Mishra, B.K. Dubey, & Vipin Sir
Team Reasoning : R.R. Gupta & K.N. Sir

Team G.S.
Hindi : Dr. K.B. Pandey
Sci. & Tech. : Ajay Singh
History : V.P. Singh
Geography : M.M. Khan
Polity : Ashok Pandey
Economics : Subhash Paul

Team Tech. : Pawan Shukla

Team English
Grammar : R.S. Singh
Word Power : C. Shekhar

B.Ed. / T.E.T.
प्रवेश परीक्षा हेतु

सभी कोर्सों के लिए अलग-अलग एवं विशेष बैच प्रारम्भ

रेलवे टेक्निकल

प्रिंटेड नोट्स एवं प्रैक्टिस पेपर के साथ सम्पूर्ण तैयारी
Individual Maths, Reasoning & English Also Available ; CSAT – Maths + Reasoning

THE INSTITUTE
जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इला० Mob. :0532-3266722, 9956971111, 9235581475
website : www.theinstituteedu.com email : info@theinstituteedu.com

पूरी फीस, पूरी पढ़ाई, पूरा सेलेक्शन ; अधूरी फीस, अधूरी पढ़ाई, अधूरा सेलेक्शन

Daily Current Affairs | Govt. Jobs | SSC | Bank | Railway | IAS-PCS | GK | eBooks
DOWNLOAD MORE PDF FOR GOVERNMENT EXAM CLICK HERE >>> https://pdfexam.com/
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com